

# روزے کے مسائل کا انسائیکلو پیڈیا

حروف تہجی کی ترتیب کے مطابق

مؤلف

مفتی محمد انعام الحق صاحب قاضی

دارالافتاء جامعۃ العلوم الاسلامیہ  
علامہ بنوری ٹاؤن کراچی

[www.besturdubooks.wordpress.com](http://www.besturdubooks.wordpress.com)

العمار کراچی

# روزے کے مسائل کا الٹیکلو پیڈیا

حروف تہجی کی ترتیب کے مطابق

مؤلف

مفتی محمد انعام الحق صاحب قاسمی

دارالافتاح جامعۃ العلوم الاسلامیۃ  
علامہ بنوری ٹاؤن کراچی

بیت العمارت کراچی

## جملہ حقوق بحق مؤلف محفوظ ہیں

نام کتاب..... روزے کے مسائل کا انسائیکلو پیڈیا  
مؤلف..... مفتی محمد انعام الحق صاحب قاسمی  
تخریج..... مفتی عبدالحق باجوڑی  
سنہ طباعت:..... طبع ششم: ۱۴۳۱ھ - ۲۰۱۰ء

ناشر: **بَيْتُ الْعِلْمِ كِلَاجِي**

نورانی مسجد گل پلازہ مارشمن روڈ کراچی 74400

فون 021-2771568، موبائل: 03333136872

### ملنے کے دیگر پتے

- ادارۃ الانور، بنوری ٹاؤن، کراچی فون 021-4914596
- ❖ مکتبۃ البخاری، صابری پارک، لیاری، کراچی فون 021-2520385
- ❖ کتب خانہ مظہری، گلشن اقبال، بلاک ۲، کراچی 021-4818112
- ❖ مکتبۃ الرازی دوکان نمبر 2 سلام کتب مارکیٹ بنوری ٹاؤن کراچی 0320-5015764
- ❖ دارالاشاعت، اردو بازار کراچی 021-2681361
- ❖ اسلامی کتب خانہ، بنوری ٹاؤن، کراچی 021-4927159

## فہرست عنوانات

| صفحہ | عنوان                                 |
|------|---------------------------------------|
| ۲۲   | ❖ تقریظ.....                          |
| ۲۳   | ❖ سبب تالیف.....                      |
|      | <b>(الف)</b>                          |
| ۲۵   | ❖ آب دست.....                         |
| ۲۵   | ❖ آپریشن.....                         |
| ۲۷   | ❖ آنسو.....                           |
| ۲۷   | ❖ آنکھ.....                           |
| ۲۷   | ❖ اجابت.....                          |
| ۲۹   | ❖ اجر میں اضافہ.....                  |
| ۲۹   | ❖ احترام رمضان کا سبق آموز واقعہ..... |
| ۳۰   | ❖ احکام.....                          |
| ۳۱   | ❖ استخاضہ.....                        |
| ۳۱   | ❖ استمنا بالید.....                   |
| ۳۱   | ❖ استنجاء.....                        |
| ۳۱   | ❖ استنجے کا پانی خشک کرنا.....        |
| ۳۲   | ❖ اعلانیہ کھانا پینا.....             |

| صفحہ | عنوان                                            |
|------|--------------------------------------------------|
| ۳۲   | ❖ اغلام بازی.....                                |
| ۳۲   | ❖ افطار کا وقت.....                              |
| ۳۲   | ❖ افطار کرانے کا ثواب.....                       |
| ۳۳   | ❖ افطار کی دعا.....                              |
| ۳۳   | ❖ افطار کرنے میں جلدی کرے.....                   |
| ۳۵   | ❖ افطاری کیا ہونی چاہیے.....                     |
| ۳۵   | ❖ اکراہ کا حکم.....                              |
| ۳۶   | ❖ امام کو فطرہ دینا.....                         |
| ۳۶   | ❖ امتحان کی وجہ سے روزہ نہ رکھنا.....            |
| ۳۶   | ❖ انجکشن.....                                    |
| ۳۷   | ❖ انجکشن لگوانا.....                             |
| ۳۷   | ❖ انزال ہونا (منی خارج ہونا).....                |
| ۳۹   | ❖ انہلر.....                                     |
| ۳۹   | ❖ انیمہ کرانا.....                               |
| ۳۹   | ❖ اولاد کی طرف سے صدقہ فطر.....                  |
| ۴۰   | ❖ ایام بیض کے روزے.....                          |
| ۴۱   | ❖ ایام تشریق میں روزے کی نیت کرنا جائز نہیں..... |
|      | <b>(ب)</b>                                       |
| ۴۲   | ❖ باجا بارسری بجانا.....                         |

| صفحہ | عنوان                                     |
|------|-------------------------------------------|
| ۴۲   | ❖ بالغ ہونا.....                          |
| ۴۲   | ❖ بام.....                                |
| ۴۳   | ❖ بچہ.....                                |
| ۴۴   | ❖ بچہ مالک نصاب اور بالغ ہے.....          |
| ۴۴   | ❖ بچے کو چبا کر کھلانا.....               |
| ۴۴   | ❖ بدنصیب.....                             |
| ۴۵   | ❖ برکات رمضان.....                        |
| ۴۶   | ❖ بڑھاپے کی وجہ سے روزے پر قادر نہیں..... |
| ۴۶   | ❖ بغل کے بال.....                         |
| ۴۷   | ❖ بلغم.....                               |
| ۴۷   | ❖ بو اسیر.....                            |
| ۴۹   | ❖ بوس و کنار.....                         |
| ۴۹   | ❖ بوسہ لینا.....                          |
| ۵۰   | ❖ بہتر فطرہ.....                          |
| ۵۰   | ❖ بھوک کی وجہ سے روزہ توڑ دینا.....       |
| ۵۰   | ❖ بھول سے کھانا.....                      |
| ۵۱   | ❖ بے نمازی کا روزہ.....                   |
| ۵۲   | ❖ بیوی کا صدقہ فطر.....                   |
| ۵۲   | ❖ بے ہوش ہو جانا.....                     |

| صفحہ | عنوان                                     |
|------|-------------------------------------------|
|      | <b>(پ)</b>                                |
| ۵۳   | .....پاک ہونا ❖                           |
| ۵۵   | .....پاگل کا حکم ❖                        |
| ۵۵   | .....پان ❖                                |
| ۵۶   | .....پانی ❖                               |
| ۵۷   | .....پائیریا کی پیپ کا منہ میں جانا ❖     |
| ۵۷   | .....پان کی سرخی نگھنا ❖                  |
| ۵۸   | .....پسینہ ❖                              |
| ۵۹   | .....پھول سونگھنا ❖                       |
| ۵۹   | .....پیاس کی وجہ سے روزہ توڑ دینا ❖       |
| ۵۹   | .....پیاس سے بے تاب ہو جانا ❖             |
| ۶۰   | .....پیر اور جمعرات کا روزہ ❖             |
| ۶۰   | .....پیشاب بند ہو جانا ❖                  |
|      | <b>(ت)</b>                                |
| ۶۰   | .....ترکپڑا پہننا ❖                       |
| ۶۱   | .....تمباکو ❖                             |
| ۶۱   | .....تمباکو کا پیہ جلا کر دانت صاف کرنا ❖ |
| ۶۱   | .....تھوک ❖                               |

| صفحہ | عنوان                                                     |
|------|-----------------------------------------------------------|
| ۶۲   | ❖ تھوک نکل جانا.....                                      |
| ۶۲   | ❖ تیل لگانا.....                                          |
|      | (ٹ)                                                       |
| ۶۲   | ❖ ٹوتھ پاؤڈر.....                                         |
| ۶۲   | ❖ ٹوتھ پیسٹ.....                                          |
| ۶۳   | ❖ ٹی بی.....                                              |
| ۶۳   | ❖ ٹیکہ لگوانا.....                                        |
|      | (ج)                                                       |
| ۶۳   | ❖ جان کے خطرے کی حالت میں روزہ توڑنا.....                 |
| ۶۳   | ❖ جان نکلنے کی حالت میں روزہ دار کو شربت وغیرہ پلانا..... |
| ۶۴   | ❖ جبریل علیہ السلام کی بددعا.....                         |
| ۶۵   | ❖ جلق.....                                                |
| ۶۵   | ❖ جمائی.....                                              |
| ۶۵   | ❖ جماعت میں تاخیر.....                                    |
| ۶۶   | ❖ جنت کی آرائش.....                                       |
| ۶۶   | ❖ جنت کی سیل (Sale).....                                  |
| ۶۶   | ❖ جنتری کا استعمال.....                                   |
| ۶۷   | ❖ جنگ.....                                                |
| ۶۷   | ❖ جنون.....                                               |

| صفحہ | عنوان                                               |
|------|-----------------------------------------------------|
| ۲۸   | ❖ جھوٹ.....                                         |
|      | <b>(چ)</b>                                          |
| ۲۸   | ❖ چاول.....                                         |
| ۲۹   | ❖ چکھنا.....                                        |
|      | <b>(ح)</b>                                          |
| ۲۹   | ❖ حائضہ کا رمضان میں کھانا پینا.....                |
| ۲۹   | ❖ حاملہ.....                                        |
| ۷۰   | ❖ حقہ.....                                          |
| ۷۰   | ❖ حمل چیک کرانا.....                                |
| ۷۱   | ❖ حیض.....                                          |
|      | <b>(خ)</b>                                          |
| ۷۸   | ❖ خالی مکان.....                                    |
| ۷۸   | ❖ خلال کرنا.....                                    |
| ۷۹   | ❖ خوشبو سونگھنا.....                                |
| ۷۹   | ❖ خون.....                                          |
|      | <b>(د)</b>                                          |
| ۸۱   | ❖ دائم المریض ہونے کی وجہ سے روزے پر قیاد نہیں..... |
| ۸۱   | ❖ داڑھ.....                                         |

| صفحہ | عنوان                                          |
|------|------------------------------------------------|
| ۸۱   | ❖ داڑھی.....                                   |
| ۸۲   | ❖ دانت.....                                    |
| ۸۴   | ❖ دروزہ سے روزہ توڑ دینا.....                  |
| ۸۵   | ❖ دعا قبول ہوتی ہے.....                        |
| ۸۵   | ❖ دمہ.....                                     |
| ۸۵   | ❖ دن بڑا ہونے کی وجہ سے روزے کا فدیہ دینا..... |
| ۸۶   | ❖ دن میں روزہ مقرر ہونے کی وجہ.....            |
| ۸۷   | ❖ دوا.....                                     |
| ۸۸   | ❖ دوا سے روزہ افطار کرنا.....                  |
| ۸۸   | ❖ دو خوشیاں.....                               |
| ۸۹   | ❖ دودھ پلانے والی کی رعایت.....                |
| ۸۹   | ❖ دودھ پلانے سے روزہ فاسد نہیں ہوتا.....       |
| ۹۰   | ❖ دھمکی.....                                   |
| ۹۰   | ❖ دھواں.....                                   |
|      | (ۛ)                                            |
| ۹۱   | ❖ ڈکار کے بعد منہ میں پانی آنا.....            |
|      | (ۛ)                                            |
| ۹۱   | ❖ ذیابیطس.....                                 |

| صفحہ | عنوان                                          |
|------|------------------------------------------------|
|      | ( )                                            |
| ۹۱   | ❖ رال نکل جانا.....                            |
| ۹۲   | ❖ رحم.....                                     |
| ۹۲   | ❖ رزق حلال سے سحری اور افطار.....              |
| ۹۳   | ❖ رمضان کا انتخاب.....                         |
| ۹۵   | ❖ رمضان المبارک کے لئے مسنون دعا.....          |
| ۹۶   | ❖ رمضان کا پہلا دن.....                        |
| ۹۶   | ❖ رمضان کے مہینے میں روزہ فرض کرنے کی وجہ..... |
| ۹۶   | ❖ رنگین دھاگہ منہ میں لے کر بٹنا.....          |
| ۹۷   | ❖ روزہ ترک کرنا.....                           |
| ۹۷   | ❖ روزہ توڑنا.....                              |
| ۹۸   | ❖ روزہ توڑنا کب جائز ہوتا ہے.....              |
| ۱۰۰  | ❖ روزہ دار کی فضیلت.....                       |
| ۱۰۰  | ❖ روزہ ڈھال ہے.....                            |
| ۸۱   | ❖ روزہ رکھنے سے بیمار ہو جانا.....             |
| ۱۰۱  | ❖ روزہ رکھنے کی طاقت نہ ہو.....                |
| ۱۰۱  | ❖ روزے سے بچنے کے لئے سفر کرنا.....            |
| ۱۰۱  | ❖ روزہ فرض ہے.....                             |

| صفحہ | عنوان                                             |
|------|---------------------------------------------------|
| ۱۰۲  | ❖ روزہ نہ رکھنے والے پر بھی صدقہ فطر واجب ہے..... |
| ۱۰۳  | ❖ روزہ فاسد نہیں ہوتا.....                        |
| ۱۰۴  | ❖ روزہ مقرر ہونے کی وجوہات.....                   |
| ۱۰۶  | ❖ روزہ مکروہ ہو جاتا ہے.....                      |
| ۱۰۹  | ❖ روزوں کے مقاصد.....                             |
| ۱۰۹  | ❖ روزہ مؤخر کیا جاسکتا ہے.....                    |
| ۱۱۰  | ❖ رومال.....                                      |
| ۱۱۰  | ❖ ریت.....                                        |
|      | <b>(ز)</b>                                        |
| ۱۱۱  | ❖ زبردستی.....                                    |
| ۱۱۱  | ❖ زخم.....                                        |
| ۱۱۲  | ❖ زچہ کا کمزور ہونا.....                          |
| ۱۱۳  | ❖ زکوٰۃ اور صدقہ فطر کے نصاب میں فرق.....         |
| ۱۱۳  | ❖ زکوٰۃ کے پیسے سے افطار کا انتظام کرنا.....      |
| ۱۱۳  | ❖ زیر ناف.....                                    |
|      | <b>(س)</b>                                        |
| ۱۱۵  | ❖ سائرین وغیرہ کا استعمال.....                    |
| ۱۱۵  | ❖ سال بھر روزہ رکھنے کی نذر ماننا.....            |
| ۱۱۵  | ❖ سال کا دل.....                                  |

| صفحہ | عنوان                                       |
|------|---------------------------------------------|
| ۱۱۶  | ❖ سحری.....                                 |
|      | ❖ سحری کی اطلاع دینے کے لئے سائرن بجانا اور |
| ۱۱۸  | ..... مائیک سے اعلان کرنا                   |
| ۱۱۸  | ❖ سحری کے بغیر روزہ.....                    |
| ۱۱۹  | ❖ سحری کے بعد بیوی سے ہمبستری کرنا.....     |
| ۱۱۹  | ❖ سحری کے بعد کلی کرنا.....                 |
| ۱۱۹  | ❖ سحری کا مسنون وقت.....                    |
| ۱۲۰  | ❖ سحری کا وقت ختم ہونے پر سحری کھانا.....   |
| ۱۲۰  | ❖ سردیوں میں روزوں کی قضا کرنا.....         |
| ۱۲۱  | ❖ سرمہ لگانا.....                           |
| ۱۲۱  | ❖ سفر میں روزہ.....                         |
| ۱۲۳  | ❖ سفر کی وجہ سے روزوں کا زیادہ ہو جانا..... |
| ۱۲۳  | ❖ سفر کی وجہ سے روزہ کم ہو جانا.....        |
| ۱۲۴  | ❖ سنہری موقع.....                           |
| ۱۲۴  | ❖ سگریٹ.....                                |
| ۱۲۵  | ❖ سگریٹ سے افطار کرنا.....                  |
| ۱۲۵  | ❖ سید کو صدقہ فطر دینا.....                 |

| صفحہ | عنوان                                                 |
|------|-------------------------------------------------------|
|      | <b>(ش)</b>                                            |
| ۱۲۵  | شادی شدہ لڑکی کا فطرہ..... ❖                          |
| ۱۲۶  | شب برات کا روزہ..... ❖                                |
| ۱۲۶  | شرم گاہ..... ❖                                        |
| ۱۳۰  | شفاعت..... ❖                                          |
| ۱۳۰  | شوال کے چھ روزے..... ❖                                |
| ۱۳۱  | شوال کے چھ روزوں میں قضا روزوں کی نیت بھی کرنا..... ❖ |
| ۱۳۱  | شہوت..... ❖                                           |
| ۱۳۲  | شیخ فانی..... ❖                                       |
|      | <b>(ص)</b>                                            |
| ۱۳۲  | صاحب نصاب نہ ہو تو..... ❖                             |
| ۱۳۳  | صبح صادق کے بعد کچھ کھایا پیایا جماع کیا..... ❖       |
| ۱۳۳  | صحبت کرنا..... ❖                                      |
| ۱۳۶  | صحبت زبردستی کرنا..... ❖                              |
| ۱۳۶  | صحبت کرنا نابالغ یا مجنون سے..... ❖                   |
| ۱۳۷  | صحت کے بعد غروب تک کھانا پینا..... ❖                  |
| ۱۳۷  | صحت یاب ہونے سے پہلے انتقال ہو جانا..... ❖            |
| ۱۳۷  | صدقہ فطر..... ❖                                       |

| صفحہ | عنوان                                          |
|------|------------------------------------------------|
| ۱۳۹  | ❖ صدقہ فطر کا مصرف.....                        |
| ۱۴۰  | ❖ صدقہ فطر کس کس کی طرف سے دینا واجب ہے.....   |
| ۱۴۰  | ❖ صدقہ فطر کس وقت واجب ہوتا ہے.....            |
| ۱۴۱  | ❖ صدقہ فطر کن کن چیزوں سے دیا جاسکتا ہے.....   |
| ۱۴۱  | ❖ صدقہ فطر کی ادائیگی کا وقت.....              |
| ۱۴۱  | ❖ صدقہ فطر کی مقدار.....                       |
| ۱۴۳  | ❖ صدقہ فطر میں اجازت.....                      |
|      | <b>(ض)</b>                                     |
| ۱۴۴  | ❖ ضرورت اصلیه.....                             |
| ۱۴۵  | ❖ ضعف باقی ہے.....                             |
|      | <b>(ط)</b>                                     |
| ۱۴۵  | ❖ طلباء کو فطرہ دینا.....                      |
| ۱۴۵  | ❖ طویل دن والے علاقوں میں روزے کا حکم.....     |
| ۱۴۷  | ❖ طویل عرصہ شب و روز والے علاقوں میں روزہ..... |
|      | <b>(ع)</b>                                     |
| ۱۴۷  | ❖ عاشورہ کا روزہ.....                          |
| ۱۴۸  | ❖ عرفہ کے دن کا روزہ.....                      |
| ۱۴۸  | ❖ عضو تناسل.....                               |

| صفحہ | عنوان                                   |
|------|-----------------------------------------|
| ۱۴۹  | ❖ عورت کا نفل روزہ.....                 |
| ۱۴۹  | ❖ عورتوں کا آپس میں لطف اندوز ہونا..... |
| ۱۵۰  | ❖ عید کے دن روزہ رکھنا حرام ہے.....     |
| ۱۵۰  | ❖ عید کے دن روزہ رکھنے کی نذر مانی..... |
| ۱۵۱  | ❖ عید کے دن صدقہ فطر ادا نہیں کیا.....  |
|      | <b>(غ)</b>                              |
| ۱۵۱  | ❖ غرغره کا حکم.....                     |
| ۱۵۲  | ❖ غروب سے پہلے اذان پر افطار.....       |
| ۱۵۲  | ❖ غسل کرنا.....                         |
| ۱۵۳  | ❖ غسل جنابت.....                        |
| ۱۵۳  | ❖ غسل جنابت میں تاخیر.....              |
| ۱۵۳  | ❖ غیبت کرنا.....                        |
| ۱۵۳  | ❖ غیر مسلم کی چیز سے افطار کرنا.....    |
| ۱۵۴  | ❖ غیر کی افطاری سے روزہ کھولنا.....     |
| ۱۵۴  | ❖ غیر ممالک والوں کا فطرہ.....          |
|      | <b>(ف)</b>                              |
| ۱۵۵  | ❖ فدیہ.....                             |
| ۱۵۵  | ❖ فطرے کی رقم قرض میں مجرا کرنا.....    |

| صفحہ | عنوان                                               |
|------|-----------------------------------------------------|
| ۱۵۶  | ❖ ..... فرج                                         |
| ۱۵۶  | ❖ ..... فطرہ کی تقسیم کا طریقہ                      |
| ۱۵۷  | ❖ ..... فطرہ کی قیمت                                |
| ۱۵۷  | ❖ ..... فوت شدہ روزوں کا حکم                        |
|      | <b>(ق)</b>                                          |
| ۱۵۸  | ❖ ..... قدیم عبادت                                  |
| ۱۵۸  | ❖ ..... قضا                                         |
| ۱۶۰  | ❖ ..... قضا روزہ عورت کی طرف سے شوہر کا رکھنا       |
| ۱۶۰  | ❖ ..... قئے ہونا                                    |
| ۱۶۱  | ❖ ..... قضا روزوں کی نیت                            |
| ۱۶۱  | ❖ ..... قیدیوں کو فطرہ دینا                         |
|      | <b>(ک)</b>                                          |
| ۱۶۱  | ❖ ..... کان                                         |
| ۱۶۳  | ❖ ..... کریم لگانا                                  |
| ۱۶۳  | ❖ ..... کفارہ                                       |
| ۱۶۶  | ❖ ..... کفارے میں تاخیر                             |
| ۱۶۶  | ❖ ..... کفارے میں ضامن بنانا                        |
| ۱۶۷  | ❖ ..... کفارے کی کل قیمت ایک فقیر کو دینا کافی نہیں |

| صفحہ | عنوان                                                         |
|------|---------------------------------------------------------------|
| ۱۶۷  | ❖ کفارے کی ادائیگی.....                                       |
| ۱۶۸  | ❖ کفارے میں آٹا یا اس کی قیمت دینا.....                       |
| ۱۶۸  | ❖ کفارے کی رقم سے مسجد مدرسہ اور ہسپتال وغیرہ تعمیر کرنا..... |
| ۱۶۸  | ❖ کفارے کے روزے کی جگہ پر توبہ کرنا کافی ہے یا نہیں.....      |
| ۱۶۸  | ❖ کفارے کا کھانا چھوٹے بچوں کو کھلانا.....                    |
| ۱۶۹  | ❖ کلی کرنا.....                                               |
| ۱۶۹  | ❖ کلی کرنے کے بعد منہ میں پانی کے اثرات رہ جانا.....          |
| ۱۷۰  | ❖ کمائی (آمدنی) باپ کو دینے والے کا صدقہ.....                 |
| ۱۷۰  | ❖ کوئلہ.....                                                  |
| ۱۷۰  | ❖ کھانسا.....                                                 |
|      | <b>(گ)</b>                                                    |
| ۱۷۱  | ❖ گردوغبار.....                                               |
| ۱۷۱  | ❖ گناہ معاف.....                                              |
| ۱۷۱  | ❖ گوشت.....                                                   |
| ۱۷۲  | ❖ گوند چاٹ کر تھوک نگل جانا.....                              |
|      | <b>(ل)</b>                                                    |
| ۱۷۲  | ❖ لواطت.....                                                  |
| ۱۷۳  | ❖ لو کی وجہ سے روزہ توڑ دینا.....                             |

| صفحہ | عنوان                                     |
|------|-------------------------------------------|
| ۱۷۳  | ❖ لیٹنا.....                              |
|      | <b>(م)</b>                                |
| ۱۷۴  | ❖ مباشرت فاحشہ.....                       |
| ۱۷۴  | ❖ مٹی کھانا.....                          |
| ۱۷۵  | ❖ مذاق کرنا.....                          |
| ۱۷۵  | ❖ ندی.....                                |
| ۱۷۵  | ❖ مریض.....                               |
| ۱۷۶  | ❖ مریض کا قضا کرنا یا فدیہ دینا.....      |
| ۱۷۷  | ❖ مسافر.....                              |
| ۱۷۷  | ❖ مسافر سفر کے دوران انتقال کر گیا.....   |
| ۱۷۷  | ❖ مسافر کا روزہ رکھ کر توڑ دینا.....      |
| ۱۷۸  | ❖ مسافر کا فدیہ دینا.....                 |
| ۱۷۸  | ❖ مستحبات روزہ.....                       |
| ۱۷۹  | ❖ مسجد میں افطار اور سحری کرنا.....       |
| ۱۸۰  | ❖ معمولات نبوی ﷺ.....                     |
| ۱۸۱  | ❖ مسواک.....                              |
| ۱۸۲  | ❖ مسوڑھوں سے خون نکلنا.....               |
| ۱۸۳  | ❖ معاشی محنت کی وجہ سے روزہ نہ رکھنا..... |

| صفحہ | عنوان                                       |
|------|---------------------------------------------|
| ۱۸۳  | ❖ مشت زنی.....                              |
| ۱۸۳  | ❖ مقصد روزہ.....                            |
| ۱۸۵  | ❖ مقعد.....                                 |
| ۱۸۵  | ❖ مقیم روزے کی نیت کرنے کے بعد سفر کرے..... |
| ۱۸۵  | ❖ مکھی.....                                 |
| ۱۸۵  | ❖ منجن.....                                 |
| ۱۸۶  | ❖ مؤذن پہلے افطار کرے یا اذان دے؟.....      |
| ۱۸۶  | ❖ مونچھ تراشنا.....                         |
|      | <b>(ن)</b>                                  |
| ۱۸۷  | ❖ نابالغ.....                               |
| ۱۸۷  | ❖ ناپاک کی حالت میں روزہ رکھنا.....         |
| ۱۸۸  | ❖ ناخن.....                                 |
| ۱۸۹  | ❖ ناک.....                                  |
| ۱۸۹  | ❖ ناک کی رطوبت حلق کی جانب چڑھانا.....      |
| ۱۹۰  | ❖ نابالغ کو فطرہ دینا.....                  |
| ۱۹۰  | ❖ نذر.....                                  |
| ۱۹۱  | ❖ نذر پوری کرنا لازم ہے.....                |
| ۱۹۱  | ❖ نذر کا روزہ فاسد ہو جائے.....             |

| صفحہ | عنوان                                   |
|------|-----------------------------------------|
| ۱۹۱  | ❖ نذر کی شرطیں.....                     |
| ۱۹۳  | ❖ نذر کے روزے رکھنے کا طریقہ.....       |
| ۱۹۳  | ❖ نذر کے روزے کی نیت.....               |
| ۱۹۵  | ❖ نذر مان کر بیمار ہو گیا.....          |
| ۱۹۵  | ❖ نذر میں خاص دن کی قید لگانا.....      |
| ۱۹۶  | ❖ نزلے میں دوا سونگھنا.....             |
| ۱۹۷  | ❖ نسوار.....                            |
| ۱۹۷  | ❖ نشے میں ڈوبا ہوا آدمی.....            |
| ۱۹۷  | ❖ (۱) نصف النہار.....                   |
| ۱۹۸  | ❖ (۲) نصف النہار کی تعیین کا طریقہ..... |
| ۱۹۸  | ❖ نفاس.....                             |
| ۱۹۹  | ❖ نفل روزہ.....                         |
| ۱۹۹  | ❖ نفل روزہ توڑنا.....                   |
| ۲۰۰  | ❖ نفل روزہ کی نیت.....                  |
| ۲۰۱  | ❖ نفل روزے کے معمول.....                |
| ۲۰۲  | ❖ نقصان.....                            |
| ۲۰۲  | ❖ نکسیر پھوٹ جانا.....                  |
| ۲۰۲  | ❖ نمک.....                              |

| صفحہ | عنوان                            |
|------|----------------------------------|
| ۲۰۳  | نیت..... ❖                       |
| ۲۰۵  | نیت توڑنے کا طریقہ..... ❖        |
| ۲۰۶  | نیت کر کے روزہ توڑنا..... ❖      |
| ۲۰۷  | نیکوں کا سیزن..... ❖             |
| ۲۰۸  | نیکوں کی چیک بک..... ❖           |
|      | (و)                              |
| ۲۰۸  | دی آئی پی گیٹ..... ❖             |
| ۲۰۹  | وینٹولین..... ❖                  |
| ۲۰۹  | وکس..... ❖                       |
|      | (ہ)                              |
| ۲۰۹  | ہونٹوں پر سرخی لگانا..... ❖      |
| ۲۰۹  | ہمبستری..... ❖                   |
| ۲۱۰  | ہوائی سفر میں روزے کا حکم..... ❖ |
| ۲۱۱  | ہوٹل کھولنا..... ❖               |
| ۲۱۲  | ہونٹ تھوک میں تر ہو جانا..... ❖  |
| ۲۱۲  | ہونٹ چوسنا..... ❖                |

## نقَرِ بَظَا

حضرت مولانا مفتی عبدالمجید دین پوری مدظلہ

نائب رئیس دارالافتاء جامعۃ العلوم الاسلامیہ علامہ بنوری ٹاؤن کراچی پاکستان

شریعت اسلامی میں فقہ کو جو منزلات و فضیلت حاصل ہے کسی اور علم کو نہیں، اس علم کی خدا کے نزدیک قدر بھی ہے، اور بندوں کو اس کی ضرورت بھی، فقہ ہی وہ علم ہے جس کی ہر مسلمان کو ہر وقت ضرورت پڑتی ہے، اسلاف نے اس علم میں اپنی زندگیاں کھپا دیں، ان کی کوششوں، کادشوں اور عظیم کارناموں کو قریب سے دیکھ کر ان کی حقیقی عظمت کا احساس ہوتا ہے، عقیدت حقیقت میں بدل جاتی ہے، اور یہ یقین پختہ تر ہو جاتا ہے کہ امت نہ ان بزرگان دین کے احسانات سے سبکدوش ہو سکتی ہے اور نہ بے نیاز۔

دیگر علوم کی طرح عربی زبان اس علم کے ذخیروں سے بھی مالا مال ہے، لیکن اردو کا دامن ابھی ان جواہرات سے بھرا نہیں، عرصے سے اسلاف کے علوم کی تلخیص و تسہیل جاری ہے، ابھی کچھ عرصے سے مستند و معتمد، مروج و متداول کتابوں کی مدد سے اردو زبان میں کسی خاص موضوع پر مجموعے تیار کرنے کا ذوق پروان چڑھ رہا ہے، اس سلسلے میں چند مفید اور کامیاب کوششیں بھی ہوئی ہیں،

ہمارے رفیق دارالافتاء مفتی محمد انعام الحق صاحب نے اس سلسلے کو مزید آگے بڑھایا ہے، اور روزے اور رمضان کے مسائل کو حروف تہجی کی ترتیب سے یکجا کر کے ایک مفید کاوش کا اضافہ کیا ہے، جس سے اردو دان طبقہ استاد کی رہنمائی کے بغیر سہولت و اطمینان کیساتھ کتاب سے استفادہ کر سکتا ہے، بندہ نے کتاب کے جتہ جتہ مقامات کا مطالعہ کیا، زبان عام فہم، اسلوب سادہ اور آسان، اور انداز بیان جدید ہے، صاف اور متقن شکل میں مسئلہ سمجھانے کی کوشش کی گئی ہے، تاکہ ضرورت کے وقت آسانی کے ساتھ مسئلہ معلوم کیا جاسکے۔

کتاب اپنی افادیت اور جامعیت میں بے مثال اور لائق اعتماد ہے، البتہ اگر مسائل کے ساتھ ان کے حوالہ جات ہی درج کئے جاتے تو یہ کتاب روزہ کے مسائل میں ماخذ کی حیثیت اختیار کر لیتی۔

دعا ہے کہ اللہ تعالیٰ کتاب کو شرف قبولیت سے نوازیں..... آمین۔

مفتی محمد عبید (المجید رحمہ اللہ) بنوری

نائب رئیس دارالافتاء جامعۃ العلوم الاسلامیہ

عالمہ بنوری ٹاؤن کراچی / ۵

۲۳/۵/۱۴۲۵ھ - ۱۳/۷/۲۰۰۴ء

## سبب تالیف

ایک دینی مسئلہ معلوم کرنے کا ثواب ایک ہزار رکعات نفل پڑھنے سے بھی زیادہ ہے۔ ”کنز العمال“ میں ہے کہ ایک مسئلہ معلوم کرنے کی وجہ سے، معلوم کرنے والے، جواب دینے والے، سننے والے اور ان سے محبت کرنے والے، سب کو اجر ملتا ہے۔ (۱)

اور ایک حدیث شریف میں ہے کہ ضروری دینی علم حاصل کرنا ہر مسلمان مرد و عورت پر فرض ہے (۲) اور بالغ ہوتے ہی جس طرح نماز کے مسائل کا علم حاصل کرنا ضروری ہے اسی طرح روزے کے مسائل معلوم کرنا بھی ضروری ہے۔ لیکن آج کل لوگوں کے پاس وقت کی قلت ہے۔ ضخیم کتابوں کے مطالعہ کی فرصت نہیں ہے، نہذا بندہ نے رمضان اور روزے کے ضروری مسائل کو حروف تہجی کے اعتبار سے ترتیب دیا ہے تاکہ کوئی بھی مسئلہ حروف تہجی کے اعتبار سے تلاش کرنے پر فوراً نکل آئے اور کم وقت میں مقصد حاصل ہو جائے گا۔

اللہ تعالیٰ سے امید ہے کہ اس کتاب کو شرف قبولیت سے نوازیں گے اور آخرت کے لئے نجات کا ذریعہ بنائیں گے۔ (آمین)

محمد انعام الحق قاسمی

استاذ و مفتی جامعۃ العلوم الاسلامیہ

علامہ بنوری ٹاؤن کراچی/۵

(۱) العلم خزائن ومفتاحها السؤال فاسئلوا برحمتكم الله، فانه يؤجر أربعة السائل والمعلم والمستمع والمحب لهم. (کنز العمال ج: ۱۰ ص: ۵۸) کتاب العلم (ادارۃ تالیفات اشرفیہ متان، پاکستان)

(۲) أيضا طلب العلم فريضة على كل مسلم (کنز العمال ج: ۱۰ ص: ۵۸)

## ( الف )

## آب دست

اجابت کے بعد اگر آب دست کرتے وقت صفائی میں اتنا مبالغہ کیا گیا کہ پانی مقعد کے اندر پہنچ گیا تو روزہ فاسد ہو جائے گا۔ اس لئے ایسے موقع پر بڑی احتیاط کی ضرورت ہے۔ (۱)

## آپریشن

(۱) ایسا آپریشن جو دماغ اور پیٹ کے علاوہ جسم کے دوسرے حصے یا ہاتھ پاؤں وغیرہ کا ہواس سے روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۲)

(۲) اسی طرح ایسے اعضاء کا آپریشن جن سے دماغ یا پیٹ کی طرف منفذ (قدرتی راستہ) نہیں ہے روزہ فاسد نہیں ہوگا، کیونکہ روزہ کسی ایسی چیز سے فاسد ہوتا ہے جو بدن کو درست کرنے کے لئے قدرتی راستے سے داخل کی جائے یا دماغ اور پیٹ تک پہنچ جائے یا پہنچنے کا امکان غالب ہو۔ (۳)

(۳) مصنوعی اعضاء لگانے سے روزہ فاسد نہیں ہوگا کیونکہ مصنوعی اعضاء اپنی

(۱) ولوبالغ فی الاستنجاء حتی بلغ موضع الحقنة فسد (در المختار ج: ۲ ص: ۳۹۷ ایچ ایم سعید کمپنی)

(۲) والمفطر انما هو الداخل من المنافذ (رد المحتار ج: ۲ ص: ۳۹۵، ایچ ایم سعید کمپنی)

(۳) واقطر فی اذنه دھنا او داوی جائفة او آمة فوصل الدواء حقيقة الى جوفه و دماغه (قوله حقيقة) اشار الى ان ما وقع فی ظاهر الرواية من تقييد الافساد بالدواء الرطب مبنی علی العادة من انه يصل والا فالمتعبر حقيقة الوصول، حتی لو علم وصول اليابس الفسد او عدم وصول الطری لم یفسد. وانما الخلاف اذا لم یعلم یقینا ففسد بالطری حکما بالوصول نظرا الى العادة. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۲، ایچ ایم سعید کمپنی)

- جگہ پر لگے رہ جائیں گے۔ ہاں اگر آپریشن کے ساتھ کوئی دوا ڈالی جائے گی جو دماغ یا پیٹ تک پہنچ جائے تو روزہ فاسد ہو جائے گا قضاء لازم ہوگی کفارہ نہیں۔ (۱)
- (۲) اگر پیٹ یا دماغ کا آپریشن اس طرح کیا کہ کچھ کاٹ کر نکال دیا کوئی نئی چیز داخل نہیں کی گئی تو روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۲)
- (۵) اگر آپریشن کر کے دماغ یا پیٹ کے اندر کوئی دوائی لگائی گئی یا مصنوعی عضو لگایا گیا تو روزہ فاسد ہو جائے گا۔ (۳)
- (۶) اگر معدہ کے آپریشن میں کوئی عضو سرجری کے دوران باہر نکالا گیا پھر اپنی جگہ واپس فٹ کر دیا گیا تو روزہ فاسد ہو جائے گا۔ (۴)
- (۷) اسی طرح اگر پیٹ کا کوئی عضو باہر لایا گیا پھر دوبارہ اس کو پیٹ کے اندر فٹ کیا گیا تو روزہ فاسد ہو جائے گا۔ (۵)

(۱) اواقطرفی اذنه دھنا وادواى جائفة او آمة فوصل الدواء حقيقة ..... قضی فی الصور کلہا فقط، تحته فی رد، قلت: ولم یقید والاحتقان والاستعاط والاقطار بالوصول الى الجوف لظہورہ فیہا والافلابد منه حتی لوبقی السعوط فی الانف ولم یصل الى الرأس لا یفطر ویمكن ان یکون الدواء راجعاً الى الكل. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۲)

(۲) ولعدم وجود صورة الفطر وهو الابتلاع. (رد المحتار ج: ۲ ص: ۴۱۴) ایچ ایم سعید کمپنی (۳) او ادخل عوداً ونحوہ فی مقعدہ وطرفہ خارج وان غیبه فسد. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۲) (۴) ولو طعن برمح او اصابہ سهم وبقي فی جوفہ فسد. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۴، مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)

(۵) قوله ومفاده ای مفاد ماذکر متدرجاً و هو ان مادخل فی الجوف ان غاب فیہ فسد و هو ان مراد بالاستقرار وان لم یغب بل بقي طرف منه فی الخارج او کان متصلاً بشئ خارج لا یفسد لعدم استقراره. (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۷)

## آنسو

اگر روزہ دار کے منہ میں آنسو داخل ہوں تو اگر تھوڑے ہوں جیسے ایک دو قطرے تو روزہ فاسد نہ ہوگا، اور اگر بہت زیادہ آنسو منہ میں جمع ہو گئے اور ان کو نگل لیا تو روزہ فاسد ہو جائے گا۔ (۱)

## آنکھ

(۱) روزے کی حالت میں دن میں سرمہ لگانا جائز ہے، اس سے روزے پر کوئی اثر نہیں پڑتا، یہاں تک کہ سرمہ لگانے کے بعد اگر تھوک یا ناک کی رطوبت میرا سرے کا اثر دکھائی دے تو بھی روزہ فاسد یا مکروہ نہیں ہوتا۔ (۲)

(۲) اگر روزے کے دوران آنکھ میں دوائی ڈالنے یا لگانے کی ضرورت ہے تو دوائی ڈالنا یا لگانا جائز ہے۔ اس سے روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۳)

## اجابت

(۱) اجابت کے سوراخ کو دیر اور مقعد (ریا خانہ نکلنے کا سوراخ) بھی کہا جاتا ہے۔

(۲) اگر اجابت کے سوراخ میں دوا ڈال دی گئی اور دوا موضع القذف (یعنی جہاں سے پچکاری وغیرہ کے ذریعے دوا پہنچی جاتی ہے) سے آگے نکل ہوگئی تو روزہ صحیح ہے۔

(۱) الدموع اذا دخلت فم الصائم ان كان قبلا كالقنطرة والقنطرة من اوجہ بنا لا یفسد صومہ وان كان كثيرا حتى وجد ملوحتہ فی جميع فمہ واجتمع شیء کثیر فابتلعہ یفسدہ عانہ مگیرى ج: ۱ ص: ۲۰۳، مکتبہ رشیدیہ، کوئٹہ، فتویٰ شامی ج: ۲ ص: ۲۰۳، ایچ ایم سعید کمپنی۔

(۲) او استحل از احتجم وان وجد طعمہ فی حلقہ لم یفطر وقولہ لم یفطر لان الموجود فی حلقہ اثر داخل من المسمام الذی هو خلل البدن والمغضی الما هو الداخل من المنافذ (در مع الرد ج: ۲ ص: ۳۹۵، ایچ ایم، کمپنی)

(۳) واذا استحل او اقتر بشی من الدواء فی عینہ لا یفسد الصوم عند (فتاویٰ زاتار خانہ ج: ۲ ص: ۳۶۶)

فاسد ہو گیا۔ قضاء ضروری ہے، کفارہ نہیں۔ (۱)

(۳) اگر روزہ دار روزے کی حالت میں اجابت کے سوراخ میں کوئی خشک چیز داخل کرے، اور اس کا سر باہر رہے یا تر چیز داخل کرے اور وہ موضع حقنہ تک نہ پہنچے، تو چونکہ یہ چیزیں اندرونی حصے تک نہیں پہنچیں اس لئے روزہ فاسد نہ ہوگا۔ قضا اور کفارہ بھی لازم نہیں ہوگا۔ (۲)

(۴) اور اگر روزہ دار نے خشک چیز مثلاً روئی یا کپڑا وغیرہ اجابت کے سوراخ میں داخل کی اور ساری اندر غائب ہو گئی یا تر چیز داخل کی اور وہ موضع حقنہ تک پہنچ گئی تو روزہ فاسد ہو جائے گا۔ صرف قضا واجب ہوگی کفارہ نہیں۔ (۳)

(۵) اگر روزہ دار نے پانی، تیل یا دوائی سے تر انگلی مقعد (پاخانہ کے راستے) میں داخل کی تو اس سے روزہ فاسد ہو گیا، قضا ضروری ہے کفارہ نہیں۔ (۴)

(۶) اگر اجابت کے دوران پاخانے کے مقام سے کانچ نکل آئے اور وہ اس کو

(۱) او احتقن او استعط.... قضی فی الصور کلہا فقط وعدم وجوب الکفارة فی ذلک هو الاصح لانہما وجب الافطار صورة ومعنی، وصورة الابتلاع كما فی الکافی وہی معدمة والنفع المجرد عنہا یوجب القضاء فقط (درمع الردج: ۲ ص: ۴۰۲، ایچ ایم سعید کمپنی)۔

(۲) او داخل عودا ونحوہ فی مقعدتہ وطرفہ خارج.... او داخل اصبعہ الیابسة فیہ ای دبرہ او فرجہا ولومبتلة فسد (وقوله ولومبتلة فسد) لبقاء شیء من البلة فی الداخل وهذا لو داخل الاصبع الی موضع المحقنة كما یعلم ممابعد (درمع الردج: ۲ ص: ۳۹۷، ایچ ایم سعید کمپنی)

(۳) ولومبتلة فسد.... وهذا لو داخل الاصبع الی موضع الحقنة.... ولو ادخلت قطنة ان غابت فسد (درمع الردج: ۲ ص: ۳۹۷، ط: سعید)

(۴) ولو داخل اصبعہ فی استہ او المرأة فی فرجہا لا یفسد وهو المختار الا اذا كانت مبتلة بالماء او الدهن فحینئذ یفسد لو وصول الماء او الدهن هكذا فی الظہیریة (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۴، مکتبہ رشیدیہ، کوئٹہ)

تر کر کے چڑھائے تو روزہ فاسد ہو جائے گا کیونکہ یہ مقام حقہ تک پہنچ جاتی ہے۔ (۱)

## اجر میں اضافہ

رمضان المبارک میں روزہ دار کی عبادت کے اجر کو بڑھا دیا جاتا ہے، اگر نفل کام کرے گا تو فرض کے برابر اجر دیا جائے گا اور اگر ایک فرض پورا کرے گا تو ستر فرضوں کے برابر اس کو اجر ملے گا۔ (۲)

## احترام رمضان کا سبق آموز واقعہ

”نزہۃ المجالس“ میں ایک واقعہ لکھا ہے (یہ وہ وقت تھا جب مسلمان غالب تھے اور کفار ان کے درمیان رہتے تھے) کہ ایک مرتبہ ایک مجوسی کے بیٹے نے رمضان المبارک کے دنوں میں کھانا کھایا، جب اس نے کھلے عام کھانا کھایا تو اس مجوسی کو بہت غصہ آیا، اس نے اپنے بیٹے کو ڈانٹ ڈپٹ کی کہ تجھے شرم نہیں آتی کہ یہ مسلمانوں کا مقدس مہینہ ہے، وہ دن میں روزہ رکھتے ہیں اور تو دن میں اس طرح کھلے عام کھا رہا ہے۔ خیر بات آئی گئی ہوگئی۔

اس مجوسی کے پڑوس میں ایک بزرگ رہتے تھے جب اس مجوسی کا انتقال ہو گیا تو ان بزرگ نے اس کو خواب میں دیکھا کہ وہ مجوسی جنت کی بہاروں میں ہے۔ وہ بڑے حیران ہوئے، اس سے پوچھنے لگے کہ آپ تو مجوسی تھے اور میں آپ کو جنت میں دیکھ رہا ہوں۔ وہ جواب میں کہنے لگا کہ ”ایک مرتبہ میرے بیٹے نے رمضان المبارک میں کھلے

(۱) وفي الفتح خرج سرمه فغسله فان قام قبل ان ينشفه فسد صومه (رد المحتار ج ۲ ص: ۳۹۷، ایچ ایم سعید کمپنی)

(۲) من تقرب فيه كان كمن ادى فريضة في ماسواه ومن ادى فريضة فيه كان كمن ادى سبعين فريضة في ماسواه. (رواه ابن خزيمة في صحيحه، مشکوة ج ۱ ص: ۱۷۳، قدیسی کتب خانہ)

عام کھانا کھایا تھا اور میں نے رمضان المبارک کے ادب کی وجہ سے اس کو ڈانٹا تھا، اللہ تعالیٰ کو میرا یہ عمل اتنا پسند آیا کہ موت کے وقت مجھے کلمہ پڑھنے کی توفیق نصیب فرمادی، اس طرح مجھے اسلام پر موت آئی اور اب میں جنت میں مزے لے رہا ہوں۔“ (۱)

صرف ادب کا یہ حال ہے کہ ایک کافر مجوسی کو ایمان کی توفیق نصیب ہوتی ہے تو جو صحیح معنی میں روزہ رکھے گا اس کا کیا عالم ہوگا، اندازہ کریں، اسی طرح جو آدمی رمضان کی بے احترامی کرے گا اس کی سزا کیا ہوگی، اس کا بھی اندازہ کر لیں۔

## احتلام

(۱) اگر عورت دن میں سو گئی یا مرد سو گیا اور ایسا خواب دیکھا جس سے غسل کرنا فرض ہو گیا تو روزہ فاسد نہیں ہوا، روزہ بدستور برقرار ہے۔ (۲)

(۲) اگر روزہ دار دن میں سویا اور احتلام ہو گیا تو روزہ فاسد نہیں ہوا بلکہ روزہ صحیح ہے۔ البتہ جتنی جلدی ہو سکے غسل کر لے، بلا وجہ غسل میں تاخیر نہ کرے تاکہ روزے کا وقت زیادہ سے زیادہ پاکی میں گزرے۔ (۳)

(۳) اگر دن کو رمضان میں احتلام ہو جانے سے یہ سمجھا کہ اس سے روزہ فاسد ہو جاتا ہے، اس کے بعد قصداً کھاپی یا تو قصداً کھانے سے روزہ فاسد ہو گیا، قضا ضروری ہے، کفارہ نہیں۔ (۴)

(۱) حکایۃ: رای مجوسی ابنہ یا کل فی رمضان بحضرة المسلمین فضربہ وقال لم لاحفظت حرمة المسلمین فی رمضان فمات الخ (نزہۃ السجالس الجزء الاول ص: ۱۹۱، کتاب الصوم باب فتنل رمضان)

(۲) قوله او حتم او انزل بنظر ای لا یفطر (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۷۲)

(۳) کذا لا یفطر بالاحتلام نہاراً (الفقه الاسلامی وادلتہ ج: ۲ ص: ۲۵۶)

(۴) او اکل او جامع ناسیا و احتلم ..... فظن أنه أفطر فاکل عمداً لشبهة . . . ففی فی الصور کلھا. (شامی: ۲ ص: ۴۰۱-۴۰۶)

## استحاضہ

حیض اور نفاس کے علاوہ اگر خون آتا ہے تو وہ استحاضہ ہے۔ استحاضہ کے دوران نماز روزہ معاف نہیں ہے، لہذا استحاضہ کے دوران نماز پڑھنا اور روزہ رکھنا لازم ہے۔ (۱)

## استمناء بالید

مشت زنی کے عنوان کے تحت ملاحظہ کریں۔

## استنجاء

استنجاء کرنے میں مبالغہ کرنے سے اگر موضع حقنہ تک پانی پہنچ گیا تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی کفارہ نہیں۔ (۲)

## استنجے کا پانی خشک کرنا

روزہ دار کو استنجاء کرنے کے بعد خاص مقام کو کسی چیز سے اچھی طرح خشک کرنا ضروری نہیں، استنجاء سے روزے پر اثر نہیں پڑتا، البتہ اگر پانی موضع حقنہ تک پہنچ جائے تو روزہ ٹوٹ جائے گا، مگر استنجاء میں ایسا نہیں ہوتا، لہذا خاص مقام کو اچھی طرح خشک بھی نہ کرے، روزہ برقرار رہے گا۔ (۳)

(۱) اشترط الحنفیة لصحة الصوم شروطا ثلاثة. هي النية والخلو عما ينافي الصوم من حیض ونفاس وعما یفسده (الفقه الاسلامی وادلتہ ج: ۲ ص: ۶۱۶)

(۲) او استنجی فوصل الماء الى داخل دبره (الفقه الاسلامی وادلتہ ج: ۲ ص: ۶۵۴)  
واذا استنجی وبالغ حتی وصل الماء الى موضع الحقنة یفسد صومه من غیر کفارة علیہ  
(تاتارخانیہ ج: ۲ ص: ۳۶۵، ایچ ایم سعید)

## اعلانیہ کھانا پینا

اگر کوئی شخص رمضان المبارک میں بلا عذر روزہ نہ رکھے اور اعلانیہ طور پر کھائے پیئے تو وہ فاسق اور اسلامی شعائر کی توہین کرنے والا ہے، مسلمان خلیفہ کے حکم سے ایسے آدمی کو قتل کر دیا جائے گا تا کہ کسی اور آدمی کو اعلانیہ کھانے پینے کی جرأت نہ ہو۔ (۱)

## اغلام بازی

لواطت کے عنوان کے تحت ملاحظہ کیجئے۔

## افطار کا وقت

آفتاب غروب ہونے کا یقین ہونے کے بعد افطار کا صحیح وقت ہو جاتا ہے۔ اس کے بعد افطار میں دیر کرنا مکروہ اور خلاف سنت ہے۔  
ہاں اگر کسی وجہ سے غروب آفتاب میں شبہ ہو تو دو چار منٹ انتظار کر لینا بہتر ہے۔ (۲)

## افطار کرانے کا ثواب

(۱) روزہ دار کو افطار کرانے سے صغیرہ گناہ معاف ہو جاتے ہیں، جہنم کی آگ سے نجات ملتی ہے، اور اتنا ثواب ملتا ہے جتنا روزہ دار کو روزہ رکھ کر ملتا ہے اور روزہ

(۱) ولو اکل عمدا شهرة بلا عذر يقتل. (شامی، ج: ۲، ص: ۱۵۱)

(۲) ویسن تعجیل الافطار اذا غربت الشمس مکد روی عن ابی حنیفۃؒ انه قال یتعجل الافطار اذا غربت الشمس احب الینا. (بدائع الصنائع ج: ۲، ص: ۱۰۵، ایچ ایم سعید)  
ولو شک فی غروب الشمس لایسعی لہ ان یفطر لجواز ان الشمس لم تغرب فکان الافطار افسادا للصوم. (بدائع الصنائع ج: ۲، ص: ۱۰۶، ایچ ایم سعید)

دار کے ثواب میں بھی کمی نہیں ہوتی۔ (۱)

(۲) اگر کوئی آدمی غریب ہے اور وہ یہ ثواب حاصل کرنا چاہتا ہے تو روزہ دار کو افطار کے وقت ایک گھونٹ لسی پلا دے یا ایک کھجور کھلا دے یا ایک گھونٹ پانی پلا دے تو اس کو یہ ثواب ملے گا۔ (۲)

(۳) اگر کوئی شخص کسی روزہ دار کو پیٹ بھر کر کھانا کھلائے گا تو اللہ تعالیٰ اس کو حوض کوثر سے ایسا پانی پلائے گا کہ جنت میں داخل ہونے تک پھر کبھی اس کو پیاس نہ لگے گی۔ (۳)

## افطار کی دعا

افطار کے وقت یہ دعا پڑھنا مستحب ہے:

اللَّهُمَّ لَكَ صُومْتُ وَعَلَى رِزْقِكَ أَفْطَرْتُ فَاعْفِرْ لِي  
مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ .

دوسرے الفاظ بھی ثابت ہیں، جو بھی کہیں مستحب ادا ہو جائے گا۔ (۴)

## افطار کرنے میں جلدی کرے

(۱) جب سورج غروب ہونا یقینی طور پر معلوم ہو جائے تو بلا تاخیر افطار کر لینا

(۱-۲) من فطريه صائما كان مغفرة لذنوبه وعق رقبته من النار وكان له مثل اجره من غير ان ينقص من اجره شيء. قالوا يا رسول الله (ﷺ) ليس كلنا يجد ما نفطر الصائم. فقال رسول الله (ﷺ): يعطي الله هذا الثواب من فطر صائما على تمره او على شربة ماء او مذقة لبن. (مشکوٰۃ ج: ۱ ص: ۱۷۳. ط: قدیمی کتب خانہ)

(۳) ومن اشبع صائما سقاه الله من حوضي شربة لا يظما حتى يدخل الجنة. (مشکوٰۃ ج: ۱ ص: ۱۷۴. ط: قدیمی کتب خانہ)

(۴) ومن السنة ان يقول عند الافطار اللهم لك صمت وبك آمنت وعليك توكلت وعلي رزقك افطرت. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۰، رشیدیہ)

عن معاذ بن زهرة قال ان النبي (ﷺ) كان اذا افطر قال اللهم لك صمت وعلي رزقك افطرت. رواه ابو داؤد مرسلًا. مشکوٰۃ کتاب الصوم ج: ۱ ص: ۱۷۵)

چاہیے۔ یہ سنت ہے اور خیر و برکت کا باعث ہے۔ محض شبہ اور وہم کی بناء پر افطار میں دیر کرنا درست نہیں۔

رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا کہ میرے بندوں میں زیادہ محبوب بندہ وہ ہے جو افطار میں جلدی کرے۔

ایک اور حدیث شریف میں ہے کہ روزہ افطار کرنے میں جلدی کرنی چاہیے۔  
ایک اور حدیث شریف میں ہے کہ جب تک مسلمان روزہ افطار کرنے میں جلدی کرتے رہیں گے دین کا غلبہ رہے گا۔ (۱)

(۲) افطار میں اتنی جلدی نہ کرے کہ غروب سے پہلے افطار ہو جائے، اگر اس گمان سے افطار کر لیا کہ سورج غروب ہو گیا لیکن بعد میں معلوم ہوا کہ غروب سے پہلے افطار ہوا ہے تو روزہ فاسد ہو جائے گا قضاء ضروری ہوگی کفارہ نہیں۔ (۲)

(۳) سورج غروب ہونے کے بعد جلدی افطار کرنے کو غلط سمجھنا صحیح نہیں۔ نبی کریم ﷺ نے فرمایا کہ ”جب رات آجائے اور دن چلا جائے اور سورج غروب ہو جائے تو افطار کا وقت ہو گیا۔“ (ترمذی) (۳)

اس سے معلوم ہوا سورج غروب ہونے کا یقین ہو گیا تو بلا تاخیر افطار کر لینا چاہیے۔

(۱) وتعبیل الافطار افضل فیستحب ان یفطر قبل الصلوة. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۰)  
وعنه (ای عن ابی ہریرۃ) قال قال رسول اللہ ﷺ قال اللہ تعالیٰ احب عبادی الی اعملہم فطرا. (مشکوٰۃ ج: ۱ ص: ۱۷۵، قدیمی کتب خانہ) عن ابی ہریرۃ قال قال رسول اللہ ﷺ:  
لا یزال الدین ظاہرا ما عجل الناس الفطر لان اليهود والنصارى یؤخرون. (مشکوٰۃ ج: ۱ ص: ۱۷۵)  
(۲) اوتسحر ووافطرو یظن الیوم ای الوقت الذی اکل فیہ لیلا والحال ان الفجر طالع والشمس لم تغرب ..... قضی فی الصور کلہا. (فتاویٰ شامی ج: ۲ ص: ۴۰۵، ایچ ایم سعید) وكذا فی حاشیة الطحطاوی علی مراقی الفلاح. كتاب الصوم باب ما یفسد الصوم ویوجب القضاء من غیر كفارة. (ج: ۲ ص: ۳۴۲، مکتبہ غوثیہ)

(۳) عن عمر بن الخطاب قال، قال رسول اللہ ﷺ: اذا قبل اللیل وادبر النهار وغابت

## افطاری کیا ہونی چاہیے

(۱) کھجور اور چھوہارے سے افطار کرنا سنت ہے، اس کے علاوہ دودھ جیسی چیز سے کرنا بہتر ہے۔ (۱)

(۲) تازہ کھجور سے افطار کرنا مستحب ہے، ورنہ خشک کھجور سے اور اگر وہ بھی نہ ہو تو پانی سے۔ (۲)

(۳) حضرت انس رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ نبی کریم ﷺ مغرب کی نماز سے پہلے چند تازہ کھجوروں سے افطار فرماتے تھے، اور اگر تازہ کھجور دستیاب نہ ہوتیں تو خشک کھجوروں سے افطار فرماتے تھے، اور اگر خشک کھجوریں بھی نہ ہوتیں تو چند چلو پانی پی لیتے۔ (۳)

(۴) ایک اور حدیث میں ہے کہ آپ ﷺ تین کھجوروں سے یا کسی ایسی چیز سے جو آگ کی پکی ہوئی نہ ہوتی تھی روزہ کھولنا پسند فرماتے تھے۔ (۴)

## اکراہ کا حکم

اگر کوئی شخص روزہ دار کو روزہ توڑنے پر مجبور کر رہا ہو اور نہ توڑنے کی صورت میں جان سے مار دینے کی دھمکی دے رہا ہو تو روزہ توڑ دینا واجب نہیں جائز ہے، نہ

= الشمس فقد افطرت . جامع الترمذی ج: ۱ ص: ۱۵۰ ط: ایچ ایم سعید

(۳، ۲، ۱) عن انس بن مالك قال، كان رسول الله ﷺ : يفطر قبل ان يصلي على رطبات فان لم تكن رطبات فتميرات فان لم تكن تميرات حسا حسوات من ماء. (جامع الترمذی ج: ۱ ص: ۱۵۰ ط: ایچ ایم سعید)

(۴) وكان النبي ﷺ يفطر بثلاث تمرات او على شئ لم تمسه النار. (جامع الفوائد ص: ۷۶، میر محمد کتب خانہ)

توڑنا بہتر ہے، روزہ نہ توڑ کر جان دے دی تو ثواب ہے، البتہ روزہ دار مر یض یا مسافر ہے تو اکراہ کی صورت میں روزہ توڑنا واجب ہے۔ (۱)

## امام کو فطرہ دینا

(۱) امام کو تنخواہ اور اجرت کے طور پر فطرہ دینا جائز نہیں ہے۔ (۲)

(۲) اگر امام غریب ہے، زکوٰۃ کا مستحق ہے تو بلا شرط دینے کی اجازت ہوگی اور اگر تقرری کے وقت فطرہ دینے کی شرط تھی تو اس صورت میں امام کو فطرہ دینا جائز نہیں ہوگا۔ (۳)

## امتحان کی وجہ سے روزہ نہ رکھنا

امتحان کی وجہ سے روزہ چھوڑنا یا روزہ توڑنا جائز نہیں ہے، روزہ رکھے اور روزے کے ساتھ امتحان دے، اللہ تعالیٰ کی مدد ہوگی۔ (۴)

## انجکشن

(۱) روزے میں انجکشن لگوانا جائز ہے، روزہ فاسد نہیں ہوگا۔

(۲) انجکشن وغیرہ لگوانے سے خواہ کسی مرض کے لئے ہو یا طاقت کے لئے روزہ

(۱) ولواکراہ علی اکل وشرب فعلیہ القضاء دون الکفارة. (مبسوط للسرخسی ج: ۳ ص: ۹۸، دارالکتب العلمیہ)

ایضا : واما الاکراہ علی افطار صوم شهر رمضان بالقتل فی حق الصحیح المقیم فمرخص والصوم افضل الخ. (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۹۶، ایچ ایم سعید)

(۲) ومصرف هذه الصدقة ما هو مصرف الزكاة. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۴، طرشی دیہ)

(۳) باب المصرف..... هو فقیر..... ومسکین..... وهو مصرف ایضا الصدقة الفطر

و الکفارة والندرو غیر ذلك من الصدقات الواجبة. (شامی ج: ۲ ص: ۳۳۹، ایچ ایم سعید)

(۴) فتاویٰ رحمیہ ج: ۷ ص: ۲۵۶۔ دارالاشاعت۔

فاسد نہ ہوگا، البتہ بلا ضرورت روزے کے احساس نہ ہونے کے واسطے اگر طائفت کا انجکشن لگوا یا تو اس میں کراہت ہوگی۔

(۳) انجکشن خواہ گوشت میں لگائے یا رگوں میں دونوں صورتوں میں روزہ فاسد نہیں ہوگا۔

## انجکشن لگوانا

انجکشن میں مسامات کے ذریعہ دو بدن میں پہنچائی جاتی ہے۔ منفذ سے نہیں، اس لئے روزہ فاسد نہیں ہوگا جیسے غسل کا اثر۔ زہریلے جانور کے کاٹنے کا اثر بدن کے اندر سرایت کر جاتا ہے، اور زہر کا اثر اکثر دماغ پر ہی اثر انداز ہو جاتا ہے اور بعض جانوروں کے کاٹنے سے بدن پھول جاتا ہے اور زہر اندر پہنچ جاتا ہے، لیکن بالاتفاق روزہ فاسد نہیں ہوتا۔ اسی طرح انجکشن سے بھی روزہ فاسد نہیں ہوتا۔ (۱)

## انزال ہونا (منی خارج ہونا)

(۱) اپنی بیوی سے یا کسی اجنبی عورت یا مرد کو شہوت کے ساتھ مس کرنے سے یا بوسہ لینے سے انزال ہو گیا تو روزہ فاسد ہو جائے گا۔ قضاء ضروری ہے، کفارہ نہیں ہے۔ انزال نہ ہونے کی صورت میں روزہ فاسد تو نہیں ہوگا البتہ مکروہ ہوگا۔ اس لئے روزے کو اس سے پاک رکھنے کی کوشش کرے۔ (۲)

(۱) لانه اثر داخل من المسام الذى هو خلل البدن والمفطر انما هو الداخل من المنافذ للاتفاق على ان من اغتسل فى ماء فوجد برده فى باطنه انه لا يفطر وانما كره الامام . (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۵۔ ایچ ایم سعید) وفى الهندية : وما يدخل من مسام البدن من الدهن لا يفطر ج: ۱ ص: ۲۰۳، ط: رشیدیہ کوئٹہ

(۲) واذا قبل امرأته وانزل فسد صومه من غير كفارة ..... وان مسها فامنى يفسد صومه . (فتاویٰ خانہ ج: ۲ ص: ۳۷۱۔ ادارۃ القرآن والعلوم الاسلامیہ)

(۲) اپنی بیوی یا اجنبی عورت کو مس کئے بغیر صرف شہوت کے ساتھ دیکھنے سے اگر انزال ہو گیا تو اس سے روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۱)

(۳) اگر کسی روزہ دار کو محض شہوت انگیز چیز دیکھنے یا سوچنے سے انزال ہو جائے تو اس سے روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۲)

(۴) اگر کسی کو نظر شہوت کی وجہ سے انزال ہو گیا، اس نے اس گمان سے کہ روزہ فاسد ہو گیا اس کے بعد قصد اگر روزہ فاسد کیا تو قضا ضروری ہے، کفارہ نہیں۔ (۳)

(۵) محض دیکھنے سے یا خیال کرنے سے انزال ہو گیا تو روزہ فاسد نہیں ہوا روزہ بدستور باقی ہے، البتہ اس قسم کی نظر اور خیال سے اپنے آپ کو بچانے کی کوشش کرنی چاہیے۔ (۴)

(۶) سونے کی حالت میں منی خارج ہونے سے روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۵)

(۷) کسی عورت کے خاص حصے کو دیکھنے سے یا صرف کسی بات کا دل میں خیال کرنے سے منی خارج ہو جائے تو روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۶)

(۸) اگر ماہ رمضان میں دن میں اپنی بیوی کو پیار کرنے کی وجہ سے انزال ہو گیا ہے تو روزہ فاسد ہو گیا ہے۔ قضا واجب ہے، کفارہ واجب نہیں۔ البتہ اس کے بعد رمضان کے احترام میں غروب آفتاب تک کھانے پینے کی اجازت نہیں ہوگی۔ (۷)

(۴.۲.۱) واذا نظرت الى امرأته بشهوة فامنى ..... وتفكر فامنى لا يفسد. (تاتارخانیہ ج: ۲ ص: ۳۷۱. ادارة القرآن والعلوم الاسلامیہ)

(۳) كما لو أكل أو جامع ناسيا أو احتلم أو انزل بنظر أو ذرعه القى ، فظن أنه أفطر، فأكل عمدا فلا كفارة للشبهة. (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۱. ایچ ایم سعید)

(۵) وتفكر فامنى لا يفسد ..... وكذا ان احتلم (تاتارخانیہ ج: ۲ ص: ۳۷۱)، وفي البحر الرائق: لا يفطر من قاء ولا من احتلم. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۷۲. ایچ ایم سعید)

(۶) ولا يفسد بالنظر الى فرج امرأته ان امنى. (تاتارخانیہ ج: ۲ ص: ۳۷۱. ادارة القرآن)

(۸.۷) واللمس. والمباشرة. والمصافحة. والمعانقة كالقبلة ولا كفارة عليه. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۷۲. ایچ ایم سعید) وفي الهندية: واذا قبل امرأته وانزل فسد صومه ..... =

(۹) اگر روزے کی حالت میں اپنی بیوی سے بغلگیر ہوا، کچھ دیر تک اسی حالت میں رہنے کے بعد انزال ہو گیا تو روزہ فاسد ہو گیا، قضا لازم ہے، کفارہ نہیں۔

(۱۰) اگر کوئی شخص رمضان المبارک میں دن کے وقت اپنی بیوی کے ساتھ بیٹھا اور کمزوری کی وجہ سے انزال ہو گیا تو روزہ فاسد ہو گیا، قضا لازم ہے کفارہ نہیں اور غروب آفتاب تک کھانے پینے کی اجازت نہیں۔ (۱)

## انہلر

”دمہ کے عنوان کے تحت ملاحظہ کیجئے

## انیمہ کرانا

روزے کے دوران انیمہ کرانے سے روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۲)

## اولاد کی طرف سے صدقہ فطر

(۱) مالدار مردوں پر جس طرح اپنی طرف سے صدقہ فطر ادا کرنا واجب ہے، اسی طرح نابالغ لڑکے اور لڑکیوں کی طرف سے بھی صدقہ فطر ادا کرنا واجب ہے۔ (۳)

(۲) اگر نابالغ اولاد مالدار ہے تو باپ پر اپنے مال سے صدقہ فطر ادا کرنا لازم

= من غیر كفارة والمسوا المباشرة والمصافحة والمعانقة كالقبلة. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۴. رشیدیہ کوئٹہ)

(۱) ولومس المرأة وراء ثيابها فامنى فان وجد حرارة جلدھا ففسد والا فلا. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۴. رشیدیہ کوئٹہ)

(۲) وادخل خشبة فی دبره ان كان طرفھا خارجا لا یفسد صومه وان لم یکن یفسد صومه. وفي الظهيرة اذا ادخل الرجل اصبعه فی استه او المرأة فی فرجھا لا یفسد صومهما وهو المختار الا اذا كانت الاصبع مبتلة بالماء او الدهن فعینئذ یفسد. (تاتارخانیہ ج: ۲ ص: ۳۶۶. ادارة القرآن)

(۳) وتجب عن نفسه وطفله الفقير. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۲، مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ).

نہیں، بلکہ نابالغ اولاد کے مال سے دے سکتا ہے اور اگر مالدار نہیں تو اپنے مال سے دینا واجب ہے۔ (۱)

(۳) بالغ اولاد کی طرف سے باپ پر صدقہ فطر ادا کرنا واجب نہیں ہے، باقی ادا کر دیں گے تو ان پر یہ احسان ہوگا۔ ہاں اگر بالغ لڑکا صاحب نصاب نہیں تو اس کی طرف سے بھی صدقہ فطر ادا کرے۔ (۲)

(۴) اگر کوئی بالغ لڑکا یا لڑکی مجنون ہو تو اس کی طرف سے اس کا والد صدقہ فطر ادا کرے۔ (۳)

(۵) اگر باپ مر گیا تو دادا باپ کے حکم میں ہوتا ہے، لہذا اگر نابالغ پوتا یا پوتی مالدار نہیں تو دادا اپنے مال سے ان کا صدقہ فطر ادا کرے۔ (۴)

## ایام بیض کے روزے

(۱) ہر مہینے کی تیرہویں، چودہویں اور پندرہویں دن کے روزے کو ایام بیض کے روزے کہتے ہیں۔ (۵)

(۲) ہر مہینے میں ۱۳، ۱۴، ۱۵ تاریخ کے تین روزے رکھنے سے پورا سال روزہ رکھنے کے برابر ثواب ملتا ہے، کیونکہ ہر نیک کام کا اجر دس گنا ہے اور تین کو دس سے

(۱) ثم اذا كان للولد الصغير او المجنون مال فان الأب او وصيه او جدھما او وصيه يخرج صدقة فطر انفسھما و رقیقھما من مالھما. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۲. رشیدیہ کوئٹہ)

(۲) ولایودی عن زوجته ولا عن اولاده الکبار وان كانوا فی عیالھ ولوادی عنهم او عن زوجته بغیر امرھم اجزأھم استحسانا (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۳. رشیدیہ کوئٹہ)

(۳) وتجب ..... عن نفسه وطفله الفقیر والكبیر المجنون. (شامی ج: ۲ ص: ۳۶۱. سعید)

(۴) والجد كالأب عند فقده او فقره كما اختاره فی الاختیار. (شامی ج: ۲ ص: ۳۶۲. ط: سعید)

(۵) ويستحب يوم ایام البیض الثالث عشر والرابع عشر والخامس عشر. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۱ ط: رشیدیہ کوئٹہ)

ضرب دیں تو تیس ہے۔ (3x10=30) لہذا تین دن روزہ رکھنے سے تیس دن روزہ رکھنے کا ثواب ملے گا۔ (۱)

(۳) غنیۃ الطالبین میں ہے کہ جب حضرت آدم علیہ السلام جنت سے زمین پر اترے تو پیش کی وجہ سے ان کا بدن سیاہ ہو گیا تھا، اس لئے ان کو ایام بیض یعنی ہر قمری مہینے کی ۱۳، ۱۴، ۱۵ تاریخ کے روزے رکھنے کا حکم دیا گیا۔ حضرت آدم علیہ السلام نے جب اول روزہ رکھا تو ان کے جسم کا ایک حصہ سفید ہو گیا، جب دوسرا روزہ رکھا تو جسم کے دو حصے سفید ہو گئے اور جب تیسرا روزہ رکھا تو ان کا سارا جسم سفید ہو گیا۔ (۲)

(غنیۃ الطالبین، صفحہ ۵۴۶)

## ایام تشریق میں روزہ کی نیت کرنا جائز نہیں

عید الفطر، عید الاضحیٰ اور ایام تشریق یعنی ذی الحجہ کی گیارہ، بارہ، تیرہ تاریخ میں روزے کی نیت کرنا درست نہیں۔ اگر کوئی شخص ان دنوں میں روزے کی نیت کرے گا تو اس روزے کو پورا کرنا لازم نہیں ہوگا اور فاسد ہونے کی صورت میں اس کی قضا لازم نہیں ہوگی، بلکہ ایسے روزے کو فاسد کرنا لازم ہے۔

(۱) من جاء بالحسنة فله عشر مثا لها. (سورة الانعام آیت: ۱۶۱)

(۲) غنیۃ الطالبین (اردو) شیخ عبدالقادر جیلانیؒ ترجمہ مولانا محمد صدیق ہزاروی سعیدی ص: ۵۶۷، ۵۶۸، فرید بک سٹال لاہور)

(۳) والمکروه تحریمًا کالعیدین. قولہ کالعیدین ای وایام التشریق. (شامی ج: ۲ ص: ۳۷۵ ط: ایچ ایم سعید)

ولونذر صوم الايام المنہیۃ او السنة صح والفطر الايام المنہیۃ وجوباً وقضاها. (شامی ج: ۲ ص: ۴۳۳، ۴۳۴ ط: ایچ ایم سعید)

(ب)

## باجا بانسری بجانا

روزے کی حالت میں باجا، بانسری اور طنبورہ وغیرہ بجانا گناہ اور ناجائز ہے،

البتہ اس سے روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۱)

## بالغ ہونا

(۱) اگر کوئی نابالغ رمضان کے دن میں بالغ ہو جائے یا کوئی کافر مسلمان

ہو جائے تو دن میں کھانا پینا درست نہیں ہے اور اگر کچھ کھالیا تو نو مسلم اور بالغ پر اس

دن کی قضا لازم نہیں۔ (۲)

(۲) اگر کوئی نابالغ زوال سے پہلے بالغ ہوا اور ابھی تک کچھ کھایا پیا نہیں ہے اور

روزہ کی نیت کی ہے تو روزہ درست ہو جائے گا۔ (۳)

## بام

روزہ کی حالت میں ”بام“ لگانا جائز ہے۔

(۱) وفي السراج ودلت المسألة ان الملاهي كلها حرام . (شامی ، کتاب الحظرو الاباحۃ ج: ۶ ص: ۳۴۸ . ط: ایچ ایم سعید)

(۲) ولو بلغ صبی او اسلم کافر امسک یومہ ولم یقض شیئا . (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۸۸)

(۳) وانما تجوز النية قبل الزوال اذا لم يوجد قبل ذلك بعد طلوع الفجر ما ينافي الصوم . (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۶ . رشیدیہ کوئٹہ)

ایضا: صبی بلغ قبل الزوال ونصرانی اسلم ونویا الصوم قبل الزوال لایجوز صومهما عن الفرض غیر ان الصبی یكون صائما عن التطوع بخلاف الکافر لفقد الاهلیة فی حقہ وعن ابی یوسف الصبی یجوز صومه عن الفرض . (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۸۹ . ایچ ایم سعید)

## بچہ

- (۱) جب بچے میں روزہ رکھنے کی طاقت ہو تو اس کو روزہ رکھنے کا حکم دیا جائے، جب کہ بچہ کو روزہ رکھنے سے کوئی ضرر نہ ہو اور اگر ضرر ہو تو حکم نہ دیا جائے۔ (۱)
- (۲) جب بچے کی عمر دس سال کی ہو جائے تو تحمل اور برداشت کے موافق روزہ رکھنے کے لئے تاکید کرنا چاہیے۔ اگر روزہ نہ رکھے تو نماز کی طرح سختی کرنی چاہیے، تاکہ بالغ ہونے کے بعد روزہ رکھنا دشوار نہ ہو۔ (۲)
- (۳) اگر نابالغ بچہ روزہ رکھ کر توڑ دے تو اس کی قضاء رکھوانا ضروری نہیں۔ اگر نماز توڑ دے تو دوبارہ پڑھوانا چاہیے۔ (۳)
- (۴) سات برس کی عمر میں نماز اور روزہ کا حکم کیا جائے اور دس سال کی عمر میں مار کر نماز روزہ کا پابند بنایا جائے۔ (۴)
- (۵) رمضان میں بچوں سے تحصیل علم کی محنت کم لی جائے۔ روزہ، نماز اور تلاوت کی محنت زیادہ لی جائے تاکہ بچہ متقی اور پرہیزگار بنے۔ (۵)

- (۱-۲) ویومر الصبی اذا طاقه ، ویضرب علیہ ابن عشر كالصلاة فی الاصح . الدر المختار ج: ۲ ص: ۴۰۹) ایچ ایم سعید) قوله ” ویضرب “ ای بید لا بخشبة ولا یجاوز الثلاث کما قیل بہ فی الصلوة . (ردالمحتار ج: ۲ ص: ۴۰۹)
- (۳) الصبی اذا أفسد صومه لا یقضی ؛ لأنہ یلحقہ فی ذلک مشقة ، بخلاف الصلاة فانہ یومر بالاعادة لأنہ لا یلحقہ مشقة (ردالمحتار ج: ۲ ص: ۴۰۹ ، مطبوعہ ایچ ام سعید)
- (۴) قوله ” ویومر الصبی “ ..... وقد ریسع ، والمشاہد فی صبیان زماننا عدم اطاقہم الصوم فی هذا السن قلت: یختلف ذلک باختلاف الجسم واختلاف الوقت صیفا وشتاء ، والظاهر انہ یؤمر بقدر الاطاقة اذا لم یطق جمیع الشهر . (ردالمحتار ج: ۲ ص: ۴۰۹ . سعید)
- (۵) (۱) فتاوی دار العلوم دیوبند ج: ۱ ص: ۴۹۱ . ط: دارالاشاعت ، کراچی)

## بچہ مالک نصاب اور بالغ ہے

اگر بچہ مالک نصاب ہے، اور اس کا ولی اس کی طرف سے صدقہ فطر ادا نہ کرے تو اس بچہ پر بالغ ہونے کے بعد اپنا صدقہ فطر ادا کرنا لازم ہوگا۔ (۱)

## بچے کو چبا کر کھلانا

(۱) روزہ دار عورت کے لئے بلا ضرورت اپنے منہ سے کوئی چیز چبا کر چھوٹے بچے کو کھلانا مکروہ ہے۔ البتہ اگر اس کی ضرورت اور مجبوری ہو تو مکروہ نہیں ہے۔ (۲)  
(۲) اگر کسی نے لقمہ دوسرے کو کھلانے کے لئے چبایا پھر اس کو نگل گیا تو کفارہ لازم نہیں ہوگا صرف قضا واجب ہوگی۔ (۳)

## بد نصیب

(۱) حضرت عبادہ بن صامت رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ آپ ﷺ نے ایک مرتبہ رمضان کے قریب فرمایا کہ رمضان کا مہینہ آ گیا ہے جو بڑی برکت والا ہے، حق تعالیٰ شانہ اس میں تمہاری طرف متوجہ ہوتے ہیں اور اپنی رحمت خاصہ نازل فرماتے ہیں، خطاؤں کو معاف فرماتے ہیں اور دعا کو قبول کرتے ہیں، تمہارے تنافس (عبادت میں) ایک دوسرے کو آگے بڑھنے) کو دیکھتے ہیں اور ملائکہ سے فخر کرتے ہیں، پس اللہ کو اپنی نیکی دکھاؤ، بد نصیب ہے وہ شخص جو اس مہینے میں بھی اللہ کی رحمت سے محروم رہ

(۱) فیجب علی الولی او الوسی اخر اجماع من مال الصبی والمجنون حتی لو لم یخرجهما وجب الاداء بعد البلوغ. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۵۲. ط: سعید)  
(۲) ولا یأس للمرأة ان تمضغ لصبیها الطعام اذا لم یکن لہابد منه. (تاتارخانیہ ج: ۲ ص: ۳۸۰. ادارة القرآن)

(۳) ولا کفارة فی الظاہر فی ابتلاع اللقمة الممصوغة لغيره کذا فی الوجیز للکوردی عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۳. رشیدیہ)

جائے۔ (طبرانی)۔ (۱)

(۲) حضرت کعب بن عجرہ رضی اللہ عنہ سے ایک لمبی روایت ہے، اس میں یہ ہے کہ آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا کہ اس وقت جبرئیلؑ میرے سامنے آئے تھے اور جب منبر کے پہلے درجہ پر قدم رکھا تو کہا ہلاک ہو جائے وہ شخص جس نے رمضان المبارک کا مہینہ پایا، پھر بھی اس کی مغفرت نہ ہوئی، میں نے اس بددعا پر آمین کہا۔ (۲)

اس حدیث میں اللہ کے سب سے زیادہ مقرب اور معصوم فرشتہ حضرت جبرئیلؑ علیہ السلام نے بددعا کی اور امام الانبیاء ﷺ نے اس پر آمین کہی، تو قبولیت میں کوئی شک نہیں۔ اللہ تعالیٰ ہم سب کو اس سے بچائے کہ رمضان المبارک جیسا خیر و برکت کا مہینہ بھی غفلت اور گناہوں میں گزر جائے اور مغفرت نہ ہو۔

## برکات رمضان

(۱) امام ربانی مجدد الف ثانیؒ نے فرمایا کہ رمضان المبارک کے مہینے میں اتنی برکات کا نزول ہوتا ہے کہ بقیہ پورے سال کی برکتوں کو رمضان المبارک کی برکتوں کے ساتھ وہ نسبت بھی نہیں جو قطرے کو سمندر کے ساتھ ہوتی ہے۔ اسی لئے اللہ جل شانہ نے اپنا قرآن اسی مہینے میں نازل فرمایا بلکہ جتنی بھی آسمانی کتابیں نازل ہوئیں سب کی سب رمضان المبارک میں نازل کی گئیں۔

(۱) عن عبادة بن الصامت أن رسول الله ﷺ قال يوما حضر رمضان أتاكم رمضان شهر بركة يغشاكم الله فيه فينزل الرحمة ويحط الخطايا، ويستجيب فيه الدعاء ينظر الله تعالى إلى تنافسكم فيه، ويباهي بكم ملائكته فأروا الله من أنفسكم خيرا فإن الشقي من حرم فيه رحمة الله عز وجل رواه الطبراني ورواته ثقات (الترغيب والترهيب ج: ۲ ص: ۲۲۲. مصر)

(۲) وعن كعب بن عجرة رضي الله عنه ..... قال ان جبريل عليه السلام عرض لي فقال بعد من ادرك رمضان فلم يغفر له قلت آمين (الترغيب والترهيب ج: ۲ ص: ۲۱۵) شركة مكتبة ومطبعة مصطفى البابي الحلبي واولاده بمصر

(۲) رمضان المبارک اتنا بابرکت مہینہ ہے کہ اس کے ایک ایک لمحہ کی برکت

پانے والے ابدال اور ولی بنتے ہیں۔

## بڑھاپے کی وجہ سے روزے پر قادر نہیں

اگر کوئی مرد یا عورت بڑھاپے یا دائم المرض ہونے کی وجہ سے رمضان کا روزہ رکھنے پر قادر نہیں اور مستقبل میں بھی قادر ہونے کی کوئی امید نہیں، اور صحت کی امید بھی نہیں تو ہر روزے کے بدلہ میں تقریباً دو کلو گرام یا اس کی قیمت فدیہ میں دے سکتا ہے، لیکن اس کے بعد اگر صحت یاب ہو گیا تو دوبارہ قضا کرنا ضروری ہے۔ (۱)

## بغل کے بال

(۱) روزے کے دوران بغل کے بال لینا جائز ہے، اس سے روزے پر کوئی اثر

نہیں پڑے گا۔ (۲)

(۲) بغل کے بال مونڈنا اور اکھاڑنا دونوں درست ہیں۔ البتہ اکھاڑنا افضل

ہے۔ اس میں تین فائدے ہیں: (۳)

(الف) بال دیر سے نکلیں گے، اس لئے جلد جلد صفائی کی حاجت پیش نہیں آئے گی۔

(۱) (ومنہا کبر السن) فالشیخ الفانی الذی لایقدر علی الصیام یفطر ویطعم لكل یوم مسکینا کما یطعم فی الکفارة کذا فی الهدایة والعجوز مثله کذا فی السراج الوہاج وهو الذی کل یوم فی نقص الی ان یموت کذا فی البحر الرائق..... ولوقدر علی الصیام بعد ما فدی بطل حکم الفداء الذی فذاه حتی یجب علیہ الصوم ہکذا فی النہایة. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷. رشیدیہ کوئٹہ)

(۲) کیونکہ یہ منافی صوم نہیں۔ الصوم فی الشرع الامساک عن المفطرات الثلاث حقیقة او حکما فی وقت مخصوص من شخص مخصوص مع النیة (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۵۹. سعید)

(۳) (۱) قوله ”وتنظیف بدنه“ بنحو ازالة الشعر من ابطه، ویجوز فیہ الحلق والتنف اولی. (فتاوی شامی ج: ۶ ص: ۴۰۶. ایچ ایم سعید)

(ب) بغل میں بوکم سے کم پیدا ہوگی۔

(ج) جب دوبارہ بال نکلیں گے تو چھین گئے نہیں۔

البتہ اکھاڑنے کی عادت نہ ہو تو مونڈھ لیا کرے۔

(۳) دائیں بغل سے ابتداء کرنا مستحب ہے۔

(۴) نورہ، بال صاف کرنے والے صابون سے بھی بغل کے بال لینا جائز ہے۔

معنی ج: ۱ ص: ۸۷۔

## بلغم

روزے کے دوران عمداً بلغم کو اندر سے باہر نکال کر تھوک دینے سے روزہ فاسد

نہیں ہوگا۔ ہاں اگر بلغم پیٹ سے منہ میں آ کر رک جائے اور مقدار بھی زیادہ ہے اور

اس کو قصداً نگل لیا جائے تو امام ابو یوسفؒ کے نزدیک روزہ فاسد ہو جائے گا۔

اور امام ابو حنیفہؒ کے نزدیک روزہ فاسد نہیں ہوگا، اس لئے احتیاط ضروری ہے۔ (۱)

## بواسیر

(۱) اگر کوئی شخص خونی بواسیر کے مرض میں مبتلا ہے، روزہ رکھنے کی صورت میں

خون آنے لگتا ہے اور بواسیر کے مسے بھی پھول جاتے ہیں اور بڑی تکلیف ہوتی ہے

(۱) سنل ابراہیم عمن ابتلع بلغما، قال ان كان أقل من ملء فيه لا ينقض اجتماعاً وان كان

ملء فيه ينقض صومه عند أبي يوسف وعند أبي حنيفة لا ينقض. (فتاویٰ شامی ج: ۲ ص:

۴۰۰، ۴۱۵. ایچ ایم سعید)

وقوله هذا أحسن من قولهما هكذا في فتح القدير. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۴. رشیدیہ)

قوله "فان كان بلغا" ای صاعداً من الجوف، اما اذا كان نازلاً من الرأس، فلا خلاف في عدم

افساده الصوم فتاویٰ، (فتاویٰ شامی ج: ۲ ص: ۴۱۵. ایچ ایم سعید)

اور روزہ نہ رکھنے سے صحیح رہتا ہے تو ایسے مریض کو رمضان شریف میں روزہ نہ رکھنے کی اجازت ہے۔ جب تندرست ہونے کے بعد روزہ رکھنے کے قابل ہو جائے تو اس وقت فوت شدہ روزوں کی قضا کرے، فدیہ دینا اس کو کافی نہیں ہے۔ (۱)

البتہ ایسے مریض کو جس کا مرض دائمی ہو اور صحت سے ناامید ہو تو فدیہ دینا جائز ہوگا، ہاں اگر فدیہ دینے کے بعد تندرست ہو گیا اور روزہ رکھنے کے قابل ہو گیا تو فدیہ باطل ہو جائے گا اور فوت شدہ روزوں کی قضا کرنا لازم ہوگا۔

(۲) روزے کی حالت میں مقعد کے اندر بوا سیر کے مسوں کے زخم پر مرہم یا تیل لگانا منع ہے۔ اگر دوا یا تیل اس حد تک پہنچ جائے جہاں سے معدہ اس کو جذب کر لیتا ہے یا وہ خود معدے میں پہنچ جاتا ہے تو روزہ فاسد ہو جائے گا اور اگر اس حد تک نہ پہنچے تو پہنچنے کا احتمال ہے، احتمال کی وجہ سے مکروہ ہوگا، لہذا احتیاط ضروری ہے۔ (۲)

(۳) اگر پاخانہ کے وقت بوا سیر کے مٹے باہر آ جاتے ہیں تو استنجاء کرنے کے بعد اندر کرنے سے پہلے خشک کرنا ضروری ہے، ورنہ وہ پانی اندر جانے کی صورت میں روزہ فاسد ہو جائے گا۔ (۳)

(۱) وان خاف زيادة العلة وامتداده فكذا عندنا وعليه القضاء اذا اقطر (تاتارخانیہ ج: ۲ ص: ۳۸۳. ادارة القرآن) وفي البحر الرائق: وللشيخ الفاني وهو (بفدى فقط) اى له الفطر و عليه الفدية وليست على غيره من المریض. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۸۶) وفي الهندية ولو قدر على الصيام بعد ما فدى بطل حكم الفداء الذى فداه حتى يجب عليه الصوم. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷. رشیدیہ کوئٹہ)

(۲) واذا خرج دبره وهو صائم ينبغي ان لا يقوم من مقامه حتى ينشف ذلك الموضع بخرقه كيلا يدخل الماء جوفه فيفسد صومه..... والصائم اذا استقصى في الاستنجاء حتى بلغ الماء مبلغ الحقنة يفسد صومه. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۴. رشیدیہ کوئٹہ)

## بوس و کنار

روزے کی حالت میں بیوی سے بوس و کنار جائز ہے۔ روزہ فاسد نہیں ہوگا، البتہ جو ان آدمی کے لئے روزے کے دوران بوس و کنار سے پرہیز کرنا چاہیے تاکہ ہمبستری کی طرف رغبت نہ ہو یا انزال نہ ہو۔ اگر انزال ہو جائے تو روزہ فاسد ہو جائے گا۔ قضا لازم ہوگی اور اگر ہمبستری کر لی تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے اور کفارہ مسلسل ساٹھ روزے ہیں، اگر درمیان میں ایک روزہ بھی چھوڑ دیا تو پھر دوبارہ نئے سرے سے شروع کرنا لازم ہوگا۔ (۱)

## بوسہ لینا

اگر روزے کے دوران بیوی کا بوسہ لینے میں انزال کا خوف نہ ہو یا نفس کے بے اختیار ہو کر جماع کرنے کا خطرہ نہ ہو تو اس صورت میں بیوی کا بوسہ لینا مکروہ نہیں ہوگا۔ اور اگر بوسہ لینے میں انزال کا خوف ہے یا جماع کا اندیشہ ہے تو اس حالت میں روزے کے دوران بیوی کا بوسہ لینا مکروہ ہوگا۔ (۲)

(۱) ولا بأس بالقبلة اذا امن على نفسه من الجماع والانزال ويكره ان لم يأمن والمس في جميع ذلك كالقبلة (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۷۶) واذا قبل امرأته وانزل فسد صومه من غير كفارة كذا في المحيط. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۴. رشیدیہ کوئٹہ)  
من جامع عمدا في احد السبيلين فعليه القضاء والكفارة ولا يشترط الانزال في محلين كذا في الهداية (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۵). رشیدیہ کوئٹہ  
ومن جامع ..... قضی و كفر كفارة الظهار (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۷۶. ایچ ایم سعید)  
وفي سورة المجادلة: فصيام شهرين متتابعين (آیت: ۴)  
(۲) حوالہ مذکورہ (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۷۶. رشیدیہ کوئٹہ)

## بہتر فطرہ

سب سے بہتر فطرہ کشمش، بھجور، جو اور گندم کی بجائے اس کی قیمت دینا ہے تاکہ غریب مستحق آدمی اپنی ضروریات کے مطابق چیز خرید سکے۔ (۱)

## بھوک کی وجہ سے روزہ توڑ دینا

(۱) اگر روزہ دار کو بھوک کا اس قدر غلبہ ہو کہ اگر کچھ نہیں کھائے گا تو مر جائے گا یا عقل میں فتور آ جائے گا تو اس صورت میں روزہ توڑنے کا اختیار ہوگا، صرف قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۲)

(۲) اور بھوک اگر اس قدر زیادہ نہیں تو اس صورت میں روزہ توڑنے کی صورت میں قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے۔ (۳)

## بھول سے کھانا

(۱) اگر روزہ دار بھول کر کھاپی لے تو روزہ فاسد نہیں ہوتا، بدستور باقی رہتا ہے چاہے پیٹ بھر کر کھاپی لے یا متعدد مرتبہ کھاپی لے، تب بھی یہی حکم ہے۔ (۴)

(۲) اگر روزہ دار بھول کر کھاپی رہا تھا اس دوران یاد آ گیا کہ وہ روزہ دار ہے تو

(۱) وما يتادى به هذه الصدقة.... ثلاثة اشياء الحنطة والشعير والتمر..... وكان الشيخ ابو جعفر يقول اداء القيمة في ديارنا الفضل وفي الظهيرية وعليه الفتوى (تاتار خانيہ ج: ۲ ص: ۱۹۴)۔  
 (۲) ومنها العطش والجوع كذلك اذا خيف منهما الهلاك أو نقصان العقل كالامة اذا ضعفت عن العمل وخشيت الهلاك بالصوم (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷.. رشیدیہ)  
 (۳) فالصائم اذا اكل الخبز او الاطعمة..... عليه القضاء والكفارة عندنا هكذا في فتاوی قاضی خان (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۵.. رشیدیہ كوئٹہ)  
 (۴) (۱) اذا اكل الصائم او شرب او جامع ناسيالم يفطرو ولا فرق بين الفرض والنفل كذا في الهداية (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۲)۔ رشیدیہ كوئٹہ

فوراً منہ کے اندر جو کچھ ہے باہر پھینک دے، اندر نگلے نہیں، ورنہ روزہ فاسد ہو جائے گا اور قضا لازم ہوگی۔ (۱)

(۳) بھول کر کھانے پینے کے بعد یہ گمان کیا کہ روزہ فاسد ہو گیا، پھر قصداً کھایا تو روزہ فاسد ہو گیا، قضا ضروری ہے۔ (۲)

(۴) اگر کسی آدمی نے کسی روزہ دار کو بھول کر کھاتے پیتے ہوئے دیکھا تو روزہ یاد دلانا چاہیے یا نہیں، اس بارے میں تفصیل یہ ہے کہ اگر روزہ دار اس قدر طاقتور ہے کہ روزے سے زیادہ تکلیف نہیں ہوتی تو روزہ یاد دلانا واجب ہے، اور اگر اس آدمی میں روزہ رکھنے کی قوت و طاقت کم ہے، روزے سے تکلیف ہوتی ہے تو اس کو یاد نہ دلانے کھانے دے۔ (۳)

## بے نمازی کا روزہ

جو شخص رمضان شریف میں روزہ رکھتا ہے اور نماز نہیں پڑھتا تو اس کا روزہ درست ہو جائے گا اور نماز نہ پڑھنے کا گناہ ہوگا، فوت شدہ نماز کی قضا لازم ہے۔ واضح رہے کہ نماز اور روزہ دونوں الگ الگ فرض ہیں۔ ایک دوسرے پر موقوف نہیں ہے۔ روزہ رکھنے کی صورت میں روزہ کی گرفت سے بچ جائے گا اور نماز نہ پڑھنے کی وجہ سے

- 
- (۱) واذا اكل او شرب ناسيا فليذكر او كان طلع الفجر وهو ياكل ويشرب فقطع الشرب او القى اللقمة فصومه تام (تاتارخانیہ ج: ۲ ص: ۳۷۲. ادارة القرآن والعلوم الاسلامیہ)
- (۲) لو اكل او شرب او جامع ناسيا و ظن ان ذلك فطره فاكل متعمدا لا كفارة عليه. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۶. رشیدیہ کوئٹہ)
- (۳) ویذکرہ لوقویا والالا (قولہ ویذکر) ای لزوما كما فی الولوجیة فیکره ترکہ تحریمًا بحر (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۵. ایچ ایم سعید)
-

گرفت ہوگی اور عذاب ہوگا۔ (۱)

## بیوی کا صدقہ فطر

(۱) اگر بیوی مالدار صاحب نصاب ہے تو فطرہ ادا کرنا اس پر واجب ہے، شوہر پر نہیں۔ اگر شوہر بیوی کی طرف سے صدقہ فطر ادا کر دے گا تو صدقہ فطر ادا ہو جائے گا اور بیوی پر احسان ہوگا۔ (۲)

(۲) ہمارے یہاں چونکہ بیویاں کماتی نہیں اس لئے عام طور پر صدقہ فطر شوہر ادا کرتا ہے۔ اگر شوہر ادا نہیں کرے گا تو بیوی کے لئے اپنا صدقہ فطر ادا کرنا واجب ہوگا۔ (۳)

## بے ہوش ہو جانا

(۱) اگر کوئی شخص رمضان کے مہینہ میں کسی دن بے ہوش ہو گیا تو جتنے دن بے ہوش رہا اتنے دنوں کے روزے قضا رکھے، البتہ جس دن بے ہوش ہوا اس ایک دن کی قضا واجب نہیں ہے، کیونکہ اس دن کا روزہ نیت کی وجہ سے درست ہو گیا۔ ہاں اگر اس دن روزہ ہی نہیں رکھا تھا یا اس دن حلق میں کوئی دوائی ڈالی گئی اور

(۱) کما فی الشامیۃ: وفيها قرأ القرآن ولم يعمل بموجه يثاب على قرأته كمن يصلي ويعصى تحته في رد قوله يثاب على قرأته وان كان يائم بترك العمل فالثواب من جهة والائم من جهة اخرى (شامی ج: ۶ ص: ۳۹۷، کتاب الحظرو الاباحۃ، فصل فی البیع، فتاوی دارالعلوم دیوبند ج: ۶ ص: ۴۹۹، دارالاشاعت).

(۲، ۳) ولا یؤدی عن زوجته ولا عن اولاده الکبار وان کانوا فی عیالہ ولو ادى عنهم او عن زوجته بغير امرهم اجزأهم استحسنانا (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۳، رشیدیہ کوئٹہ)

حلق سے اتر گئی تو اس دن کی قضا واجب ہے۔ (۱)

(۲) اگر کوئی شخص رات کو روزہ رکھنے کی نیت کرنے کے بعد بے ہوش ہوا تو اس

ایک دن کی قضا واجب نہیں ہے، باقی اور جتنے دن بے ہوش رہے سب کی قضا واجب ہے۔ ہاں اگر اس رات کو صبح کا روزہ رکھنے کی نیت نہیں تھی یا صبح کو کوئی دوائی حلق میں

ڈالی گئی تو اس دن کے روزہ کی قضا کرے۔ (۲)

(۳) اگر کوئی شخص پورے رمضان بے ہوش رہے تو ہوش میں آنے کے بعد تمام

روزہ کی قضا رکھنا لازم ہے۔ بے ہوشی کے ایام کے روزے معاف نہیں ہوں گے۔ (۳)

(۴) بے ہوش ہو جانے سے روزہ فاسد نہیں ہوتا، البتہ دوائی اور علاج کی غرض

سے روزہ توڑنا جائز ہے۔ (۴)

## (پ)

### پاک ہونا

(۱) اگر عورت رمضان شریف میں دن میں پاک ہوئی تو پاک ہونے کے بعد

سورج غروب ہونے تک کچھ کھانا پینا جائز نہیں، سورج غروب ہونے تک روزہ داروں

(۴، ۲۰۱) ویقضى باغماء سوى يوم حدث فى ليلته لانه نوع مرض يضعف القوى ولايزيل الحجا فيصير عذرا فى التأخير لافى الاسقاط. وانما لا يقضى اليوم الاول لوجود الصوم فيه وهو الامساك المقرون بالنية اذ الظاهر وجودها منه ويقضى مابعد لانعدام النية ولا فرق بين ان يحدث الاغماء فى الليل او فى النهار فى انه لا يقضى اليوم الاول وانما ذكر المصنف حدوثه فى ليلته ليعلم حكم ما اذا حدث فى اليوم بالاولى لوجود الامساك وهو ليس بمغنى عليه. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۹۰. ايچ ايم سعيد)

(۳) ولو اغمى عليه رمضان كله قضاؤه وهذا بالاجماع كذا فى معراج الدراية. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۸. رشیدیہ کوئٹہ)

کی طرح رہنا واجب ہے، لیکن یہ دن روزہ میں شمار نہ ہوگا بلکہ اس کی قضا لازم ہوگی۔ (۱)  
 (۲) اگر عورت رمضان المبارک میں رات کو حیض سے پاک ہوئی اور پورے دس دن اور دس رات حیض آیا، تو اگر پاک ہونے کے بعد رات کا کچھ حصہ بھی باقی تھا تو صبح کا روزہ رکھنا لازم ہوگا۔ (۲)

(۳) اور اگر حیض دس دن سے کم آیا اور عورت پاک ہوگئی اور پاک ہونے کے بعد رات کا اتنا حصہ باقی تھا کہ عورت جلدی سے غسل کر سکتی ہے تو صبح کا روزہ رکھنا لازم ہوگا۔ چاہے غسل کرے یا نہ کرے، روزے کی نیت کرنا لازم ہوگا۔ اگر اس وقت غسل نہیں کیا تو روزے کی نیت کر لے اور صبح کو غسل کر لے۔ (۳)

(۴) اور اگر پاک ہونے کے بعد رات کا اتنا حصہ باقی نہ تھا کہ جلدی سے غسل کر سکے تو صبح کا روزہ رکھنا جائز نہیں ہوگا، البتہ دن کو کچھ کھانا پینا جائز نہیں ہوگا بلکہ پورا دن روزہ داروں کی طرح رہنا ضروری ہوگا اور بعد میں اس دن کی قضا بھی لازم ہوگی۔ (۴)

(۵) اگر صبح ہونے کے بعد پاک ہوئی تو اب پاک ہونے کے بعد اس دن روزہ کی

(۱) او طهرت حائض..... امسك يومه وقضى ولم يكفر..... لما قدمنا ان كل من صار اهلا للزوم ولم يكن كذلك في اول اليوم فانه يجب عليه الامساك لانه وجب عليه القضاء لحق الوقت لانه وقت معظم وانما وجب القضاء على المسافر والحائض لما تقدم ان اصل الوجوب عليهما وانما المتأخر وجوب الاداء. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۹۱. ايج ايم سعيد)  
 (۲) ولو طهرت اقبل طلوع الفجر فانه ينظر ان كان الحيض عشرة ايام والنفاس اربعون يوما فعليهما قضاء صلوة العشاء ويجزيهما صومهما من الغد عن رمضان. (تاتارخانيه ج: ۲ ص: ۳۹۶. ادارة القرآن)

(۴، ۳) وان كان الحيض دون العشرة والنفاس دون اربعين فانه ينظر ان وجدتا من الليل مقدار مايسع فيه الاغتسال وساعة قبل طلوع الفجر فكذلك الجواب والا فلا يلزمها قضاء العشاء ولا يجزيهما صومهما من الغد وعليهما قضاء ذلك اليوم (تاتارخانيه ج: ۲ ص: ۳۹۸) ادارة القرآن

نیت کرنا درست نہیں، لیکن سورج غروب ہونے تک کچھ کھانا پینا بھی درست نہیں۔ (۱)

## پاگل کا حکم

(۱) اگر کوئی شخص ماہ رمضان کے شروع سے آخر تک پاگل رہا تو وہ مکلف نہیں،

اس پر رمضان کے روزوں کی قضا واجب نہیں۔ (۲)

(۲) اگر کوئی شخص پاگل تھا، رمضان کے کسی دن افاقہ ہو گیا تو اس روزے کی قضا

واجب ہے۔ (۳)

(۳) اگر کوئی شخص صبح صادق سے غروب آفتاب تک پاگل رہا تو اس دن کا روزہ

رکھنا واجب نہیں۔ (۴)

## پان

(۱) اگر روزہ دار سحری کے بعد صبح صادق سے پہلے منہ میں پان رکھ کر سو گیا اور صبح

صادق کے بعد بیدار ہوا تو اس صورت میں منہ میں پان ہو یا نہ ہو دونوں صورتوں میں

روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی۔ اس لئے سحری میں پان کھانے کی صورت

(۱) واما الحائض والنفساء ان طهرتا بعد طلوع الفجر فلا يجزيهما صوم ذلك اليوم

(تاتارخانیہ ج: ۲ ص: ۳۹۸) ولا ياكل بقية يومه. (تاتارخانیہ ج: ۲ ص: ۳۹۷. ادارة القرآن)

(۱) قال محمد: اذا جن رمضان كله ليس عليه قضاءه (تاتارخانیہ ج: ۲ ص: ۳۹۶. ادارة)

(۲) وفي الجنون اذا استوعب الشهر كذلك فان افاق في شيء من رمضان يلزمه الصوم

(خلاصة الفتاوى ج: ۱ ص: ۲۵۱. مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)

وبجنون غير ممتد ای يقضيه اذا فاته بجنون غير ممتد وهو ان لا يستوعب الشهر (البحر الرائق

ج: ۲ ص: ۲۹۰. ایچ ایم سعید)

(۳) اغمى عليه اوجن بعد ما غربت الشمس وبقي كذلك اياما لم يقض يوم تلك الليلة لانه

ان كان يعلم انه نوى الصوم فظاهر وان لم يعلم فظاهر حاله النية والعمل بظاهر الحال واجب

(عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۸. مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)

میں صبح صادق سے پہلے پہلے کلی وغیرہ کر کے منہ کو اچھی طرح صاف کر لے ورنہ روزہ فاسد ہو جائے گا، کیونکہ پان صحیح سالم باقی رہنے کی صورت میں اس کا عرق حلق میں جانے کا احتمال غالب ہے، اس غالب احتمال کی وجہ سے بھی روزہ فاسد ہو جائے گا۔  
(امداد الفتاویٰ ج: ۱ ص: ۱۷۲۔ (۱))

(۲) اگر روزہ دار نے سونے سے پہلے پان تھوک دیا، لیکن کلی یا غرغہ نہیں کیا اور سو گیا تو اس صورت میں اگر منہ میں چنے کے برابر یا اس سے زیادہ پان رہ گیا تھا تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی اور اگر اس سے کم تھا تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، قضا لازم نہیں ہوگی۔ (۲)

## پانی

(۱) اگر کوئی روزہ دار روزے کے دوران قصد پانی پی لے تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوگا۔ (۳)

(۲) اگر بھول سے پانی پی لیا، روزہ یا نہیں تھا تو روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۴)

(۳) اگر کوئی روزہ دار سوتے ہوئے پانی پی لے تو اس کا روزہ فاسد ہو جائے گا،

(۱) وان افطر خطاء كان تمضمض فسبقه الماء أو شرب نالما..... قضی فی الصور کلھا فقط درالمختار شامی ج: ۲ ص: ۴۰۱. ایچ ایم سعید

(۲) وان اكل ما بين اسنانه لم يفسد ان كان قليلا وان كان كثيرا يفسد والحمصة وما فوقها كثير وما دونها قليل (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۲. مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)

(۳) او اكل او شرب عمدا غداء او دواء قضی وكفر ككفارة الظهار. البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۷۶، ایچ ایم سعید

(۴) اذا اكل الصائم او شرب او جامع ناسي لم يفطر ولا فرق بين الفرض والنفل (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۲. مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)

قضا واجب ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۱)

(۴) پانی میں ریح خارج کرنے اور غوطہ لگانے سے بھی کچھ نہیں ہوگا اور اگر ریح خارج ہوتے وقت مقعد سے پانی اندر تک پہنچ جائے تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی کفارہ نہیں۔ (۲)

## پائیریا کی پیپ کا منہ میں جانا

پائیریا ایک مستقل بیماری ہے، پیپ منہ میں پیدا ہوتی ہے اس سے احتراز ممکن نہیں، پیپ کی مقدار بھی کم اور تھوک سے مغلوب ہوتی ہے اس لئے روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۳)

## پان کی سرخی نکلنا

(۱) اگر سحری کے وقت پان کھایا لیکن صبح صادق سے پہلے پہلے کلی وغیرہ کر کے منہ کو صاف نہیں کیا اور اس کے اجزاء منہ میں رہ گئے اور صبح صادق کے بعد پان کی سرخی

(۱) النائم اذا شرب ففسد صومه وليس هو كالناسي لان النائم او ذاهب العقل اذا ذبح لم توكل ذبيحته وتوكل ذبيحة من نسي كذا في فتاوى قاضى خان. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۲،

مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ) فتاویٰ شامی ج: ۲ ص: ۴۰۱. ایچ ایم سعید

(۲) ولوفسا او شرط فی الماء لا یفسد الصوم، ویکره له ذلك (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۹)

رشیدہ) واذا خرج دبره وهو صائم ینبغی ان لا یقوم من مقامه حتی ینشف ذلك الموضع بخرقه کئی لا یدخل الماء جوفه لیفسد صومه، ولهذا قالوا لا یتنفس فی الاستنجاء اذا کان صائما (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۴. مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)

(۳) الدم اذا خرج من الانسان ودخل حلقه ان كانت الغلبة للزاق لا یضره وان كانت الغلبة للدم ففسد صومه وان کان سواء الفسد ایضا استحسانا..... ومالیس بمقصود بالأكل ولا یمكن الاحتراز عنه كالذباب اذا وصل الى جوف الصائم لم یفطر كذا فی ایضاح الکرمانی (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۳. مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)

تھوک میں موجود تھی اور ایسے تھوک کو نگل لیا تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی۔ (۱)

(۲) اور اگر پان کھانے کے بعد صبح صادق سے پہلے اچھی طرح کلی کر کے منہ صاف کر لیا تھا، اس کے اجزاء منہ میں نہ رہے، لیکن اس کے باوجود تھوک میں سرخی کا اثر باقی رہا اور اس کو نگل لیا تو روزہ فاسد نہیں ہوگا تاہم ایسے لوگوں کو منہ کی صفائی میں زیادہ سے زیادہ احتیاط کرنا چاہیے۔ (۲)

### پسینہ

اگر چہرے کا پسینہ روزہ دار کے منہ میں داخل ہو تو اگر معمولی ہو جیسے ایک دو قطرے تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، اور اگر بہت زیادہ پسینہ جمع ہو جائے پھر اس کو نگل جائے تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی۔ (۳)

- 
- (۱) الدم اذا خرج من الانسان الخ (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۳۔ مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)  
ایضاً: صائم عمل عمل الابرسم فادخل الابرسم فی فیہ وخرجت منه خضرة الصبغ او صفوته او حموته واختلف بالريق فصار الريق اخضر او اصفر او احمر فابتلعه وهوذا كرسومه فسد صومه. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۳۔ مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)
- (۲) الدم اذا خرج من الانسان ودخل حلقه ان كانت الغلبة للبزاق لا يضره. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۳)، وفي الشامية: أو بقي بلل فی فیہ بعد المضمضة وابتلعه مع الريق قطع أدوية ومص اهليلج..... لم يفطر ج: ۲ ص: ۳۹۶، ایچ ایم سعید) قلت: يفهم منه حکم ما بقی من حمرة التبول فی فم الصائم لم يفطر (بہشتی زیور تیر احمر ص: ۱۱ کتب خانہ صدیقیہ ملتان)۔
- (۳) وفي واقعات الصدر الشهيد: الدمع اذا دخل فم الصائم اذا كان قليلا كالقطرة و الفطرتين لا يفسد صومه وفي الخلاصة وان وجد ملوحته وان كان كثيرا حتى وجد ملوحته فی جميع فمه وابتلعه يفسد صومه وكذا الجواب فی عرق الوجه. (تاتارخانیہ ج: ۲ ص: ۳۶۹۔ ادارة القرآن والعلوم الاسلامیہ)
-

## پھول سوگھنا

روزہ کی حالت میں پھول سوگھنا جائز ہے، اس سے روزہ پر کوئی اثر نہیں پڑتا۔ (۱)

## پیاس کی وجہ سے روزہ توڑ دینا

(۱) اگر روزہ دار کو پیاس کی شدت کی وجہ سے ہلاکت اور موت کا خوف ہو گیا یا عقل میں فتور آنے کا خطرہ ہو گیا تو اس صورت میں پانی پی کر جان بچانے کی اجازت ہوگی۔ صرف قضا لازم ہوگی کفارہ نہیں۔ (۲)

(۲) اگر پیاس کی شدت کی وجہ سے ہلاکت یا مرض کا اندیشہ ہو تو مجبوراً روزہ توڑنے کی اجازت ہوگی صرف قضا لازم ہوگی کفارہ نہیں۔ (۳)

(۳) اگر پیاس کی شدت کے بغیر پانی پی لیا تو قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے۔ (۴)

(۴) مثلاً آتش زدگی کی وجہ سے شدید پیاسا ہو گیا اور جان کا خطرہ ہو گیا تو اس صورت میں جان بچانے کی غرض سے پانی پینے کی صورت میں صرف قضا لازم ہوگی کفارہ نہیں۔ (۵)

## پیاس سے بے تاب ہو جانا

کسی کام کی وجہ سے بے حد پیاس لگ گئی اور اتنی بے تابی ہو گئی کہ اب جان جانے کا خوف ہے تو روزہ کھول ڈالنا درست ہے، لیکن اگر خود اس نے قصداً اتنا کام کیا

(۱) لا یکرہ للصائم شم رائحة المسک والورد ونحوہ (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۷ ط: سعید)

(۲، ۳، ۴) الباب الخامس فی الاعذار التي تبیح الافطار: ومنها العطش والجوع كذلك اذا خيف منهما الهلاك او نقصان العقل..... وخشيت الهلاك بالصوم (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷ مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)

(۵) اکل او شرب عمدا غداء او دواء قضی و کفر (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۷۶ ط: سعید)

جس سے ایسی حالت ہوگئی تو گناہگار ہوگا۔ (۱)

## پیر اور جمعرات کا روزہ

نبی کریم ﷺ ہر پیر اور جمعرات کو بھی روزہ رکھا کرتے تھے۔ لہذا اگر آسانی سے ممکن ہے تو ہمت کر کے یہ روزے بھی رکھ لے تاکہ یہ ثواب بھی مل جائے۔ آخرت میں ایک ایک نیکی کی بڑی ضرورت ہوگی۔ (۲)

## پیشاب بند ہو جانا

اگر روزہ کے دوران پیشاب بند ہونے کی صورت میں ڈاکٹر مٹانے میں نکی ڈال کر پیشاب کراتے ہیں تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، اس لئے کہ مٹانے اور عضو تناسل کا تعلق پیٹ سے نہیں ہوتا۔ (۳)

## (ت)

## ترکیز پر اپہننا

روزے میں ترکیز پر اپہننا جائز ہے، اس سے روزے میں کچھ فرق نہیں آتا۔ (۴)

- (۱) قوله فان اجهد الحوالخ. قال في الوهبانية: فان اجهد الانسان بالشغل نفسه = فافطر في التكفير قولين سطروا. قال الشرنبلالی: صورته صائم اتعب نفسه في عمل حتى اجهده العطش فافطر لزمته الكفارة وقيل لاوبه الضی. (شامی ج: ۲ ص: ۴۲۰. ایچ ایم سعید)
- (۲) عن عائشة قالت كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يصوم يوم الاثنين والخميس. (مشکوٰۃ ج: ۱ ص: ۱۷۹. قدیمی کتب خانہ)
- (۳) واقطر في احليله ماء اودهنه وان وصل الى المثانة على المذهب لم يفطر (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۹. ایچ ایم سعید)
- (۴) ولا بأس للصائم ان يستقع في الماء ويصب الماء على ..... رأسه ويلتف بالثوب البلول، هو المختار (تاتارخانیہ ج: ۲ ص: ۳۸۱. ادارة القرآن)

## تمباکو

تمباکو استعمال کرنے سے روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی کفارہ نہیں۔ (۱)

## تمباکو کا پتہ جلا کر دانت صاف کرنا

روزے کے دوران تمباکو کا پتہ جلا کر ”گل“ بنا کر دانت صاف کرنا مکروہ ہے۔ اگر اس میں سے کچھ حلق میں اتر جائے گا تو روزہ فاسد ہو جائے گا۔ قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ اور اگر حلق میں نہیں جائے گا تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، البتہ حلق میں جانے کا احتمال ہونے کی وجہ سے مکروہ ہوگا۔ اس لئے صبح صادق سے پہلے دانت صاف کر لیا کرے۔ (۲)

## تھوک

- (۱) اگر کوئی روزہ دار دوسرے کا تھوک نگل گیا تو روزہ فاسد ہو گیا، قضا لازم ہے، کفارہ لازم نہیں ہے۔ (۳)
- (۲) اگر اپنا تھوک ہاتھ میں لگا کر پھر نگل جائے تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی کفارہ نہیں۔ (۴)
- (۳) اگر محبوب یا محبوبہ کا تھوک نگل گیا تو روزہ فاسد ہو جائے گا قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے۔ (۵)

(۱) لو ادخل حلقه الدخان الفطرای بآئی صورة کان الادخال. (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۵. سعد)  
 (۲) وکره ذوق شیء ومضغه بلاعذر. (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۶، عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۹. مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)  
 (۳) ولو ابتلع بزاق غیره فسد صومه بغیر کفارة الا اذا کان بزاق صدیقه فحنینذ تلزمه الکفارة (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۳)  
 (۴) وان ابتلع بزاق نفسه من یدہ فسد صومه ولا تلزمه الکفارة (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۳)

(۴) اگر کوئی روزہ دار رمضان کے روزے میں کسی بزرگ کا تھوک تبر کا چاٹ لے گا تو روزہ فاسد ہو جائے گا۔ قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے۔

## تھوک نگل جانا

روزے کی حالت میں منہ میں تھوک جمع ہو جائے اور اس کو نگل لے تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، چاہے قصداً کیوں نہ ہو۔ البتہ روزہ دار کے لئے تھوک جمع کر کے نگلنا مکروہ ہے۔ (۱)

## تیل لگانا

روزے کی حالت میں دن میں پورے جسم پر تیل لگانا جائز ہے۔ اس سے روزے میں کچھ نقصان نہیں آتا۔ (۲)

(ٹ)

## ٹوتھ پاؤڈر

ٹوتھ پیسٹ کے عنوان کے تحت ملاحظہ کریں۔

## ٹوتھ پیسٹ

روزے کی حالت میں ٹوتھ پیسٹ استعمال کرنا حلق میں اثرات جانے کے شک کی وجہ سے مکروہ ہے۔ اگر حلق میں ٹوتھ پیسٹ جائے گا تو روزہ فاسد ہو جائے گا، اس لئے روزے کے دوران ٹوتھ پیسٹ استعمال نہ کرے، بلکہ صبح صادق سے پہلے پہلے

(۱) ویکرہ للصائم ان یجمع ريقہ فی فمہ ثم یتلعه. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۹ مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)

ولوجمع الریق قصداً، ثم ابتلعه فانه لا یفسد صومه. (طحطاوی شرح المراقی ج: ۲ ص: ۳۲۵ المکتبۃ الغوثیہ)

(۲) اوادھن اواکتھل..... لم یفطر. (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۵. ایچ ایم سعید)

کر لے۔ تو تھ پاؤ ڈرکا بھی یہی حکم ہے۔ (۱)

## ٹی بی

اگر ٹی بی کے مریض کو روزہ رکھنے کی وجہ سے نقصان پہنچنے کا اندیشہ ہو اور ماہر ڈاکٹر یا حکیم منع کرے تو روزہ نہ رکھے، جب تندرست ہو جائے اور روزہ رکھنے کے قابل ہو جائے تو فوت شدہ روزوں کی قضا کرے اور اگر موت تک صحت کی توقع نہیں ہے تو فدیہ دے دے اور ایک روزے کا فدیہ ایک صدقہ فطر کے برابر ہے اور اگر فدیہ دینے کے بعد تندرست ہو جائے تو فدیہ باطل ہو جائے گا اور فوت شدہ روزوں کی قضا لازم ہوگی۔ (۲)

## ٹیکہ لگوانا

روزے کی حالت میں جسم کے کسی بھی حصے میں ٹیکہ لگوانا جائز ہے، اس سے روزہ فاسد نہیں ہوتا۔ (۳)

(۱) وکرہ ذوق شیء ومضغه بلا عذر (شامی ج: ۲ ص: ۲۱۶، ایچ ایم سعید)

قوله ”ومص اهليلج“ ای بان مضغها فدخل البصاق حلقه ولا يدخل من عينها في جوفه لا يفسد صومه (فتاویٰ شامیہ ج: ۲ ص: ۳۹۶، ایچ ایم سعید)

(۲) المريض اذا خاف على نفسه التلف..... يفطر بالاجماع وان خاف زيادة العلة وامتداده فكذلك عندنا وعليه القضاء اذا افطر..... ثم معرفة ذلك باجتهاد المريض..... او باخبار طبيب مسلم غير ظاهر الفسق (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷، رشیدیہ کوئٹہ) ولوقدر على الصيام بعد ما فدى بطل حكم الفداء الذي فداه حتى يجب عليه الصوم (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷، مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)

(۳) لانه اثر داخل من المسام الذي هو خلل البدن والمفطر انما هو الداخل من المنافذ للاتفاق على ان من اغتسل في ماء فوجد برده في باطنه انه لا يفطر. (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۵ ط: ایچ ایم سعید کراچی)

(ج)

## جان کے خطرے کی حالت میں روزہ توڑنا

اگر روزہ دار کی مرض یا بھوک یا پیاس کی شدت کی وجہ سے جان خطرے میں ہو تو روزہ توڑنا واجب ہے۔ بعد میں قضا کرے۔ اگر روزہ نہ توڑا اور مر گیا تو گناہگار ہوگا۔ (۱)

## جان نکلنے کی حالت میں روزہ دار کو شربت وغیرہ پلانا

اگر کوئی روزہ دار جان کنی کے عالم میں ہے تو اس کو روزہ افطار کر دینا اور شربت اور دوا وغیرہ دینا درست ہے، بلکہ افطار کرنا ہی دینا چاہیے۔ (۲)

## جبرئیل علیہ السلام کی بددعا

حضرت جبرئیل علیہ السلام نے آ کر نبی کریم ﷺ کے سامنے بددعا کی کہ ”اے اللہ کے نبی! وہ شخص ہلاک ہو جائے جس نے رمضان کا مہینہ پایا اور اپنی مغفرت نہ کروائی۔“ نبی پاک ﷺ نے اس پر آمین کی مہر لگا دی۔ اول تو ایک مقرب فرشتے کی بددعا ہی کافی تھی، لیکن ہمارے آقا ﷺ نے آمین کی مہر لگا کر اس کی تاکید میں اضافہ کر دیا کہ جو آدمی رمضان کا مہینہ پائے اور مغفرت نہ کروائے تو اس کے

(۱) لمن خاف زيادة المرض الفطرتحتہ فی البحر و اشار باللام الی انه مخیر بین الصوم و الفطر لكن الفطر رخصة و الصوم عزيمة فكان الفضل الا اذا خاف الهلاك فلا فطار و واجب كذا فی البدائع. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۸۲. ایچ ایم سعید)

(۲) قوله لمن خاف زيادة المرض الفطر..... اشار باللام الی انه مخیر بین الصوم و الفطر لكن الفطر رخصة و الصوم عزيمة فكان الفضل الا اذا خاف الهلاك فلا فطار و واجب. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۸۱، ۲۸۲. ایچ ایم سعید)

ہلاک ہونے میں کوئی شک نہیں ہو سکتا۔ (۱)  
**جلق**

مشت زنی کے عنوان کے تحت ملاحظہ کریں۔

## جمائی

اگر کسی روزہ دار کو جمائی آئی اور اس نے جمائی لی، اس دوران اس کے حلق میں پانی کا قطرہ کسی جگہ سے ٹپک کر گرا تو اس کا روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ اسی طرح اگر جمائی کی حالت میں بارش کا پانی یا برف کسی کے منہ میں داخل ہوگئی تو اس کا روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۲)

## جماعت میں تاخیر

افطاری کی وجہ سے مغرب کی نماز کی جماعت میں کچھ دیر کرنا جائز ہے۔ اس میں کچھ حرج نہیں، اطمینان سے روزہ افطار کر کے جماعت شروع کر سکتے ہیں اور تاخیر کی مقدار اذان کے بعد پانچ سات منٹ ہے، اس سے زیادہ نہ کرے۔ (۳)

(۱) عن كعب بن عجرة..... قال ان جبريل عليه السلام عرض لي ، فقال بعد من ادرك رمضان فلم يغفر له قلت آمين . (الترغيب والترهيب ج: ۲ ص: ۲۱۵)  
 (۲) ولوتشاء ب فرفع رأسه فوقع في حلقه قطرة ماء انصب من ميزاب فسد صومه..... و المطر والثلج اذا دخل حلقه يفسد صومه وهو الصحيح. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۳ رشیدیہ)  
 (۳) ويستحب تعجيل الافطار قبل طلوع النجم..... ويعجل الافطار ولا يصلي المغرب قبل الافطار لانه سنة (فتاوی جامع الفوائد ص: ۷۶، میر محمد کتب خانہ، فتاوی رحیمیہ ج: ۶ ص: ۲۴۴ ط: دارالاشاعت)

ایضا فكان تاخيرها مكروها الا في يوم غيم والامن عذر سفر او مرض وحضور مائدة والتاخير قليلا لا يكره. (مراقی الفلاح ص: ۷۳، کتاب الصلوة . مکتبہ غوثیہ)

## جنت کی آرائش

حدیث پاک میں آتا ہے کہ رمضان المبارک کے آنے سے پہلے جنت کو خوشبوؤں سے دھونی دی جاتی ہے، جنت کو ایمان والوں کے لئے سجایا جاتا ہے اور جب پہلی رمضان کا دن ہوتا ہے تو اللہ رب العزت جنت کے دروازوں کو کھول دیتے ہیں، فرشتوں کو فرماتے ہیں کہ آج کے دن جنت کے دروازے ایمان والوں کے لئے کھول دیئے جائیں۔

## جنت کی سیل (SALE)

اللہ تعالیٰ رمضان المبارک میں جنت کی سیل لگاتے ہیں۔ لہذا ہر مسلمان کو چاہیے کہ جنت کو حاصل کرنے کی کوشش کرے، ورنہ جو رمضان المبارک میں محروم رہ گیا وہ کامیاب نہیں ہو سکتا۔

## جنتری کا استعمال

(۱) افطاری کا مدار غروب آفتاب پر ہے، جنتری پر نہیں۔ جنتری غروب کے تابع ہے یہ غلط بھی ہو سکتی ہے، باقی افطاری میں اس سے مدد لی جاسکتی ہے۔

لہذا جو جنتری طلوع اور غروب کا وقت بتانے میں صحیح ہو اور اس کا تجربہ بھی ہو چکا

(۱) عن ابن عباس ان رسول الله ﷺ قال ان الجنة لتزين من الحول الى الحول لشهر رمضان ، وان الحور لتزين من الحول الى الحول لصوام رمضان فاذا دخل رمضان قالت الجنة: اللهم اجعل لي في هذا الشهر ازواجا الخ. (شعب الایمان ج: ۳ ص: ۳۱۲ ط. مکتبہ دارالبازمکة المکرمه)

(۲) عن ابی هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اتاكم رمضان شهر مبارك فرض الله عليكم صيامه تفتح فيه ابواب السماء وتغلق فيه ابواب الجحيم وتغل فيه مردة الشياطين لله فيه ليلة خير من الف شهر من حرم خيرها فقد حرم. (مشکوٰۃ شریف ج: ۱ ص: ۱۷۳، کتاب الصوم الفصل الثالث ط: قدیمی کتب خانہ)

ہو تو صحیح گھڑی سے اس کے مطابق افطار کرنا جائز ہے۔ (۱)

(۲) سحری کا بھی یہی حکم ہے۔

## جنگ

اگر رمضان میں جنگ ہو رہی ہے تو اگر روزہ رکھنے کی صورت میں جنگ کے دوران کمزوری کا ڈر ہے تو روزہ نہ رکھے بعد میں قضا کرے۔ (۲)

## جنون

(۱) جنون کی حالت میں روزہ رکھنا معاف ہے، قضا لازم نہیں۔ (۳)

(۲) اگر کوئی شخص مجنون ہو گیا اور پورے رمضان پاگل رہا تو اس رمضان کے کسی بھی روزے کی قضا واجب نہیں۔ (۴)

(۳) اگر رمضان کے مہینے میں مجنون کا جنون جاتا رہا اور وہ تندرست ہو گیا اور عقل ٹھکانے آگئی تو اس وقت سے روزہ رکھنا شروع کرے۔ (۵)

(۴) اگر کسی کو ایسا جنون ہو کہ رات کو کسی وقت افاقہ نہ ہوتا ہو تو اس زمانہ کے روزوں کی قضا لازم نہیں ہوگی اور اگر کسی وقت افاقہ ہو جاتا ہے، خواہ رات کو افاقہ ہوتا

(۱) فتاویٰ دارالعلوم دیوبند مدلل ومکمل ج: ۶ ص: ۳۰۸، دارالاشاعت

(۲) الغازی اذا علم انه یقاتل العدو فی رمضان وهو یخاف الضعف فله ان یفطر۔ (ہندیہ ج: ۱ ص: ۲۰۸ قبیل الباب السادس فی النذر۔ مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)

(۳) شرط وجوبہ الاسلام والعقل والبلوغ۔ عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۵..... وعلى هذا افاق فی لیلۃ فی وسط الشهر ثم اصبح مجنونا لا قضاء علیه عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۴ (رشیدیہ)

(۴) وان استوعب جنونه کل شهر لم یقضه۔ (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۸) وفي البحر الرائق وهو مسقط للحرج ج: ۲ ص: ۲۹۰۔ ایچ ایم سعید

(۵) المجنون اذا افاق فی نہار رمضان قبل الزوال ولم یکن اکل شئاً ونوی الصوم جازع عن الفرض لان الجنون اذا لم یستوعب کان بمنزلۃ المرض والمرض لا ینافی وجوب الصوم۔ (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۸۹۔ ایچ ایم سعید)

ہو یا دن کو پھر اس دن کی قضا لازم ہوگی۔ (۱)

(۵) جنون کی وجہ سے جو روزے فوت ہو گئے ہیں ان میں نہ قضا کی ضرورت ہے نہ فدیہ کی، ہاں اگر کسی وقت افاقہ ہو جاتا ہے تو پھر اسی دن کی قضا ضروری ہے۔ (۲)

## جھوٹ

جھوٹ بولنا، جھوٹی شہادت دینا اور جھوٹی قسم کھانا بہت بڑا گناہ ہے۔ اس سے بچنا تمام مسلمانوں پر لازم ہے ورنہ آخرت میں سخت عذاب ہوگا۔ البتہ اس سے روزہ فاسد نہیں ہوتا، لیکن مکروہ ضرور ہوتا ہے۔ (۳)

## (ج)

## چاول

اگر رمضان کے مہینے میں کسی روزہ دار نے جان بوجھ کر کچے چاول کھا لیے تو روزہ فاسد ہو جائے گا، اور امام محمد کے نزدیک قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے۔ (۴)

(۱) علم الفقہ ج: ۳ ص: ۱۷۰ دارالاشاعت، کراچی، فتاویٰ شامی ج: ۲ ص: ۳۷۳، ۳۷۴ ایچ ایم سعید کراچی  
(۲) قال محمد اذا جن رمضان كله ليس عليه قضاء ه وان افاق شيئا منه لزمه قضاء مامضى (تاتارخانیہ ج: ۲ ص: ۳۹۶۔ ادارة القرآن والعلوم الاسلامیہ)

(۳) واختلف العلماء في ان الغيبة والنميمة والكذب ، هل يفطر الصائم فذهب الجمهور من الأئمة الى أنه لا يفسد بذلك، وانما التنزه عن ذلك من تمام الصوم . معارف السنن ج: ۵ ص: ۳۶۶ ، شامی ج: ۲ ص: ۴۱۲۔ ایچ ایم سعید

(۴) ولواكل الارزو والجاروس لاتجب فيه الكفارة ، (فتاویٰ عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۲، رشیدیہ) وفي الدقيق والارزو المعجن لاتجب الكفارة الا عند محمد (تبیین الحقائق ج: ۲ ص: ۱۷۶) عدا کچا گوشت یا چاول کھانے سے قضا و کفارہ لازم ہے۔ فتاویٰ دارالعلوم دیوبند ج: ۲ ص: ۲۷۷، نظام الفتاویٰ ج: ۲ ص: ۱۷۲، مکتبہ رحمانیہ

وفي نوادر ابن هشام : اذا ابتلع سمسمة كانت بين اسنانه ، لا يفسد صومه ، وان تناولها من الخارج وابتلعها فسد صومه ، وتكلم في وجوب الكفارة ، والمختار هو الوجوب ، قاضی خان علی هامش الہندیہ ج: ۱ ص: ۲۰۸۔ رشیدیہ کوئٹہ

## چکھنا

(۱) اگر زبان سے کوئی چیز چکھ کر تھوک دی تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، لیکن ضرورت کے بغیر ایسا کرنا مکروہ ہے۔ (۱)

(۲) اگر کسی کا شوہر بڑا دمزاں ہے اور یہ ڈر ہے کہ اگر سالن میں نمک درست نہ ہوا تو پریشان کر دے گا تو اس کو نمک چکھنا درست ہے اور مکروہ نہیں ہے۔ (۲)

## (ح)

## حائضہ کا رمضان میں کھانا پینا

حائضہ کو رمضان میں کھانا پینا جائز ہے۔ البتہ دوسروں کے سامنے نہ کھائے تو زیادہ بہتر ہے۔ (۳)

## حاملہ

(۱) اگر حاملہ کو اپنی یا اپنے بچے کی مضرت کا گمان غالب ہو، خواہ وہ گمان اس کا واقع کے مطابق نکلے یا نہیں، دونوں صورتوں میں روزہ نہ رکھنے کی اجازت ہوگی اور بعد میں قضا کرے گی۔ (۴)

(۱) ویکرہ للصائم ان یدوق شینا بلسانہ ..... انما یکرہ اذا کان له منه بد اما اذا لم یکن له منه بد بان احتاج الی شراء شیء ما کول وخاف انه ان لم یدق یغبن فیہ اولایوافقه لایکرہ (تاتارخانیہ ج: ۲ ص: ۳۸۰، فتاویٰ شامی ج: ۲ ص: ۴۱۶۔ ایچ ایم سعید)

(۲) وفي فتاویٰ النسفی ان کان زوجها سیئ الخلق بذی اللسان یضایقها فی ملوحة الطعام فلا بأس به. (تاتارخانیہ ج: ۲ ص: ۳۸۰، فتاویٰ شامی ج: ۲ ص: ۴۱۶۔ ایچ ایم سعید)

(۳) واجمعوا علی انه لا یجب التشبه علی الحائض والنفساء (خلاصة الفتاویٰ ج: ۱ ص: ۲۶۳۔

رشیدیہ) ومن لم یکن علی تلك الصفة لم یجب الامساك کما فی حالة الحيض والنفساء ثم قیل الحائض تاكل سرا لاجهرا وقیل تاكل سرا وجهرا (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۸۹۔ سعید)

(۴) وقال فی الاصل: اذا خافت الحامل او المرضع علی انفسهما او علی ولدھما جاز الفطر =

اور اگر اپنی یا اپنے بچے کی مضرت کا گمان غالب نہ ہو تو روزہ رکھنا لازم ہوگا۔

(۲) حاملہ کو ایسی بات پیش آگئی جس سے اپنی جان یا بچے کی جان کا اندیشہ ہے تو روزہ توڑ ڈالنا درست ہے۔ روزہ توڑنے کی صورت میں صرف قضا لازم ہوگی۔ (۱)

### حقہ

(۱) روزے میں حقہ پینے سے روزہ ٹوٹ جاتا ہے، صرف قضا لازم آتی ہے، کفارہ نہیں۔ ہاں اگر روزہ دار نے حقہ کو نفع بخش سمجھ کر پیا تو قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے۔ (۲)

(۲) جو لوگ حقہ پینے کے عادی ہیں اگر وہ رمضان کے روزے کی حالت میں قصداً حقہ پیئیں گے تو ان پر قضا اور کفارہ دونوں واجب ہوں گے۔ (۳)

(۳) اگر کوئی شخص حقے کا عادی نہیں ہے، لیکن کسی فائدے کے پیش نظر رمضان کے روزے میں قصداً حقہ پیا ہے تو روزہ فاسد ہو گیا۔ قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے۔ (۴)

### حمل چیک کرانا

حمل کے ابتدائی ایام میں لیڈی ڈاکٹر بعض مرتبہ دستانہ پہن کر اور بعض مرتبہ دستانے کے بغیر حاملہ کی شرمگاہ میں انگلی ڈال کر معائنہ کرتی ہے، آیا اس سے روزہ فاسد ہوتا ہے یا نہیں۔

= و علیہما القضاء. (تاتارخانیہ ج: ۲، ص: ۳۸۴. ادارة القرآن والعلوم الاسلامیہ)

(۱) (الحامل والمرضع اذا خافتا على انفسهما او ولدتهما افطرتا وقضتا ولا كفارة عليهما) (عالمگیری ج: ۱، ص: ۲۰۷. مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)

(۲) (وبه علم حکم شرب الدخان ونظمه الشرنبلالی فی شرحه علی الوہابیہ بقوله ویمنع من بیع الدخان وشربه. وشاربه فی الصوم لاشک یفطر. ویلزمہ التکفیر لو ظن نافعاً کذا دافعاً شهوات بطن فقرروا (شامی ج: ۲، ص: ۳۹۵). ایچ ایم سعید)

اس بارے میں حکم یہ ہے کہ اگر لیڈی ڈاکٹر خشک دستانہ پہن کر یا خشک انگلی داخل کر کے معائنہ کرتی ہے تو روزہ فاسد نہیں ہوگا اور اگر گیلیا دستانہ یا گیلی انگلی شرمگاہ میں داخل کرتی ہے یا ایک مرتبہ خشک دستانہ یا خشک انگلی داخل کرنے کے بعد جب اسے رطوبت لگ جائے نکال کر دوبارہ داخل کر دیا تو روزہ فاسد ہو گیا، قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۱)

## حیض

(۱) عورت کے لئے حیض کے دوران روزہ رکھنا اور نماز پڑھنا جائز نہیں ہے۔ (۲)

(۲) پاک ہونے کے بعد روزہ رکھنا شروع کرے، اگر رمضان باقی ہے، اور جو روزے رہ گئے بعد میں قضا کی نیت سے رکھ لے باقی نماز معاف ہے اس کی قضا کی ضرورت نہیں۔ (۳)

(۳) اگر عورت حیض میں تھی، رمضان کے دن پاک ہوگئی تو سورج غروب ہونے تک کھانے پینے کی اجازت نہیں ہوگی بلکہ روزہ داروں کے مانند رہنا لازم ہوگا اور اس دن کا روزہ بھی بعد میں قضا کی نیت سے رکھنا لازم ہوگا اور فوت شدہ روزہ بھی رکھنا لازم ہوگا۔ (۴)

(۴) اگر عورت رمضان میں پاک تھی اور روزہ دار تھی، دن میں خون آنا شروع

(۱) (أو أدخل أصبعه اليابسة فيه) أي دبره أو فرجها ولو مبتلة فسد.

(قولہ ولومبتلة فسد) لبقاء شيء من البلة في الداخل وهذا لو أدخل الأصبع إلى موضع المحقنة كما يعلم مما بعده. (شامی: ۲: ص: ۲۹۷. ایچ ایم سعید)

(۲) يمنع (ای الحيض) صلاة مطلقا ولو سجدة شكرو صوماي يحرمه ويمنع صحته لا وجوبه. (فتاوی شامی ج: ۱ ص: ۲۹۰. ایچ ایم سعید)

(۳) الحائض والنفساء لا تصومان وتقضيان. (نثار خانیہ ج: ۲ ص: ۳۸۷. ادارة القرآن)

(۴) او طهرت حائض ..... امسك يومه وقضى ولم يكفر. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۹۱.

ایچ ایم سعید)

ہو گیا تو روزہ فاسد ہو گیا، اس کے بعد کھانے پینے کی اجازت ہوگی، ایام حیض کے فوت شدہ روزوں کے ساتھ جس دن خون آنا شروع ہوا اس دن کا روزہ بھی بعد میں رکھنا لازم ہوگا۔ (۱)

(۵) حیض اس خون کو کہا جاتا ہے جو تندرست بالغ عورت کے رحم سے کم سے کم پندرہ دن کے وقفے سے آتا ہو، اس کی مدت کم سے کم تین دن تین رات اور زیادہ سے زیادہ دس دن دس رات ہے۔ اور اگر اس سے زائد ہے تو وہ حیض کے حکم میں نہیں بلکہ استحاضہ ہوگا، استحاضہ کے دوران روزہ رکھنا اور نماز پڑھنا لازم ہے۔ (۲)

(۶) حیض کے دوران ہمبستری کرنا، قرآن مجید کو ہاتھ لگانا، قرآن مجید کی تلاوت کرنا، مسجد میں جانا، نماز پڑھنا، روزہ رکھنا، بیت اللہ کا طواف کرنا ناجائز اور حرام ہے۔ لہذا ان چیزوں سے احتراز کیا جائے۔ (۳)

(۷) البتہ حیض کے زمانے کی نماز بالکل معاف ہو جاتی ہے۔ پاک ہونے کے بعد اس کی قضا واجب نہیں ہوتی لیکن روزہ معاف نہیں ہوتا، پاک ہونے کے بعد قضا رکھنا لازم ہوتا ہے۔ (۴)

(۸) اگر فرض نماز کے دوران حیض آ گیا تو وہ نماز معاف ہو جائے گی۔ پاک

(۱) إذا حاضت المرأة أو نفست فطرت وقضت بخلاف الصلوة. (فتاویٰ ناتار خانہ ج: ۲ ص: ۲۷۲. ط: إدارة القرآن والعلوم الاسلامیہ)

(۲) وهو دم ينفضه رحم امرأة سليمة عن داء وصغرواقله ثلاثة ايام واكثره عشرة فما نقص من ذلك اوزاد استحاضة. (البحر الرائق ج: ۱ ص: ۱۹۰. ط: ایچ ایم سعید)

(۳) واما حکم الحيض ..... فممنع جواز الصلوة والصوم وقرأة القرآن ومس المصحف

الابغلاف ودخول المسجد والطواف بالبيت (بدائع الصنائع ج: ۱ ص: ۴۴ ط: ایچ ایم سعید)

(۴) (ومنها) ان يقطع عن الحائض والنفساء الصلوة فلا تقضى ..... (ومنها) ان يحرم عليهما الصوم فقط بانه. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۳۸. مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)

ہونے کے بعد اس کی قضا لازم نہیں ہوگی۔ (۱)

(۹) اگر نفل یا سنت نماز پڑھنے کے دوران حیض آ گیا تو پاک ہونے کے بعد

اس کی قضا لازم ہوگی۔ (۲)

(۱۰) اگر آدھے روزے کے بعد حیض آ گیا تو وہ روزہ فاسد ہو گیا۔ پاک

ہونے کے بعد اس کی قضا لازم ہوگی۔ (۳)

(۱۱) اگر نفل روزہ میں حیض آ جائے تو اس کی قضا لازم ہوگی۔ (۴)

(۱۲) اگر کفارے کے روزوں کے درمیان حیض کی وجہ سے ناغہ ہو جائے اور تسلسل

برقرار نہ رہے تو یہ شرعاً معسر نہیں۔ ماہواری ختم ہوتے ہی فوراً روزہ شروع کر دے۔ اسی

طرح ساٹھ روزے پے در پے پورے کرے، اگر ماہواری ختم ہونے کے بعد ایک دن کا

بھی ناغہ کرے گی تو پھر نئے سرے سے ساٹھ روزے رکھنے ہوں گے۔ (۵)

(۱۳) رمضان کے روزے میں جس وقت بھی عورت کو حیض آ جائے چاہے دن

کا ٹھوڑا سا حصہ باقی ہو وہ روزہ فاسد ہو گیا۔ بعد میں اس کی قضا لازم ہوگی۔ (۶)

(نوٹ) نفل روزے کا بھی یہی حکم ہے۔

اب ذیل میں حیض کے بعض مسائل ”مسائل روزہ“ نامی کتاب سے نقل کئے

(۲، ۱) لو افتحت الصلوة فی آخر الوقت ثم حاضت لایلزمها قضاء هذه الصلوة بخلاف التطوع

(عالمگیری ج: ۱ ص: ۳۸) وفي الشامية: قوله (قضتهما) للزومهما بالشروع ج: ۱ ص: ۲۹۱

(۳) لتوضأت ووضعت الكرسف ثم احست بنزول الدم اليه قبل الغروب ثم رفعته بعده

تقضى الصوم. (البحر الرائق ج: ۱ ص: ۱۹۱ ط: سعید)

(۴) واذا شرعت فی صوم النفل ثم حاضت يلزمها القضاء. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۳۸. رشیدیہ)

(۵) ولا یقطع التابع فی صوم كفارة القتل والقطر. (البحر الرائق كتاب الطهارة باب الحيض

ج: ۱ ص: ۱۹۴ ط: ایچ ایم سعید)

(۶) لتوضأت ووضعت الكرسف ثم احست بنزول الدم اليه قبل الغروب ثم رفعته بعده

تقضى الصوم. (البحر الرائق ج: ۱ ص: ۱۹۱ ط: ایچ ایم سعید)

جار ہے ہیں۔

مسئلہ (۱۴) اگر تین دن تو ہو گئے لیکن تین راتیں نہیں ہوئیں جیسے جمعہ کی صبح سے خون آیا اور اتوار کی شام کے وقت بعد مغرب بند ہو گیا تب بھی یہ حیض نہیں بلکہ استحاضہ ہے۔ اگر تین دن رات سے ذرا بھی کم ہوا تو وہ حیض نہیں بلکہ استحاضہ ہے۔ (۱)

مسئلہ (۱۵) حیض کی مدت کے اندر سرخ، زرد، سبز، خاک کی مٹیالہ سیاہ جو رنگ آئے وہ سب حیض ہے، جب تک پیڑیا گدی (جو کپڑا رکھتی ہیں) بالکل سفید نہ دکھلائی دے اور جب بالکل سفید رہے جیسی کے رکھی گئی تھی تو اب حیض سے پاک ہو گئی۔ (۲)

مسئلہ (۱۶) نو برس سے پہلے اور پچپن سال کے بعد کسی کو حیض نہیں آتا۔ اس لئے نو برس سے چھوٹی لڑکی کو جو خون آئے گا وہ حیض نہیں ہے بلکہ استحاضہ ہے۔ یعنی نو سال سے پہلے تو بالکل حیض نہیں آتا ہے اس لئے جو خون نو سال سے پہلے آئے گا وہ کسی صورت میں حیض نہیں ہو سکتا اور پچپن سال کے بعد عام طور پر جو عادت ہے وہ یہی ہے کہ حیض نہیں آتا لیکن آنا ممکن ہے اس لئے کہ اگر پچپن برس بعد خون آجائے تو ان خاص عورتوں میں جن کا ذکر کیا گیا ہے اس کو حیض کہا جائے گا، البتہ اگر اس عورت کو اس عمر سے پہلے بھی زرد یا سبز یا خاک کی رنگ آتا ہو تو پچپن برس بعد بھی یہ رنگ حیض سمجھے جائیں گے، اور اگر عادت کے خلاف ایسا ہوا تو حیض نہیں بلکہ استحاضہ ہے۔ (۳)

(۱) واقله ثلاثة ايام واكثره عشرة فمانقص من ذلك اوزاد استحاضة..... حتى لورأت عند طلوع الفجر يوم السبت ،وانقطع عند غروب الشمس يوم الاثنين لايكون حيضا(البحر الرائق ج: ۱ ص: ۱۹۱ ط: سعيد)

(۲) ان الوان الدماء ستة السواد والحمرة والصفرة والكدره والخضرة والترية..... و كل هذه الالوان حيض في ايام الحيض الى ان ترى البياض. (البحر الرائق ج: ۱ ص: ۱۹۲)

(۳) وهو من تسع سنين الى الایاس..... الایاس مقدر بخمس وخمسين سنة وهو المختار..... وعليه الفتوى..... فمارأت بعدها لايكون حيضا. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۳۶ رشیدیہ)

مسئلہ (۱۷) کسی کو ہمیشہ تین دن یا چار دن خون آتا ہے، پھر کسی مہینے میں زیادہ آ گیا لیکن دس دن سے زیادہ نہیں آیا وہ سب حیض ہے اور اگر دس دن سے بھی زیادہ بڑھ گیا تو جتنے دن پہلے سے عادت کے ہیں اتنا تو حیض باقی سب استحاضہ ہے۔ اس کی مثال یہ ہے کہ کسی کو ہمیشہ تین دن حیض آنے کی عادت ہے، لیکن کسی مہینے میں نو دن یا دس دن رات آیا تو یہ سب حیض ہے اور اگر دس دن سے ایک لمحہ بھی زیادہ خون آئے تو وہی تین دن حیض کے ہیں اور باقی دنوں کا سب استحاضہ ہے، ان دنوں کی نمازیں قضا پڑھنا واجب ہے۔ (۱)

مسئلہ (۱۸) ایک عورت ہے جس کی کوئی عادت مقرر نہیں ہے، کبھی چار دن خون آتا ہے اور کبھی سات دن، اسی طرح بدلتا رہتا ہے۔ کبھی دس دن بھی آ جاتا ہے تو یہ سب حیض ہے۔ ایسی عورت کو اگر کبھی دس دن رات سے زیادہ خون آئے تو دیکھو اس سے پہلے مہینے میں کتنے دن حیض آیا تھا، بس اتنے ہی دن حیض کے اور باقی سب استحاضہ ہے۔ (۲)

مسئلہ (۱۹) کسی کو ہمیشہ چار دن آتا ہے اور پھر ایک مہینہ میں پانچ دن خون آیا اور اس کے بعد دوسرے مہینہ میں پندرہ دن خون آیا تو اس پندرہ دن میں سے پانچ دن حیض کے ہیں اور دس دن استحاضہ اور پہلی عادت کا اعتبار نہیں کریں گے اور یہ سمجھیں گے کہ عادت بدل گئی اور پانچ دن کی عادت ہو گئی۔ (۳)

مسئلہ (۲۰) کسی کو دس دن سے زیادہ خون آیا اور اس کو اپنی پہلی عادت بالکل یاد نہیں کہ پہلے مہینے میں کتنے دن خون آیا تھا تو اس کے مسئلے بہت باریک ہیں، جن کا

(۱) لوزادت ولم تجاوز العشرة كان الكل حيضا بالاتفاق. (البحر الرائق ج: ۱ ص: ۲۰۳ سعید)

وان جاوز العشرة ففي ..... المعتادة معروفتها في الحيض حيض والطهر طهر. (عالمگیری)

ج: ۱ ص: ۳۷ ط: رشیدیہ)

(۲) ایضاً (۳) ایضاً

سمجھنا بہت مشکل ہے اور ایسا اتفاق بھی کم پڑتا ہے، اس لئے ہم اس کا حکم بیان نہیں کرتے، اگر کبھی ضرورت پڑے تو کسی مقتدر عالم سے پوچھنا چاہیے۔ (۱)

مسئلہ (۲۱) کسی لڑکی نے پہلے پہل خون دیکھا تو اگر دس دن یا اس سے کم آئے سب حیض ہے اور جو دس دن سے زیادہ آئے تو پورے دس دن حیض ہے اور جتنا زیادہ ہو وہ سب استحاضہ ہے۔ (۲)

مسئلہ (۲۲) کسی نے پہلے پہل خون دیکھا اور وہ کسی طرح بند نہیں ہوا، کئی مہینے تک برابر آتا رہا تو جس دن خون آیا ہے اس دن سے لے کر دس دن رات حیض ہے، اس کے بعد بیس دن استحاضہ ہے۔ اسی طرح برابر دس دن حیض اور بیس دن استحاضہ سمجھا جائے گا۔ (۳)

مسئلہ (۲۳) دو حیض کے درمیان میں پاک رہنے کی مدت کم سے کم پندرہ دن ہیں اور زیادہ کی کوئی حد نہیں، سو اگر کسی وجہ سے کسی کو حیض آنا بند ہو جائے تو جتنے مہینے تک خون نہ آئے گا پاک رہے گی۔ (۴)

مسئلہ (۲۴) اگر کسی کو تین دن رات خون آیا پھر پندرہ دن پاک رہی، پھر تین دن رات خون آیا تو تین دن پہلے کے اور تین دن جو پندرہ دن کے بعد ہیں حیض کے

(۱)

(۲) فان لم يعاواز العشرة فالطهر والدم كلاهما حيض سواء كانت مبتدأة او معتادة وان جاوز العشرة ففي المبتدأة حيضها عشرة ايام. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۳۷. ط: رشیدیہ)  
(۳) اذا بلغت مستمرة الدم فيقدر حيضها بعشرة ايام من كل شهر وباقيه طهر. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۳۷. ط: رشیدیہ)

ان المبتدأة اذا استمر دمها فحيضها في كل شهر عشرة وطهرها عشرون. (فتاوی شامی ج: ۱ ص: ۲۸۶. ط: سعید)

(۴) واقل الطهر خمسة عشر يوما ولا غاية لاكثره. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۳۷. ط: رشیدیہ)

ہیں اور بیچ میں پندرہ دن پاکی کا زمانہ ہے۔ (۱)

مسئلہ (۲۵) اگر ایک دن یا دو دن خون آیا، پھر پندرہ دن پاک رہی، پھر ایک یا دو دن خون آیا تو بیچ میں پندرہ دن تو پاکی کا زمانہ ہی ہے اور اگر ایک یا دو دن خون آیا ہے وہ بھی حیض نہیں ہے بلکہ استحاضہ ہے۔ (۲)

مسئلہ (۲۶) اگر ایک دن یا کئی دن خون آیا، پھر پندرہ دن سے کم پاک رہی، اس کا کچھ اعتبار نہیں ہے بلکہ یوں سمجھیں گے کہ گویا اول سے آخر تک برابر خون جاری رہا، پس جتنے دن حیض آنے کی عادت ہوا اتنے دن تو حیض کے ہی ہیں، باقی سب استحاضہ ہے، مثال اس کی یہ ہے کہ کسی کو ہر مہینے کی پہلی اور دوسری اور تیسری تاریخ کو حیض آنے کا معمول ہے، پھر کسی مہینہ میں ایسا ہوا کہ پہلی تاریخ کو خون آیا پھر چودہ دن پاک رہی، پھر ایک دن خون آیا تو ایسا سمجھیں گے کہ سولہ دن برابر خون آیا، پس اس میں سے تین دن اول کے تو حیض کے ہیں اور تیرہ دن استحاضہ ہے اور اگر چوتھی یا پانچویں، چھٹی تاریخ حیض کی عادت تھی تو یہی تاریخیں حیض کی ہیں اور تین دن اول کے اور دس دن بعد کے استحاضہ کے ہیں اور اگر اس کی کچھ عادت نہ ہو بلکہ پہلے پہل خون آیا ہو تو دس دن حیض ہے اور چھ دن استحاضہ ہے۔ (۳)

(۱) اذا كان الطهر خمسة عشر يوما واكثر يعتبر فاصلا فيجعل كل واحد من الدمين او احدهما بانفراده حيضا. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۳۷. رشیدیہ)

(۲) قوله فمانقص من ذلك اوزاد استحاضة ای مانقص من الاقل اوزاد علی الاکثر فهو استحاضة. (البحر الرائق ج: ۱ ص: ۱۹۲) و اقل الطهر خمسة عشر يوما باجماع الصحابة رضی اللہ عنہم (البحر الرائق ج: ۱ ص: ۲۰۸. سعید)

(۳) فلورات مبتدأة يوما دما واربعة عشر طهرا ويوما دما كانت العشرة الاولى حيضا يحكم ببلوغها ولورات المعتادة قبل عاداتها يوما دما وعشرة طهرا ويوما دما فالعشرة التي لم ترفها الدم حيض ان كانت عاداتها العشرة فان كانت اقل ردت الى ايام عاداتها. (البحر الرائق ج: ۱ ص: ۲۰۶، كتاب الطهارة باب الحيض. ط: سعيد کمپنی)

مسئلہ (۲۷) حمل کے زمانے میں جو خون آئے وہ بھی حیض نہیں بلکہ استحاضہ ہے، چاہے جتنا آئے۔ (۱)

مسئلہ (۲۸) بچہ پیدا ہونے کے وقت بچہ نکلنے سے پہلے جو خون آئے وہ بھی استحاضہ ہے بلکہ جب تک بچہ آدھے سے زیادہ نہ نکل آئے تب تک جو خون آئے گا اس کو استحاضہ ہی کہیں گے۔ (مسائل روزہ صفحہ ۱۰۵، صفحہ ۱۰۸)۔ (۲)

(خ)

## خالی مکان

اگر کسی آدمی کی ملکیت میں دو مکان ہیں ایک میں خود رہتا ہے اور ایک خالی پڑا ہے یا کرایہ پر دے رکھا ہے تو دوسرا مکان ضرورت سے زائد ہے اس مکان کی وجہ سے صدقہ فطر ادا کرنا اور قربانی کرنا لازم ہوگا۔

## خلال کرنا

(۱) سحری کے بعد خلال کر لینا چاہیے تاکہ دانتوں میں اگر گوشت کا ریشہ وغیرہ اٹکا ہوا ہے، یا کوئی اور چیز پھنسی ہوئی ہے تو وہ نکل جائے۔

(۲) اگر روزے کے دوران خلال کیا اور دانتوں کے درمیان سے گوشت کا

(۱) واما شرطه ..... فراغ الرحم عن الحبل الذى تنفس بوضعه لان الحامل لا تحيض (البحر الرائق ج: ۱ ص: ۱۹۱ ط: سعید)

ایضا : وكذا (استحاضة ماتراه الحامل ابتداء احوال ولادتها قبل خروج الولد، (عالمگیری ج: ۱ ص: ۳۸، رشیدیہ)

(۲) وماتراه حامل ولوقبل خروج اكثر الولد استحاضة. (شامی ج: ۱ ص: ۲۸۵ ط: سعید)

(۳) وهى واجبة على الحر المسلم المالك لمقدار النصاب فاضلا عن حوائجه الاصلية (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹ ط: رشیدیہ)

ریشہ وغیرہ نکلا تو اس کو تھوک دے اندر نہ نگلے۔

(۳) اگر خلال کے دوران دانتوں سے گوشت کا ٹکڑا وغیرہ نکلا اور اس کو منہ سے باہر نکالنے سے پہلے کھالیا، اگر وہ چنے کی مقدار سے کم ہے تو روزہ فاسد نہیں ہوگا اور اگر اس کی مقدار چنے کے برابر یا اس سے زیادہ ہے تو روزہ فاسد ہو جائے گا۔ اس دن کے روزے کو بھی رکھنا ہے اور اس کی جگہ پر رمضان کے بعد ایک روزہ اور بھی رکھنا ہے۔ (۱)

(۴) اگر خلال کے دوران دانتوں سے گوشت کا ریشہ وغیرہ نکلا اور اس کو منہ سے باہر نکالنے کے بعد واپس نگل لیا تو روزہ فاسد ہو جائے گا، خواہ اس کی مقدار چنے کے برابر ہو یا اس سے کم دونوں صورتوں میں روزہ فاسد ہو جائے گا۔ اس کے بدلے ایک روزہ قضا کرنا لازم ہوگا۔ (۲)

## خوشبو سو گھنا

روزے کی حالت میں خوشبو سو گھنا درست ہے اور اس سے روزے میں کچھ نقصان نہیں آتا۔ (۳)

## خون

(۱) روزے کے دوران جسم کے کسی حصے سے بھی خون نکلے گا تو روزہ فاسد نہیں

- 
- (۱) اکل مابین اسنانہ لم یفسد ان کان قليلا وان کان كثيرا یفسد والحمصة وما فوقها کثیر ومادونها قليل. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۲، فتاویٰ شامی ج: ۲ ص: ۴۱۵. سعید)
- (۲) واخرجه واخذہ بیدہ ثم اکل ینبغی ان یفسد ..... قال الفقیہ والاصح انه لا تحیی الکفارة کذا فی الخلاصة. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۲). رشیدیہ
- وفی الدر المختار: الا اذا أخرجه من فمه فاکله ولا کفارة ؛ لان النفس تعافه. (فتاویٰ شامی ج: ۲ ص: ۴۱۵. ط: سعید)
- (۳) لا یکره للصائم شم رائحة المسک والورد ونحوه. (رد المحتار ج: ۲ ص: ۲۹۵. سعید)
-

ہوگا۔ البتہ وضو فاسد ہو جائے گا۔ اس لئے روزے کے دوران جسم کے کسی حصے سے بھی خون نکل جائے، پریشان ہونے کی ضرورت نہیں۔ مثلاً ایکسڈنٹ ہو گیا اور خون نکلا یا جسم کٹ گیا، خون نکلا یا نکسیر جاری ہو گئی یا بوا سیر سے خون خارج ہوا وغیرہ تو روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۱)

(۲) اگر کوئی روزہ دار دن میں سویا یا نیند سے اٹھا تو اس کے دانت میں خون تھا یہ یقین نہیں کہ سونے کے دوران خون حلق میں گیا یا نہیں تو روزہ فاسد نہیں ہوگا اور اگر یقین ہے کہ خون حلق میں گیا ہے اور خون کی مقدار تھوک سے زیادہ ہے تو اس صورت میں روزہ فاسد ہو جائے گا۔ قضا لازم ہوگی ورنہ نہیں۔ (۲)

(۳) اگر منہ سے خون نکلتا ہے، اس کو تھوک کے ساتھ نگل لیا ہے اور خون کی مقدار تھوک سے زیادہ ہے تو روزہ فاسد ہو جائے گا، ایک دن قضا کرنا لازم ہوگا۔ (۳) اور اگر خون کی مقدار تھوک سے کم ہے تو اس صورت میں روزہ فاسد نہیں ہوگا۔

(۴) روزے کے دوران اگر کسی مریض کو خون دینے کی ضرورت ہے تو خون دینا جائز ہے۔ اس سے روزہ فاسد نہیں ہوگا، البتہ اتنا خون دینا جس سے کمزوری آجائے مکروہ ہے۔ لیکن روزے پر کسی قسم کا اثر نہیں ہوگا۔ (۴)

(۵) اگر روزے کے دوران خون چڑھانے کی ضرورت ہے تو خون چڑھا سکتے روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۵)

(۱) قال النبی ﷺ الفطر مما يدخل والوضوء مما يخرج. (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۹۲) (۲) (۳، ۲) یقین لا یزول بالشک. (الاشباہ والنظائر ص: ۶۰. قدیمی کتب خانہ) ایضا: الدم اذا خرج من اللسان ودخل حلقه ان كانت الغلبة للزاق لا یضره وان كانت الغلبة للدم یفسد صومه. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۳. رشیدیہ) (۴) ولا بأس بالحجامة ان امن علی نفسه الضعف اما اذا خاف فانه یکره. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۰. ط: رشیدیہ)

(۵) الداخل من المسام لامن المسالك فلا ینافیہ کمالواغتسل بالماء البارد ووجد برده فی کبدہ. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۴۷۶، بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۹۳. ط: سعید کمپنی)

(د)

## دائم المريض ہونے کی وجہ سے روزے پر قادر نہیں

بڑھاپے کے عنوان کے تحت دیکھ لیا جائے۔ (۱)

### داڑھ

روزے میں شدید ضرورت کے تحت داڑھ نکلوانا جائز ہے۔ بلا ضرورت داڑھ نکلوانا مکروہ ہے۔ اگر خون یا دوا پیٹ کے اندر چلی جائے اور تھوک پر غالب یا اس کے برابر ہو تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۲)

### داڑھی

(۱) روزے کی حالت میں داڑھی میں تیل لگانا اور کنگھی کرنا جائز ہے۔ (۳)  
(۲) مسلمان مرد کے لئے ایک مشت داڑھی رکھنا واجب ہے، ایک مٹھی ہونے سے پہلے کا نسا حرام ہے۔ ایسا آدمی کبیرہ گناہ کا مرتکب ہو کر فاسق ہے، ایک مشت سے کم کرنا مکروہ تحریمی ہے، اس پر امام اعظم ابو حنیفہؒ، امام مالکؒ، امام شافعیؒ اور امام احمدؒ کا اجماع اور اتفاق ہے۔ (۴)

### (۳) داڑھی مونڈنے والے یا ایک مشت سے کم کرنے والے نائی کی کمائی حرام

- (۱) الذى لا يقدر على الصيام يفطر ويطعم لكل يوم مسكينا كما يطعم فى الكفارة كذا فى الهداية..... ولو قدر على الصيام بعد ما فدى بطل حكم الفداء الذى فداه حتى يجب عليه الصوم. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷. ط: رشیدیہ کوئٹہ)
- (۲) من قلع ضرره فى رمضان ودخل الدم الى جوفه فى النهار ولو نائم فيجب عليه القضاء الا ان يفرق بعدم امكان التحرز عنه فيكون كالقلى الذى عاد بنفسه فليراجع. (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۶)
- (۳) او ادهن..... اى لا يفطر لان الادهان غير مناف للصوم. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۷۳)
- (۴) ويحرم على الرجل قطع لحيته..... ولا بأس باخذ اطراف اللحية، والسنة فيها القبضة. (شامی ج: ۶ ص: ۴۰۷. ط: سعید)

ہے۔ (۱)

(۴) روزے کی حالت میں خضاب لگانا بھی جائز ہے۔ (۲)

(۵) کالا خضاب لگانا حرام ہے، اس کے علاوہ باقی رنگ کا خضاب لگانا جائز

ہے۔ (۳)

## دانت

(۱) اگر روزہ دار دانت صاف کئے بغیر سو گیا اور دانتوں میں اٹکا ہوا کھانا چنے کی مقدار یا اس سے زیادہ حلق میں اتر گیا تو روزہ ٹوٹ جائے گا، قضا واجب ہوگی کفارہ نہیں۔ اور اگر چنے کی مقدار سے کم ہے تو روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۴)

(۲) دانت کے درمیان اگر کوئی چیز چنے سے بڑی لگی ہوئی تھی اور اسے نکل گیا تو روزہ فاسد ہو گیا، اگر چنے سے چھوٹی ہے تو روزہ فاسد نہ ہوگا، لیکن مکروہ ہے۔ البتہ اگر منہ سے باہر نکال لیا تھا پھر اس کے بعد نکل لیا تو ہر حال میں روزہ ٹوٹ جائے گا، چاہے چنے کے برابر ہو یا اس سے بھی کم ہو، دونوں صورتوں میں روزہ فاسد ہو جائے گا۔ (۵)

(۳) اگر دانت سے خون نکلا اور تھوک کے ساتھ مل کر حلق کے اندر چلا گیا تو دیکھا جائے گا کہ خون زیادہ ہے یا تھوک، اگر خون زیادہ ہے تو روزہ فاسد ہے، قضا

(۱) وکل ما دی الی مالایجوز لایجوز۔ (شامی ج: ۶ ص: ۳۶۰ کتاب الحظر والاباحۃ۔ سعید)

(۲) کیونکہ یہ صوم کے منافی نہیں۔ الصوم فی الشرع الامساک عن المفطرات الثلاث حقیقۃ

او حکما فی وقت مخصوص من شخص مخصوص مع النیۃ (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۵۹)

(۳) عن جابر قال اتی بابی قحافة یوم فتح مکة ورأسه ولحیتہ کالثغامة بیاضا فقال النبی ﷺ غیروا هذا بشئ واجتنبوا السواد..... (مشکوٰۃ ص: ۳۳۸۰، قدیمی کتب خانہ)

(۴) واکل ما بین اسنانہ لم یفسد ان کان قلیلا وان کان کثیرا یفسد والحمصۃ وما فوقها

کثیر وما دونها قلیل وان اخرجه واخذہ بیدہ ثم اکل ینبغی ان یفسد وفي الکفارة اقویل قال

الفقیہ والصاح انہ لاتجب الکفارة۔ (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۲ ط: رشیدیہ کوئٹہ)

ضروری ہے، کفارہ نہیں۔ اگر تھوک زیادہ ہے تو روزہ فاسد نہیں ہوا۔ (۱)

(۴) مصنوعی دانت منہ میں لگے رہنے سے روزے پر کوئی اثر نہیں پڑے گا۔ روزہ بدستور صحیح رہے گا، کیونکہ مصنوعی دانت لگانے کے بعد اصل دانت کے حکم میں ہو جاتا ہے۔ (۲)

(۵) اگر روزے کے دوران دانت نکالنے کی شدید ضرورت ہے تو دانت نکالنا جائز ہوگا، البتہ خون حلق سے نہ اترے، اس کا خیال رکھنا ضروری ہوگا۔ اس لئے روزے کے دوران نہ نکالنا بہتر ہے۔

اگر خون یا دوا پیٹ کے اندر چلا جائے تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۳)

(۶) روزے کے دوران دانت میں درد ہونے کی صورت میں دوائی لگانا منع ہے، کیونکہ اگر دوائی اندر جائے گی تو روزہ فاسد ہوگا، قضا لازم ہوگی اور اگر دوائی اندر نہیں جائے گی تو اندر جانے کا احتمال ہے۔ لہذا اس احتمال کی وجہ سے روزہ مکروہ ہوگا۔ (۴)

(۷) اگر روزے کی حالت میں دانت سے خون نکل کر حلق میں چلا گیا تو روزہ

(۱) الدم اذا خرج من اللسان ودخل حلقه ان كانت الغلبة للبراق لا يضره وان كانت الغلبة للدم يفسد صومه. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۳ ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۲) امداد الفتاوی ج: ۲ ص: ۱۴۲. مکتبہ دارالعلوم کراچی) ولو اكل دما في ظاهر الرواية عليه القضاء دون الكفارة لأنه يستقدره الطبع (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۳. رشیدیہ کوئٹہ)

(۳) من قلع ضرره في رمضان ودخل الدم الى جوفه في النهار ولو نائما فيجب عليه القضاء الا ان يفرق بعدم امكان التحرز عنه فيكون كالقبي الذي عاد بنفسه فليراجع. (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۶)

(۴) نظیرہ: ولو مص الهلیج فدخل البراق حلقه لم يفسد ما لم يدخل عينه. (فتاوی عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۳. رشیدیہ) وفي المختار: ومفاده انه لو ادخل حلقه الدخان اطراى دخان =

فاسد ہوگا یا نہیں، اس میں یہ تفصیل ہے کہ اگر خون کی مقدار کم اور تھوک کی مقدار زیادہ ہے تو روزہ فاسد نہیں ہوگا۔

- اور اگر خون کی مقدار زیادہ یا برابر ہے تو اس صورت میں روزہ فاسد ہو جائے گا۔ (۱)
- (۸) دانت کے درمیان پھنسی ہوئی چیز جس کو تھوک یا نگلا جاسکے اور وہ چنے کے برابر ہو اگر اس کو کھالیا ہے تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۲)

### در روزہ سے روزہ توڑ دینا

اگر کسی حاملہ کو حمل کی وجہ سے کافی تکلیف ہے اور روزہ برقرار رکھنے سے حاملہ یا بچے کو کوئی نقصان پہنچنے کا ظن غالب ہو تو روزہ توڑ دینا جائز ہوگا۔ صرف قضا واجب ہوگی کفارہ نہیں۔ اس قسم کے خطرے کے بغیر روزہ توڑنا گناہ ہوگا اور کفارہ واجب ہوگا۔ البتہ اگر اسی دن غروب آفتاب سے پہلے بچہ پیدا ہو گیا تو کفارہ ساقط ہو جائے گا۔ (۳)

= كان ولو عودا او عنبرا لو ذا كرا لا مكان التحرز عنه. (ج: ۲، ص: ۳۹۵. سعید)

(۱) الدم اذا خرج من الانسان ودخل حلقه ان كانت الغلبة للزئاق لا يضره وان كانت الغلبة للدم يفسد صومه. (عالمگیری ج: ۱، ص: ۲۰۳، رشیدیہ)

(۲) أو أكل ما بين أسنانه أي لا يفطر لأنه قليل لا يمكن الاحتراز عنه..... ولم يقيد المصنف بالقلّة مع أن الكثير مفسد موجب للقضاء دون الكفارة عند أبي يوسف خلافاً للفرق، لما أن الكثير لا يبقى بين الأسنان وهو مقدار الحمصة رأى الصدر الشهيد أو ما يمكن أن يتلعه من غير ريق على ما اختاره الدبوسى واستحسنه ابن الهمام (البحر الرائق ج: ۲، ص: ۲۷۳ ایچ ایم سعید) وفى كتاب الفقه على المذاهب الأربعة ما يفسد الصوم وما لا يفسده ج: ۱ ص: ۴۴۲ مطبعة دار الكتب العلمية)

(۳) وللحامل والمرضع ان خافتا على الولد او النفس اى لهما الفطر. (تبیین الحقائق ج: ۲ ص: ۱۹۷. ایچ ایم سعید)

ایضا : ونحن نقول ان زیادة المرض وامتداده قد یفضی الى الهلاك فیجب الاحتراز عنه وطریق معرفته الاجتهاد فاذا غلب على ظنه افطروا کذا اذا اخبره طبیب مسلم حاذق. (تبیین الحقائق ج: ۲، ص: ۱۸۹. ط: سعید)

## دعا قبول ہوتی ہے

(۱) افطار کے وقت دعا قبول ہوتی ہے، اس لئے افطار کر کے یا افطار سے پہلے یا بالکل فارغ ہو کر دعا کرنا مستحب ہے۔ (۱)

(۲) روزہ دار کو ہر افطار کے وقت ایک ایسی دعا کی اجازت ہوتی ہے جس کے قبول کرنے کا خاص وعدہ ہے۔ (۲)

## دمہ

دمہ کے مریض کے لئے روزے کے دوران انہلر یا وینٹولین لینے سے روزہ فاسد ہو جائے گا، کیونکہ اس میں لیکویڈ دوائی ہوتی ہے جو پمپ کرنے کی صورت میں اندر جاتی ہے اور دوائی اندر جانے سے روزہ فاسد ہو جاتا ہے اور قضا لازم ہوگی۔ اس لئے ایسے افراد جب تک وینٹولین کے استعمال کے بغیر روزہ نہیں رکھ سکتے وہ روزہ نہ رکھیں، جب اس کے بغیر روزہ رکھنا ممکن ہو تو روزہ رکھیں اور فوت شدہ روزوں کی قضا کریں۔ (۳)

## دن بڑا ہونے کی وجہ سے روزے کا فدیہ دینا

(۱) موسم گرما میں دن بڑا ہونے کی صورت میں بھی روزہ رکھنا لازم ہے۔ دن

(۱) عن ابی ہریرۃ قال قال رسول اللہ ﷺ ثلاثۃ لاترد دعوتہم الصائم حین یفطر والامام العادل ودعوة المظلوم یرفعہا اللہ فوق الغمام وتفتح لہا ابواب السماء ویقول الرب وعزتی وجلالی لانصرنک ولوبعد حین۔ (الترغیب والترہیب ج: ۲: ص: ۲۱۲)

(۲) عن عبد اللہ بن ابی ملیکہ عن عبد اللہ یعنی ابن عمرو بن العاص قال قال رسول اللہ ﷺ ان لصائم عند فطرہ لدعوة ماترد۔ (الترغیب والترہیب ج: ۲: ص: ۲۱۲)

(۳) ومفادہ انہ لو داخل حلقہ الدخان افطرای دخان کان ولوعودا او عنبراً لوذاکر الامکان التحرز عنہ فلیتنبہ لہ کما بسطہ الشرنبلالی۔ (الدر المختار ج: ۲: ص: ۳۹۵ ط: سعید)

بڑا ہونے کی وجہ سے روزے کے بدلے میں فدیہ دینا جائز نہیں ہوگا۔ (۱)

ہاں اگر بڑھاپے یا بیماری کی وجہ سے روزہ رکھنے کی استطاعت نہیں اور آئندہ روزے رکھنے کے قابل ہونے کی امید بھی نہیں تو اس صورت میں فدیہ دینا جائز ہوگا، البتہ فدیہ دینے کے بعد اگر روزہ رکھنے کی استطاعت ہوگئی تو فدیہ باطل ہو جائے گا اور فوت شدہ روزوں کی قضا کرنا لازم ہوگا۔ (۲)

## دن میں روزہ مقرر ہونے کی وجہ

(۱) اللہ تعالیٰ کے نزدیک سب سے افضل عمل وہ ہے جس کو انجام دینے میں زیادہ مشقت ہو، رات میں لوگ گھر میں رہتے ہیں، آرام کرتے ہیں اور بیشتر حصہ نیند میں گزر جاتا ہے، لہذا اگر رات میں روزہ رکھنا فرض ہوتا تو روزے میں وہ مشقت نہ ہوتی جو دن میں روزہ رکھنے میں ہوتی ہے۔ حالانکہ اس مشقت کی وجہ سے اجر عظیم اور دائمی مغفرت نصیب ہوتی ہے۔ خاص طور پر گرمی کے موسم میں روزہ رکھنے کی صورت میں زیادہ سے زیادہ مشقت ہونے کی وجہ سے زیادہ سے زیادہ اجر ملے گا۔ (۳)

(۲) حضرت تھانوی رحمہ اللہ نے فرمایا:

چونکہ رات کا وقت بالطبع ترک شہوات و لذات کا ہے، لہذا اگر رات کا وقت

(۱) کتب علیکم الصیام کما کتب علی الذین من قبکم۔ (سورۃ البقرۃ آیت: ۱۸۳)

(۲) فالشیخ الفانی الذی لایقدر علی الصیام یفطرو یطعم لکل یوم مسکینا کما یطعم فی الکفارة والعجز مثله کذا فی البحر الرائق ولو قدر علی الصیام بعد ما فدی بطل حکم الفداء الذی فداہ حتی یجب علیہ الصوم۔ (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷۔ رشیدیہ)

(۳) فكان محل الصوم هو اليوم لا الليل ولان الحكمة التي لها شرع الصوم وهو ما ذكرنا من التقوى وتعريف قدر النعم الحامل على شكرها لا يحصل بالصوم في الليل ؛ لان ذلك لا يحصل الا بفعل ذاق على البدن مخالف للعادة وهوى النفس ولا يتحقق ذلك بالامساك في حالة النوم فلا يكون الليل محلا للصوم۔ (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۷۷ ط: ایچ ایم سعید)

روزے کے لئے قرار دیا جاتا تو عبادت کو عادت سے اور حکم شرع کو مقتضائے طبع سے امتیاز نہ ہوتا، اسی واسطے نماز تہجد اور وقت تلاوت اور مناجات شب کو قرار دیا گیا۔ (۱)

## دوا

(۱) جو دوا پیٹ یا دماغ کے زخم میں لگانے کی وجہ سے پیٹ یا دماغ کے اندر پہنچ گئی تو اس سے روزہ فاسد ہو گیا، قضا لازم ہے، کفارہ نہیں۔ (۲)

(۲) اگر دوا پیٹ یا دماغ کے زخم میں لگانے کی وجہ سے پیٹ یا دماغ کے اندر نہیں پہنچی تو روزہ درست ہے۔ (۳)

(۳) اگر دوا پیٹ یا دماغ کے علاوہ بدن کے باقی حصے کے کسی زخم میں لگائی گئی اور وہ پیٹ یا دماغ تک نہیں پہنچی تو روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۴)

(۴) اگر کوئی دوا شیشی میں بھر کر ناک سے لگا کر سونگھی جاتی ہے تاکہ اس کے اثرات اور تیزی دماغ تک پہنچ جائے تو ایسی دوا سونگھنے سے روزہ فاسد ہو جائے گا۔ (۵)

(۱) احکام اسلام عقل کی نظر میں ص: ۱۰۱، دارالاشاعت

(۲) اوداوی جانفة او آمة فوصل الدواء حقيقة. قضی فی الصور کلھا فقط، (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۲-۴۰۶. سعید)

(۳) قوله فوصل الدواء حقيقة اشار الى ان ما وقع في ظاهر الرواية من تقييد الافساد بالدواء الرطب مبني على العادة من انه يصل والافالمعتبر حقيقة الوصول حتى لو علم وصول اليابس افسد او عدم وصول الطرى لم يفسد (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۲. سعید)

(۴) واطلق الدواء فشمّل الرطب واليابس لان العبرة للوصول لالكونه رطبا او يابسا. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۷۹. سعید)

(۵) قوله انه لو ادخل حلقه الدخان اي باى صورة كان الادخال حتى لو تبخر بيخور فواوه الى نفسه واشتمه ذاكرا لصومه افطر لامكان التحرز عنه وهذا مما يغفل عنه كثير من الناس. (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۵. سعید)

## دو اسے روزہ افطار کرنا

بیمار آدمی کیلئے دو اسے روزہ افطار کرنا جائز ہے، شرعاً اس میں کوئی حرج نہیں۔ (۱)

## دو خوشیاں

(۱) نبی کریم ﷺ نے فرمایا:

روزہ دار آدمی کے لئے دو خوشیاں ہیں، جب وہ روزہ افطار کرتا ہے اس وقت بھی اس کو خوشی ملتی ہے (اللہ کے حکم پر عمل ہوا) اور قیامت کے دن وہ جب اللہ تعالیٰ سے ملاقات کرے گا تو اللہ تعالیٰ اس کو اس وقت بھی خوشی عطا کریں گے۔ (اور یہ سب سے بڑی نعمت ہے)۔ (۲)

(۲) روزہ کھولنے کے وقت حقیقی روزہ دار کو کیوں خوشی ہوتی ہے؟ اس کا سبب یہ ہے کہ انسانی جسم کی ترکیب مختلف عناصر سے ہے، غلبات شوق میں طالب کی یہ حالت ہوتی ہے کہ نفس مطمئنہ کے گھوڑے پر سوار ہو کر بے آب و دانہ جاتا ہے، نہ خود کھاتا ہے نہ نفس مطمئنہ کے گھوڑے کو کھانے دیتا ہے، کیونکہ اللہ کے دیدار کی طلب ہے اور اس طلب میں بھوکا رہنا شرط ہے، جیسا کہ حدیث میں ہے ”صوموا لرؤیتہ“ (اللہ کے دیدار کے لئے روزہ رکھو) جانے کی منزل دور ہے ”وان الی ربک المنتہی“ (منزل کی انتہا تیرے پروردگار تک ہے) سواری نے جب ایک منزل طے کی، دن مکمل ہوا، مغرب کی نماز کا وقت آ گیا، بھوکا پیاسا چلتے چلتے گھوڑا تھک گیا، روزہ دار نے افطار کیا، گویا اس کو بھی دانہ پانی ملا، سوار اور سواری دونوں کی جان میں

(۱) فتاویٰ دارالعلوم دیوبند ج: ۶ ص: ۴۹۵، البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۸۲۔ سعید

(۲) للسانم فرحتان فرحة عند فطوره وفرحة عند لقاء ربه (جمع الفوائد ج: ۱ ص: ۴۰۵)

(الترغیب والترہیب ج: ۲ ص: ۲۰۳)

جان آگئی، طاقت و قوت کے سامان سے سوار کے دل میں ایسی مسرت اور خوشی پیدا ہوئی کہ اس کے مقابلہ میں تمام خوشیاں رنج و غم کے برابر ہیں، کیونکہ یہ طاقت و قوت بہترین مقصد اور مبارک راستے میں خرچ ہوگی۔

رہی دوسری خوشی اس کے بارے میں ہمارا خیال تو یہ ہے کہ شاید ہی اس کو کوئی بیان کر سکے، کیونکہ یہ خوشی ذاتی ہے ”من لم یزقہ لم یعرف“ (جس نے نہیں چکھا نہیں جانا) اس کی شان ہے دیکھو ستر ہزار پردوں کے بعد آفتاب دیدار ہے، اس پر پردے دو قسم کے ہیں، نور اور ظلمت کے، ان میں سے ایک پردہ بھی اگر ہٹتا ہے تو برق جمال دیکھنے والے کی بصارت کو جلا دیتی ہے۔ (۱)

## دودھ پلانے والی کی رعایت

(۱) اگر کسی بچے کو دودھ پلانا کسی عورت کی ذمہ داری ہے، روزہ رکھنے کی صورت میں بچے کا نقصان ہونا گمان غالب ہے تو اس صورت میں روزہ نہ رکھنے کی گنجائش ہے، بعد میں قضا کرے۔

اور اگر دودھ پلانے کا متبادل انتظام موجود ہے تو اس صورت میں روزہ رکھنا لازم ہوگا۔ (۲)

## دودھ پلانے سے روزہ فاسد نہیں ہوتا

روزے کے دوران بچوں کو دودھ پلانے سے روزہ فاسد نہیں ہوتا، کیونکہ دودھ

(۱) مکتوبات صدی اردو، ج: ۱، ص: ۲۳۹، مکتوب نمبر: ۳۳ مطبوعہ ایچ ایم سعید کراچی

(۲) فصل فی العوارض المبیحة لعدم الصوم..... او مرضع أما كانت او ظنرا علی الظاهر خافت بغلبة الظن علی نفسها اولدها وقیده البهنسی تبعاً لابن الکمال بما اذا تعین للارضاع در مختار. (شامی ج: ۲، ص: ۴۲۲)

پلانے سے کوئی چیز اندر نہیں گئی بلکہ باہر آئی ہے، باہر آنے سے روزہ فاسد نہیں ہوتا۔ (۱)

## دھمکی

”زبردستی“ کے عنوان کے تحت دیکھیں۔

## دھواں

(۱) اگر روزے کی حالت میں بلا اختیار حلق کے اندر دھواں چلا گیا تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، کیونکہ اس سے بچنا قطعاً ناممکن ہے۔ اس لئے کہ اگر منہ بھی بند کر لے تب بھی ناک کے ذریعہ سے دھواں چلا جائے گا۔ (۲)

البتہ اگر قصداً ایسا کرے تو روزہ فاسد ہو جائے گا قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں، جیسا کہ اگر بتی جلا کر دھواں خود اپنے اختیار سے اندر لے گیا یا سگریٹ پی تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی، کیونکہ روزہ دار کیلئے اس دھوئیں سے بچنا ممکن تھا۔

(۲) روزے کی حالت میں مردے کو دھونی دینے سے روزہ فاسد نہیں ہوگا، کیونکہ یہاں مردے کو دھونی دینا ہے، دھونی کا لینا نہیں۔ (۳)

(۱) لقولہ علیہ السلام الفطر مداخل وليس مما خرج. رواہ ابو یعلیٰ الموصلی فی مسندہ (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۷۸ ط: سعید)

ایضاً: قال شمس الدین سرخسی: ولو اکره علی اکل وشرب فعليه القضاء دون الکفارة. (مبسوط سرخسی ج: ۳ ص: ۹۸. دار الکتب العلمیہ)

(۴، ۳) اودخل حلقه غبار او ذباب او دخان ولو ذاکرا استحسانا لعدم امکان التحرز عنه ..... قوله لعدم امکان التحرز عنه فاشبه الغبار والدخان لدخولهما من الانف اذا طبق القم. (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۵. سعید کمپنی)

قوله انه لو ادخل حلقه الدخان ای بای صورة کان الادخال حتی لو تبخر بخور فاواه الی نفسه واشتمه ذاکرا لمصومه افطر لا مکان التحرز عنه وهذا مما یغفل عنه کثیر من الناس. (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۵. سعید)

## ڈکار کے بعد منہ میں پانی آنا

اگر روزہ دار کو صبح صادق کے بعد ڈکاریں آتی ہیں اور ان کے ساتھ پانی آتا ہے تو اس سے روزہ فاسد نہیں ہوگا، روزہ بدستور برقرار رہے گا۔ (۱)

(ز)

## ذیابیطس

اگر کوئی شخص ذیابیطس کی بیماری کی وجہ سے کمزور اور ضعیف ہو گیا ہے، روزہ رکھنا مشکل ہے تو بیماری کی وجہ سے رمضان کا روزہ نہ رکھنا جائز ہوگا، لیکن جب تک صحت کی توقع ہو فدیہ دینا کافی نہیں ہوگا، صحت کے بعد قضا لازم ہوگی اور اگر صحت کی امید نہیں اور بیماری بھی ختم نہیں ہو رہی اور موت تک شفا ہونے کی امید نہیں تو اس صورت میں فدیہ دینا درست ہوگا اور ایک روزے کا فدیہ ایک صدقہ فطر کے برابر ہے۔ اگر فدیہ دینے کے بعد شفا ہوگئی تو فدیہ باطل ہو جائے گا اور قضا لازم ہوگی۔ (۲)

(ر)

## رال نکل جانا

اگر روزے کی حالت میں منہ میں رال جمع ہو جائے تو اس کو نکلنے سے روزہ فاسد

(۱) فتاویٰ رشیدیہ کامل ص: ۳۷۱

(۲) الذی لا یقدر علی الصیام یفطر ویطعم لكل یوم مسکینا کما یطعم فی الکفارة ..... ولو قدر علی الصیام بعد ما فدی بطل حکم الفداء الذی فداہ حتی یجب علیہ الصوم. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷. رشیدیہ)

نہیں ہوتا۔ (۱)

## رحم

(۱) روزے کی حالت میں رحم میں ربڑ کا چھلا چڑھانے سے روزہ فاسد ہو جائے

گا، قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۲)

(۲) اگر رات کو صبح صادق سے پہلے پہلے رحم پر ربڑ کا چھلا چڑھایا گیا اور دن میں

روزے کی حالت میں بدن کے اندر موجود رہا تو اس سے روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۳)

## رزق حلال سے سحری اور افطار

(۱) افطار کے وقت حلال چیزوں سے افطاری کرے اور حرام بلکہ شبہ والی چیز سے

بھی افطار نہ کرے۔ ورنہ نتیجہ یہ نکلے گا کہ صبح صادق سے سورج غروب ہونے تک تمام

دن حلال کھانے سے بھی باز رہا، جب افطار کرنے بیٹھا تو حرام رزق سے روزہ افطار کیا۔

اس کی مثال ایسی ہے کہ پورا دن محنت کر کے ایک محل بنائے اور شام کو ایک شہر

(۱) ولوسال لعابه من فيه الى ذقنه من غير ان ينقطع من داخل فمه ثم رده الى فيه وابتلعه

لا يفطره لانه لا يتم الخروج بخلاف ما اذا انقطع كذا في الظهيرية في المقطعات. في الحجة رجل له علة يخرج الماء من فمه ثم يدخل ويلهب في الحلق لا يفسد صومه كذا في التاتارخانيه .

(عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۳. رشیدیہ)

ايضا : ولو اخرج من فمه الى ذقنه لم ينقطع عما كان دخل فمه ثم رده الى فيه وابتلعه لا يفطره

. (خلاصة الفتاوى ج: ۱ ص: ۲۵۴، كتاب الصوم. ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۲) اذا ادخلت المرأة القطنه في قبلها ان انتهت الى الفرج الداخل وهو رحمها انتقض

صومها لانه تم الدخول. (المحيط البرهاني ج: ۳ ص: ۳۵۰، ادارة القرآن)

(۳) مسئلة : في امرأة تضع معها دواء وقت المجامعة (الى قوله) وهل اذا بقي ذلك الدواء

معها بعد الجماع ولم يخرج يجوز لها الصلوة والصوم بعد الغسل ام لا (الجواب) اما صومها

وصلاتها فصحيحة وان كان ذلك الدواء في جوفها (ج: ۱ ص: ۶۰) بحواله فتاوى رحيمية

ج: ۷ ص: ۲۵۷ ط: دار الاشاعت)

منہدم کر دے۔ (۱)

(۲) جس طرح زہر بدن کے لئے مہلک ہے، اسی طرح حرام رزق بھی دین کے لئے مہلک ہے۔ (۲)

(۳) حلال رزق کی مثال دوا کی ہے اور حرام رزق کی مثال زہر کی ہے۔ (۳)

## رمضان کا انتخاب

(۱) امام الانبیاء حضرت محمد رسول اللہ ﷺ کی امت پر روزہ فرض کرنے کے لئے رمضان المبارک کو کیوں منتخب کیا، اس کی اصل حکمت کیا ہے؟ وہ تو اللہ ہی جانتے ہیں، لیکن قرآن و سنت کے پیش نظر کہا جاسکتا ہے کہ اس مبارک مہینے کی بہت ساری ایسی خصوصیات ہیں جو صرف اسی مہینے کے ساتھ خاص ہیں، کسی دوسرے مہینے کو وہ خصوصیات حاصل نہیں۔

(۱) اس مہینے میں تمام آسمانی کتابیں اور صحائف کا نزول ہوا۔ خاص طور پر قرآن مجید کا نزول تو خود ہی قرآن نے ہمیں بتایا ہے۔

شہر رمضان الذی انزل فیہ القرآن (البقرة)

- 
- (۱) عن انس قال قال رسول الله ﷺ ان لله عز وجل عتقاء في كل ليلة من شهر رمضان الارجل افطر على خمر. (مجمع الزوائد ومنبع الفوائد ج: ۳ ص: ۱۵۶)
- (۲) عن جابر قال قال رسول الله ﷺ لا يدخل الجنة لحم نبت من السحت وكل لحم نبت من السحت كانت النار اولی به. رواه احمد والدارمی والبيهقی فی شعب الايمان (مشکوٰۃ شریف ج: ۱ ص: ۲۴۲، باب الکسب وطلب الحلال، الفصل الثاني. کتاب البيوع، قديمی کتب خانہ)
- (۳) عن ابی هريرة قال قال رسول الله ﷺ ان الله طيب لا يقبل الاطيبا وان الله امر المؤمنين بما امر به المرسلين فقال يا ايها الرسل كلوا من الطيبات واعملوا صالحا وقال تعالى يا ايها الذين آمنوا كلوا من طيبات ما رزقناكم الخ. (مشکوٰۃ شریف ص: ۲۴۱. کتاب البيوع باب المكسب وطلب الحلال قديمی کتب خانہ)

تفسیر مظہری میں ہے کہ رمضان المبارک کی پہلی تاریخ کو حضرت ابراہیم علیہ السلام پر صحیفے نازل ہوئے جو تعداد میں دس تھے، سات سو سال بعد چھ رمضان کو حضرت موسیٰ علیہ السلام پر توریت کا نزول ہوا۔ پانچ سو سال بعد حضرت داؤد علیہ السلام پر ۱۳ رمضان کو زبور کا نزول ہوا۔ زبور سے بارہ سو سال بعد ۱۸ رمضان کو حضرت عیسیٰ علیہ السلام پر انجیل کا نزول ہوا۔ انجیل کے پورے چھ سو سال بعد ۲۴ رمضان کو لوح محفوظ سے دنیاوی آسمان پر پورے قرآن کریم کا نزول ہوا اور اسی ماہ کی اسی تاریخ کو خاتم النبیین حضرت محمد ﷺ پر قرآن کریم کا نزول شروع ہوا۔ (تفسیر مظہری جلد ۲ صفحہ ۱۸۱ روح المعانی جلد ۲ صفحہ ۶۱)۔ (۱)

(۲) دوسری خصوصیت یہ ہے کہ نوافل کا درجہ فرائض کے برابر اور ایک فرض کا درجہ ستر فرائض کے برابر اسی ماہ میں ہو جاتا ہے۔ (۲)

(۳) تیسری خصوصیت یہ ہے کہ رمضان کے مہینے میں سرکش شیاطین زنجیروں

(۱) روی عن ابی ذر عن النبی ﷺ قال انزل صحف ابراہیم فی ثلاث لیل من رمضان ویروی فی اول لیلۃ من رمضان وانزلت توراة موسیٰ فی ست لیل من رمضان وانزل الانجیل فی ثلاث عشرة مضت من رمضان وانزل زبور داؤد فی ثمان عشر لیلۃ من رمضان وانزل القرآن علی محمد ﷺ فی الاربعۃ وعشرین لست بقین بعدها۔  
واخرج احمد والطبرانی من حدیث واثلة بن الاسقع نزلت صحف ابراہیم اول لیلۃ من رمضان وانزلت التوراة لست مضین والانجیل لثلاث عشرة والقرآن لاربع وعشرین۔  
(تفسیر مظہری ج: ۱ ص: ۱۹۵، بلوچستان بکڈپو مسجد روڈ کوئٹہ)  
وفی روح المعانی:

واخرج الامام احمد والطبرانی من حدیث واثلة بن الاسقع عن النبی ﷺ انه قال نزلت صحف ابراہیم اول لیلۃ من رمضان وانزلت التوراة لست مضین والانجیل لثلاث عشرة والقرآن لاربع وعشرین۔ (روح المعانی ج: ۲ ص: ۶۱ ادارۃ الطباعة المنیریہ)  
(۲) من تقرب فیہ بخصلۃ من الخیر کان کمین ادى فريضة فيماسواه ومن ادى فريضة فيہ کان کمین ادى سبعین فريضة فيماسواه۔ (الترغيب والترهيب ج: ۲ ص: ۲۱۷)

میں جکڑ دیئے جاتے ہیں اور جہنم کے دروازے بند کر کے جنت کے دروازوں کو کھول دیا جاتا ہے۔ (۱)

(۴) چوتھی خصوصیت یہ ہے کہ رمضان المبارک کے مہینے میں اللہ تعالیٰ نے پانچ چیزیں اس امت کو ایسی دی ہیں جو پہلے کسی بھی امت کو نہیں دیں، وہ پانچ چیزیں یہ ہیں:

(۱) روزہ دار کے منہ کی بواللہ تعالیٰ کے نزدیک مشک سے بھی زیادہ پسندیدہ ہے۔

(۲) افطار کے وقت مچھلیاں ان کے لئے مغفرت کی دعا کرتی ہیں۔

(۳) روزہ داروں کے لئے ہر روز جنت آراستہ کی جاتی ہے۔

(۴) رمضان میں سرکش شیاطین بند کر دیے جاتے ہیں تاکہ روزہ دار رمضان

میں ان برائیوں تک نہ جاسکیں جہاں غیر رمضان میں جاتے ہیں۔

(۵) رمضان کی آخری رات میں روزہ داروں کی مغفرت کر دی جاتی ہے۔ (۲)

## رمضان المبارک کے لئے مسنون دعا

نبی پاک ﷺ رجب کے مہینے سے یہ دعا کرتے تھے:

(۱) وعن ابی ہریرۃ ان رسول اللہ ﷺ قال اذا جاء رمضان فتحت ابواب الجنة وغلقت

ابواب النار وصدفت الشیاطین . (الترغیب والترغیب ج: ۲ ص: ۲۲۰ . مصر)

(۲) روى عن ابی ہریرۃ قال قال رسول اللہ ﷺ: اعطيت امتی خمس خصال فی رمضان

لم تعطهن امة قبلہم. خلوف فم الصائم اطیب عند اللہ من ریح المسک. وتستغفرلہم

الحیتان حتی یفطروا. ویزین اللہ عزوجل کل یوم جنتہ. ثم یقول یوشک عبادی الصالحون

ان یلقوا عنہم المؤنة ویصیروا الیک وتصفد فیہ مردۃ الشیاطین فلا یخلصوا فیہ الی ماکانوا

یخلصون الیہ فی غیرہ ویغفرلہم فی آخر لیلۃ. قیل یارسول اللہ . اہی لیلۃ القدر؟ قال: لا، و

لکن العامل انما یوفی اجرہ اذا قضی عملہ. رواہ احمد والبرزوا والبیہقی ورواہ ابوالشیخ ابن

حبان فی کتاب الثواب الا ان عند: "وتستغفرلہم الملائکۃ" بدل "الحیتان". (الترغیب و

الترغیب ج: ۲ ص: ۲۱۴ . شرکت مصطفی البابی الحلبي مصر)

اللهم بارک لنا فی رجب وشعبان وبلغنا رمضان  
اے اللہ! رجب اور شعبان میں ہمیں برکت عطا فرما اور ہمیں رمضان المبارک  
تک پہنچا۔ (۱)

## رمضان کا پہلا دن

امام جعفر صادقؑ فرماتے تھے کہ ہر رمضان المبارک کا جو پانچواں دن ہوتا ہے وہ  
آنے والے رمضان المبارک کا پہلا دن ہوتا ہے۔ (عجائب المخلوقات) (۲)

## رمضان کے مہینے میں روزہ فرض کرنے کی وجہ

رمضان المبارک کا مہینہ برکت والا مہینہ ہے، اس میں قرآن مجید نازل ہوا،  
بلکہ تمام آسمانی کتابیں نازل ہوئی ہیں، لہذا یہ مہینہ اللہ کی برکات نازل ہونے کا سبب  
ہے، اس لئے اس میں روزہ رکھنے سے روزے کا اصل مقصد جو ”لعلکم تتقون“  
میں موجود ہے، کامل طور پر پایا جاتا ہے۔ (۳)

## رنگین دھاگہ منہ میں لے کر بٹنا

روزے کی حالت میں رنگین دھاگہ منہ میں لے کر بٹنا، تھوک میں اس کا رنگ آ گیا

- 
- (۱) عن انسؓ قال : كان النبی ﷺ اذا دخل رجب قال اللهم بارک لنا فی رجب وشعبان وبلغنا رمضان . رواه البزار والطبرانی فی الاوسط . (مجمع الزوائد ومنیع الفوائد ج: ۳ ص: ۱۴۰ ، دار الکتاب ، بیروت ، لبنان)
- (۲) الاولی رأیت فی عجائب المخلوقات للقزوینی عن جعفر الصادقؑ خامس رمضان الماضي اول رمضان الآتی وقد امتحنوا ذلك خمسين سنة فوجدوه صحیحا الخ (نزہۃ المجالس ص: ۱۸۷ ، الجزء الاول ، کتاب الصوم)
- (۳) احکام اسلام عقل کی نظر میں ص: ۱۴۵ ، مولانا اشرف علی تھانویؒ مکتبہ کتب خانہ جمیلی اقبال ٹاؤن لاہور۔
-

تو اس تھوک کو اگر وہ نکل گیا تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہے، کفارہ لازم نہیں۔ (۱)

## روزہ ترک کرنا

(۱) شرعی عذر کے بغیر روزہ ترک کرنا ناجائز، حرام اور سخت گناہ ہے۔ (۲)

(۲) اگر کسی آدمی نے بلا عذر رمضان کے روزے نہ رکھے، بعد میں افسوس ہوا اور اس نے قضا روزے رکھ لئے تو فرض تو ادا ہو جائے گا لیکن رمضان میں روزہ رکھنے سے جتنا ثواب ملتا تھا وہ نہیں ملے گا۔

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ آپ ﷺ نے فرمایا:

من افطرو ما من رمضان من غير رخصة ولا مرض لم يقض عنه صوم الدهر كله وان صامه. (مشکوٰۃ، الکبائر) (۳)

جس آدمی نے عذر اور بیماری کے بغیر رمضان کا ایک روزہ چھوڑ دیا تو عمر بھر روزہ رکھنے سے بھی ایک روزے کی تلافی نہ ہوگی، اگرچہ قضا کے طور پر عمر بھر روزے بھی رکھ لے۔

## روزہ توڑنا

(۱) اگر رمضان کا روزہ رکھ کر بلا عذر توڑ دیا تو قضا اور کفارہ دونوں لازم ہیں۔

(۱) لم يفطر..... وكذا لو فسل الخيط بزاقه مرارا وان بقى فيه عقدا البزاق الا ان يكون مصبوغا وظهر لونه فى ريقه وابتلعه ذاكرا (درمختار ج: ۲ ص: ۴۰۰)

(۲) قوله تعالى فمن شهد منكم الشهر فليصمه..... فان الامة اجمعت على فرضية شهر رمضان لا يجعدها الا كافر الخ. (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۷۵ ط: ايج ايم سعيد)

(۳) عن ابى هريرة قال قال رسول الله ﷺ من افطرو ما من رمضان الخ (مشکوٰۃ شریف الفصل الثانى ج: ۶ ص: ۱۷۷، قديمى كتب خانه، شعب الايمان ج: ۳ ص: ۳۱۸)

کفارہ یہ ہے کہ مسلسل ساٹھ روزے رکھے جائیں، درمیان میں ایک روزے کا بھی ناغہ نہ کیا جائے، اگر درمیان میں ایک روزہ چھوڑ دیا تو دوبارہ نئے سرے سے ساٹھ روزے رکھنا لازم ہوگا۔

(۱) اگر روزہ رکھنے کی استطاعت نہیں تو ساٹھ مسکینوں کو دو وقت کھانا کھلایا جائے۔ (۱)  
(۲) اور اگر رمضان کے علاوہ کوئی دوسرا روزہ توڑ دیا تو اس کی جگہ ایک روزہ قضا کرنا لازم ہوگا۔ (۲)

(۳) اگر رمضان شریف میں کسی کا روزہ ٹوٹ گیا تو روزہ ٹوٹنے کے بعد بھی دن میں کچھ کھانا پینا اور جماع کرنا جائز نہیں، سارا دن روزے داروں کی طرح رہنا واجب ہے۔ (۳)

## روزہ توڑنا کب جائز ہوتا ہے

(۱) روزہ دار اچانک ایسا بیمار ہو گیا کہ اگر روزہ نہ توڑے گا تو موت کا خطرہ ہے یا بیماری بڑھ جائے گی تو روزہ توڑ دینا بہتر ہے۔ مثلاً اچانک پیٹ میں شدید درد شروع ہو گیا، برداشت سے باہر ہو گیا، دوا لینا ضروری ہے یا سانپ اور بچھو وغیرہ نے کاٹ لیا

(۱) اذا اكل متعمدا ما يغذي به او يتداوى به يلزمه الكفارة. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۵. رشیدیہ)  
کفارة الفطر و کفارة الظهار و احدى وهى عتق رقبة مؤمنة او كافرة فان لم يقدر على العتق فعليه صيام شهرين متتابعين وان لم يستطع فعليه اطعام ستين مسكينا فكل مسكين صاعا من تمر الخ. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۱۵. ط: رشیدیہ)

(۲) ولا كفارة بافساد صوم غير رمضان كذا فى الكنز. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۱۵. رشیدیہ)  
(۳) وكذا من وجب عليه الصوم فى اول النهار لوجود سبب الوجوب والاهلية ثم تعذر عليه المضى فيه بان افطر متعمدا او اصبح يوم الشك مفطرا ثم تبين انه من رمضان او تسحر على ظن ان الفجر لم يطلع ثم تبين انه طالع فانه يجب عليه الامساك فى بقية اليوم تشبها بالصائمين. كذا فى البدائع فى فصل حكم الصوم المؤقت الخ. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۱۴)

تو ایسی صورت میں دوا پی لینا اور روزہ توڑ دینا درست ہے۔ (۱)

(۲) اگر کسی روزہ دار کو سخت پیاس لگی اگر پانی نہیں پیے گا ہلاکت کا ڈر ہے تو ہلاکت سے بچنے کے لئے پانی پی کر روزہ توڑ دینا جائز ہے۔ قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۲)

(۳) حاملہ عورت کو کوئی ایسی بات پیش آگئی کہ اس سے اپنی جان یا بچے کی جان کا ڈر ہے تو روزہ توڑنا نہ صرف جائز ہے بلکہ بہتر ہے۔ (۳)

(۴) کھانا وغیرہ پکانے کی وجہ سے بے حد پیاس لگی اور اتنا زیادہ بے تاب ہو گیا کہ جان کا خوف ہے تو روزہ توڑ دینا جائز ہے، لیکن اگر روزہ دار نے خود قصداً اتنا کام کیا جس سے ایسی حالت ہوگئی تو گناہ گار ہوگا۔ (۴)

(۱) قوله لمن خاف زيادة المرض الفطر. لقوله تعالى فمن كان منكم مريضا او على سفر فعدة من ايام اخر. فانه اباح الفطر لكل مريض لكن القطع بان شرعية الفطر فيه انما هو لدفع الحرج وتحقق الحرج منوط بزيادة المرض او ابطاء البرء او افساد عضو. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۸۱. سعيد كمبني)

(۲) الباب الخامس في الاعذار التي تبيح الافطار..... ومنها العطش والجوع كذلك اذا خيف منهما الهلاك او نقصان العقل. . عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷، وفتاوى تاتارخانيه ج: ۲ ص: ۳۸۴. ادارة القرآن والعلوم الاسلاميه)

(۳) قوله (وللحامل والمرضع اذا خافتا على الولد والنفس) اي لهما الفطر دفعا للحرج ولقوله ﷺ ان الله وضع عن المسافر الصوم وشطر الصلوة وعن الحامل والمرضع الصوم. . البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۸۵، وفتاوى تاتارخانيه ج: ۲ ص: ۳۸۴. ادارة القرآن)

(۴) لا يجوز ان يعمل عملا يصل به الى الضعف فيخرب نصف النهار ويستريح الباقي فان قال لا يكفي كذب بأقصر ايام الشتاء فان اجهد الحرنفسه بالعمل حتى مرض فافطر ففي كفارته قولان. (الدر المختار ج: ۲ ص: ۴۲۰)

قال الشرنبلالي صورته: صائم اتعب نفسه في عمل حتى اجهدته العطش فافطر لزمته الكفارة، وقيل لا، وبه افى البقالی. (فتاوى شامی ج: ۲ ص: ۴۲۰)

## روزہ دار کی فضیلت

رمضان المبارک کے مہینے کی برکات اتنی زیادہ ہیں کہ جب کوئی آدمی روزہ رکھتا ہے تو اس روزہ دار کی بخشش اور مغفرت کے لئے ہواؤں میں پرندے، بلوں میں چوئیاں اور پانی میں مچھلیاں دعائیں کیا کرتی ہیں اور جب روزہ دار آدمی دعائیں کرتا ہے تو اللہ کے فرشتے اس کی دعاؤں پر لبیک اور آمین کہا کرتے ہیں۔ (۱)

## روزہ ڈھال ہے

روزہ تین چیزوں سے ڈھال ہے۔

(۱) نفس اور شیطان کے مکر و فریب سے ڈھال ہے۔ لہذا جو شخص خواہشات نفسانیہ سے تنگ ہے اور وساوسِ شیطانیہ میں ہر وقت گرفتار رہتا ہے، روزہ اس کے لئے تیر بہدف علاج ہے، اس سے جوانی کا نشہ اتر جائے گا اور وساوس سے نجات مل جائے گی۔ (۲)

(۲) دنیاوی پریشانی اور مصائب سے ڈھال ہے۔ لہذا جو آدمی کثرت سے روزہ رکھے گا وہ دنیا کے مصائب اور پریشانیوں سے محفوظ رہے گا۔ (۳)

(۳) قیامت کے دن دوزخ کے عذاب سے ڈھال ہوگا اور پل صراط سے گذرنا آسان ہوگا۔ (۴)

(۱) خطبات فقیر ج: ۱ ص: ۱۲۰ مامن عبد اصبح صائما الافتحت له ابواب السماء و سبحت اعضاءه ، واستغفر له اهل السماء الدنيا الى ان توارى بالحجاب..... الخ (کنز العمال ج: ۸ ص: ۴۵۵ رقم: ۲۳۶۳۰، الترغیب والترہیب ج: ۲ ص: ۲۱۴، ۲۱۵، ۲۲۳)  
(۲) الجنة الترس يحتمل ان يراد به الصوم بدفع الرجل عن المعاصي لانه يكسر النفس كما يدفع الجنة السهام وان يراد ان الصوم يدفع النار عن الصائم كالجنة. (شرح الطيبي على مشكوه المصابيح ج: ۴ ص: ۱۳۹)

## روزہ رکھنے سے بیمار ہو جانا

ایسا آدمی جو روزہ رکھنے سے ایسا بیمار ہو جاتا ہے کہ قریب المرگ ہو جاتا ہے اور روزہ رکھنے پر قادر نہیں ہوتا اور ہمیشہ ایسا ہی ہوتا ہے تو وہ شخص روزہ نہ رکھے بلکہ روزے کے بدلے میں فدیہ دے، ہاں اگر فدیہ دینے کے بعد تندرست ہو گیا، روزہ رکھنے کے قابل ہو گیا تو اس صورت میں فدیہ باطل ہو جائے گا اور فوت شدہ روزوں کی قضا کرنا لازم ہوگا۔ (۱)

## روزہ رکھنے کی طاقت نہ ہو

اگر کسی کو رمضان کے روزے رکھنے کی طاقت نہ ہو تو ساٹھ مسکینوں کو صبح و شام پیٹ بھر کر کھانا کھلا دے۔ (۲)

## روزے سے بچنے کے لئے سفر کرنا

اگر واقعی مسافر ہے تو روزہ نہ رکھنے کی اجازت ہوگی، لیکن روزے سے بچنے کے لئے حیلہ کرنا مذموم اور بری بات ہے۔ (۳)

## روزہ فرض ہے

(۱) رمضان المبارک کے روزے فرض عین ہیں، ان کی فرضیت کتاب اللہ،

(۱) والصحيح الذي يخشى ان يمرض بالصوم فهو كالمريض. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۸۱) وفي الهندية الذي لا يقدر على الصيام يفطر ويطعم لكل يوم مسكينا كما يطعم في الكفارة..... ولو قدر على الصيام بعد ما فدى بطل حكم الفداء الذي فداه حتى يجب عليه الصوم. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷. ط: رشیدیہ)

(۲) وللشيخ الفاني العاجز عن الصوم الفطر ويفدى وجوبا، في رد قوله العاجز عن الصوم ای عجزا مستمرا. (شامی ج: ۲ ص: ۴۲۷)

(۳) والسفر الذي يبيح الفطر هو ما يبيح القصر. (تاتار خانيہ ج: ۲ ص: ۳۸۳. ادارة القرآن)

سنت اور اجماع امت سے ثابت ہے۔ (۱)

(۲) رمضان المبارک کے روزوں کی فرضیت کا انکار کرنے والا کافر اور دائرۃ اسلام سے خارج ہے اور فرضیت کو ماننے کے باوجود روزہ نہ رکھنے والا فاسق اور کبیرہ گناہ کا مرتکب ہے۔ (۲)

## روزہ نہ رکھنے والے پر بھی صدقہ فطر واجب ہے

(۱) اگر کسی مالدار آدمی نے کسی وجہ سے رمضان کے روزے نہیں رکھے تو اس کا صدقہ فطر معاف نہیں ہوگا بلکہ صدقہ فطر ادا کرنا واجب ہوگا، ادا نہ کرنے کی صورت میں گناہگار ہوگا۔ (۳)

(۲) جس نے روزے رکھے، اس پر صدقہ فطر واجب ہے اور جس نے روزے نہیں رکھے اس پر بھی صدقہ فطر واجب ہے، دونوں میں کچھ فرق نہیں۔ (۴)

(۱) والدلیل علی فرضیۃ صوم شہر رمضان الكتاب والسنة والاجماع والمعقول الخ (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۷۵ ط: ایچ ایم سعید)

(۲) واما الاجماع فان الامة اجتمعت علی فرضیۃ شہر رمضان لایجحدھا الاکافر. (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۷۵ ایچ ایم سعید)

ایضا : اعلم ان الفرض ماثبت بدلیل قطعی لاشبهة فيه كالایمان والاركان الاربعة ..... حتی یکفر جاحده ویفسق تارکہ بلاعذر. (شامی ج: ۶ ص: ۳۱۳. ایچ ایم سعید)

(۴) عن نفسه متعلق بيجب وان لم يصم لعذر - تحته في رد المختار قوله وان لم يصم لعذر الظاهر انه قيد به بناء على ما هو حال المسلم من عدم تركه الصوم الا بعذر كما تقدم نظيره في باب قضاء الفرائث حيث لم يقل المتروكات ظنا بالمسلم خيرا فحينئذ تجب الفطرة وان افطر عامدا لوجود السبب وهو الرأس الذي يمونه ويلى عليه ولولم يصم كالطفل الصغير والعبد الكافر. ثم رأيت في البدائع ما يشعر بذلك حيث قال : وكذا وجود الصوم في شهر رمضان ليس بشرط لوجوب الفطرة حتى ان من افطر لكبرا ومرض أو سفلر يلزمه صدقة الفطر لان الامر باداتها مطلق عن هذا الشرط. (رد المحتار ج: ۲ ص: ۳۶۱. ایچ ایم سعید)

ومن سقط عنه صوم رمضان لكبرا ومرض فصدقة الفطر لازمة له الخ (الجواهر النيرة ج: ۱ ص: ۱۶۳)

(۳) اگر رمضان کا روزہ نہیں رکھا تو فوت شدہ روزہ رکھنا ضروری ہے، وہ معاف نہیں ہوتا، نہ رکھنے کی صورت میں آخرت میں سخت عذاب ہوگا جو برداشت کرنا ممکن نہیں ہوگا۔ (۱)

## روزہ فاسد نہیں ہوتا

درج ذیل چیزیں روزے کے لئے مفید اور مضر نہیں:

- (۱) مسواک کرنا۔ (۲)
- (۲) سریا مونچھوں پر تیل لگانا۔ (۳)
- (۳) آنکھوں میں دوا یا سرمہ ڈالنا۔ (۴)
- (۴) خوشبو سونگھنا۔ (۵)
- (۵) گرمی یا پیاس کی وجہ سے غسل کرنا۔ (۶)
- (۶) کسی قسم کا بھی انجکشن یا ٹیکہ لگوانا۔ (۷)
- (۷) بھول کر کھانا پینا۔ (۸)
- (۸) حلق میں بلا اختیار دھواں، گرد و غبار یا کبھی وغیرہ کا چلا جانا۔ (۹)

- (۱) من كان منكم مريضاً او على سفر فعدة من ايام آخر. (سورة البقرة آیت: ۱۸۴)
- (۲) لایکړه دهن شارب ولا کحل ..... ولا سواک. (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۹. سعید)
- (۳) ۴. اوادهن او اکحل او احتجم. (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۹. ط: سعید)
- (۵) لایکړه للصائم شم رائحة المسک والورد ونحوه. (رد المحتار ج: ۲ ص: ۴۱۷. ط: سعید)
- (۶) والمفطر انما هو الداخل من المنافذ للاتفاق على ان من اغتسل في ماء فوجد برده في باطنه انه لا يفطر. (رد المحتار ج: ۲ ص: ۳۹۶. ط: سعید)
- (۷) لانه اثر داخل من المسام الذي هو خلل البدن والمضرا نما هو الداخل من النافذ. (رد المحتار ج: ۲ ص: ۳۹۵. ط: سعید)
- (۸) اذا اكل الصائم او شرب او جامع ناسي لم يفطر (تنوير الابصار شامی ج: ۲ ص: ۳۹۴ ایچ ایم سعید)
- (۹) او دخل حلقه غبار او ذباب او دخان لم يفطر (تنوير الابصار شامی ج: ۲ ص: ۳۹۵ ایچ ایم سعید)

(۹) کان میں پانی کا چلا جانا۔ (۱)

(۱۰) خود بخود دتے آ جانا۔ (۲)

(۱۱) نیند میں احتلام ہو جانا۔ (۳)

(۱۲) دانتوں سے خون نکلنا بشرطیکہ حلق میں نہ جائے۔ (۴)

(۱۳) رات کو ہمبستری کی اور صبح صادق سے پہلے غسل نہ کر سکا اس کے بعد غسل

کیا تو روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۵)

## روزہ مقرر ہونے کی وجوہات

(۱) سوچنے کی بات ہے کہ اللہ تعالیٰ ایمان والوں کو سزا تو نہیں دینا چاہتے، یا اللہ اس بات پر خوش تو نہیں ہوتے کہ اللہ کے بندے بھوکے پیاسے رہیں بندوں کو بھوکا رکھ کر اسے کوئی فائدہ تو نہیں ہوتا، کیونکہ ارشاد فرمایا گیا کہ تم روزے رکھو؟ معلوم ہوتا ہے کہ اس میں روزہ داروں کا یقیناً اپنا ہی فائدہ ہے، بتلایا گیا کہ روزے اس لئے فرض کئے گئے کہ ایماندار پر ہییزگار بن جائیں۔

(۲) بھوکا پیاسا رہنے سے انسان کو رزق کی قدر معلوم ہو، اور اس کے اندر

پر ہییزگاری پیدا ہو۔

- (۱) او دخل الماء فی اذنه وان کان بقلعه (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۶ ایچ ایم سعید کمپنی)
- (۲) ولودرعه القی لم یفطره سواء کان اقل من ملء الفم او کان ملء الفم لقول النبی ﷺ ثلاث لا یفطرن الصائم القی والحجامة والاحتلام. (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۹۲ ایچ ایم سعید)
- (۳) ولو احتلم فی نہار رمضان فانزل لم یفطره. لقول النبی ﷺ ثلاث لا یفطرن الصائم القی والحجامة والاحتلام ولانه لا صنع له فیہ فیکون کالناسی. (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۹۱ ایچ ایم سعید)
- (۴) اوخرج الدم من بین اسنانه ودخل حلقه یعنی ولم یصل الی جوفه..... لم یفطر. (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۴ تا ۴۰۰ ط: ایچ ایم سعید)
- (۵) لو اصبیح جنباً فی رمضان فصوصه تام عند عامة الصحابة مثل علی وابن مسعود وزید بن ثابت. الخ. (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۹۲ ایچ ایم سعید)

(۳) نعمتوں کی قدر معلوم ہو۔

(۴) فطرت کا تقاضا یہ ہے کہ عقل کو ہمیشہ ہمیشہ کے لئے نفس پر غلبہ اور تسلط حاصل ہو مگر بعض اوقات بشری تقاضے کی بنا پر نفس عقل پر غالب آ جاتا ہے لہذا نفس کا تزکیہ، تہذیب اور صفائی ستھرائی کے لئے اسلام نے روزے کو لازم قرار دیا تاکہ روزے کی وجہ سے انسان کی عقل کو نفس پر مکمل طور پر تسلط اور غلبہ حاصل ہو۔

(۵) روزے سے خشیت، تقویٰ اور پرہیزگاری کی صفت پیدا ہو جاتی ہے۔

(۶) روزے رکھنے سے اپنی عاجزی، انکساری اور اللہ تعالیٰ کے جلال اور قدرت پر نظر پڑتی ہے۔

(۷) روزے سے چشم بصیرت کھلتی ہے۔

(۸) آخرت کی فکر ترقی کرتی ہے۔

(۹) درندگی، حیوانیت اور بہیمیت سے دوری ہوتی ہے۔ کیونکہ کھانے پینے سے حیوانیت میں ترقی ہوتی ہے۔

(۱۰) فرشتوں سے قرب اور مشابہت حاصل ہوتی ہے، وہ بھی کھاتے پیتے نہیں اور روزہ دار بھی۔

(۱۱) اللہ تعالیٰ کی شکرگزاری کا موقع ملتا ہے۔

(۱۲) دل میں انسانی ہمدردی کا جذبہ پیدا ہوتا ہے۔ کیونکہ جس آدمی نے بھوک اور پیاس کو کبھی محسوس نہ کیا ہو، وہ بھوکوں اور پیاسوں کے حال سے کیسے واقف ہو سکتا ہے اور اللہ کی نعمتوں کا شکریہ کامل طور پر کیسے ادا کر سکتا ہے، اگرچہ زبان سے شکریہ ادا کر لیتا ہے مگر جب تک اس کے معدہ میں بھوک اور پیاس کا اثر اور اس کی رگوں اور

پٹھوں میں ضعف و ناتوانی کا احساس نہ ہو وہ اللہ کی نعمتوں کا کما حقہ شکر یہ ادا نہیں کر سکتا، کیونکہ جب کسی کی کوئی محبوب اور پسندیدہ چیز کچھ وقت کے لئے گم ہو جائے تو اس کے فراق اور جدائی سے اس کے دل میں اس کی قدر معلوم ہوتی ہے۔

(۱۳) روزہ انسان کے لئے ایک روحانی غذا ہے جو آئندہ جہان میں اس کو ایک غذا کا کام دے گی، جن لوگوں نے اس غذا کو ساتھ نہیں لیا وہ اس جہان میں بھوکے اور پیاسے ہوں گے، اور ان پر اس جہان میں روحانی افلاس ظاہر ہوگا۔ کیونکہ انہوں نے اپنی غذا کو ساتھ نہیں لیا۔

(۱۴) روزہ اللہ کی محبت کا ایک عظیم نشان ہے، جیسا کہ کوئی شخص کسی کی محبت میں سرشار ہو کر کھانا پینا چھوڑ دیتا ہے، اور بیوی سے تعلقات بھی بھول جاتا ہے اسی طرح روزہ دار اللہ کی محبت میں سرشار ہو کر کھانا پینا اور بیوی سے تعلقات کو چھوڑ دیتا ہے، یہی وجہ ہے کہ روزہ اللہ کے علاوہ کسی اور کے لئے رکھنا جائز نہیں۔ (۱)

## روزہ مکروہ ہو جاتا ہے

درج ذیل امور سے روزہ مکروہ ہو جاتا ہے۔

(۱) جھوٹ بولنا، جھوٹی شہادت دینا، غیبت کرنا، پغلوں کو ری کرنا، دھوکہ دہی کرنا، لڑائی جھگڑا کرنا، جھوٹی قسم کھانا، فحش حرکات کرنا، فحش گوئی کرنا، ظلم کرنا، کسی سے عداوت، دشمنی رکھنا، اجنبی عورتوں سے ملنا جلنا، دیکھنا، سینما بنی، ٹی وی، وی سی آر دیکھنا، روزہ دار کو ان چیزوں سے اور ہر قسم کی بری چیزوں سے پرہیز کرنا چاہیے ان چیزوں سے روزہ فاسد تو نہیں ہوتا البتہ مکروہ ہو جاتا ہے اور ثواب میں کمی آ جاتی

(۱) ”احکام اسلام عقل کی نظر میں“، ص: ۱۴۳ تا ۱۴۵، (حکیم الامت مولانا اشرف علی تھانویؒ، کتب خانہ جمیلی اقبال ناؤن لاہور)

ہے۔ (۱)

(۲) روزے کی حالت میں کسی چیز کو بلا عذر چکھنا اور چبانا مکروہ ہے۔ (۲)

(۳) روزے کی حالت میں بیوی کو شہوت کے ساتھ چھونا اور بوسہ لینا، پیار کرنا

چمٹنا، لپٹنا، ہاتھ پھیرنا، بار بار دیکھنا مکروہ ہے اور اگر شہوت کے ساتھ نہ ہو تو مکروہ نہیں

اور اگر ان چیزوں سے انزال ہونے کا اندیشہ یا گمان ہو تو ایسا کرنا حرام ہے۔ (۳)

(۴) اپنے منہ میں جمع شدہ لعاب کو نگل جانا مکروہ ہے۔ (۴)

(۵) جماع کے محرکات مثلاً بوسہ لینا اور شہوت انگیز خیالات میں پڑنا اور ایسی

اشیاء یا مناظر کو دیکھنا مکروہ ہے۔ (۵)

(۱) عن ابی ہریرۃؓ قال قال رسول اللہ ﷺ: من لم يدع قول الزور والجهل والعمل به

فلا حاجة لله في ان يدع طعامه وشرابه. (ابن ماجہ ص: ۱۲۱). قدیمی کتب خانہ

اختلف العلماء في ان الغيبة والنميمة والكذب هل يفطر الصائم؟ فذهب الجمهور من الآئمة

الى انه لا يفسد بذلك، واما التنزه عن ذلك من تمام الصوم. (معارف السنن ج: ۵ ص: ۳۶۶

فتاوی شامی ج: ۲ ص: ۴۱۲. ط: ایچ ایم سعید)

(۲) وكره ذوق شيء ومضغه بالعذر كذا في الكنز (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۹. ط: رشیدیہ)

(۳) كتاب الفقه ج: ۱ ص: ۹۲۷، وفي الدر: وكره قبله ومس ومعانقة ومباشرة فاحشة ان لم

يأمن المفسد وان امن لا بأس. (فتاوی شامی ج: ۲ ص: ۲۱۷) عن ابی ہریرۃؓ انه عليه الصلوة

والسلام سأل رجل عن المباشرة للصائم، فرخص له واتاه آخر فنهاه، "فاذا الذي رخص له

شيخ، والذي نهاه شاب. (فتاوی شامی ج: ۲ ص: ۴۱۷. سعید)

وفي العالمكيرية: واذا نظرا الى امرأة بشهوة في وجهها أو فرجها كرر النظر اولا، لا يفطر اذا

انزل ج: ۱ ص: ۲۰۴. ط: رشیدیہ)

(۴) ويكره للصائم ان يجمع ريقه في فمه ثم يبتلعه كذا في الظهيرية. (عالمگیری ج: ۱ ص:

۱۹۹. ط: رشیدیہ)

(۵) اعلم ان كمان الصوم انما هو تنزيهه عن الأفعال والاقوال الشهوية والسبعية والشيطانية؛

فانها تذكر النفس الأخلاق الخسيسة، وتهيجها لهينات فاسدة، والأحتراز عما يفضي الى

الفطر ويدعوا اليه. (حجة الله البالغة ج: ۲ ص: ۱۴۱، قدیمی کتب خانہ)

- (۶) بلا عذر صبح صادق تک ناپاکی کی حالت میں رہنا بہتر نہیں ہے۔ (۱)
- (۷) روزے کی حالت میں اتنا خون دینا کہ کمزوری آجائے مکروہ ہے۔ (۲)
- (۸) روزے کی حالت میں گالی دینے سے روزہ مکروہ ہو جاتا ہے اگرچہ فاسد نہیں ہوتا۔ (۳)
- (۹) روزے کی حالت میں ٹوتھ پیسٹ اور منجن وغیرہ سے دانت صاف کرنا مکروہ ہے اگر دوائی حلق سے نیچے اترے گی تو روزہ فاسد ہو جائے گا۔ (۴)
- (۱۰) استنجے کے وقت پاخانہ کی جگہ کو اتنا زیادہ مبالغہ سے صاف کرنا کہ اندر پانی جانے کا شک ہو مکروہ ہے۔ (۵)
- (۱۱) ناک میں پانی ڈالنے میں یا کلی کرنے میں مبالغہ کرنا مکروہ ہے۔ (۶)

- (۱) عن علی عن النبی ﷺ قال: لا تدخل الملائكة بیتا فيه صورة ولا کلب ولا جنب . (ابوداؤد، کتاب الطهارة، باب فی الجنب یؤخر الغسل . مکتبہ حقانی)
- (۲) ولا بأس بالحجامة ان امن علی نفسه الضعف اما اذا خاف فانه یکره وینبغي له ان یؤخر الی وقت الغروب وذكر شیخ الاسلام شرط الکراهة ضعف یحتاج فیہ الی الفطور الفصد نظیر الحجامة هکذا فی المحيط . (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۰ . رشیدیہ)
- (۳) قال الطیبی الزور الکذب ..... ای من لم یرک القول الباطل من ..... السب و الشتم واللعن و امثالها مما یجب علی الانسان اجتنابها و یحرم علیه ارتکابها (مرقاۃ ج: ۴ ص: ۲۵۹)
- (۴) و کره مضغ علك ابیض ممضوغ ملتئم والافی فطر . قوله ابیض الخ قیده بذلك لان الاسود و غیر الممضوغ و غیر الملتئم یصل منه شیء الی الجوف و اطلق محمد المسألة و حملها الکمال تبعا للمتأخرین علی ذلك قال للقطع بأنه معلل بعدم الوصول فان کان مما یصل عادة حکم بالفساد لانه کالمتیقن . (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۶ ، و فتاوی دارالعلوم دیوبند ج: ۶ ص: ۲۵۶ ، مکتبہ دارالاشاعت ، فتاوی ہندیہ ۱/ ۱۹۹ رشیدیہ)
- (۵) و تکره له المبالغة فی الاستنجاء کذا فی السراج . (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۹ . رشیدیہ)
- (۶) و کذا فی المبالغة فی المضمضة والاستنشاق قال شمس الأئمة الحلوانی و تفسیر ذلك ان یکثر امساک الماء فی فمه ویملأ لان یفرغ کذا فی المحيط (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۹ . ط: رشیدیہ)

## روزوں کے مقاصد

- (۱) روزے کا اصل مقصد اللہ اور رسول ﷺ کا حکم ماننا ہے جو ہر حال میں ضروری ہے۔
- (۲) ہمارے اندر پرہیزگاری پیدا کرنے کے لئے روزے فرض کئے گئے، جیسے ماں بعض اوقات اپنے بچے کو کوئی چیز کھانے نہیں دیتی، اس لئے کہ اس میں بچے کا فائدہ ہوتا ہے۔

مثلاً بچے کا جی چاہا کہ میں برف کا گولا کھاؤں، ماں نہیں دیتی، اس ماں کو بچے کے ساتھ کوئی دشمنی تو نہیں ہوتی، ماں بچے کو محروم نہیں رکھنا چاہتی ماں بچے کو رونا پسند نہیں کرتی، اس میں بچے کا اپنا فائدہ ہوتا ہے بالکل اسی طرح اللہ تعالیٰ نے ایمانداروں کو حکم دیا ہے کہ روزے رکھیں اس میں روزہ دار ہی کا فائدہ ہے۔

- (۳) ڈاکٹروں کی تحقیق یہ ہے کہ ایک مہینے کے روزے رکھنے سے بہت سی بیماریاں جسم سے خود بخود دور ہو جاتی ہیں۔

آج کل یورپ وغیرہ میں کینسر جیسی موذی بیماریوں کے علاج کے لئے ڈاکٹروں نے روزوں (فاقوں) کے ہسپتال کھولے ہیں۔

## روزہ مؤخر کیا جاسکتا ہے

اگر حکیم یا ڈاکٹر نے کسی ٹی بی یا تپ دق کے مریض کو دن میں متعدد دفعہ دوائی استعمال کرنے کا مشورہ دیا اور دوا استعمال نہ کرنے کی صورت میں ہلاکت یا مرض کے

زیادہ بڑھ جانے کا کہا تو صحت یابی تک روزے کو مؤخر کر سکتا ہے تندرست ہونے کے بعد قضا کرے، اگر صحت کی امید ختم ہو چکی ہے تو مرنے سے پہلے فدیہ ادا کرنے کی وصیت کر کے جائے۔ (۱)

## رومال

روزے میں قصد اُرومال بھگو کر اس لئے سر پر اوڑھنا تا کہ روزے میں تخفیف ہو کر وہ نہیں ہے۔ (۲)

## ریت

اگر کسی وجہ سے روزہ دار کے منہ میں ریت چلی گئی اور اس نے ریت کو تھوک دیا بعد میں تھوک نکل گیا، پھر اس کے بعد دانتوں میں ریت کی موجودگی کا احساس ہوا تو اس سے روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۳)

- 
- (۱) اور مریض خاف الزیادة لمرضه وصحيح خاف المرض وخادمة خافت الضعف بغلبة الظن بأمانة او تجربة او باخبار طيب حاذق مسلم مستور..... وقضوا الزوما. (شامی ج: ۲ ص: ۴۲۲)
- (۲) وكذا لا تكره حجامه وتلفف بثوب مبتل ومضمضة او استنشاق او اغتسال للتبرد عند الثاني وبه يفتي شرنبلالية عن البرهان. قوله وبه يفتي لان النبي ﷺ صب على رأسه الماء وهو صائم من العطش او من الحر. رواه ابو داؤد وكان ابن عمر يبل الثوب ويلفه عليه وهو صائم ولان هذه الاشياء فيها عون على العبادة: ورفع الضجر الطبعي. (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۹، و فتاوی دارالعلوم ج: ۶ ص: ۲۵۷. دارالاشاعت)
- (۳) اوبقى بلل في فيه بعد المضمضة وابتلعه مع الريق..... او ابتلع ما بين اسنانه وهو دون الحمصة لانه تبع لريقه تحته في "رد" عبارة البحر لانه قليل لا يمكن الاحتراز عنه فجعل بمنزلة الريق. (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۶. ط: سعید)
- ايضا: (فتاوی دارالعلوم دیوبند ج: ۶ ص: ۲۵۹. دارالاشاعت)
-

## (ز)

### زبردستی

(۱) اگر مارنے یا نقصان پہنچانے کی دھمکی دے کر کسی عورت سے خاوند نے زبردستی جماع کیا، یا عورت نے خاوند پر جبر کیا تو روزہ دونوں کا فاسد ہو جائے گا البتہ جس پر جبر کیا گیا اس پر صرف قضا ہے کفارہ نہیں، اور جس نے جبر کیا اس پر کفارہ بھی لازم ہے۔ (۱)

(۲) اگر کسی کو مارنے اور نقصان پہنچانے کی دھمکی دے کر زبردستی کھلایا پلایا گیا تو روزہ فاسد ہو گیا صرف قضا ضروری ہے کفارہ نہیں۔ (۲)

### زخم

(۱) اگر زخم سر یا پیٹ میں بہت گہرا اندر تک پہنچا ہوا ہو تو اس میں ترداؤ ڈالنے سے روزہ فاسد ہو جائے گا۔

اور اگر خشک دوا ڈالی گئی تو اس میں تفصیل ہے اگر اندر تک پہنچنا یقینی ہے تو روزہ

(۱) واعلم ان اباحیفة كان يقول اولافى المكروه على الجماع عليه القضاء والكفارة لانه لا يكون الابانتشار الالة وذلك اماراة الاختيار ثم رجع وقال لا كفارة عليه وهو قولهما لان فساد الصوم يتحقق بالايلاج وهو مكروه فيه مع انه ليس كل من انتشر آتته يجمع مثل الصغير والنائم. (شامى ج: ۲ ص: ۴۰۱ ط: ايچ ايم سعيد)

ايضا : من جامع عمدا فى احد السبيلين فعليه القضاء والكفارة ولا يشترط الانزال فى المحلين كذا فى الهداية وعلى المرأة مثل ما على الرجل ان كانت مطاوعة وان كانت مكروهة فعليها القضاء دون الكفارة. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۵، ط: رشيديه كوئٹہ)

(۲) لو اكل مكروها او مخطئا عليه القضاء دون الكفارة كذا فى فتاوى قاضى خان. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۲ ط: رشيديه)

فاسد ہوگا ورنہ نہیں۔ (۱)

(۲) سر اور پیٹ کے علاوہ باقی جسم کے زخموں پر دوا ڈالنا مفسد نہیں۔ (۲)

(۳) زخم سے زیادہ مقدار میں پیپ یا خون نکلنے یا خون نکالنے سے روزہ فاسد

نہیں ہوتا، البتہ روزہ دار سے زیادہ خون نکالنا مکروہ ہوگا تا کہ کمزوری نہ آجائے۔ (۳)

## زچہ کا کمزور ہونا

اگر بچے کی ولادت کے بعد ماں کمزور ہوگئی، روزہ رکھنے کی استطاعت نہیں اور

موت تک کمزور رہی اور فدیہ دے دیا تو فدیہ کافی ہوگا۔

اور اگر فدیہ دینے کے بعد صحت ہوگئی کمزوری دور ہوگئی اور روزہ رکھنے کی قدرت

حاصل ہوگئی تو فدیہ کافی نہیں ہوگا اور فوت شدہ روزوں کی قضا لازم ہوگی۔ (۴)

(۱) اوداوی جائفۃ اوامۃ فوصل الدواء حقیقۃ الی جوفہ و دماغہ ، قوله فوصل الدواء حقیقۃ

اشار الی ان ما وقع فی ظاہر الروایۃ من تقييد الافساد بالدواء الرطب مبنی علی العادۃ من انه

یصل والا فالاعتبار حقیقۃ الوصول حتی لو علم وصول الیابس افسد او عدم وصول الطری لم

یفسد وانما الخلاف اذا لم یعلم یقینا فافسد بالطری حکما بالوصول نظرا الی العادۃ ونفیاه

کذا افادہ فی الفتح . (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۲ . ط: ایچ ایم سعید)

(۲) وما یدخل من مسام البدن من الدهن لا یفطر هکذا فی شرح المجمع . (عالمگیری ج: ۱

ص: ۲۰۳) . ط: رشیدیہ

(۳) لقوله علیه السلام الفطر مما دخل وليس مما خرج رواه ابو یعلی فی مسنده (البحر الرائق

ج: ۲ ص: ۲۷۸)

ایضا: قوله لو اودهن او احتجم او کتحل او قبل .... ای لا یفطر وهو مکروه لصائم اذا کان یضعفه

عن الصوم اما اذا کان لا یخافه فلا یأس کذا فی غایۃ البیان . (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۷۳ ط:

ایچ ایم سعید کمپنی)

(۴) ومثله ما فی القہستانی عن الکرمانی المریض اذا تحقق الیأس من الصحۃ فعليه الفدیۃ

لکل یوم المرض . وفي الدر المختار ومتی قدر قضی لان استمرار العجز شرط الخلیفۃ . (شامی

ج: ۲ ص: ۴۲۷ . ط: ایچ ایم سعید)

## زکوٰۃ اور صدقہ فطر کے نصاب میں فرق

جس آدمی پر زکوٰۃ فرض ہے اس پر صدقہ فطر بھی ادا کرنا واجب ہے، فرق یہ ہے کہ زکوٰۃ کے نصاب میں سونا، چاندی یا مال تجارت ہونا ضروری ہے، صدقہ فطر میں یہ ضروری نہیں بلکہ ان تین چیزوں کے علاوہ کوئی اور چیز ہے اور اس کی قیمت کم سے کم ساڑھے باون تولہ چاندی کے برابر ہے تو اس پر صدقہ فطر واجب ہے۔

ہاں یہ بات دونوں نصابوں میں شرط ہے کہ اپنی روزمرہ کی ضرورتوں سے زائد اور قرضے سے بچا ہوا فاضل ہو۔ (۱)

## زکوٰۃ کے پیسے سے افطار کا انتظام کرنا

اگر افطار کرنے والے لوگ غریب اور مستحق زکوٰۃ ہیں، اور افطاری کی چیزیں الگ الگ تھیلی میں بھر کر یا افطار کرنے والوں کے ہاتھ میں بطور ملکیت دیتے ہیں تو اس صورت میں زکوٰۃ کی رقم سے افطاری کا انتظام کرنا صحیح ہوگا ورنہ نہیں اور اگر افطار کرنے والے مستحق زکوٰۃ نہیں تو زکوٰۃ کی رقم سے افطاری کا انتظام کرنا جائز نہیں ہوگا۔ (۲)

## زیر ناف

(۱) روزے کے دوران مرد اور عورت کے لئے موئے زیر ناف صاف کرنا جائز

(۱) تجب..... علی کل حرم مسلم ولو صغيرا محنونا حتى لولم يخرجهما وليهما وجب الاداء بعد البلوغ (ذی نصاب فاضل عن حاجته الاصلية) كدينه وحوائج عياله وان لم ينم كما مر (شامی ج: ۲ ص: ۳۵۸ تا ۳۶۰). ایچ ایم سعید

(۲) قلت: هذا اذا كان على طريق الاباحة دون التملك كما يشعر به لفظ الاطعام ولذا قال في التاتارخانيه عن المحيط اذا كان يعول يتيمًا ويجعل مايكسوه ويطعمه من زكاة ماله ففي الكسوة لاشك في الجواز لوجود الركن وهو التملك واما الطعام فما يدفعه اليه بيده يجوز ايضا لما قلنا بخلاف ما ياكله بلا دفع اليه. (شامی ج: ۲ ص: ۲۵۷). ط: سعید

ہے اس سے روزے پر کوئی اثر نہیں پڑے گا۔ (۱)

(۲) زیر ناف سے مراد وہ بال ہیں جو مرد اور عورت کے ناف کے نیچے سے آگے اور پیچھے کی شرم گاہوں کے ارد گرد آگتے ہیں، ران کے بال اس میں داخل نہیں ہیں۔ (۲)

(۳) مرد حضرات کے لئے افضل یہ ہے کہ زیر ناف بالوں کو استرہ یا بلیڈ BLADE یا لوہے کی بنی ہوئی چیز سے صاف کریں کیونکہ مرد حضرات کے لئے لوہا استعمال کرنا مقوی باہ ہے (کلیات نفیسی ص ۴۱۸) (۳)

(۴) عورتوں کے لئے بلیڈ وغیرہ لوہے کی چیز استعمال کرنا بہتر نہیں ہے بلکہ اگر آسانی سے ممکن ہے تو اکھاڑنے کی کوشش کریں ورنہ نورہ، کریم صابن وغیرہ استعمال کریں۔ باقی استرہ وغیرہ سے مونڈنا بھی جائز ہے۔ (۴)

(۵) مستحب یہ ہے کہ ہفتہ میں ایک بار صاف کریں، افضل جمعہ کا دن ہے اگر ہفتہ وار نہیں کر سکتا تو پندرہ بیس دن میں کر لے، چالیس دن سے زائد صفائی نہ کرنا مکروہ تحریمی ہے، وہ آدمی گنہگار ہوگا اور نماز بھی مکروہ ہوگی۔ (۵)

(۱) کیونکہ یہ روزے کے منافی نہیں الصوم فی الشرع الامساك عن المفطرات الثلاث حقيقة او حکما فی وقت مخصوص من شخص مخصوص مع النية. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۵۹)

(۲) والعانة الشعر القريب من فرج الرجل والمرأة، ومثلها شعر الدبر بل هو اولی بالازالة؛ لتلايعلق به شئ من الخارج عند الاستنجاء بالحجر. (شامی ج: ۲ ص: ۴۸۱ فصل فی الاحرام، کتاب الحج. ایچ ایم سعید)

(۳) ويستحب حلق عانته وتنظيف بدنه بالاغتسال في كل اسبوع مرة والا فضل يوم الجمعة وجاز في كل خمسة عشرة وكره تركه وراء الاربعين مجتبی. تحتہ فی رد المحتار قوله وكره تركه ای تحریمًا لقول المجتبی ولا عذر فيما وراء الاربعين ويستحق الوعيد الخ. (شامی، کتاب الحظرو الاباحة فصل فی البيع ج: ۶ ص: ۴۰۶، ۴۰۷ ط: ایچ ایم سعید)

(۴) وفي الاشباه والسنة في عانة المرأة التفت. (شامی ج: ۶ ص: ۴۰۶ ط: سعید)

(س)

## سائرین وغیرہ کا استعمال

اگر افطاری کا وقت آسانی سے معلوم نہ ہوتا ہو تو گھنٹہ اور سائرین بجانا یا گولہ وغیرہ چھوڑنا جائز ہے، البتہ یہ چیزیں مسجد یا اس کی چھت پر نہیں ہونی چاہئیں بلکہ مسجد سے ہٹ کر کسی دوسری جگہ یا بلند مقام پر ہونا چاہیے کیونکہ یہ چیزیں مسجد کے احترام کے خلاف ہیں۔ (۱)

## سال بھر روزہ رکھنے کی نذر ماننا

اگر کسی نے پورا سال روزہ رکھنے کی منت مانی، تو پورے سال روزہ رکھنا لازم ہوگا البتہ ۱۰-۱۱-۱۲-۱۳ ذی الحجہ اور عید الفطر کے دن روزہ رکھنا جائز نہیں ہوگا بلکہ ان پانچ دن کے روزے بعد میں رکھ لے۔ (۲)

## سال کا دل

رمضان المبارک پورے سال کا قلب ہے، اگر یہ درست رہے گا تو پورا سال درست رہے گا۔ (۳)

- (۱) وعن الحسن لا بأس بالدفع في العرس ليشتهرو في السراجيه هذا اذا لم يكن له جلاجل ولم يضرب على هيئة التطرب الخ. اقول: وينبغي ان يكون طبل السهر في رمضان لا يقاط النائمين للسحور كيوق الحمق تامل. (شامی ج: ۵ ص: ۳۰۷، کتاب الحظروالاباحة بحوالہ فتاویٰ رحیمہ ج: ۷ ص: ۲۴۱، مکتبہ دارالاشاعت، کفایت المفتی ج: ۴ ص: ۲۴۷. دارالاشاعت)
- (۲) ولو قال لله على صوم هذه السنة الفطريوم الفطريوم النحر وایام التشريق وقضاها. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۱) قال طاهر بن احمد: رجل قال لله على صوم هذه السنة فانه يفطريوم الفطريوم النحر وایام التشريق ويقضى تلك الايام وعليه كفارة اليمين. (خلاصة الفتاویٰ ج: ۱ ص: ۲۶۱، کتاب الصوم الفصل الرابع فی النذر. ط: رشیدیہ)
- (۳) (ابوسعید) رفعه: سيد الشهور رمضان. (جمع القوائد ج: ۱ ص: ۴۰۷، ادارة القرآن، کراتشی)

## سحری

(۱) سحری کھانا مسنون ہے، حدیث شریف میں اس کی بڑی فضیلت آئی ہے، نبی کریم ﷺ نے فرمایا کہ یہود و نصاریٰ اور ہمارے روزوں میں صرف سحری کا فرق ہے (یعنی وہ سحری نہیں کھاتے اور ہم سحری کھاتے ہیں)۔ (۱)

(۲) دوسری حدیث شریف میں ہے: کہ اللہ اور اس کے فرشتے سحری کھانے والوں پر رحمت نازل فرماتے ہیں۔ (۲)

(۳) اگر بھوک نہیں یا کھانے کی خواہش نہیں تو اس سنت پر عمل کرنے کیلئے دو ایک چھوہارے اور کھجور کھالی یا پانی کا ایک گھونٹ پی لیا تو اس سنت پر عمل ہو جائے گا۔ (۳)

(۴) نبی کریم ﷺ نے فرمایا کہ سحری کھانے میں برکت ہے، یعنی بدن میں چستی، چہرہ پر بشاشت اور جسم میں قوت قائم رہتی ہے۔ (۴)

(۵) سحری میں کھجور سے سحری کرنا الگ سنت ہے، سحری میں روٹی سالن یا چاول کھانا ضروری نہیں ہے بلکہ ماکولات اور مشروبات میں سے جو بھی چیز مل جائے اس سے سحری کرنے کی سنت ادا ہو جائے گی۔ (۵)

- (۱) عن عمرو بن العاص "ان رسول اللہ ﷺ قال فصل ما بين صيامنا وصيام اهل الكتاب اكلة السحر. (مسلم ج: ۱ ص: ۳۵۰، قدیمی کتب خانہ، ترمذی ج: ۱ ص: ۱۵۰ ایچ ایم سعید)
- (۲) عن ابن عمر قال قال رسول الله ﷺ ان الله وملائكته يصلون على المتسحرين. رواه الطبراني في الاوسط وابن حبان في صحيحه (الترغيب والترهيب ج: ۲ ص: ۲۶۰، مکتبہ مصر)
- (۳) عن عبد الله بن عمر قال قال رسول الله ﷺ تسحروا ولو بجرعة من ماء. رواه ابن حبان في صحيحه (الترغيب والترغيب ج: ۲ ص: ۲۶۲. ط: شركة مصطفى مصر)
- (۴) عبد العزيز بن صهيب قال سمعت انس بن مالك قال قال النبي ﷺ تسحروا فان في السحور بركة. (بخاری ج: ۱ ص: ۲۵۷، ایچ ایم سعید، و مسلم ج: ۱ ص: ۳۵۰، قدیمی کتب خانہ)
- (۵) عن ابی هريرة أن رسول الله ﷺ قال: نعم سحور المؤمن التمر. رواه ابو داود وابن حبان في صحيحه (الترغيب والترهيب ج: ۲ ص: ۲۶۲) عن ابن عمر قال قال رسول الله ﷺ تسحروا ولو بجرعة من ماء. رواه ابن حبان في صحيحه (الترغيب والترغيب ج: ۲ ص: ۲۶۲ مصر)

(۶) سحری میں تاخیر کرنا بہتر اور باعث خیر ہے، مطلب یہ کہ جب تک صبح صادق کا یقین نہ ہو کھاتے پیتے رہنا بہتر ہے، جب صبح صادق ہونے کا یقین ہو جائے پھر کھانا پینا چھوڑنا لازم ہے ورنہ صبح صادق ہونے کے بعد کھانے پینے سے روزہ نہیں ہوگا۔ (۱)  
(۷) سحری کرنے میں اتنی تاخیر کرنا کہ صبح صادق طلوع ہونے کا اندیشہ ہو کر وہ ہے۔ (۲)

(۸) سحری میں اس گمان سے تاخیر کی کہ ابھی رات باقی ہے، لیکن بعد میں معلوم ہوا کہ صبح صادق ہونے کے بعد سحری کی تو روزہ نہیں ہوگا قضا ضروری ہے کفارہ نہیں، اور اس دن غروب آفتاب تک کھانے پینے کی بھی اجازت نہیں ہوگی۔ (۳)  
(۹) لغت میں سحری اس کھانے کو کہتے ہیں جو صبح صادق کے قریب کھایا جائے۔ (۴)

(۱۰) یاد رہے کہ صبح صادق ہونے کے بعد اذان دی جاتی ہے اس لئے اذان تک سحری کرنے والے لوگوں کا روزہ نہیں ہوگا، البتہ نقشہ دیکھ کر سحری کے وقت کے اندر اندر کھانا پینا بند کر دینا ضروری ہے ورنہ سحری کا وقت ختم ہونے کے بعد صبح صادق کے بعد کھانے پینے سے روزہ نہیں ہوگا قضا لازم ہوگی کفارہ نہیں، پھر بھی غروب آفتاب تک

(۱) تاخیر السحور مستحب کذا فی النہایۃ. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۰، مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)

والسنة فیہا هو التاخیر لان معنی الاستعانة فیہ ابلغ. (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۱۰۵، ایچ ایم سعید)

(۲) ویکرہ تاخیر السحور الی وقت یقع فیہ الشک ہکذا فی السراج الوہاج. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۰، مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)

(۳) تسحر علی ظن ان الفجر لم یطلع وهو طالع قضاء ولا کفارة علیہ لانه ماتعمد الافطار کذا فی محیط السرخسی. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۴، مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)

(۴) السحور ما یوکل فی السحور وهو السدس الاخیر من اللیل. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۹۲)

روزہ داروں کے مانند رہنا ضروری ہوگا کھانے پینے کی اجازت نہیں ہوگی۔ (۱)

## سحری کی اطلاع دینے کے لئے سائرَن بجانا اور مائیک سے اعلان کرنا

سحری کا صحیح وقت بتانے کے لئے سائرَن بجانا اور لاؤڈ اسپیکر سے اعلان کرنا قرآن و سنت سے ثابت نہیں البتہ نکاح اور جنگ کے اعلان کے لئے دف بجانا حدیثوں سے ثابت ہے، لہذا اس پر قیاس کرتے ہوئے صحیح وقت کی اطلاع دینے کے لئے سائرَن بجانا جائز ہے، اور لاؤڈ اسپیکر سے اعلان کرنا بھی جائز ہے لیکن مسلسل اعلان کرنا یا وعظ اور نعت کا سلسلہ جاری رکھنا درست نہیں اس صورت میں ثواب کے بجائے الٹا گناہ ہوگا کیونکہ مسلسل اعلان کی صورت میں تہجد پڑھنا، قرآن مجید کی تلاوت کرنا، درود شریف پڑھنا اور استغفار کرنا مشکل ہو جاتا ہے اس لئے مسلسل نہ کرے ضرورت کے مطابق وقفہ وقفے سے کرے۔

یہ حکم نقارہ بجانے اور توپ وغیرہ کا گولہ چھوڑنے کا بھی ہے۔ (۲)

## سحری کے بغیر روزہ

روزہ رکھنے کے لئے سحری کرنا سنت ہے فرض واجب نہیں ہے لہذا رات کو سحری کھانے کے لئے آنکھ نہیں کھلی یا آنکھ کھلی لیکن کمانے لئے کچھ نہیں ملا تو سحری کے بغیر

(۱) کُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ الْخ. (سورة البقرة آیت: )

(۲) وَعَنِ الْحَسَنِ لَا بَأْسَ بِالْذِّفِّ فِي الْعُرْسِ لِيَشْتَهَرُ، وَفِي السَّرَاجَةِ هَذَا إِذَا لَمْ يَكُنْ لَهُ جَلَّاجِلْ وَنَمِ يَضْرِبُ عَلَى هَيْئَةِ الطَّرْبِ الْخِ اقُول: وَيَنْبَغِي أَنْ يَكُونَ طَبْلُ السَّحْرِ فِي رَمَضَانَ لَا يِقَاطُ النَّائِمِينَ لِلْسَّحْرِ، كَبُوقِ الْحَمَامِ تَامِل. (شامی ج: ۶ ص: ۳۵۰، کتاب الحظرو الإباحة ایچ ایم سعید)

روزے کی نیت کرے روزہ درست ہو جائے گا سحری چھوٹ جانے کی وجہ سے روزہ نہ رکھنا بہت بڑا گناہ ہے۔ (۱)

## سحری کے بعد بیوی سے ہمبستری کرنا

سحری کھانے کے بعد اگر صبح صادق ہونے میں دیر ہے تو بیوی سے ہمبستری کرنا درست ہے، البتہ صبح صادق سے پہلے پہلے ہمبستری سے فارغ ہونا ضروری ہے ورنہ صبح صادق کے بعد ہمبستری میں مشغول ہونے کی صورت میں قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے۔

غسل چاہے صبح صادق سے پہلے کرے یا صبح صادق کے بعد دونوں صورتیں صحیح ہیں روزے پر اثر نہیں پڑے گا البتہ غسل کرنے میں اتنی تاخیر کرنا کہ فجر کی نماز قضا ہو جائے مکروہ ہے اس لئے غسل میں تاخیر نہ کرے۔ (۲)

## سحری کے بعد کلی کرنا

سحری کے بعد خلال کر کے کلی کر لینی چاہیے اگر ممکن ہو تو مسواک بھی کر لینا چاہیے تاکہ منہ اور دانت صاف ہو جائیں۔ (۳)

## سحری کا مسنون وقت

(۱) روزہ دار کورات کے آخری حصے میں صبح صادق سے پہلے پہلے سحری کھانا

- (۱) فتاویٰ دارالعلوم دیوبند ج: ۶ ص: ۴۹۶، مکتبہ دارالاشاعت، بمبئی زیور تیرا حصہ ص: ۱۴  
المکتبۃ المدینہ) ویستحب السحور وتأخیرہ در مختار شامی ج: ۲ ص: ۴۱۹، ہندیہ ۱/۲۰۰  
(۲) قولہ وکذا عند طلوع الفجرای وکذا لا یفطر لوجامع عامدا قبل الفجر ونزع فی الحال  
عند طلوعہ ولو مکث حتی امنی ولم یتحرك قضی فقط وان حرك نفسه قضی وکفر کما  
لوزع لم اولج (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۷، فتاویٰ دارالعلوم ج: ۶ ص: ۴۹۷، دارالاشاعت)  
(۳) احسن الفتاویٰ ج: ۴ ص: ۴۵۳ ایچ ایم سعید

مسنون ہے، آدھی رات کے بعد صبح صادق سے پہلے پہلے جس وقت بھی کھائیں سحری کی سنت ادا ہو جائے گی۔ لیکن بالکل آخری رات میں کھانا افضل اور زیادہ ثواب ہے۔ (۱)

(۲) فقہاء کرام نے سحری کے وقت کے بارے میں لکھا ہے کہ پوری رات کو چھ حصوں پر تقسیم کر کے آخری حصے میں سحری کھائی جائے مثلاً غروب آفتاب سے صبح صادق تک بارہ گھنٹے ہیں تو آخر کے دو گھنٹے سحری کھائیں، اور ان میں بھی تاخیر بہتر ہے تاکہ بدن میں چستی اور قوت قائم رہے اور فجر کی جماعت قضا نہ ہو اور شروع میں خالی پیٹ تہجد پڑھنے کا نادر موقع مل جائے۔ (۲)

## سحری کا وقت ختم ہونے پر سحری کھانا

اگر سحری کا وقت ختم ہونے پر سحری کی تو روزہ نہیں ہوگا قضا لازم ہوگی اور غروب آفتاب تک روزہ داروں کی طرح رہنا ضروری ہوگا، کھانا پینا جائز نہیں ہوگا۔ (۳)

## سردیوں میں روزوں کی قضا کرنا

اگر گرمیوں کا روزہ کسی وجہ سے فوت ہو گیا تو سردیوں میں اس کی قضا کرنے سے ثواب میں کمی نہیں آئے گی۔ (۴)

(۱) التسمیر مستحب ووقته آخر الليل قال الفقيه ابواللیث هو السدس الاخير هكذا فی السراج الوهاج. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۰، مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)

(۲) قوله ويستحب السحور..... وهو اسم للمأكول فی السحر، وهو السدس الاخير من الليل. (شامی ج: ۲ ص: ۱۹۴ ایچ ایم سعید کمپنی)

(۳) تسحر علی ظن ان الفجر لم یطلع وهو طالع قضاہ. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۴، رشیدیہ)

(۴) امالولم یقدر علایه لشدۃ الحرکان له ان یفطر ویقضیه فی الشتاء (شامی ج: ۲ ص: ۲۷۰ ط: ایچ ایم سعید کمپنی)

## سرمہ لگانا

روزے کی حالت میں دن میں سرمہ لگانا درست ہے۔

اس سے روزے میں کچھ نقصان نہیں آتا۔ (۱)

## سفر میں روزہ

(۱) اگر سفر کی مسافت کی مقدار کم سے کم اڑتالیس میل یا اس سے زیادہ ہے تو شہر کی حدود سے نکلنے کے بعد روزہ رکھنے یا نہ رکھنے کا اختیار ہوگا باقی نہ رکھنے کی صورت میں بعد میں فوت شدہ تمام روزوں کی قضا لازم ہوگی۔ اگر سفر کی مسافت ۲۸ میل سے کم ہے تو اس صورت میں روزہ رکھنا لازم ہوگا۔ (۲)

(۲) اگر سفر کے دوران روزہ رکھنے کی سہولت ہے دشواری نہیں ہے تو روزہ رکھ لینا بہتر ہے اور اگر روزہ رکھنے میں مشقت اور دشواری ہے تو اس صورت میں روزہ نہ رکھے بعد میں قضا کر لے۔ (۳)

(۳) سفر کے دوران نماز میں قصر ہے روزے میں قصر نہیں۔ (۴)

(۴) جب تک سفر میں ہوگا مقیم ہونے یا اقامت کی نیت نہیں کرے گا (۵)

(۱) اما اذا اكتحل او اقطر بشئ من الدواء في عينه لا يفسد الصوم عندنا. (فتاوی تاتارخانا ج: ۲ ص: ۳۶۶، ادارة القرآن والعلوم الاسلاميه)

(۲) لمسافر سفر اشريعاً ولو بمعضية..... الفطر تحته في "رد" قوله سفر اشريعاً اي مقدار في الشرع لقصر الصلوة ونحوه هو ثلاثة ايام ولياليها. (شامی ج: ۲ ص: ۴۲۱. سعيد)

(۳) ويندب لمسافر الصوم لآية. وان تصوموا - والخير بمعنى البر لا فعل تفضيل ان لم يضره فان شق عليه او على رفيقه فالفطر افضل لموافقة الجماعة. (شامی ج: ۲ ص: ۴۲۳)

(۵، ۴) قوله: تعالى او على سفر فعدة من ايام اخر، سورة البقرة. آیت (۱۸۴) وفي الشامية..... والمراد سفر خاص، وهو الذي تتغير به الاحكام من قصر الصلوة واباحة الفطر الخ. (ج: ۲ ص: ۱۲۰، ط: سعيد)

روزہ افطار کرنے کی اجازت ہوگی بعد میں قضا واجب ہوگی۔

(۵) جو شخص صبح صادق کے وقت سفر میں نہ ہو اس آدمی کے لئے روزہ چھوڑنا جائز نہیں اگرچہ دن میں سفر کرنے کا پختہ ارادہ ہو۔ (۱)

(۶) اگر مسافر نے راستہ میں پندرہ دن رہنے کی نیت سے اقامت کی تو اب روزہ چھوڑنے کی اجازت نہیں ہوگی روزہ رکھنا لازم ہوگا کیونکہ اب وہ مسافر نہیں ہے۔ (۲)

(۷) سفر میں روزہ نہ رکھنے کا ارادہ تھا لیکن زوال سے پہلے اپنے گھر پہنچ گیا یا پندرہ دن ٹھہرنے کی نیت کی اور اب تک کچھ کھایا یا نہیں تو اب روزے کی نیت کر سکتا ہے۔ (۳)

(۸) اگر کوئی مسافر زوال سے پہلے مقیم ہو جائے اور ابھی تک کوئی فعل روزے کے خلاف نہیں ہوا تو اس صورت میں روزہ رکھنا ضروری ہے، لیکن اگر روزے کو فاسد کر دیا تو کفارہ لازم نہیں ہوگا صرف قضا لازم ہوگی۔ (۴)

(۱) بخلاف السفر فانہ لیس بعذر فی الیوم الذی انشا السفر فیہ ولا یحل لہ الافطار و هو عذر فی سائر الایام کذا فی الظہیریۃ۔ (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۸۲، فتاوی شامی ج: ۲ ص: ۴۳۱ سعید)  
(۲) ولونوی مسافر الفطر اولم ینو فاقام ونوی الصوم فی وقتہا قبل الزوال (صح) مطلقا (ویجب علیہ) الصوم (لو) کان (فی رمضان) لزوال المرخص (کما یجب علی مقیم اتمام) صوم (یوم منہ) ای رمضان۔ درمختار، فتاوی شامی ج: ۲ ص: ۴۳۱، ط: ایچ ایم سعید  
(۳) قوله ولونوی المسافر الافطار ثم قدم ونوی الصوم فی وقتہ صح۔ ان نوی قبل انتصاف النهار لان السفر لانی فی اہلیۃ الوجوب ولاصحۃ الشروع۔ (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۸۹ سعید)  
(۴) حوالہ: ۲، وفیہ ایضا (قوله ویجب علیہ الصوم) ای انشاؤہ حیث صح منہ بان کان فی وقت النیۃ ولم یوجد ما ینافیہ والاوجب علیہ الامساك۔ (فتاوی شامی ج: ۲ ص: ۴۳۱ سعید)

## سفر کی وجہ سے روزوں کا زیادہ ہو جانا

اگر کوئی شخص کسی ملک میں رہتے ہوئے رمضان کے روزے شروع کرے اور اس دوران کسی دوسرے ملک چلا جائے جہاں اس شخص کے تیس روزے پورے ہو گئے لیکن اس ملک میں ابھی تک ۲۸ یا ۲۹ روزے ہوئے ہیں تو تیس روزے مکمل ہونے کے بعد اس شخص کو اختیار ہوگا چاہے روزہ رکھے یا نہ رکھے البتہ رکھنا افضل اور بہتر ہے نفل ہو جائیں گے۔

تیس روزے مکمل ہونے کے بعد اکتیسواں روزہ رکھنا اس لئے لازم نہیں ہوگا کہ رمضان کا مہینہ تیس دن سے زائد نہیں ہوتا اور ایک مہینے کے روزے رکھنا فرض ہیں اس سے زیادہ نہیں باقی روزہ نہ رکھنے کی صورت میں روزہ داروں کے سامنے کھانا پینا جائز نہیں ہوگا۔ (۱)

## سفر کی وجہ سے روزہ کم ہو جانا

اگر کسی آدمی نے پاکستان ہندوستان یا بنگلہ دیش وغیرہ میں روزے رکھنا شروع کئے اور پھر وہ شخص رمضان المبارک میں مثلاً عمرہ کرنے کے لئے مکہ معظمہ چلا گیا، وہاں والے ایک دو دن آگے تھے، اور ان کے روزے مکمل ہو گئے اور اس آدمی کے روزے مکمل نہیں ہوئے تو وہ آدمی روزہ رکھے یا مکہ والوں کے ساتھ عید کرے۔

اس کا جواب یہ ہے کہ یہ شخص مکہ والوں کے ساتھ عید کے دن عید کرے روزہ نہ رکھے بعد میں باقی ماندہ روزوں کی قضا کرے۔ (۲)

(۱-۲) ان النبی ﷺ آلی من نساہ شہرا ..... فان الشہر ثلاثون ، وتسع و عشرون . قال محمد : وہ ناخذ اذا كان بالاہلۃ کتاب الآثار ص: ۱۱۷ ، باب الایلاء رقم الحدیث : ۵۴۱ ادارة القرآن والعلوم الاسلامیۃ ، کراتشی )

## سنہری موقع

جس طرح بہار کے مہینے میں ہر طرف خوشبو ہوا کرتی ہے، درخت ہرے بھرے ہوتے ہیں پھول کھلے ہوئے ہوتے ہیں، باغوں میں جائیں تو فضا مہکی مہکی ہوتی ہے، اسی طرح رمضان المبارک ایمان والوں کیلئے بہار کا مہینہ ہوتا ہے، اللہ جل شانہ کی رحمت کا مہینہ ہوتا ہے، اس کی صبح میں رحمت، اس کی شام میں رحمت، اس کے تہجد کے اوقات میں رحمت جو انسان اپنے گناہوں کو بخشوانا چاہے اور اللہ رب العزت کو راضی کرنا چاہے اس کے لئے رمضان المبارک سنہری موقع ہے۔ (۱)

## سگریٹ

روزے کے دوران سگریٹ نوشی سے روزہ فاسد ہو جائے گا قضا لازم ہوگی کفارہ

نہیں۔ (۲)

(۱) روی عن ابی سعید الخدریؓ قال قال رسول اللہ ﷺ اذا كان اول ليلة من رمضان فتحت ابواب السماء فلا يغلّق منها باب حتى يكون آخر ليلة من رمضان وليس عبد مؤمن يصلي في ليلة فيها الاكتب الله الف او خمس مائة حسنة بكل سجدة وبني له بيتا في الجنة من ياقوتة حمراء لها ستون الف باب لكل باب منها قصر من ذهب موشح بياقوتة حمراء فاذا صام اول يوم من رمضان غفر له ماتقدم من ذنبه الى مثل ذلك اليوم من شهر رمضان، و اسغفر له كل يوم سبعون الف ملك من صلوة الغداة الى ان توارى بالحجاب وكان له بكل سجدة يسجد لها في شهر رمضان بليل او نهار شجرة يسير الراكب في ظلها خمس مائة عام . رواه البيهقي وقال قد روينا في الاحاديث المشهورة ما يدل على هذا - او لبعض معناه كذا قال رحمه الله (الترغيب والترهيب: ۲: ص: ۲۱۶، ۲۱۷، شركة مصطفى البابي الحلبي مصر)

(۲) ومفاده انه لو ادخل حلقه الدخان افطراى دخان كان ولوعودا او عنبر الوذاكرا لا مكان

التحرز عنه. (شامی ج: ۲: ص: ۳۹۵. ایچ ایم سعید)

(قوله انه لو ادخل حلقه الدخان) ای ہای صورتہ کان الادخال ..... وبہ علم حکم شرب

الدخان. (شامی ج: ۲: ص: ۳۹۵. سعید)

## سگریٹ سے افطار کرنا

سگریٹ سے افطار کرنا سنت کے خلاف ہے البتہ روزے پر کوئی اثر نہیں پڑے گا  
باقی افطار کھجور یا کسی میٹھی چیز سے کرنے کی کوشش کی جائے۔ (۱)

## سید کو صدقہ فطر دینا

(۱) سید صدقہ فطر کا مستحق نہیں لہذا اس کو صدقہ فطر دینا جائز نہیں ہے۔ اگر کوئی  
آدمی جان بوجھ کر سید کو فطرہ دے گا تو فطرہ ادا نہیں ہوگا۔ (۲)

(۲) البتہ فطرہ غریب سید کو حیلہ کر کے دینا جائز ہوگا اور حیلہ کی صورت یہ ہے کہ  
کسی غریب کو یہ کہہ کر فطرہ دیا جائے کہ یہ فطرہ فلاں سید کو دینا تھا مگر وہ سید ہے اس  
لئے اس کو فطرہ دینا جائز نہیں لہذا آپ کو فطرہ دیتے ہیں اگر آپ اس کو اپنی طرف  
سے ہدیہ کر دیں گے تو اس پر احسان ہوگا اور وہ غریب آدمی فطرہ لے کر سید کو دے  
دے تو سید کے لئے وہ رقم لینا اور استعمال کرنا جائز ہوگا۔ (۳)

(ش)

## شادی شدہ لڑکی کا فطرہ

(۱) اگر لڑکی کا نکاح ہو گیا ابھی تک رخصتی نہیں ہوئی اور وہ ماں باپ کے گھر رہتی  
ہے تو اس کے صدقہ فطر کے بارے میں یہ تفصیل ہے۔

- (۱) عن انس قال كان النبي ﷺ يفطر قبل ان يصلی علی رطبات ، فان لم تكن رطبات فتميرات  
فالتم تكن تميرات حسا حسوات من ماء . رواه ابو داود ، نزاجة المصاييح ج: ۱ ص: ۵۵۴  
(۲) ولا يدفع الی بنی هاشم وهم آل علی وآل عباس وآل جعفر وآل عقیل وآل حارث بن عبد  
المطلب کذا فی الهدایة . (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۸۹ ، کتاب الزکاة الباب السابع فی المصارف) .  
(۳) وفي الحديث : بريدة..... ولكن ذلك لحم تصدق به علی بريدة وانت لاتاكل الصدقة قال  
هو علیها صدقة ولناهديہ متفق علیہ . (مشکوٰۃ ص: ۱۶۱ ، کتاب الزکاة باب من لاتحل له الصدقة)

- (۱) اگر وہ لڑکی مالدار ہے تو اس کے مال سے اس کا صدقہ فطر ادا کیا جائے خواہ بالغ ہو یا نابالغ دونوں کا حکم ایک ہے۔ (۱)
- (۲) اور اگر لڑکی بالغ ہے لیکن مالدار نہیں تو اس کا صدقہ فطر ادا کرنا کسی کے ذمہ واجب نہیں۔ (۲)

- (۳) اور اگر لڑکی نابالغ ہے مالدار نہیں اور رخصتی نہیں ہوئی تو اس کا صدقہ فطر ادا کرنا باپ پر واجب ہے، اور اگر رخصتی ہوگئی تو باپ پر واجب نہیں۔ (۳)

## شب برات کا روزہ

- شب برات یعنی شعبان کے پندرہویں دن کا روزہ رکھنا بھی مستحب ہے عام نفل روزوں کی نسبت اس کا ثواب زیادہ ہے۔ (۴)

## شرم گاہ

- (۱) اگر عورت نے روزے کے دوران شرم گاہ کے اندر دوا ڈالی تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا ضروری ہے کفارہ نہیں۔ (۵)

- (۲) اگر عورت نے روزے کی حالت میں اپنی شرم گاہ میں ترانگی داخل کی تو

- (۱) ثم اذا كان للولد الصغير او المجنون مال فان الاب ..... يخرج صدقة فطر انفسهما ورقيقهما من مالهما عند ابی حنیفۃ و ابی یوسف (عالمگیری ج: ۱: ۱۹۲، الباب الثامن صدقة الفطر رشیدیہ)
- (۲) واما الکبار والعقلاء فلا يخرج عنهم عندنا وان كانوا فی عیالہ بان كانوا فقراء زمنی . (بدائع الصنائع ج: ۲: ۲۰۲ کتاب الزکاة بیان من تجب علیہ صدقة الفطر، سعید)
- (۳) ويخرج عن اولاده الصغار اذا كانوا فقراء لقوله عليه الصلوة والسلام ادوا عن كل صغير وكبير ولان نفقتهم واجبة على الاب وولاية الأب عليهم تامة (بدائع الصنائع ج: ۲: ۲۰۲، کتاب الزکاة بیان من تجب علیہ صدقة الفطر . ایچ ایم سعید)
- (۴) المرغوبات من الصیام انواع اولها صوم المحرم والثانی صوم رجب والثالث صوم شعبان . (عالمگیری ج: ۱: ۲۰۲، رشیدیہ کوئٹہ)
- (۵) وفي الاقطار فی اقبال النساء یفسد بلا خلاف وهو الصحيح . (فتاوی عالمگیری ج: ۱: ص: ۲۰۴) اما فی قبلها فمفسد اجماعا لانه کالحقنة . (شامی ج: ۲: ص: ۳۹۹، ۴۰۰، سعید)

اس سے روزہ فاسد ہو جائے گا قضا ضروری ہوگی کفارہ نہیں۔ (۱)

(۳) اگر عورت نے روزے کی حالت میں اپنی شرمگاہ میں خشک انگلی داخل کی اور اس کو نکالا تو انگلی تر ہوگئی پھر اس کو دوبارہ داخل کیا تو دوبارہ تر انگلی داخل کرنے سے روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۲)

(۴) اگر حاملہ عورت کو روزہ کے دوران چیکنگ کی ضرورت ہوتی ہے تو اگر خشک چیز سے چیکنگ کی جائے گی تو روزہ فاسد نہیں ہوگا اور تر چیز داخل کر کے چیکنگ کی جائے گی یا ایک دفعہ خشک چیز داخل کرنے کے بعد نکال کر دوبارہ تری کی حالت میں داخل کی جائے گی تو روزہ فاسد ہو جائے گا۔

اگر حاملہ عورت کو دن میں چیکنگ کرنا ضروری ہے اور چیکنگ کے لئے شرمگاہ کے اندر دوائی یا کوئی اور چیز داخل کرنا ضروری ہے تو اس دن روزہ نہ رکھے، رمضان کے بعد وہ روزہ رکھ لے۔ (۳)

(۵) اگر میاں بیوی نے روزے کی حالت میں ایک دوسرے کو پیار کیا یا بغل گیر ہوئے یا ایک دوسرے کی شرمگاہ کو ملایا لیکن داخل نہیں کیا اور اس سے شہوت پیدا ہوگئی، انزال نہیں ہوا، دونوں الگ ہو گئے تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، البتہ اس قسم کی کیفیت سے پرہیز کرنا چاہیے۔ (۴)

(۱) لو ادخلت الصائمة اصبعها في فرجها او دبرها لا يفسد على المختار الا ان تكون مبلولة بماء او دهن (تبيين الحقائق ج: ۱ ص: ۳۳۰، باب ما يفسد الصوم، شامی ج: ۲ ص: ۳۹۷، سعید)  
(۳، ۲) لو ادخل اصبعه في استه او المرأة في فرجها لا يفسد وهو المختار الا اذا كانت مبتلة بالماء او الدهن فحينئذ يفسد. هكذا في الظهيرية. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۴، شامی ج: ۲ ص: ۳۹۷)  
(۴) او قبل ولم ينزل او احتلم او انزل بنظر ولو الى فرجها مرارا او بفكر وان طال..... لم يفطر (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۵، سعید)

ايضا: ولا بأس بالقبلة اذا امن على نفسه الخ ويكره اذا لم يأمن الخ والمباشرة الفاحشة =

- (۶) روزے کی حالت میں فرج داخل میں دوار کھنے سے روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی کفارہ نہیں۔ (۱)
- (۷) اگر رات کو صبح صادق سے پہلے پہلے فرج داخل میں دوار کھی اور دن بھر وہ دوا شرمگاہ کے اندر رہی تو اس سے روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۲)
- (۸) روزے کی حالت میں دن میں عورت کو اپنی شرمگاہ کی فرج خارج میں دوا لگانا جائز ہے، اس سے روزہ فاسد نہیں ہوتا، البتہ فرج داخل میں دوا لگانے سے یا فرج داخل تک دوا پہنچنے سے روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۳)
- (نوٹ) فرج خارج شرمگاہ کے اوپر پتنگ نما لمبے سوراخ کو کہا جاتا ہے۔
- اور فرج خارج کے اس لمبے سوراخ کے آخر میں نیچے سے کچھ اوپر ایک گول سوراخ ہے اس کو فرج داخل کہتے ہیں۔
- (۹) روزے کے دوران فرج داخل میں کوئی بھی چیز رکھی جائے روزہ فاسد

= مثل التقبیل فی ظاہر الروایۃ (ہدایۃ ج: ۲ ص: ۱۹۹ مکتبہ رحمانیہ) والمباشرة الفاحشة ان یتعانقان وھما مجردان ویمس فرجھ فرجھا وھو مکروہ بلا خلاف ھکذا فی المحيط. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۸۷. رشیدیہ)

(۱) بان الدبر والفرج الداخل من الجوف ، اذ لا حاجز بینھما و بینہ فھما فی حکمہ ، (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۰)، لو ادخلت قطنۃ ان غابت فسد وان بقی طرفھا فی فرجھا الخارج لا. (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۷، باب ما یفسد الصوم، ط: سعید)

(۲) مسئلۃ فی امرأۃ تضع معها دواء وقت المجامعة (الی قولہ) وهل اذ بقی ذلک الدواء معها بعد الجماع ولم یخرج یجوز لھا الصلوۃ والصوم بعد الغسل ام لا.. (الجواب) اما صومھا وصلاحتھا فصحیحۃ وان کان ذلک الدواء فی جوفھا. (فتاویٰ تیمیہ ج: ۱ ص: ۶۰، بحوالہ فتاویٰ رحیمیہ ج: ۷ ص: ۲۵۷. دارالاشاعت)

(۳) قلت الا قرب التخلص بان الدبر والفرج الداخل من الجوف اذ لا حاجز بینھما و بینہ فھما فی حکمہ والفم والانف وان لم یکن بینھما و بین الجوف حاجز الا ان الشارع اعتبرھما فی الصوم من الخارج. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۰. ط: ایچ ایم سعید)

- ہو جائے گا، کیونکہ عورتوں کے اندر یہ فطری منفذ موجود ہے جو پیٹ تک پہنچتا ہے۔ (۱)
- (۱۰) روزے کے دوران سیال چیز شرمگاہ میں پیشاب کی جگہ پر نہ رکھے ورنہ اندر جانے کی صورت میں روزہ فاسد ہو جائے گا۔ (۲)
- (۱۱) اگر مرد نے اپنی انگلی بیوی کی شرمگاہ میں داخل کی تو اس کی دو صورتیں ہیں، اگر گیلی انگلی داخل کی تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی اور اگر خشک انگلی داخل کی تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، لیکن ایسی حرکت مناسب نہیں۔ (۳)
- (۱۲) بیوی کی شرمگاہ میں دوا ڈالنے کے لئے انگلی اندر داخل کی اور شہوت غالب آگئی تو خیال ہوا کہ روزہ ٹوٹ گیا، اس کے بعد صحبت کر لی تو روزہ فاسد ہو گیا، قضا اور کفارہ دونوں لازم ہیں۔ (۴)
- (۱۳) اگر کسی عورت نے اپنی انگلی تیل یا پانی سے تر کر کے یا حقنہ کی لکڑی وغیرہ شرمگاہ کے اندر پوری داخل کر دی تو روزہ فاسد ہو جائے گا قضا لازم ہوگی کفارہ نہیں۔ (۵)

- (۲، ۱) واما الاقطار فی قبل المرأة فقد قال مشائخنا انه یفسد صومها بالاجماع لان لمثانها منفذا فیصل الی الجوف کالاقطار فی الاذن. (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۹۳ ط: ایچ ایم سعید)
- ایضا: قلت الاقرب التخلص بان الدبر والفرج الداخل من الجوف اذ لاحاجز بینهما و بینہ فہما فی حکمہ. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۰ ط: ایچ ایم سعید)
- (۳) لو ادخلت الصائمة اصبعها فی فرجها و دبرها لا یفسد علی المختار الا ان تكون مبلولة بماء او دهن. (تبیین الحقائق ج: ۱ ص: ۳۳۰ ط: ایچ ایم سعید)
- (۴) ولو لمس امرأة بشهوة او قبلها او جامعها ولم ينزل فظن ان ذلك یفطره فاکل بعد ذلك متعمدا فعليه الکفارة. لان ذلك لا ینافی رکن الصوم فی الظاهر فکان ظنه فی غیر موضعه فکان ملحقا بالعدم. (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۱۰۰ ط: ایچ ایم سعید، احسن الفتاوی، سعید)
- (۵) لو ادخلت الصائمة اصبعها فی فرجها او دبرها لا یفسد علی المختار الا ان تكون مبلولة بماء او دهن. (تبیین الحقائق ج: ۱ ص: ۳۳۰ باب ما یفسد الصوم ط: ایچ ایم سعید)

## شفاعت

روزہ قیامت کے دن اللہ رب العزت کے سامنے یہ شفاعت کرے گا کہ اے اللہ! اس بندے کو اپنی رضا عطا فرما دیجئے اور قرآن مجید بھی شفاعت کرے گا کہ اے اللہ! یہ بندہ میری تلاوت کرتا تھا، اس لئے اس سے عذاب کو ہٹا دیجیے اور اس کو جنت عطا فرما دیجیے۔ (۱)

## شوال کے چھ روزے

(۱) شوال میں عید کے دن کے بعد سے مہینہ ختم ہونے تک چھ روزے رکھنے کی بڑی فضیلت ہے۔ یہ روزے رمضان المبارک کے فرض روزوں کے بعد ایسے ہیں جیسے فرض نماز کے بعد سنت اور نفل نماز ہوتی ہے۔ (۲)

(۲) جو شخص رمضان المبارک کے روزے رکھنے کے بعد شوال کے مہینے میں بھی چھ روزے رکھے گا اس کو پورا ایک سال مسلسل روزہ رکھنے کا ثواب ملے گا، کیونکہ ہر نیکی کا ثواب دس گنا ہے۔ لہذا  $36 \times 10 = 360$  بنے گا۔ (۳)

(۳) شوال کے چھ روزے پے درپے مسلسل رکھے یا متفرق طور پر یا عید کے دن کے بعد یا پورے مہینے میں کسی بھی چھ دن روزے رکھے تمام صورتیں صحیح ہیں۔ (۴)

(۱) عن عبد الله بن عمرو ان رسول الله ﷺ قال الصيام والقرآن يشفعان للعبد يقول الصيام اي رب اني منعته الطعام والشهوات بالنهار فشفعني فيه ويقول القرآن منعته النوم بالليل فشفعني فيه فيشفعان. رواه البيهقي شعب الايمان. (مشکوٰۃ ص: ۷۳ کتاب الصوم الفصل الثاني قديمي)  
(۲) عن عمر بن ثابت بن الحارث الخزرجي عن ابي ايوب الانصاري انه حدثه ان رسول الله ﷺ قال من صام رمضان ثم اتبعه سته من شوال كان كصيام الدهر. (مسلم شريف ج: ۱ ص: ۳۶۹، باب استحباب ستة من شوال اتباعا لرمضان. ط: قديمي كتب خانة)

(۴) قال صاحب الهداية في كتابه التجنيس: ان صوم الستة بعد الفطر متتابعة منهم من كرهه والمختار انه لا بأس به لان الكراهة انما كانت لانه لا يؤمن من ان يعد ذلك من رمضان فيكون تشبها بالنصاري والآن زال ذلك المعنى الخ (شامي ج: ۲ ص: ۴۳۵. سعيد)

## شوال کے چھ روزوں میں قضا روزوں کی نیت بھی کرنا

رمضان کے روزے فرض ہیں، شوال کے چھ روزے نفل ہیں، لہذا شوال کے چھ روزوں میں رمضان کے روزوں کی قضا کی نیت کرنا درست نہیں، اس طرح رمضان کا روزہ صحیح نہیں ہوگا۔ (۱)

### شہوت

- (۱) اپنی بیوی یا اجنبی عورت کو صرف شہوت کے ساتھ دیکھنے سے اگر انزال ہو گیا تو اس سے روزہ فاسد نہیں ہوتا۔ (۲)
- (۲) بیوی کے علاوہ کسی اور کو قصد شہوت کی نظر سے دیکھنا بہت بڑا گناہ ہے، بلکہ یہ آنکھ کا زنا ہے، جیسا کہ بخاری شریف میں ہے۔ (۳)
- (۳) روزے کے دوران بیوی کو بھی شہوت کی نظر سے دیکھنے سے بچنا چاہیے۔ (۴)

- (۱) ومتى نوى شيئين مختلفين متساويين فى الكافة والفريضة ولا رجحان لاحدهما على الآخر بطلا ومتى ترجح احدهما على الآخر ثبت الرجح كذا فى محيط السرخسى ..... واذا نوى قضاء بعض رمضان والتطوع يقع عن رمضان فى قول ابى يوسف وهو رواية عن ابى حنيفة كذا فى الذخيرة. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۶، ۱۹۷ ط: رشیدیہ)
- (۲) قوله اونظرالى امرأة فانزل لم يفطر سواء نظرالى الوجه اوالى الفرج اوالى غيرهما كما بينا انه لم يوجد صورة الجماع ولا معناه فصار كالتفكر اذا امنى. (الجوهرة النيرة ج: ۱ ص: ۱۶۷)
- (۳) عن ابن عباس قال مارأيت شيئا اشبه باللمم مما قال ابوهريرة عن النبى ﷺ قال ان الله كتب على ابن آدم حظه من الزنى ادرك ذلك لامحالة فرنى العين النظرو زنى اللسان النطق والنفس تمنى وتشتهى والفرج يصدق ذلك ويكذبه. (بخارى شريف ج: ۲ ص: ۹۲۲، مسلم شريف ج: ۲ ص: ۳۳ ط: قديمى كتب خانہ)
- (۴) اياكم والنظر فانها تزرع فى القلب الشهوة. (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۹۳ ط: ايچ ايم سعيد)

## شیخ فانی

شیخ فانی، ضعیف العمری یا مرض کی بناء پر اگر روزہ رکھنے کی استطاعت نہیں رکھتا تو ہر روزے کے بدلہ میں دو کلو گرام یا اس کی قیمت ادا کرے۔ (۱)

(ص)

### صاحب نصاب نہ ہو تو.....

- (۱) اگر کوئی شخص صاحب نصاب نہیں، غریب اور فقیر ہے تو اس پر صدقہ فطر واجب نہیں، ہاں اگر خوشی سے صدقہ فطر ادا کرنا چاہے تو ادا کر سکتا ہے، ثواب ملے گا۔ (۲)
- (۲) حدیث شریف میں ہے کہ اگر فقیر صدقہ فطر ادا کرتا ہے تو اللہ تعالیٰ اس کو اس سے زیادہ عنایت فرماتا ہے، جتنا اس نے صدقہ فطر کے طور پر دیا ہے۔ (۳)

(۱) قال عبد الرحمن الجزرى: الشيخ الفانى الذى لا يقدر على الصوم فى جميع فصول السنة يفطروا تجب من كل يوم فدية طعام مسكين. (كتاب الفقه على المذاهب الاربعة ج: ۱ ص: ۵۷۶، كتاب الصوم)

أيضا فى الهندية: فالشيخ الفانى الذى لا يقدر على الصيام يفطروا يطعم لكل يوم مسكينا كما يطعم فى الكفارة. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷)

والشيخ الذى لا يقدر على الصوم يفطروا يطعم لكل يوم مسكينا نصف صاع من براوصا من تمر او صاعا من شعير كما يطعم فى الكفارات الفانى الذى قرب الى الفناء او فئت قوته. (الجوهرية النيرة ج: ۱ ص: ۱۷۲. ط: رشيدية كوئٹہ)

(۲۰) عن ابى هريرة قال اتى رسول الله ﷺ رجل فقال يا رسول الله اى الصدقة اعظم فقال ان تصدق وانت صحيح شحيح تخشى الفقر وتامل الغنى ولا تمهل حتى اذا بلغت الحلقوم قلت لفلان كذا ولفلان كذا الا وقد كان لفلان. (الصحيح لمسلم ج: ۱ ص: ۳۳۲، كتاب الزكاة باب بيان الفضل الصدقة ط: قديمي كتب خانہ)

(۳) مظاهر حق ج: ۲ ص: ۵۸. ط: دار الاشاعت

## صبح صادق کے بعد کچھ کھایا پیایا جماع کیا

(۱) اگر روزہ دار کو معلوم ہے کہ صبح صادق ہوگئی، اس کے باوجود کھایا پیایا جماع کیا تو روزہ فاسد ہو گیا، قضا اور کفارہ دونوں لازم ہیں۔

اور اگر صبح صادق ہونا معلوم نہیں تھا، سحری کا وقت باقی ہے سمجھ کر کھایا پیایا جماع کیا تو اس صورت میں روزہ فاسد ہو جائے گا، صرف قضا لازم ہوگی کفارہ نہیں۔ (۱)

## صحبت کرنا

(۱) رمضان کے روزے کے دوران صحبت کرنے سے روزہ فاسد ہو جاتا ہے، قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے۔ (۲)

(۲) جب مرد کے عضو مخصوص کی سپاری عورت کے اگلے راستہ میں اندر چلی جائے گی تو روزہ فاسد ہو جائے گا، خواہ منی نکلے یا نہ نکلے، قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے۔ (۳)

(۳) اگر مرد نے پاخانے کی جگہ اپنا عضو مخصوص داخل کیا اور اس کی سپاری اندر چلی گئی تب بھی عورت اور مرد دونوں کا روزہ فاسد ہو گیا، قضا اور کفارہ دونوں واجب ہیں۔ (۴)

(۴) آگے اور پیچھے دونوں راستوں میں سے کسی بھی راستہ میں جان بوجھ کر مجامعت کی تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے۔ (۵) گناہ

(۱) ومن جامع عامدا في احد السبيلين او اكل او شرب ما يتغذى به او يتداوى به فعليه القضاء والكفارة لان الجنابة متكاملة لقضاء الشهوة. (الجوهرة النيرة ج: ۱ ص: ۱۶۹)

ومن تسحرو هو يظن ان الفجر لم يطلع او افطرو هو يرى ان الشمس قد غربت ثم تبين ان الفجر قد طلع وان الشمس لم تغرب قضاءه ذلك اليوم ولا كفارة عليه. (الجوهرة النيرة ج: ۱ ص: ۱۷۴)

(۲، ۳) قال طاهر بن احمد: اذا جامع امرأته متعمدا في نهار رمضان فعليه القضاء والكفارة اذا توارت الحشفة انزل اولم ينزل. (خلاصة الفتاوى ج: ۱ ص: ۲۵۹، هداية ج: ۱ ص: ۲۰۱)

(۴، ۵) وان جامعها في دبرها ..... متعمدا عليه القضاء والكفارة انزل اولم ينزل. (فتاوى قاضیخان ج: ۱ ص: ۱۰۲، الفصل الخامس في ما يفسد الصوم) وفتاویٰ خانہ علی ہامش ہندیہ ۱/۲۱۲، فصل وامامایو جب القضاء والكفارة، ط: رشیدیہ

الگ ہوگا۔ ان دونوں مقاموں کی مجامعت میں منی نکلنا شرط نہیں، صرف سپاری ایک دفعہ اندر چلی جانا شرط ہے۔

(۵) صحبت اور جماع میں عورت اور مرد دونوں کا عاقل ہونا شرط نہیں ہے، اگر دونوں میں سے ایک مجنون ہے، دوسرا عاقل تو عاقل پر کفارہ لازم ہوگا۔ مثلاً مرد عاقل ہے اور عورت مجنون تو مرد پر قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے اور اگر مرد مجنون یا نابالغ ہے اور عورت عاقل ہے تو عورت پر کفارہ اور قضا دونوں لازم ہوں گے۔ (۱)  
(۶) اگر عورت جماع کرانے میں راضی تھی تو اس پر بھی قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے۔ اور اگر عورت جماع کرانے میں راضی نہیں تھی، زبردستی جماع کیا اور عورت آخر تک راضی نہیں تھی تو اس صورت میں عورت پر صرف قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں اور اگر عورت ابتداء میں ناراض تھی، زبردستی کی گئی پھر عورت راضی ہوگئی تو بھی صرف قضا لازم ہوگی، کفارہ لازم نہیں ہوگا۔ (۲)

(۷) رمضان میں دن میں بیوی سے بھی صحبت کرنا کبیرہ گناہ ہے، اس صورت میں قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے۔ (۳)  
(۸) رمضان میں غروب آفتاب کے بعد سے صبح صادق سے قبل تک بیوی سے صحبت کرنا جائز ہے۔ (۴)

(۱) ولو مکنت نفسها من صبی ومجنون فزنی بها فعليه الكفارة بالاتفاق. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۵، کتاب الصوم النوع الثانی ما یوجب القضاء والكفارة. ط: رشیدیہ)  
(۲) وعلى المرأة مثل ما على الرجل ان كانت مطاوعة وان كانت مكرهة فعليها القضاء دون الكفارة وكذا اذا كانت مكرهة في الابتداء ثم طاعته بعد ذلك كذا في فتاوی قاضیخان. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۵). ط: رشیدیہ كوئٹہ)  
وقيد بالعمد لاخراج المخطی والمكره فانه وان فسد صومهما لاتلزمهما الكفارة ولوحصلت الطواغية في وسط الجماع بعد ما كان ابتداءه بالاكراه لانها انما حصلت بعد الافطار كما في الظهيرية (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۷۶ ط: سعید) هكذا في الجوهرة النيرة ج: ۱ ص: ۱۶۹  
(۳) (۱-۲) (۴) احل لكم ليلة الصيام الرفث الى نسائكم. (سورة البقرة آیت: ۱۸۷)

(۹) اگر روزے کے دوران بھولے سے صحبت کر لی اور آخر تک روزہ یا دن نہیں آیا

تو روزہ درست ہے فاسد نہیں ہوا۔ (۱)

(۱۰) اور اگر مہسٹری کے دوران یاد آیا تو فوراً الگ ہونا ضروری ہے ورنہ روزہ

فاسد ہو جائے گا، غروب تک کھانے پینے کی اجازت نہیں ہوگی اور بعد میں ایک روزہ

رکھنا لازم ہوگا۔ (۲)

(۱۱) بھولے سے صحبت کرنے کے بعد پھر قصداً صحبت کر لی، اس گمان سے کہ

روزہ فاسد ہو گیا ہے تو اس سے روزہ فاسد ہو گیا قضا ضروری ہے۔ (۳)

(۱۲) اگر کوئی شخص رات کو سحری کی نیت سے لیٹ گیا، آنکھ کھلی تو رات کے

خیال سے بیوی سے صحبت کر لی، بعد میں معلوم ہوا کہ اس وقت صبح ہو گئی تھی تو یہ روزہ

صحیح نہیں ہوا، قضا واجب ہے، کفارہ لازم نہیں، باقی پورا دن کھانا پینا جائز نہیں۔ (۴)

(۱) فان اكل الصائم او شرب او جامع ناسيا لم يفطر. (الجمهورية النيرة ج: ۱ ص: ۱۶۶، فتاویٰ عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۲. رشیدیہ کوئٹہ)

(۲) اونزع المجمع حال كونه ناسيا في الحال عند ذكره. (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۷. سعید)  
ایضا: قول المصنف اونزع المجمع الخ النظر ما كتبه السندی هنا عبارته عند قول المصنف  
اونزع المجمع ناسيا في الحال عند ذكره یعنی لو بدأ بالجماع ناسيا فذكر ان نزع بمجرد  
التذكر لم يفطر. (تقریرات الرافعی ص: ۱۴۷. ایچ ایم سعید)

(۳) او اكل او جامع ناسيا او احتلم او انزل بنظر او ذرعه القي فظن انه افطر فاكل عمدا الشبهة قضی فی  
الصور كلها فقط..... قوله فاكل عمدا وكذا لو جامع عمدا كما فی تقريره فی نور الايضاح فالمراد  
بالاكل الافطار قوله للشبهة علة للكل قال فی البحر وانما لم تجب الكفارة بافطاره عمدا بعد اكله  
اوشربه او جماعه ناسيا لانه ظن فی موضع الاشتباه بالنظر هو الاكل عمدا (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۱)

(۴) ولو جامع علی ظن انه بلیل ثم علم انه بعد الفجر فنزع من ساعته فصومه فاسد لانه  
مخطئ ولا كفارة علیه لعدم قصد الافساد. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۱، سعید)

ایضا: والاصل فی هذه المسائل ان كل من صار فی آخر النهار بصفة لو كان فی اول النهار  
علیها للزمه الصوم فعليه الامساك..... ولذا ذکر فی البدائع الاصل المذكور ثم قال وكذا  
كل من وجب علیه الصوم لوجود سبب الوجوب والاهلية ثم تعذر علیه المضی بان افطر  
متمعدا او اصبح يوم الشك مفطرا ثم تبين انه من رمضان او تسحر علی ظن ان الفجر لم یطلع  
ثم تبين طلوعه فانه يجب علیه الامساك تشبها. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۸. ط: ایچ ایم سعید)

(۱۳) کسی نے مردہ عورت سے یا ایسی کم عمر نابالغ بچی سے صحبت کر لی جس کے ساتھ عموماً صحبت کی رغبت نہیں ہوتی یا کسی جانور سے جماع کیا اور منی خارج ہو گئی تو روزہ فاسد ہو جائے گا، صرف قضا واجب ہوگی کفارہ نہیں۔ (۱)

## صحبت زبردستی کرنا

(۱) کوئی روزہ دار عورت غافل سو رہی تھی یا بے ہوش پڑی تھی اس سے کسی نے صحبت کر لی تو روزہ فاسد ہو گیا، عورت پر صرف قضا واجب ہے، کفارہ نہیں، البتہ مرد پر قضا اور کفارہ دونوں لازم ہیں۔ (۲)

(۲) کسی روزہ دار عورت سے زبردستی جماع کیا گیا اور عورت آخری وقت تک راضی نہیں تھی یا سونے کی حالت میں یا جنون کی حالت میں جماع کیا تو عورت کا روزہ فاسد ہو جائے گا۔ صرف قضا لازم ہوگی کفارہ نہیں، البتہ مرد، روزہ دار پر قضا اور کفارہ دونوں لازم ہیں۔ (۳)

## صحبت کرانا نابالغ یا مجنون سے

اگر کوئی عورت روزے کے دوران کسی نابالغ یا مجنون سے صحبت کرائے گی تو اس کا روزہ فاسد ہو جائے گا قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے۔ (۴)

- (۱) واذا جامع بهيمة او ميتة او جامع فيما دون الفرج ولم ينزل لا يفسد صومه وان انزل في هذه الوجوه كان عليه القضاء دون الكفارة هكذا في قاضيه خان. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۵)
- (۲) او طئت نائمة او مجنونة ..... قضی فی الصور کلها قوله او طئت الخ هذا بالنظر اليها واما الواطئ فعليه القضاء والكفارة اذ لا فرق بين وطنه عاقلة وغيرها كما فی الاشباه وغيرها. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۵ ط: ایچ ایم سعید)
- (۳) من جامع عمدا فی احد السبلین فعليه القضاء والكفارة ..... وعلى المرأة مثل ماعلى الرجل ان كانت مطاوعة وان كانت مکروهة فعليها القضاء دون الكفارة. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۵)
- (۴) لو مکنت نفسها من صبی او مجنون فزنی بها فعليها الكفارة بالاتفاق کذا فی الزاھدی. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۵ ط: رشیدیہ کوئٹہ)

## صحت کے بعد غروب تک کھانا پینا

اگر روزے کے دوران بیماری کی شدت کی وجہ سے دوا لینے کی ضرورت ہوئی اور دوا لینے کے بعد آرام ہو گیا تو غروب تک روزہ داروں کی طرح رہنا واجب ہے۔ کھانے پینے کی اجازت نہیں ہوگی، بعد میں اس روزے کی قضا بھی لازم ہوگی۔ (۱)

## صحت یاب ہونے سے پہلے انتقال ہو جانا

اگر کوئی شخص بیماری کی وجہ سے روزہ رکھ نہ سکا اور معالج نے بھی روزہ رکھنے سے منع کر دیا اور اس مرض سے صحت نہ ہوئی اور روزہ رکھنے کے قابل نہ ہوا اور اسی مرض میں فوت ہو گیا تو ان روزوں کا فدیہ ادا کرنا لازم نہیں، لیکن اگر ورثاء خوشی سے فدیہ دے دیں تو کچھ حرج نہیں، میت کو ثواب ملے گا، اور ایک روزہ کا فدیہ ایک صدقہ فطر کے برابر ہے۔ (۲)

## صدقہ فطر

(۱) جو مسلمان اتنا مالدار ہے کہ اس پر زکوٰۃ واجب ہے یا اس پر زکوٰۃ واجب نہیں، لیکن قرض اور ضروری اسباب سے زائد اتنی قیمت کا مال یا اسباب ہے جتنی قیمت پر زکوٰۃ واجب ہوتی ہے، یعنی ساڑھے باون تو لے چاندی کی قیمت کا مال، اسباب اور سامان ہے تو اس پر عید الفطر کے دن صدقہ دینا واجب ہے، چاہے وہ تجارت کا مال ہو یا تجارت کا مال نہ ہو، چاہے اس پر سال گزر چکا ہو یا نہ گزرا ہو۔ اس صدقہ کو صدقہ فطر کہتے ہیں۔ (۳)

(۲) جس طرح مالدار ہونے کی صورت میں مردوں پر صدقہ فطر ادا کرنا (۴)

(۱) والاصل فی هذه المسائل ان کل من صار فی آخر النهار بصفة لوکان فی اول النهار علیها

للزومه الصوم فعليه الامساك. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۸. ایچ ایم سعید)

(۲) فان ماتوا فیہ ای فی ذلك العذر فلا يجب علیهم الوصية بالفدية لعدم ادراكهم عدة من

ایام اخر. (شامی ج: ۲ ص: ۱۶۰. ط: ایچ ایم سعید)

(۳) (۴) هي واجبة علی الحر المسلم المالك لمقدار النصاب فاضلا عن حوالجه الاصلية =

واجب ہے اسی طرح اگر عورت مالدار صاحب نصاب ہے یا اس کی ملکیت میں قرضہ اور ضروری اسباب سے زائد اتنی قیمت کا مال وغیرہ ہے جس کی قیمت ساڑھے باون تولہ چاندی کی قیمت کے برابر ہے، مثلاً اس کے پاس زیور ہے جو والدین کی طرف سے ملا ہے یا شوہر نے نصاب کے برابر زیور عورت کو بطور ملکیت دیا ہے، یا مہر میں اتنا زیور ملا جو نصاب کے برابر ہے تو عورت کو بھی اپنی طرف سے صدقہ فطر ادا کرنا واجب ہے، ہاں اگر شوہر اس کی طرف سے ادا کر دے تو ادا ہو جائے گا۔

(۳) جس آدمی پر صدقہ فطر ادا کرنا واجب ہے اس کو اپنے نابالغ لڑکے اور لڑکی کی طرف سے بھی نکالنا واجب ہے۔ (۱)

(۴) مالدار عورت پر اپنا صدقہ فطر ادا کرنا تو واجب ہے، لیکن اس پر کسی اور کی طرف سے ادا کرنا واجب نہیں، نہ بچوں کی طرف سے نہ ماں باپ کی طرف سے، نہ شوہر کی طرف سے۔ (۲)

(۵) صدقہ فطر مسلمانوں کی آپس کی ہمدردی کا کم سے کم حصہ ہے، اگر مالدار اتنا بھی فقیر مسکینوں کو نہیں دیتے ہیں تو ان پر خدائی قہر اترتا ہے، ان کی کمائیوں کی برکتیں ختم

=..... ولا يعتبر فيه وصف النماء. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۱. رشیدیہ کوئٹہ)

أيضا: يخرج ذلك عن نفسه لحديث ابن عمر قال فرض رسول الله ﷺ زكاة الفطر على الذكور والانثى. (هدایہ ج: ۱ ص: ۱۹۰. ط: مکتبہ رحمانیہ)

وفي الشامية: تجب صدقة الفطر على كل حر مسلم..... ذی نصاب فاضل عن حاجته الاصلية كدينه وحواله عياله وان لم ينم. (شامی ج: ۲ ص: ۹۸، باب صدقة الفطر. سعید)

وفي الهندية: ولا يؤدى عن زوجته ولا عن اولاده الكبار وان كانوا في عياله ولو ادى عنهم او عن زوجته بغير امرهم اجزاهم استحسانا كذا في الهداية. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۳، رشیدیہ)

(۱) وتجب عن نفسه وطفله الفقير كذا في الكافي. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۲. رشیدیہ)

ايضا: ويخرج عن اولاده الصغار ومماليه. (هدایہ ج: ۱ ص: ۱۹۰، باب صدقة الفطر)

(۲) والأصل ان صدقة الفطر متعلقة بالولاية والمؤنة، فكل من كان عليه ولايته ومؤنته ونفقته فانه تجب عليه صدقة الفطر فيه والافلا. (فتاویٰ عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۳ رشیدیہ)

ہو جاتی ہیں۔ اللہ تعالیٰ ان کے پیچھے ایسی الجھنیں لگا دیتا ہے کہ صدقہ فطر سے کہیں زیادہ پیسہ برباد ہو جاتا ہے، اور کسی غریب کے ایک دن کے رونے کی پروانہ کرنے کی سزا میں اللہ تعالیٰ کبھی کبھی برسوں تک رلاتا ہے، جب مالدار لوگ خوشی میں غریبوں کو شریک نہیں کرتے تو اللہ تعالیٰ ایسے مالداروں کو کبھی پریشانی اور تکلیف میں شریک کر کے برابر کر دیتا ہے۔ پھر اس کو غریبوں کے آنسوؤں اور ہچکیوں کا احساس ہوتا ہے۔ (۱)

## صدقہ فطر کا مصرف

(۱) صدقہ فطر کا مصرف وہی ہے جو زکوٰۃ کا مصرف ہے۔ یعنی جہاں جہاں زکوٰۃ دی جاسکتی ہے انہیں جگہوں میں صدقہ فطر دینا بھی جائز ہے اور جہاں جہاں زکوٰۃ دینا جائز نہیں ہے، ان جگہوں میں صدقہ فطر دینا بھی جائز نہیں، البتہ غریب غیر مسلم لوگوں کو صدقہ فطر دینا جائز ہے، زکوٰۃ دینا جائز نہیں، صدقہ فطر اور زکوٰۃ میں یہ فرق ہے۔ (۲)

(۲) صدقہ فطر کے مستحق فقراء اور مساکین ہیں، لہذا عید کی نماز سے پہلے ادا کر دیا جائے۔ بعض لوگ یا برادری صدقہ فطر کی رقم لے کر عید کی نماز سے پہلے تقسیم نہیں کرتے، یہ طریقہ سنت کے خلاف ہے۔ (۳)

(۳) فطرہ کی رقم سے مسجد، مدرسہ، ہسپتال، ہسپتال کی مشینریاں یا آفس یا راستہ وغیرہ بنانا جائز نہیں ہے۔ (۴)

(۱) رمضان کیا ہے؟ ص: ۱۷۵

(۲) و مصرف هذه الصدقة ما هو مصرف الزكاة. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۸۸، ۱۹۴) (و صدقة الفطر كالزكاة في المصارف) (وفي كل حال (الافى) جواز (الدفع الى الذمى. شامی ج: ۲ ص: ۳۵۱)

(۳) والمستحب للناس ان يخرج و الفطرة بعد طلوع الفجر يوم الفطر قبل الخروج الى المصلى كذا في الجوهره النيرة. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۲. رشیدیہ)

(۴) (وفي الهنديه: و مصرف هذه الصدقة ما هو مصرف الزكاة. (ج: ۱ ص: ۱۸۸، ۱۹۴)

وفي الدر المختار: لا يصرف الى بناء نحو مسجد قوله نحو مسجد كبناء القناطر والسقايات و اصلاح الطرقات و كرى الانهار و الحج و الجهاد و كل ما لا تمليك فيه. (شامی ج: ۲ ص: ۳۴۴)

## صدقہ فطر کس کس کی طرف سے دینا واجب ہے

مالدار آدمی کے لئے صدقہ فطر اپنی طرف سے بھی ادا کرنا واجب ہے، اپنی نابالغ اولاد کی طرف سے بھی اور بالغ اولاد کی طرف سے بھی بشرطیکہ وہ فقیر ہو، نابالغ اولاد اگر مالدار ہو تو ان کے مال سے ادا کرے اور اگر مالدار نہیں ہے تو اپنے مال سے ادا کرے۔ بالغ اولاد اگر مالدار ہے تو ان کی طرف سے صدقہ فطر ادا کرنا باپ پر واجب نہیں، ہاں اگر باپ از خود ادا کر دے گا تو صدقہ فطر ادا ہو جائے گا۔ (۱)

## صدقہ فطر کس وقت واجب ہوتا ہے

(۱) صدقہ فطر عید الفطر کے دن کی صبح صادق طلوع ہونے کے وقت واجب ہوتا ہے۔ البتہ صدقہ فطر رمضان میں بھی ادا کرنا درست ہے۔ لہذا جو شخص فجر کا وقت آنے سے پہلے فوت ہو گیا یا فقیر ہو گیا تو اس پر صدقہ فطر واجب نہیں۔ (۲)

(۲) جو کافر عید کے دن صبح صادق کے بعد مسلمان ہوا، یا جو فقیر صبح صادق کے بعد مالدار ہوا، اس پر صدقہ فطر ادا کرنا واجب نہیں۔ (۳)

(۳) جو بچہ صبح صادق سے پہلے یا صبح صادق کے وقت پیدا ہوا، اس کی طرف سے صدقہ فطر ادا کرنا مالدار باپ پر واجب ہے۔ (۴)

(۴) جو بچہ یا بچی صبح صادق کے بعد پیدا ہوا اس کی طرف سے صدقہ فطر نکالنا

(۱) وتجب عن نفسه وطفله الصغير ولا يؤدى عن زوجته ولا عن اولاده الكبار وان كانوا في عياله ولو ادى عنهم او عن زوجته بغير امرهم اجزاهم استحسانا كذا في الهداية. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۳. ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۲) ووقت الوجوب بعد طلوع الفجر الثاني من يوم الفطر فمن مات قبل ذلك لم تجب عليه الصدقة..... وان قدموها على يوم الفطر جاز. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۲ رشیدیہ)

(۳) او اسلم بعده لم تجب. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۲ ط: رشیدیہ)

(۴) ومن ولد قبله وجبت. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۲ ط: رشیدیہ)

واجب نہیں۔ (۱)

## صدقہ فطر کن کن چیزوں سے دیا جاسکتا ہے

صدقہ فطر میں کشمش، کھجور، جو، گندم یا آٹا یا ان چیزوں کی قیمت دی جاسکتی ہے اور قیمت دینا زیادہ بہتر ہے، تاکہ مستحق آدمی اپنی ضرورت کی چیز خرید سکے۔ (۲)

## صدقہ فطر کی ادائیگی کا وقت

عید الفطر کے روز عید کی نماز سے پہلے صدقہ فطر ادا کر دینا بہت زیادہ فضیلت کی بات ہے۔ عید کی نماز کے بعد بھی دیا جاسکتا ہے۔ لیکن عید کے دن سے زیادہ تاخیر کرنا خلاف سنت اور مکروہ ہے، پھر بھی ادا کر دینا ضروری ہے، اور رمضان المبارک کا چاند نظر آنے کے بعد رمضان المبارک میں بھی صدقہ فطر ادا کرنا جائز ہے۔ (۳)

(۲) رمضان سے پہلے صدقہ فطر ادا نہ کرے۔ (۴)

## صدقہ فطر کی مقدار

(۱) ”کھجور“ ایک صاع یعنی تقریباً ساڑھے تین کلو یا اوسط درجہ کی ساڑھے تین

کلو کھجور کی قیمت دینا ہے، اور قیمت ہر سال ماہ رمضان المبارک میں مارکیٹ سے

(۱) ومن ولد بعده لم تجب. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۲ ط: رشیدیہ)

(۲) ہی نصف صاع من براوصاع من شعیرا وتمر..... ثم قبل یجوز اداءه باعتبار العین

والاحوط ان یراعی فیہ القیمۃ ہکذا فی محیط السرخسی. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۱)

(۳) (۴، ۳) و یستحب اخراجها قبل الخروج الی المصلی بعد طلوع فجر الفطر عملا بامره وفعله

علیہ الصلوۃ والسلام و صح اداؤها اذا قدمه علی یوم الفطر و آخره - اعتبارا بالزکاة

والسبب موجود اذ هو الرأس - بشرط دخول رمضان فی الاول - ای مسألة التقدیم

- هو الصحیح - وہ مفتی جوہرہ و بحر عن الظہیریہ - لكن عامة المتون والشروح علی

صحة التقدیم مطلقا و صححه غیر واحد و رجحه فی النہر و نقل عن الولوالجیہ انه ظاهر

الروایۃ: قلت فكان هو المذهب درمختار. (شامی ج: ۲ ص: ۳۶۷، باب صدقۃ الفطر، سعید)

معلوم کر کے متعین کرے۔ (۱)

(۲) ”جو“ ایک صاع یعنی تقریباً ساڑھے تین کلو یا اوسط درجہ کے ساڑھے تین

کلو ”جو“ کی قیمت دینا۔ (۲)

(۳) ”کشمش“ ایک صاع تقریباً ساڑھے تین کلو یا اوسط درجہ کی ساڑھے تین

کلو ”کشمش“ کی قیمت دینا۔ (۳)

(۴) ”گندم“ نصف صاع یعنی پونے دو کلو یا اوسط درجہ کے پونے دو کلو گندم کی

قیمت دینا۔ (۴)

(۵) ”آٹا“ اگر آٹا دینا ہے تو دو کلو دینا چاہیے یا دو کلو کی قیمت دینی چاہیے۔ (۵)

(۶) ”چاول“ اگر چاول دینا ہے تو اس کی مقدار اور وزن مقرر نہیں، البتہ اتنا

دینا ضروری ہے کہ اس کی قیمت پونے دو کلو گندم کی قیمت سے کم نہ ہو۔ (۶)

(۷) ”میدہ“ اگر میدہ خالص گندم کا ہے تو فی صدقہ فطر دو کلو کے حساب سے

دیدے اور اگر میدہ خالص گندم کا نہیں تو اس صورت میں اتنا میدہ دینا لازم ہوگا جس

کی قیمت پونے دو کلو گندم کی قیمت سے کم نہ ہو۔ (۷)

(۲، ۱) اوصاع تمر او شعیر..... ودفع القیمة ای الدرہم الفضل من دفع العین علی

المذہب المفتی بہ جوہرۃ وبحر عن الظہیریۃ وهذا فی السعة واما فی الشدة فدفع العین

افضل کما لا ینخفی درمختار (شامی ج: ۲ ص: ۳۶۴ و ۳۶۶ . ایچ ایم سعید)

(۳) واما الزبیب فقد ذکر فی الجامع الصغیر نصف صاع عند ابی حنیفۃ ”لانه یؤکل بجمیع

اجزائه وروی عن ابی حنیفۃ“ صاع وهو قولہما ثم قبل یجوز اداؤہ باعتبار العین والاحوط ان

یراعی فیہ القیمة . (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۱ ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۵، ۴) وہی نصف صاع من براوصاع من شعیر او تمر ودقیق الحنطة والشعیر وسویقہما

مثلہما . (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۱ ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۶) وماسواہ من الحبوب لایجوز الا بالقیمة (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۲ ط: رشیدیہ)

ایضا: ومالم ینص علیہ کذرة وخبز یعتبر فیہ القیمة . (شامی ج: ۲ ص: ۳۶۴ ط: سعید)

(۷) وہی نصف صاع من براوصاع من شعیر او تمر ودقیق الحنطة والشعیر وسویقہما مثلہما

. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۱ ط: رشیدیہ کوئٹہ)

- (۸) کشمش، کھجور، جواور گندم کے علاوہ اگر کسی اور چیز سے صدقہ فطر ادا کیا جائے تو اس کی قیمت کم سے کم پونے دو کلو گندم کی قیمت کے برابر ہونا ضروری ہے۔ (۱)
- (۹) ہر آدمی کو کوشش کرنی چاہیے کہ بیش قیمت چیزوں سے صدقہ فطر ادا کرے تاکہ قیامت کے دن ثواب زیادہ ملے اور وہاں جس کے پاس ثواب زیادہ ہوگا وہ زیادہ خوش ہوگا۔ (۲)

## صدقہ فطر میں اجازت

- (۱) اگر ایک آدمی دوسرے آدمی کی طرف سے صدقہ فطر ادا کرتا ہے تو اجازت لینا یا دینا ضروری ہے۔ (۳)
- (۲) اگر شوہر بیوی کی طرف سے صدقہ فطر ادا کر دیتا ہے تو صراحتہ اجازت لینا ضروری نہیں، کیونکہ عادتہ اجازت ہوتی ہے۔ (۴)
- (۳) اگر شوہر بیوی کی طرف سے زکوٰۃ ادا کر دیتا ہے تو اس میں اجازت لینا یا دینا ضروری ہے، بہتر ہے کہ ایک دفعہ ہمیشہ کے لئے اجازت لے لے یا اجازت دے دے تاکہ کسی قسم کا تردد باقی نہ رہے۔ (۵)

(۱) ومساواه من الحبوب لايجوز الا بالقيمة. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۲. رشیدیہ)  
ایضا: ومالم ينص عليه كذرة وخبز يعتبر فيه القيمة. (شامی ج: ۲ ص: ۳۶۴. ایچ ایم سعید)  
(۲) لن تناولوا البر حتى تنفقوا مما تحبون وماتنفقوا من شيء فان الله به عليم. آل عمران پ: ۴  
آیت: ۹۲)  
(۳) ولايجوز ان يعطى عن غير عياله الا بامرهم كذا في المحيط. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۳)  
ایضا: لان فيها معنى العبادة حتى لاتتأدى بدون النية. (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۱۹۸. سعید)  
(۴) ولوادى عنهما اى عن الزوجة والولد الكبير بلا اذن اجزا استحسانا للاذن عادة اى لوفى عياله والا فلا. (شامی ج: ۲ ص: ۳۶۳. ایچ ایم سعید)  
(۵) وشرط صحة ادائها نية مقارنة له اى للاداء. (شامی ج: ۲ ص: ۱۴، کتاب الزكاة. سعید)

## (ض)

### ضرورت اصلیه

(۱) رہنے کا گھر، پہننے کا کپڑا، استعمال کی گاڑی اور ضرورت کا سامان جو ہر وقت کام میں آتا ہے یا گاہے گاہے کام میں آتا ہے، سب ضرورت اور حاجات اصلیه میں داخل ہیں۔ (۱)

(۲) اگر کچھ سامان ضرورت سے زائد ہے لیکن ان چیزوں کی قیمت ساڑھے باون تولہ چاندی کی قیمت سے کم ہے تو وہ بھی حاجت اصلیه میں داخل ہے۔ (۲)

(۳) کسی کے پاس ضروری سامان سے زائد اسباب ہے، لیکن وہ قرضدار ہے تو قرض کا اندازہ لگا کر اس کی قیمت کو منہا کرنے کے بعد اتنی قیمت کا سامان باقی نہیں رہتا جو ساڑھے باون تولہ چاندی کے برابر ہو تو وہ بھی حاجت اصلیه میں داخل ہے۔ (۳)

(۴) اگر قرض کی رقم اندازہ سے منہا کرنے کے بعد اتنی قیمت کا سامان باقی رہتا ہے جس کی قیمت ساڑھے باون تولہ چاندی سے زیادہ یا برابر ہے تو اس پر

- 
- (۱) وہی ما يدفع الهلاك عن الانسان تحقيقا كالفقة ودور السكنى وآلات الحرب والياب المحتاج اليها لدفع الحرا والبرد او تقديرا كالدین . (شامی ج: ۲ ص: ۲۶۲، ایچ ایم سعید) ایضا: تجب علی حر مسلم ذی نصاب فضل عن مسکنه وثیابه واثاله وفرسه وسلاحه وعبيده . (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۵۲، ایچ ایم سعید)
- (۲) وان كان غنيا بان كان له مال فاضلا عن دينه مائتي درهم فصاعدا فانه يخرج صدقة الفطر عن نفسه وعن رقيقه والافلا . (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۷۰ ط: ایچ ایم سعید)
- (۳) وشرط ان يكون فاضلا عن حوائجه الاصلية لان المستحق بالحاجة كالمعدوم كالماء المستحق للعطش فخرج النصاب المشغول بالدين . (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۵۲، سعید)
- (۴) وان كان غنيا بان كان له مال فاضلا عن دينه مائتي درهم فصاعدا فانه يخرج صدقة الفطر عن نفسه وعن رقيقه والافلا . (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۷۰ ط: ایچ ایم سعید)
-

صدقہ فطر ادا کرنا واجب ہے۔ (۴)

## ضعف باقی ہے

(۱) اگر کوئی شخص بیماری سے اچھا ہو جائے، لیکن ابھی کمزوری باقی ہے اور یہ غالب گمان ہے کہ اگر روزہ رکھا تو پھر بیمار پڑ جائے گا، تب بھی روزہ چھوڑنا جائز ہوگا، البتہ کمزوری دور ہونے کے بعد فوت شدہ روزوں کی قضا لازم ہوگی۔ (۱)

(ط)

## طلباء کو فطرہ دینا

دینی مدارس کے غریب طلباء کو فطرہ دینا سب سے زیادہ ثواب ہے، کیونکہ اس صورت میں فطرہ کی ادائیگی کے ساتھ ساتھ صدقہ جاریہ کا ثواب بھی ملتا ہے۔ (۲)

## طویل دن والے علاقوں میں روزے کا حکم

(۱) صبح صادق سے روزے کا آغاز ہوتا ہے اور غروب آفتاب ہونے پر اس کا اختتام ہوتا ہے، اگر جغرافیائی اور موسمی حالات کے لحاظ سے گھنٹوں کے شمار میں کمی بیشی ہوتی ہے۔ مثلاً دن بارہ گھنٹے کے بجائے سولہ سترہ یا اٹھارہ گھنٹے ہو جائے تو آفتاب غروب ہونے تک روزہ رکھنا لازم ہوگا، سورج غروب ہونے سے پہلے صبح

(۱) والصحيح الذي يخشى ان يمرض بالصوم فهو كالمريض. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۸۱، وشامی ج: ۲ ص: ۱۶۳. ط: ایچ ایم سعید)

(۲) ..... او ای طالب علم (وفی المعراج التصديق على العالم الفقيه الفضل. (فتاوی شامی ج: ۲ ص: ۳۵۴). ط: ایچ ایم سعید)

التصدق على الفقير العالم الفضل من التصديق على الجاهل كذا في الذاهدي. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۸۷، الباب السابع في المصارف، شامی ج: ۲ ص: ۳۵۴)

صادق سے بارہ گھنٹے کا حساب کر کے افطار کرنا جائز نہیں ہوگا۔ اگر کوئی شخص ایسا کرے گا تو قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے۔ (۱)

(۲) اگر صبح صادق سے سورج غروب ہونے تک غیر معمولی فرق ہو جائے۔ مثلاً بیس یا بائیس گھنٹوں کا دن ہو جائے اور دو چار گھنٹوں کی رات رہ جائے تو بھی آفتاب غروب ہونے تک روزہ رکھنا لازم ہوگا۔

البتہ بسا اوقات دن غیر معمولی طور پر لمبا ہونے کی وجہ سے روزہ رکھنے میں بہت تکلیف ہوتی ہے۔ خاص طور پر عمر رسیدہ اور کمزور آدمیوں کے لئے روزہ رکھنا دشوار ہو جاتا ہے، تو ایسی صورت میں رمضان المبارک میں روزہ نہ رکھیں بلکہ بعد میں جب موسم ہلکا اور برداشت کے قابل ہو جائے اور دن کے اوقات نسبتاً کم ہو جائیں تو قضا کر لیں۔ (۲)

(۳) جن علاقوں میں ایک طویل عرصہ کا دن، پھر اسی طرح طویل عرصہ کی رات کا سلسلہ رہتا ہے (جیسا کہ بلغاریہ وغیرہ میں چھ مہینے کا دن اور چھ مہینے کی رات ہوتی ہے) تو وہاں روزہ رکھنے کا طریقہ یہ ہے کہ جس طرح نماز کے اوقات کا اندازہ سے تعین کیا جاتا ہے، اسی طرح ماہ رمضان کی آمد اور روزے کی ابتداء اور انتہاء کے اوقات کو بھی متعین کیا جائے۔

یا ایسے علاقے کے لوگ ان کے ایسے قریبی علاقے کے اعتبار سے روزہ کی

(۲، ۱) لم ارمن تعرض عندنا لحکم صومهم فيما اذا كان يطلع الفجر عندهم كما تغيب الشمس اوبعدہ بزمان لا يقدر فيه الصائم على ما يقيم بنيتہ ولا يمكن ان يقال بوجوب الصوم موالاته الصوم عليهم لانه يؤدى الى الهلاك فان قلنا بوجوب الصوم يلزم القول بالتقدير وهل يقدر ليلهم باقرب البلاد اليهم۔ كما قاله الشافعية هنا ايضا ام يقدر لهم بما يوسع الاكل و الشرب ام يجب عليهم القضاء فقط دون الاداء كل محتمل فليتأمل۔ (شامی ج: ۱ ص: ۳۳۹ کتاب الصلوة مطلب فی طلوع الشمس من مغربها . ط: ایچ ایم سعید)

ابتداء اور انتہاء کا حساب کریں جہاں معمول کے مطابق دن رات کی آمد و رفت کا سلسلہ جاری ہے۔ (۱)

## طویل عرصہ شب و روز والے علاقوں میں روزہ

جہاں پر ایک طویل عرصہ کا دن اور پھر اسی طرح رات کا سلسلہ رہتا ہے، وہاں جس طرح نماز کے اوقات کا اندازہ سے تعین کیا جاتا ہے اسی طرح ماہ رمضان کی آمد اور روزے کے اوقات کا بھی تعین کیا جائے گا۔

سب سے آسان صورت یہ ہے کہ ایسے مقام کے باشندوں کو ان مقامات کے مطابق عمل کرنا چاہیے جو ان سے قریب ہیں اور وہاں معمول کے مطابق دن رات کی آمد و رفت کا سلسلہ ہے۔ (۲)

(ع)

## عاشورہ کا روزہ

(۱) محرم کی دسویں تاریخ کو روزہ رکھنا مستحب ہے۔ رمضان کے علاوہ باقی گیارہ مہینوں کے روزوں میں محرم کی دسویں تاریخ کے روزے کا ثواب سب سے زیادہ ہے

(۱) (قوله العاجز عن الصوم) ای عجزاً مستمراً کمایاتی، اما لولم یقدر علیہ لشدة الحر کان له ان یفطر ویقضیه فی الشتاء. (شامی ج: ۲ ص: ۴۲۷ ط: ایچ ایم سعید)

(۲) ویجرى ذلك فيما لو مكثت الشمس عند قوم مدة..... قال فی امداد الفتاح قلت: وكذلك یقدر لجميع الآجال كالصوم والزكاة والحج والعدة وآجال البيع والسلم والاجارة، وینظر ابتداء الیوم فیقدر كل فصل من الفصول الاربعة بحسب ما یكون كل یوم من الزیادة والنقص کذا فی کتب الأئمة الشافعية ونحن نقول بمثله اذ اصل التقدير مقول به اجماعاً فی الصلوات. فتاوی شامی ج: ۱ ص: ۳۶۵، مطلب فی فاقد وقت العشاء کاهل بلغار کتاب الصلوة. نظام الفتاوی ج ۱ ص: ۷۸. مکتبه رحمانیہ

اور اس ایک روزے کی وجہ سے گزرے ہوئے ایک سال کے صغیرہ گناہ معاف ہو جاتے ہیں۔ اس کے ساتھ نویں یا گیارہویں تاریخ کا روزہ رکھنا بھی مستحب ہے۔ (۱)

(۲) اگر دو نہ رکھ سکے تو کم سے کم دسویں تاریخ کا ایک روزہ رکھنے کی کوشش کرے۔ (۲)

## عرفہ کے دن کا روزہ

ذی الحجہ کی نویں تاریخ کو یوم عرفہ کہا جاتا ہے، اس دن کا روزہ رکھنے کا بھی بڑا ثواب ہے۔ اس سے ایک سال کے اگلے اور ایک سال کے پچھلے گناہ معاف ہو جاتے ہیں۔

اگر ذی الحجہ کی شروع چاند سے نویں تاریخ تک برابر روزے رکھے تو بہت ہی بہتر ہے۔ (۳)

## عضوتناسل

(۱) اگر مرد نے روزے کے دوران عضوتناسل کے سوراخ میں کوئی چیز مثلاً تیل، پانی یا دوا ڈالی، خواہ پچکاری کے ذریعہ سے ڈالی ہو یا پچکاری کے بغیر یا سلائی وغیرہ داخل کی تو روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۴)

(۲) اگر میاں بیوی نے روزے کے دوران ایک دوسرے کی صرف شرمگاہ کو

(۲، ۱) عن ابی قتادۃ قال قال رسول اللہ ﷺ صیام یوم عاشوراء انی احتسب علی اللہ ان یکفر السنۃ التی قبلہ. (سنن ابن ماجہ ص: ۱۲۴: قدیمی کتب خانہ)

وفی رواۃ: لئن بقیت الی قابل لاصومن من الیوم التاسع. (سنن ابن ماجہ ص: ۱۲۴ قدیمی)

ایضا: المسلمون ان یصوم عاشوراء مع التاسع کذا فی فتح القدیر. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۲)

(۳) عن ابی قتادۃ قال قال رسول اللہ ﷺ صیام یوم عرفۃ انی احتسب علی اللہ ان یکفر السنۃ التی قبلہ والتی بعدہ (سنن ابن ماجہ ص: ۱۲۴: قدیمی کتب خانہ)

(۴) اذا اقطر فی احلیلہ لا یفسد صومه عند ابی حنفیۃ ومحمدؐ کذا فی محیط السرخسی سواء اقطر فیہ الماء او الدھن. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۴: رشیدیہ)

ملایا لیکن داخل نہیں کیا، اس سے شہوت پیدا ہوگئی، پھر دونوں الگ ہو گئے اور انزال نہیں ہوا تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، لیکن ایسا کام مکروہ ہے، اچھا نہیں ہے، پرہیز کرنا چاہیے۔ (۱)

## عورت کا نفل روزہ

- (۱) اگر شوہر گھر میں موجود ہے، صحت مند ہے اور روزہ یا احرام میں نہیں ہے تو بیوی کے لئے شوہر کی اجازت کے بغیر نفل روزہ رکھنا درست نہیں۔ (۲)
- (۲) اگر شوہر کی اجازت کے بغیر نفل روزہ رکھا ہے اور شوہر توڑ دینے کے لئے کہے تو توڑ دینا جائز ہے، پھر جب شوہر اجازت دے تو اس کی تضار کھے۔ (۳)
- (۳) اگر شوہر مریض ہے یا روزہ دار ہے یا حج اور عمرہ کے احرام میں ہے تو عورت کے لئے شوہر کی اجازت کے بغیر نفل روزہ رکھنا مکروہ نہیں ہے۔ (۴)

## عورتوں کا آپس میں لطف اندوز ہونا

اگر دو عورتیں روزے کے دوران آپس میں مشغول اور لطف اندوز ہوں اور

- (۱) ولا بأس بالقبلة اذا امن على نفسه ..... والمباشرة الفاحشة مثل التقبيل. (ہدایہ ج: ۱ ص: ۱۹۹، اب مایوجب القضاء. مکتبہ رحمانیہ)
- أیضا: والمباشرة الفاحشة ان يتعانقان وهما مجردان ویمس فرجه فرجها وهو مکروہ بلا خلاف
- هكذا فی المحيط. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۰، کتاب الصوم الباب الثالث. رشیدیہ)
- (۲) عن ابی ہریرۃ عن النبی ﷺ قال لا تصوم المرأة وزوجها شاهد یوما من غیر شهر رمضان الا باذنه. (ابن ماجہ ص: ۱۲۶ ط: قدیمی کتب خانہ)
- (۳، ۴) ویکرہ ان تصوم المرأة تطوعا بغیر اذن زوجها الا ان یکون مریضا او صائما او محرما بحج او عمرہ ..... فان صام احد من هؤلاء فللزوج ان یفطر المرأة ..... فاما اذا کان الزوج مریضا او صائما او محرما لم یکن له منع الزوجة من ذلك ولها ان تصوم وان نہاها.
- (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۱)

دونوں کو انزال ہو جائے تو دونوں کا روزہ فاسد ہو گیا۔ قضا لازم ہے۔، کفارہ نہیں اور اگر انزال نہیں ہوا تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، لیکن گناہ ہوگا۔ (۱)

## عید کے دن روزہ رکھنا حرام ہے

(۱) عید کا دن بہت مبارک اور اللہ کی مہمانی کا دن ہے۔ عید کے دن ہم سب اللہ کے مہمان ہیں، اسی وجہ سے عید کے دن روزہ رکھنا حرام ہے، کیونکہ جب اللہ تعالیٰ نے تمام مسلمانوں کو مہمان بنا کر کھانے پینے کا حکم دیا ہے، تو اللہ کے ماننے والوں کے لئے اس سے منہ موڑنا ہرگز ہرگز جائز نہیں، عید کے دن روزہ رکھنا گویا اللہ کی مہمانی کو رد کرنا ہے، یہ بہت بڑی ناقدری ہے۔ (۲)

(۲) کسی نے عید کے دن نفل روزہ رکھ لیا اور نیت کر لی، تب بھی روزہ توڑ دینا ضروری ہے، اور اس کی قضا رکھنا واجب نہیں ہے۔ (۳)

## عید کے دن روزہ رکھنے کی نذر مانی

عید کے دن روزہ رکھنے کی نذر کرے تو نذر درست ہو جائے گی، لیکن عید کے

- (۱) فان عملت امرأتان بالسحق ان انزلنا الفطر تا والافلا کذا فی السراج الوہاج ولا کفارة مع الانزال کذا فی فتح القدیر۔ (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۵۔ ط: رشیدیہ کوئٹہ)
- وعمل المرأتین کعمل الرجال جماع ایضا فیما دون الفرج لا قضاء علی واحدة منهما الا اذا انزلت، ولا کفارة مع الانزال۔ (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۸۔ ط: ایچ ایم سعید)
- (۲) عن ابی سعید عن رسول اللہ ﷺ انه نہی عن صوم یوم الفطر ویوم الاضحی۔ (ابن ماجہ ص: ۱۲۳)
- عن ابی عبید قال شهدت العید مع عمر بن الخطاب فبدأ بالصلاة قبل الخطبة فقال ان رسول اللہ ﷺ نہی عن صیام ہذین الیومین ویوم الفطر ویوم الاضحی امیوم الفطر ویوم فطرکم من صیامکم ویوم الاضحی یا کلون فیہ لحم نسککم۔ (ابن ماجہ ص: ۱۲۳۔ قدیمی)
- (۳) ولا قضاء علیہ ان شرع فیہا ثم افطر کذا فی الكنز۔ (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۱ رشیدیہ)
- (۴) لو قال للہ علی صوم هذه السنة افطر یوم الفطر ویوم النحر وایام التشریق وقضاها کذا فی الہدایہ۔ (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۱۔ ط: قدیمی کتب خانہ)

دن روزہ رکھنا جائز نہیں ہوگا، اس کے بدلے کسی اور دن روزہ رکھنا لازم ہوگا۔ (۳)

## عید کے دن صدقہ فطر ادا نہیں کیا

اگر کسی نے عید کے دن صدقہ فطر ادا نہیں کیا تو وہ معاف نہیں ہوا، اب موت سے پہلے پہلے جتنی جلدی ہو سکے ادا کر دے، ورنہ آخرت میں گرفت ہوگی۔ (۱)



## غرغره کا حکم

(۱) روزے کی حالت میں غسل کرتے وقت غرغره کرنے اور ناک کے نرم حصے میں پانی پہنچانے کا حکم نہیں ہے تاکہ روزہ ٹوٹنے کا اندیشہ نہ ہو لہذا دن میں غسل کرتے وقت غرغره نہ کرے۔ (۲)

(۲) اگر غرغره کرنے میں پانی حلق سے اتر گیا تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۳)

(۱) وان اخروها عن يوم الفطر لم تسقط وكان عليهم اخراجها كذا في الهداية. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۲ ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۲-۴) والترتيب في المضمضة والاستنشاق سنة عندنا... والمبالغة فيهما سنة ايضا.... الا ان يكون صائما..... وهي في المضمضة بالغرغرة، فتاوى عالمگیری ج: ۱ ص: ۸ ط: رشیدیہ)

وفي در المختار: والمبالغة فيهما بالغرغرة، ومجاوزة المارن لغير الصائم لاحتمال الفساد. (شامی ج: ۱ ص: ۱۱۶ ط: ایچ ایم سعید)

(۳) (وان افطر خطأ) كان تمضمض فسبقه الماء. قوله فسبقه الماء ای یفسد صومه. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۱ ط: ایچ ایم سعید)

(۴) والمبالغة فيهما سنة ايضا..... الا ان يكون صائما..... وهي في المضمضة بالغرغرة، (عالمگیری ج: ۱ ص: ۸، رشیدیہ. مراقی الفلاح ج: ۱ ص: ۲۷ ط: قدیمی)

(۳) روزے کی حالت میں وضو اور غسل کے دوران غرہ نہیں کرنا چاہیے۔ (۴)

## غروب سے پہلے اذان پر افطار

(۱) اگر مؤذن نے آفتاب غروب ہونے سے پہلے مغرب کی اذان دے دی اور لوگوں نے مؤذن کی اذان سن کر افطار کر لیا تو روزہ فاسد ہو گیا۔ قضا واجب ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۱)

(۲) اگر مؤذن کی اذان سننے کے بعد افطار کا وقت ہونے پر یقین نہیں بلکہ شبہ ہو گیا تھا کہ وقت ہوا یا نہیں اس صورت میں افطار کرنے کی صورت میں قضا بھی لازم ہوگی اور کفارہ بھی۔ (۲)

## غسل کرنا

(۱) روزے میں غسل کرنا جائز ہے، اس سے روزے میں کچھ فرق نہیں آتا چاہے ایک دفعہ غسل کرے یا بار بار کرے اس سے کوئی فرق نہیں آتا۔ (۳)

(۱) افطر وهو یری ان الشمس قد غربت فاذا هی لم تغرب..... علیہ القضاء ولا کفارة علیہ (ہدایہ ج: ۱ ص: ۲۰۷. مکتبہ رحمانیہ)

ایضا: اذا تسحر علی یقین ان الفجر لم یطلع و افطر علی یقین ان الشمس قد غربت فاذا الفجر طالع والشمس لم تغرب علیہ القضاء فیہما لوجود المناقض ولا کفارة لمکان العذر.

(ناتار خانہ ج: ۲ ص: ۳۵۹. ادارة القرآن والعلوم الاسلامیہ)

(۲) احسن الفتاوی ج: ۴ ص: ۴۴۶. ایچ ایم سعید) یقین لایزول بالشک (الاشباہ والنظائر فی الفقہ الحنفی ص: ۶۰. قدیمی کتب خانہ)

(۳) عن ابی حنیفۃؒ انه یکرہ للصائم المضمضة والاستنشاق بغیر وضوء و کرہ الاغتسال و صب الماء علی الرأس..... وقال ابو یوسفؒ لایکرہ وهو الاظهر کذا فی محیط السرخسی. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۹. ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۴) وان تمضمض أو استنشق فدخل الماء جوفہ ، ان کان ذا کرا لصومه فسد صومه و علیہ القضاء ، وان لم یکن ذا کرا لایفسد صومه ، کذا فی الخلاصۃ ، و علیہ الاعتماد ، ہندیہ ج: ۲ ص: ۲۰۲. رشیدیہ کوئٹہ) شامی ج: ۲ ص: ۴۰۱، ایچ ایم سعید)

(۲) اگر غسل کرتے ہوئے پانی حلق میں چلا گیا تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۴)

## غسل جنابت

رمضان میں غسل جنابت صبح صادق کے بعد کرنے سے روزہ فاسد نہیں ہوتا اور روزے میں خرابی لازم نہیں آتی، البتہ فجر کی نماز سے پہلے پہلے غسل کر لیا کرے تاکہ نماز قضا نہ ہو۔ (۱)

## غسل جنابت میں تاخیر

رات کو غسل واجب ہوا، لیکن رات کو صبح صادق سے پہلے پہلے غسل نہیں کیا بلکہ دن کو غسل کیا تو روزہ فاسد نہیں ہوا، روزہ بدستور صحیح ہے، البتہ جنابت کے غسل میں اتنی تاخیر کرنا کہ اس وقت کی نماز قضا ہو جائے سخت گناہ ہے۔ (۲)

## غیبت کرنا

غیبت کرنا حرام ہے، اس سے عبادت میں خلل واقع ہوتا ہے، لہذا غیبت سے بچنے کا پورا اہتمام کرنا چاہیے، البتہ روزہ فاسد نہیں ہوگا، لیکن مکروہ ضرور ہوگا، جتنا ثواب ملنا چاہیے اتنا ثواب نہیں ملے گا۔ (۳)

(۱) ومن أصبح جنباً واحتلم في النهار لم يضره كذا في محيط السرخسي. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۰). (رشیدیہ)

عن عائشةؓ قالت كان رسول الله ﷺ يدركه الفجر في رمضان وهو جنب من غير حلم فيغتسل ويصوم متفق عليه. (زجاجة المصابيح ج: ۱ ص: ۵۵۶، بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۹۲، درمختار ج: ۲ ص: ۴۰۰. ایچ ایم سعید)

(۲) الجنب اذا أخر الاغتسال الى وقت الصلوة لا يائمه كذا في المحيط عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۶)

(۳) (او اغتاب) من الغيبة..... وان كره (لم يفطر). (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۰. سعید)

ايضا الغيبة لا تفسد صومه (خانيه ج: ۱ ص: ۲۰۸، شامی ج: ۲ ص: ۴۱۲. سعید)

## غیر مسلم کی چیز سے افطار کرنا

(۱) غیر مسلم کی بھیجی ہوئی پاک اور حلال چیز قبول کرنا اور ان چیزوں سے افطار

کرنا جائز ہے۔ (۱)

(۲) اگر غیر مسلم کی بھیجی ہوئی چیز پاک اور حلال نہیں تو وہ قبول کرنا اور اس سے

افطار کرنا جائز نہیں۔ (۲)

(۳) غیر مسلم قادیانی اور شیعوں کی کوئی چیز نہ لے اور اس سے افطار بھی نہ

کرے، کیونکہ یہ کافر ہونے کے باوجود اپنے آپ کو کافر نہیں سمجھتے، اور مسلمانوں کے

جانی دشمن ہیں۔ (۳)

## غیر کی افطاری سے روزہ کھولنا

غیر کی افطاری سے روزہ کھولنے میں کوئی ممانعت یا قباحہ نہیں ہے اور اپنے

روزے کا ثواب بھی کم نہیں ہوگا، باقی افطار کرانے والے کو روزہ دار کے برابر ثواب

ملے گا۔ (۴)

## غیر ممالک والوں کا فطرہ

بیرون ممالک کے باشندے اپنے خویش واقارب سے فطرہ کی ادائیگی کے لئے

کہتے ہیں تو اس صورت میں کس ملک کی قیمت کا اعتبار ہوگا۔

(۱) کفایت المفتی ج: ۴ ص: ۲۴۷، مکتبہ دارالاشاعت، فتاویٰ دارالعلوم ج: ۶ ص: ۴۹۴

(۲) لا بأس بطعام المجوس الا الذبیحة فان ذبیحتهم حرام. عالمگیری ج: ۵ ص: ۳۴۷، الباب الرابع عشر فی اهل الذمة ط: رشیدیہ

(۳) احسن الفتاویٰ ج: ۱ ص: ۴۶ و ج: ۸ ص: ۲۵۰ ط: ایچ ایم سعید

(۴) عن زید بن خالد الجهنی قال قال رسول الله ﷺ من فطر صائما كان له مثل اجرهم من غیر ان ینقص من اجورهم شیئا. (ابن ماجہ ص ۱۲۵. قدیمی کتب خانہ)

اس کا آسان طریقہ یہ ہے کہ عمدہ قسم کی کشمش، کھجور، جو یا گندم سے فطرہ ادا کر دیا جائے یا بیرون ملک کی قیمت کے حساب سے مذکورہ چیزوں میں کسی ایک چیز کی قیمت ادا کی جائے۔ اگر یہاں کی قیمت زیادہ ہے تو یہاں کے حساب سے ادا کرے تاکہ صدقہ فطر لینے والے غریبوں کا فائدہ ہو۔ (۱)

## (ف)

### فدیہ

(۱) جو شخص بڑھا پے یا دائم المریض ہونے کی وجہ سے روزے پر قادر نہیں، نہ ہی مستقبل میں اس کی کوئی امید ہے کہ صحت نصیب ہوگی تو ہر روزے کے بدلے میں پونے دو کلو گندم یا اس کی قیمت بطور فدیہ دے سکتا ہے، لیکن اس کے بعد اگر صحت یاب ہو گیا تو دوبارہ قضا کرنا ضروری ہے۔ (۲)

(۲) اگر رمضان کے پورے روزوں کا فدیہ ایک ہی محتاج کو ایک ساتھ دینا چاہے دے سکتا ہے، فدیہ ادا ہو جائے گا اور اگر الگ الگ دینا چاہے تو بھی دے سکتا ہے، دونوں صورتوں میں فدیہ ادا ہو جائے گا۔ (۳)

### فطرے کی رقم قرض میں مجرا کرنا

اگر ایک شخص کا قرض کسی کے ذمے ہے اور قرضدار مفلس اور نادار ہے، اگر قرض دینے والا صدقہ فطر میں اس قرض کو مجرا کر لے تو صدقہ فطر ادا نہیں ہوگا۔

(۱) فتاویٰ رحیمہ ج: ۷ ص: ۱۹۵ دارالاشاعت

(۲) فالشیخ الفانی الذی لا یقدر علی الصیام یفطریطعم لكل یوم مسکینا کما یطعم فی الکفارة کذا فی الهدایة..... ولوقدر علی الصیام بعد مافدی بطل حکم الفداء الذی لداه حتی یجب علیہ الصوم. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷ ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۳) وللشیخ الفانی العاجز عن الصوم الفطرو یفدی وجوبا ولو فی اول الشهر و بلا تعدد فقیر کالفطرة. (درمختار، شامی ج: ۲ ص: ۴۲۷. ایچ ایم سعید)

ہاں یہ صورت ہو سکتی ہے کہ صدقہ فطر کی رقم قرضدار کے ہاتھ میں دے دے، پھر اس سے یہ کہے کہ قرض ادا کر دے تو اس صورت میں فطرہ بھی ادا ہو جائے گا اور قرض بھی وصول ہو جائے گا۔ (۱)

## فرج

- (۱) ”فرج“ شرمگاہ کو کہا جاتا ہے۔ (۲)
- (۲) پھر ”فرج“ کے دو حصے ہیں۔ (۱) فرج خارج (۲) فرج داخل
- (۳) فرج خارج: شرمگاہ کے اوپر پتنگ نما لمبے سوراخ کو کہا جاتا ہے۔
- فرج داخل: اس پتنگ نما لمبے سوراخ کے آخر میں نیچے سے کچھ اوپر ایک گول سوراخ ہے اس کو ”فرج داخل“ کہتے ہیں۔
- (نوٹ) اس سے متعلق احکامات شرمگاہ کے عنوان کے تحت دیکھ لئے جائیں۔

## فطرہ کی تقسیم کا طریقہ

- (۱) ایک صدقہ فطر ایک آدمی کو دینا یا ایک صدقہ فطر متعدد فقیروں میں تقسیم کر دینا دونوں صورتیں جائز ہیں۔ (۳)
- (۲) ایک آدمی کو ایک سے زیادہ صدقہ فطر دینا بھی جائز ہے۔ (۴)

- (۱) لووہب دینہ من فقیر و نوى زکوة دین آخر له علی رجل آخر او نوى زکوة عین لم یجز کذا فی الکافی۔ (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۶۹۔ رشیدیہ کوئٹہ)
- ایضا: واداء الدین عن العین وعن دین سیقبط لایجوز و حيلة الجواز ان یعطی مدیونہ الفقیر زکاتہ ثم یأخذها عن دینہ۔ (شامی ج: ۲ ص: ۲۷۱ کتاب الزکاة ط: ایچ ایم سعید)
- (۲) فرج من الانسان: قبل در دونوں پر اطلاق ہوتا ہے۔ (مصباح اللغات ص: ۶۲۳، میر محمد کتب خانہ، شامی ج: ۳ ص: ۳۹۸) احسن الفتاوی ج: ۳ ص: ۴۳۸، ایچ ایم سعید
- (۳) جاز دفع کل شخص فطرته الی مسکین او مساکین علی ماعلیہ الا کثر بہ جزم فی الولو العجیہ والخانیۃ والبدائع والمحیط وتبعہم الزیلعی فی الظہار من غیر ذکر خلاف و صححہ فی البرہان فکان هو المذهب۔ شامی ج: ۲ ص: ۳۶۴، باب صدقۃ الفطر ط: ایچ ایم سعید
- (۴) ویجوز دفع ما یجب علی جماعۃ الی مسکین واحد کذا فی التبیین۔ (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۳)

## فطرہ کی قیمت

- (۱) اگر صدقہ فطر جس کی بجائے اس کی قیمت سے ادا کرنا چاہے تو مارکیٹ ریٹ کے اعتبار سے نکالے۔ یعنی جس دن صدقہ فطر ادا کر رہا ہے اس دن کشمش، کھجور، جو اور گندم کی مارکیٹ میں جو قیمت ہوگی اس قیمت کے حساب سے ادا کرے۔ (۱)
- (۲) اگر قیمت مختلف ہے تو اوسط قیمت کے حساب سے بھی ادا کر سکتا ہے۔ (۲)

## فوت شدہ روزوں کا حکم

اگر سفر، مرض، حیض یا نفاس کی وجہ سے روزہ فوت ہو گیا ہے، اقامت، صحت اور حیض و نفاس سے پاک ہونے کے بعد روزہ رکھنے کا موقع ملا اور روزہ رکھا نہیں اور موت کا وقت آ گیا تو فدیہ دینے کی وصیت کرنا لازم ہوگا اور اگر وقت ملا ہی نہیں اور روزہ رکھنے سے پہلے انتقال کر گیا تو قضا کرنے کا وقت نہ ملنے کی وجہ سے روزہ معاف ہو جائے گا، فدیہ دینا واجب نہیں ہوگا۔

اور اگر حالت اقامت، صحت اور طہارت میں قضا روزہ رکھنے کا موقع ملا اور روزہ نہیں رکھا تو اس صورت میں فدیہ دینے کی وصیت کرنا واجب ہوگا اور وارثوں پر ترکہ کے ایک تہائی حصے سے فدیہ ادا کرنا لازم ہوگا۔

ایک تہائی سے زائد سے فدیہ ادا کرنا واجب نہیں ہوگا، البتہ ادا کرنے سے ادا ہو جائے گا اور میت پر بہت بڑا احسان ہوگا۔ (۳)

- (۱) جاز دفع القيمة فی زکاة وعشر وخراج وفطرة وتعتبر القيمة يوم الوجوب ..... ويقوم فی البلد الذی المال فیہ (شامی ج: ۲ ص: ۲۸۵ باب زکاة الغنم ط: ایچ ایم سعید)
- (۲) خیر الامور اوسطها وفي لفظ اوسطها (موسوعة الاحاديث والآثار الضعيفة والموضوعة ج: ۴ ص: ۱۹ ط: مكتبة المعارف للنشر والتوزيع الرياض)
- (۳) فان ماتوا فيه ای فی ذلك العذر فلا يجب عليهم الوصية بالفدية لعدم ادراكهم عدة من ایام اخر. ولوماتوا بعد زوال العذر وجبت الوصية بقدر ادراكهم عدة من ایام اخر. ففدى لزوامعنه ای عن الميت ولیه الذی يتصرف فی ماله كالفطرة قدرا بعد قدرته علیه ای علی =

(ق)

## قدیم عبادت

تاریخ پر غور کرنے سے معلوم ہوتا ہے کہ روزہ دنیا کی سب سے پرانی اور قدیم عبادت ہے۔ (۱) حضرت آدم علیہ السلام سے لے کر حضرت محمد مصطفیٰ ﷺ تک کی تمام امتوں پر فرض رہا۔ قرآن کریم میں اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى  
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ (بقرہ)

## قضا

(۱) رمضان کے ایک روزے کے بدلے میں صرف ایک روزہ رکھنا قضا ہے۔ (۲)

(۲) اگر ماہ رمضان میں کوئی چیز پیٹ میں قصداً نہ پہنچائی جائے بلکہ خود پہنچ

جائے یا اس کے نافع نہ ہونے کا خیال ہو تو صرف قضا لازم ہوگی۔ (۳)

= قضاء الصوم وفوته ای فوت القضاء بالموت فلو فاتته عشرة ايام فقد رعى خمسة فداها فقط بوصيته من الثلث. وان لم يوص وتبرع وليه به جاز انشاء الله ويكون الثواب للولي در مختار. (شامی ج: ۲ ص: ۴۲۳، ۴۲۴، ۴۲۵ فصل فی العوارض المبيحة لعدم الصوم) أيضا : ولو فات صوم رمضان بعذر المرض او السفر واستدام المرض والسفر حتى مات لا قضاء عليه لكنه ان اوصى بان يطعم عنه وصيته وان لم تجب عليه ويطعم عنه من ثلث ماله فان برئ المريض او قدم المسافر وادرك من الوقت بقدر ما فاتته فيلزمه القضاء جميع ما ادرك فان لم يصم حتى ادركه الموت فعليه ان يوصى بالقضية ..... فان لم يوص وتبرع عنه الورثة جاز. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷. رشديه كوئته)

(۱) قال على رضي الله عنه كتب الصيام على آدم فمن بعده الخ (نزہة المجالس الجزء الاول ص: ۱۸۸ كتاب الصوم)

(۲) لان القضاء يجب جبرا للفاوت. (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۹۷ ط: ايچ ايم سعيد)

(۳) او دخل حلقه مطرا و تلج بنفسه لا مكان التحرز عنه بضم فمه ..... قضى في الصور =

(۳) قضا روزوں کا مسلسل رکھنا ضروری نہیں ہے، جب چاہے جس طرح

چاہے قضا روزے رکھنا درست ہے، باقی عذر ختم ہونے کے بعد جلد از جلد رکھ لینے چاہیے، زندگی اور طاقت کا بھروسہ نہیں ہے، لگاتار رکھے یا ایک ایک دو دو کر کے رکھے، سب صورتیں درست ہیں۔ (۱)

(۴) روزے کی قضا میں دن تاریخ مقرر کر کے قضا کی نیت کرنا کہ فلاں دن یا

فلاں تاریخ کے روزے رکھتا ہوں، یہ ضروری نہیں ہے، بلکہ جتنے روزے قضا ہو گئے ہیں اتنے ہی روزے قضا کی نیت سے رکھ لے کافی ہے۔ (۲)

(۵) اگر دو رمضان کے کچھ روزے قضا ہو گئے اور دونوں سالوں کے روزوں کی

قضا کرنی ہے تو سال کا مقرر کرنا ضروری ہے، یعنی اس طرح نیت کرے کہ فلاں سال کے روزوں کی قضا رکھتا ہوں۔ (۳)

(۶) ابھی گزشتہ رمضان کے قضا روزے نہیں رکھے تھے کہ دوسرا رمضان آ گیا

تو اب رمضان کے ادا روزے رکھے، بقیہ روزے عید کے بعد رکھے۔ (۴)

= کھلا فقط . شامی ج: ۴ ص: ۴۰۳

ایضا: ولو اکل مالا یغذی به ولا یتداوی کالحصاة والنواة والتراب وغیرها فعليه القضاء ولا کفارة عليه عند عامة العلماء . (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۹۹ ط: ایچ ایم سعید)

(۱) وقضوا لزوما ما قدروا بلا فدية وبلا ولاء لانه على التراخي ولذا جاز التطوع قبله بخلاف قضاء الصلوة ولوجاء رمضان الثاني قدم الاداء على القضاء (شامی ۴/۲۳، بدائع ۲/۲۶۵)  
(۲) ولا تشترط نية القضاء وهو الصحيح لانه نوى ماعليه من صوم رمضان هكذا في البدائع (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۶ ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۳) اذا وجب عليه قضاء يومين من رمضان واحد ينبغي ان ينوي اول يوم وجب عليه قضاء ه من هذا الرمضان وان لم يعين الاول يجوز وكذا لو كان عليه قضاء يومين من رمضانين هو المختار ولو نوى القضاء لا غير يجوز وان لم يعين كذا في الخلاصة . (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۶ رشیدیہ)  
(۴) وان جاء الرمضان الثاني ولم يقض الاول قدم الاداء على القضاء . (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۸)

## قضا روزہ عورت کی طرف سے شوہر کا رکھنا

اگر شوہر عورت کی طرف سے قضا روزہ رکھنا چاہے تو درست نہیں ہوگا بلکہ عورت پر لازم ہوگا کہ اپنا روزہ خود رکھے۔ (۱)

### قئے ہونا

- (۱) اگر روزے کے دوران بلا اختیار اور بلا قصد خود بخود قئے ہوگئی تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، چاہے قئے تھوڑی سی ہوئی یا زیادہ، دونوں صورتوں میں روزہ برقرار رہے گا۔ (۲)
- (۲) اگر اپنے اختیار سے قئے کی اور منہ بھر کر قئے ہوگئی تو روزہ فاسد ہو گیا۔ (۳)
- (۳) اگر اپنے اختیار سے قئے کی، لیکن منہ بھر کر قئے نہیں ہوئی تو روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۴)

- (۴) اگر اچانک تھوڑی سی قئے آئی پھر بلا اختیار خود بخود حلق میں واپس چلی گئی تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، ہاں اگر قصد لوٹالی تو روزہ فاسد ہو جائے گا۔ (۵)
- (۵) اگر قئے منہ بھر کر آئی اور ایک چنے کے برابر یا اس سے زائد جان بوجھ کر اپنے اختیار سے واپس لوٹالی تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۶)

- (۱) لما روی عن ابن عمرؓ موقوفا علیہ ومرفوعا الی رسول اللہ ﷺ انه قال لا یصوم من احد عن احد ویصلین احد عن احد. (بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۱۰۳ ط: ایچ ایم سعید)
- (۲) وان ذرعه القی لا یفطر مطلقا مالا ولا. (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۴. سعید)
- (۳) وان استقاء ای طلب القی عامدا ای متذکرا لصومه ان کان ملء الفم فسد بالاجماع. (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۴ ط: سعید)
- (۵) وان ذرعه القی ..... فان عاد بلا صنعه ولو ملء الفم مع تذکره للصوم لا یفسد خلافا للثانی۔ قوله لا یفسد ای عند محمدؐ وهو الصحیح. (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۴ ط: سعید)
- (۶) وان اعاده او قدر حمصة منه فاکثر (حدادی) الفطر اجماعا ولا کفارة ان ملأ الفم والا لا هو المختار. (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۴. سعید)

(۶) اگر کسی کو قئے ہوئی اور وہ یہ سمجھا کہ میرا روزہ ٹوٹ گیا، اس گمان پر پھر قصداً کھالیا اور روزہ توڑ دیا تو بھی قضا واجب ہے، کفارہ واجب نہیں، کیونکہ روزہ توڑنے کا ارادہ نہیں تھا۔ (۱)

## قضا روزوں کی نیت

رمضان کے قضا روزوں کی نیت غروب آفتاب کے بعد سے صبح صادق کے طلوع ہونے تک کر لینا ضروری ہے۔ اگر صبح صادق طلوع ہونے کے بعد رمضان کے قضا روزہ کی نیت کی جائے گی تو وہ شرعاً معتبر نہیں ہوگی اور روزہ صحیح نہیں ہوگا۔ اسی طرح نذر غیر معین اور کفارے کے روزوں کی نیت کا حکم بھی یہی ہے۔ (۲)

## قیدیوں کو فطرہ دینا

اگر قیدی غریب ہے، صاحب نصاب نہیں ہے تو اس کو فطرہ دینا جائز ہے۔ (۳)

(ک)

## کان

(۱) کان کے اندر پانی خود بخود داخل ہو جانے سے یا قصداً ڈالنے سے صحیح روایت کے مطابق روزہ فاسد نہیں ہوگا، البتہ قصداً پانی ڈالنے کی صورت میں احتیاطاً ایک روزہ قضا کر لینا بہتر ہے۔ (۴)

- (۱) وكذا لو ذرعه القي وظن انه يفطره فافطر، فلاكفارة عليه لوجود شبهة الاشتباه بالنظير، فان القي والاستقاء متشابهان لان مخرجهما من الفم. (شامی ج: ۲، ص: ۴۰۲، ط: سعید)
- (۲) وشرط القضاء والكفارات ان يبيت ويعين كذا في النقاية وكذا النذر المطلق هكذا في السراج الوهاج ج: ۱، ص: ۱۹۶، عالمگیری ط: رشیدیہ)
- (۳) وجاز دفع كل شخص فطرته الى مسكين. (شامی ج: ۲، ص: ۳۶۷، ط: سعید)
- (۴) اودخل الماء في اذنه وان كان بفعله على المختار كما لو حك اذنه بعد ثم اخرجه و=

(۲) روزے کی حالت میں کان میں تیل ڈالنے سے روزہ فاسد ہو جاتا ہے۔ (۱)

(۳) روزے کی حالت میں کان میں تر دوا ڈالنے سے روزہ ٹوٹ جاتا ہے اور اگر روزے کی حالت میں خشک سفوف اور پاؤڈر وغیرہ دوا کے طور پر کان میں ڈالا ہے اور اندر تک پہنچ گیا ہے تو روزہ فاسد ہو جائے گا اور اگر اندر تک نہیں پہنچا تو روزہ فاسد نہیں ہوگا اور فاسد ہونے کی صورت میں قضا لازم ہوگی۔ (۲)

(۴) تنک یا سلائی وغیرہ کان کے اندرونی حصے میں داخل کرنے سے روزہ ٹوٹ جاتا ہے، کیونکہ کان کا اندرونی حصہ شرعاً پیٹ کے حکم میں ہے۔ اگر تنکے وغیرہ سے کان کے باہر کے حصے میں کھجایا گیا تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، مظاہر حق جدید میں ہے:

تنکے سے کان کھجایا اور تنکے پر کان کا میل ظاہر ہوا اور پھر اس تنکے کو کان میں ڈالا اور اس طرح کئی مرتبہ کیا، تب بھی روزہ فاسد نہیں ہوا۔

واضح رہے کہ عام طور پر کان کے باہر کے حصے میں ہی کھجایا جاتا ہے، اندرونی

= علیہ درن ثم ادخله ولو مرارا..... لم يفطر. (شامی ج: ۲، ص: ۳۹۶، ۴۰۰، ہندیہ ج: ۱ ص: ۲۰۶، تاتارخانیہ ج: ۲ ص: ۳۶۴، ادارة القرآن والعلوم الاسلامیہ) وفصل فی الخانیة: بأنه ان دخل لا یفسد، وان ادخله یفسد فی الصحیح لأنه وصل الی الجوف بفعله فلا یعتبر فیہ صلاح البدن..... واختلف التصحیح فی ادخاله، (فتاوی شامی ج: ۲ ص: ۳۶، سعید) (۱) الحاصل الاتفاق علی الفطر بصب الدهن وعلی عدمه بدخول الماء واختلف التصحیح فی ادخاله. (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۶، ط: ایچ ایم سعید)

ایضاً: او اقطر فی اذنه دھنا. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۲، ط: ایچ ایم سعید) (۲) قوله فوصل الدواء حقيقة اشار الی ان ما وقع فی ظاهر الروایة من تقييد الافساد بالدواء الرطب مبنى علی العادة من انه یصل والافالمعتبر حقيقة الوصول حتی لم علم وصول الیابس افسد او عدم اصول الطری لم یفسد..... قلت ولم یقیدوا الاحتقان والاستعاط والاقطار بالوصول الی الجوف لظهوره فیها والافلابد منه..... ويمكن ان یكون الدواء راجعاً الی الكل تأمل. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۲، ط: ایچ ایم سعید)

حصے میں نہیں۔ (۱)

(۵) خلاصہ یہ کہ کان میں ڈالی ہوئی دوا اور تیل دماغ میں براہ راست یا بالواسطہ معدہ میں پہنچنے سے روزہ فاسد ہو جاتا ہے۔ (۲)

## کریم لگانا

روزے کے دوران چہرے اور جسم پر کریم وغیرہ لگانا جائز ہے، اس سے روزہ فاسد نہیں ہوتا۔ (۳)

## کفارہ

(۱) رمضان کا روزہ قصداً توڑنے کی صورت میں کفارہ بھی واجب ہوتا ہے اور ایک روزے کے کفارہ میں ایک غلام آزاد کرنا چاہیے اگر یہ ممکن ہو، اگر یہ ممکن نہیں تو ساٹھ روزے مسلسل رکھنا واجب ہیں، اگر روزے رکھنے کی استطاعت نہ ہونے کی وجہ سے ساٹھ روزے بھی نہ رکھ سکے تو ساٹھ مسکینوں کو کھانا کھلانا واجب ہے۔ (۴)

(۲) جب کفارہ کے ساٹھ روزے رکھے تو بلا ناغہ مسلسل ساٹھ روزے رکھنا

- 
- (۱) لو حكت اذنه بعد ثم اخرجہ وعلیہ درن ثم ادخله ولو مرارا..... لم یفطر. وفي الرافعی: لعدم وصول ماعلى العود بجوفه فهو كمن جعل الدواء على الجانفة ولم یصل الى الجوف. ص: ۱۴۷ (شامی ج: ۲ ص: ۲۶، ۴۰، ومظاهر حق جدید ج: ۲ ص: ۳۱۸ دارالاشاعت)
- (۲) والتحقق ان بین جوف الرأس وجوف المعدة منفذا أصليا لما وصل الى جوف الرأس یصل الى جوف البطن. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۳، ایچ ایم سعید)
- أيضا: والمفطر انما هو الداخل من المنافذ. (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۵، ط: سعید)
- (۳) الصوم فی الشرع الامساك عن المفطرات الثلاث حقيقة او حکما فی وقت مخصوص من شخص مخصوص مع النية. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۵۹، ط: ایچ ایم سعید)
- (۴) قوله وكفر..... ككفارة المظاهر مرتبط بقوله وكفرای مثله فی الترتیب ليعتق أولا فان لم یجد صام شهرین متتابعین فان لم یستطع اطعم ستین مسکینا. (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۲، ط: ایچ ایم سعید. ہندیہ ج: ۱ ص: ۲۱۵ رشیدیہ)
-

واجب ہے، اگر درمیان میں ناغہ کیا اور صرف ایک ہی دن کا روزہ نہیں رکھا تو بھی نئے سرے سے دوبارہ روزے رکھنا واجب ہوگا، پچھلے روزوں کا اعتبار نہ ہوگا۔ (۱)

(۳) اگر کسی عورت کو کفارے کے روزے کے درمیان حیض آجائے تو حیض کی وجہ سے جو ناغہ ہوگا وہ معاف ہے حیض بند ہوتے ہی بقیہ روزے رکھنا شروع کر دے۔ مثلاً بیس روزے رکھنے کے بعد حیض آجائے تو حیض سے پاک ہونے کے بعد صرف بقیہ چالیس روزہ رکھے کفارہ ادا ہو جائے گا۔ اگر جماع کے علاوہ دیگر وجوہات کی وجہ سے متعدد کفارے لازم ہوئے تو سب کا ایک کفارہ کافی ہے۔ (۲)

(۴) اگر روزے کے دوران جماع کی وجہ سے متعدد کفارے لازم ہوئے تو ان میں تداخل ہوگا یا نہیں، اس میں اختلاف ہے۔ بعض کے نزدیک تداخل نہیں ہوگا، ہر روزے کا کفارہ الگ الگ رکھنا لازم ہوگا اور بعض کے نزدیک تداخل ہوگا اور سب کفاروں کے لئے ایک ہی کفارہ کافی ہوگا۔ پہلے قول میں احتیاط ہے، دوسرے قول میں آسانی ہے۔ (۳)

(۵) اگر روزہ رکھنے کی استطاعت نہ ہونے کی وجہ سے ساٹھ مسکینوں کو کھانا کھلا کر کفارہ ادا کر رہا ہے تو ساٹھ مسکینوں کو دو وقت پیٹ بھر کر کھلانا واجب ہے، چاہے ایک ہی دن میں صبح و شام دو وقت کا کھلا دے، چاہے دو دن صبح کے وقت یا دو دن شام کے وقت یا عشاء و سحر کے وقت کھلا دے، درست ہوگا۔

لیکن ایک شرط یہ ہے کہ جن مسکینوں کو ایک وقت کا کھانا کھلایا جائے، دوسرے

(۱، ۲) فلو افطر و لو لعذر استأنف الالعذر الحيض. شامی ج: ۲ ص: ۴۱۲. ایچ ایم سعید

أيضا: واختار بعضهم للفتوى ان الفطر بغير الجماع تداخل والا. (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۳)

أيضا: فلو افطروا في خلال المدة بطل ما قبله ولزمه الاستقبال سواء افطروا لعذر او لا .....

للنص على التابع الالعذر الحيض لانها لاتجد شهرين عادة لالتحيز فيهما لكنها اذا طهرت

تصل بما مضى فان لم تصل استقبلت كذا في اللؤلؤ اجية. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۷۷ سعید)

(۳) واختار بعضهم للفتوى ان الفطر بغير الجماع تداخل والا. (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۳ سعید)

وقت بھی انہی مسکینوں کو کھانا کھلایا جائے۔ اگر ایک وقت ایک مسکین کو اور دوسرے وقت دوسرے مسکین کو کھانا کھلایا تو کفارہ ادا نہیں ہوگا۔ (۱)

(۶) اگر ایک مسکین کو مسلسل ساٹھ روز تک صبح شام دو وقت کا کھانا کھلایا جائے یا مسلسل ساٹھ روز تک روزانہ نئے نئے مسکین کو صبح شام کا کھانا کھلایا جائے یا ایک ہی روز میں ساٹھ مسکینوں کو صبح شام دو وقت کا کھانا کھلایا جائے، تینوں صورتوں میں کفارہ ادا ہو جائے گا۔ (۲)

(۷) جن مسکینوں کو کفارہ کا کھانا کھلایا جائے ان کا بھوکا ہونا بھی شرط ہے، اگر پیٹ بھروں کو کھلایا تو اس سے کفارہ ادا نہیں ہوگا اور بھوکوں کو دوبارہ کھانا لازم ہوگا۔ (۳)

(۸) کفارے کا کھانا کھلانے میں تسلسل کی ضرورت نہیں، متفرق ایام میں کھلانے سے بھی کفارہ ادا ہو جاتا ہے۔ (۴)

(۹) اگر رمضان کا روزہ قصداً کھاپی کر یا جماع کر کے توڑ دیا ہے تو ایک روزہ قضا کا اور دو مہینے کے مسلسل روزے مزید رکھنے ہوتے ہیں، اس کو کفارہ کہتے ہیں۔ (۵)

(۱) فان غداہم وعشاهم واشبعہم جاز سواء حصل الشبع بالقليل او الكثير كذا فی شرح النفاية لابی المكارم ، فلو غداہم یومین او عشاهم كذلك او غداہم وسحرہم او سحرہم یومین اجزاه كذا فی البحر الرائق ..... لو غدی ستین عشی ستین غیرہم لایجزیہ الا ان یعید علی احد الستین منہم غذا وعشاء كذا فی التبین . (عالمگیری ج: ۱ ص: ۵۱۴، كتاب الطلاق الباب العاشر فی الكفارة ط: رشیدیہ)

(۲) قوله وان اعطی نثیرا شهرین صح لان المقصود سدخلة المحتاج والحاجة تتجدد بتجدد الايام فتكرر المسکین بتكرر الحاجة حکما فكان تعدد احکما. (البحر الرائق ج: ۴ ص: ۱۰۹، كتاب الطلاق فصل فی الكفارة باب الظهار ط: ایچ ایم سعید)

(۳) فالشرط فی طعام الاباحة اكلتان مشبعتان لكل مسکین ولو كان فیہم شعبان قبل الاكل او صبی غیر مراهق لم یجز. (شامی ج: ۳ ص: ۴۷۹ ط: ایچ ایم سعید)

(۴) - (۱) عالمگیری ج: ۱ ص: ۵۱۴ ط: رشیدیہ

(۵) وان جامع ..... فی رمضان اداء ..... او اكل او شرب غذا ..... او دواء ..... عمدا ..... قضی فی الصور کلفها وكفر ..... ككفارة المظاهر. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۶، ۴۱۲)

(۱۰) اگر ماہ رمضان میں کوئی ایسی چیز پیٹ میں پہنچائی جائے جس کے نافع ہونے کا خیال ہے، خواہ غذا ہو یا دوا تو ایسی حالت میں روزے کی قضا رکھنا لازم ہوگا اور کفارہ بھی دینا ہوگا۔ (۱)

(۱۱) کفارے کے روزے رکھ رہی تھی، درمیان میں نفاس کی وجہ سے لگاتار روزے نہ رکھ سکی تو کفارہ صحیح نہیں ہوگا، شروع سے دوبارہ ساٹھ روزے رکھنے ہوں گے۔ (۲)

(۱۲) اگر دکھ بیماری کی وجہ سے بیچ میں کفارے کے کچھ روزے رہ گئے تب بھی تندرست ہونے کے بعد پھر سے ساٹھ روزے شروع سے رکھنے پڑیں گے۔ اسی طرح اگر بیچ میں رمضان شریف آجائے تب بھی ساٹھ روزے شروع سے دوبارہ رکھنے ہوں گے۔ (۳)

## کفارے میں تاخیر

کفارے کے روزوں میں تاخیر نہیں کرنی چاہیے، جتنی جلدی ہو سکے روزے رکھ کر کفارہ ادا کر لینا چاہیے۔ (۴)

## کفارے میں ضامن بنانا

اگر کسی نے دوسرے سے کہہ دیا کہ تم میری طرف سے کفارہ ادا کر دو اور ساٹھ مسکینوں کو کھانا کھلا دو، اور اس نے اس کی طرف سے ساٹھ مسکینوں کو کھانا کھلا دیا تو

(۱) اوکل و شرب غذا..... اودواء مایندای به والضابط وصول مافیہ صلاح بدنہ لجوفہ ومنہ ریق حبیبہ فیکفر لوجود معنی صلاح البدن فیہ درایت وغیرہا۔ (شامی ج: ۲ ص: ۴۹، ۴۱۰)

(۲) وهذا مما خالف فیہ النفاس الحيض فان النفاس قاطع للتابع فی صوم کل كفارة لها بخلاف الحيض فانه غير قاطع فی كفارة الفطر والقتل. (البحر الرائق ج: ۴ ص: ۱۰۵، باب الظهار فصل فی الکفارة ط: ایچ ایم سعید)

(۳) اذا لم يجد المظاهر ما يعتق فكفارة صوم شهرين متتابعين ليس فيهما شهر رمضان ولا يوم الفطر..... اذا كفر بالصيام وافرط يوما بعذر مرض او سفر فانه يستأنف الصوم. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۵۱۲، کتاب الطلاق الباب العاشر فی الکفارة ط: رشیدیہ)

کفارہ ادا ہو جائے گا اور اگر ضامن بنائے بغیر کسی نے اس کی طرف سے ساٹھ مسکینوں کو کھانا کھلا دیا تو کفارہ ادا نہیں ہوگا۔ (۱)

## کفارے کی کل قیمت ایک فقیر کو دینا کافی نہیں

اگر کوئی شخص کفارہ نقد رقم سے ادا کرنا چاہے تو ایک مسکین کو ایک دن میں صرف دو وقت کے کھانے کا پیسہ دے، اگر ایک مسکین کو ایک دن میں دو وقت سے زیادہ کا پیسہ دیا جائے تو وہ صرف ایک دن کا ہی شمار ہوگا۔ اس لئے یا تو ایک مسکین کو روزانہ دو وقت کے کھانے کا پیسہ دے دے یا ایک ہی دن میں یا مختلف ایام میں ساٹھ مسکینوں کو الگ الگ دو وقت کے کھانے کا پیسہ دے دے۔

البتہ فدیہ کی رقم ایک ہی دن میں ایک مسکین کو جتنی بھی دے گا فدیہ ادا ہو جائے گا۔ (۲)

## کفارے کی ادائیگی

روزے کے کفارہ میں ساٹھ دن ایک طالب علم کو دونوں وقت بٹھا کر پیٹ بھر کر کھانا کھلانے سے کفارہ ادا ہو جاتا ہے۔ مگر بٹھا کر کھانا چاہیے، کیونکہ دینے میں ہر روز پوری مقدار پونے دو کلو ایک فطرہ کی بقدر یا اس کی قیمت دینے کی ضرورت ہے۔ (۳)

(۱) وان امر غیره ان يطعم عنه من ظهاره ففعل جاز..... لوتصدق عنه بغیر امره لم یجزئه کذا فی شرح المبسوط. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۵۱۳ کتاب الطلاق الباب العاشر فی الکفارة)  
(۲) ولواعطی مسکینا واحدا کله فی یوم واحد لایجزیه الا عن یومه ذلك ، وهذا فی الاعطاء بدفعه واحده واباحه واحده من غیر خلاف ، أما اذا ملکه بدفعات فقد قیل یجزیه ، وقیل لایجزیه الا عن یومه ذلك وهو الصحیح. (ہندیہ ج: ۱ ص: ۵۱۳، الباب العاشر فی الکفارة ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۳) ولواعطی مسکینا واحدا ستین یوما کل یوم اکتلتین مشبعین جاز. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۵۱۴)

ایضا: ولواعطی عن کفارة ظهاره مسکینا واحدا ستین یوما کل یوم نصف صاع جاز کذا فی فتاویٰ الشرحیہ. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۵۱۳ ط: رشیدیہ کوئٹہ)

## کفارے میں آٹا یا اس کی قیمت دینا

اگر کفارہ ادا کرنے کیلئے ساٹھ مسکینوں کو دو دو کلو آٹا دے دے یا ساٹھ مسکینوں کو دو دو کلو آٹے کی قیمت کے برابر رقم دے دے تو بھی کفارہ ادا ہو جائے گا۔ (۱)

## کفارے کی رقم سے مسجد، مدرسہ اور ہسپتال وغیرہ تعمیر کرنا

کفارے کی رقم مسکینوں کو مالک بنا کر دینا ضروری ہے، کفارے کی رقم سے مسجد، مدرسہ اور ہسپتال وغیرہ کی تعمیر کرنا یا ہسپتال کی مشینری خریدنا یا تنخواہ دینا جائز نہیں ہے۔ (۲)

## کفارے کے روزے کی جگہ پر توبہ کرنا کافی ہے یا نہیں

کفارہ اور قضا لازم ہونے کی صورت میں کفارہ ادا کرنا ضروری ہے، کفارے کے بغیر توبہ کرنے سے توبہ قبول نہیں ہوگی۔ (۳)

## کفارے کا کھانا چھوٹے بچوں کو کھلانا

کفارے کا کھانا چھوٹے بچوں کو کھلانے سے کفارہ ادا نہیں ہوگا۔ چھوٹے بچے

(۱) يطعم كل مسكين نصف صاع براوصاع تمر او شعير او قيمته..... دقيق البر وسويقه مثله في اعتبار نصف الصاع ودقيق الشعير وسويقه مثله كذا في الجوهره النيرة. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۵۱۳. ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۲) قوله وتصح الاباحة في الكفارات ای فی اطعام الكفارات قوله والفدية دون الصدقات و العشر لورود الاطعام في الكفارات والفدية هو حقيقة في التمكين من الطعام وانما جاز التملك باعتبار انه تمكين. (البحر الرائق ج: ۴ ص: ۱۰۹. ایچ ایم سعید)

(۳) اعلم ان هذا الذنب اعنى ذنب الافطار عمدا لا يرتفع بالتوبة بل لابد من التكفير ولهذا قال في الهداية وبايجاب الاعتاق عرف ان التوبة غير مكفرة لهذه الجناية وتبعه الشارحون و شبهه في غاية البيان بجناية السرقة والزنا حيث لا يرتفعان بمجرد التوبة بل يرتفعان بالحد وهذا يقتضى ان المراد بعدم الارتفاع عدم ظاهرا فيما بينه وبين ربه فيرتفع بالتوبة بدون التكفير لان حد الزنا يرتفع فيما بينه وبين الله بالتوبة كما صرحوا به واما القاضي بعد مارفع الزاني اليه لا يقبل منه التوبة بل يقيم الحد (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۷۸، سعید)

سے مراد جو بالغ یا قریب البلوغ نہیں ہے، البتہ اگر چھوٹے بچوں کو کفارے کی مقدار کا مالک بنا دیا جائے تو کفارہ ادا ہو جائے گا۔ (۱)

## کلی کرنا

(۱) روزے میں بھی وضو کے دوران کلی کرنا درست ہے اور غسل جنابت میں فرض ہے۔

(۲) روزے میں وضو اور غسل کے بغیر صرف گرمی کی وجہ سے کلی کرنا بھی جائز

ہے۔ اس سے روزہ فاسد نہیں ہوتا۔ (۲)

(۳) کلی کرتے وقت پانی حلق میں چلا گیا اور کلی کرتے وقت روزہ یاد تھا تو روزہ

فاسد ہو گیا، قضا واجب ہے، کفارہ واجب نہیں اور اگر کلی کے دوران روزہ یاد نہیں تھا تو

روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۳)

## کلی کرنے کے بعد منہ میں پانی کے اثرات رہ جانا

وضو، غسل یا کلی کے بعد منہ میں پانی کی جو تری باقی رہ جاتی ہے اس کو نگل

جانے سے روزہ فاسد نہیں ہوتا، مگر اس میں یہ شرط ہے کہ کلی کرنے کے بعد ایک دو

مرتبہ تھوک منہ سے نکال دیا جائے، اس لئے کہ کلی کرنے کے بعد کچھ پانی باقی رہ جاتا

ہے۔ لہذا ایک دو مرتبہ تھوک دینے کے بعد پانی باقی نہیں رہتا، بلکہ سی تری رہ جاتی ہے

(۱) قید بالشیع لانہ لوکان فیہم من ہوشعان قبل الاکل اوصی لیس بمراق لا یجزئہ .

(البحر الرائق ج: ۴ ص: ۱۰۹، ط: سعید)

(۲) ولس المبالغة فی المضمضة وہی ایصال الماء لرأس الحلق والمبالغة فی الاستنشاق

وہی ایصالہ مافوق المارن لغير الصائم والصائم لا یبالغ فیہما خشية افساد الصوم لقوله علیہ

الصلوة والسلام بالغ فی المضمضة والاستنشاق الا ان تكون صائما . (مراقی الفلاح، کتاب

الطہارة فصل فی سنن الوضوء ج: ۱ ص: ۲۷، قدیمی کتب خانہ)

(۳) وان تمضمض او استشق فدخل الماء جوفہ ان کان ذاکرا لصومه فسد صومه وعلیہ القضاء

وان لم یکن ذاکرا لا یفسد صومه کذا فی الخلاصة وعلیہ الاعتماد . (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۲)

اس میں کوئی حرج نہیں۔ (۱)

**کمائی (آمدنی) باپ کو دینے والے کا صدقہ فطر**  
اگر جوان لڑکا اپنی (آمدنی) کمائی باپ کو دے دیتا ہے، اس کے پاس کچھ نہیں رہتا تو اس پر بھی صدقہ فطر ادا کرنا لازم ہے۔ (۲)

### کونکہ

روزے کے دوران کونکہ چبا کر دانت مانجھنا منع ہے۔ اگر دانت مانجھنے کے دوران کونکہ کا کچھ حصہ حلق میں اتر جائے گا تو روزہ فاسد ہو جائے گا اور اگر ذرات حلق میں نہیں اتریں گے تو اترنے کے احتمال کی وجہ سے مکروہ ہوگا۔ اس لئے روزہ دار صبح صادق سے غروب آفتاب تک کونکہ سے دانت مانجھنے سے پرہیز کرے۔ (۳)

### کھانسنہ

(۱) خود بخود کھانسی آجائے تو اس سے روزے پر کوئی اثر نہیں پڑے گا۔  
(۲) اگر عمداً کھانسنے سے کوئی چیز معدہ سے حلق کے اوپری حصہ تک آجائے تو شوافع کے نزدیک روزہ ٹوٹ جائے گا۔ (۳)

(۱) ابوبی بلل فی فیہ بعد المضمضة وابتلعہ مع الریق ..... لم یفطر. شامی ج: ۲ ص: ۳۹۶، ط: ایچ ایم سعید ) وینبغی ان یبصق بعد المضمضة قبل ان یتلع ریقہ ولا یشرط المبالغة فی البصق (الفقه علی المذاهب الاربعه ج: ۱ ص: ۵۶۶)

(۲) فتاوی دارالعلوم ج: ۶ ص: ۳۱۱، دارالاشاعت

(۳) وکرہ ذوق شیء ومضغه بلاعذر، درمختار شامی ج: ۲ ص: ۴۱۶ عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۹

(۴) ومنه التجشی ان تعمدہ خرج شیء من معدته الی ظاهر الحلق..... فانه یفطر کتاب الفقه علی المذاهب الاربعه ج: ۱ ص: ۴۵۱، دارالکتب المصریة

(گ)

## گردوغبار

راستے کا گردوغبار یا آٹے کی چھانس یا کوئی چیز پینے یا دوا کوٹنے کا غبار روزے کی حالت میں منہ میں چلا جائے اور معدہ میں پہنچ جائے یا مزہ حلق میں محسوس ہو تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، کیونکہ ان چیزوں سے بچنا مشکل اور دشوار ہے۔ (۱)

## گناہ معاف

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا جس نے ایمان کے ساتھ اور ثواب کا یقین رکھتے ہوئے رمضان کے روزے رکھے اس کے پچھلے (صغیرہ) گناہ معاف کر دیئے جائیں گے اور جس نے رمضان (کی راتوں میں) ایمان کے ساتھ ثواب کا یقین رکھتے ہوئے قیام (تراویح نوافل پڑھے) کیا اس کے پچھلے گناہ معاف کر دیئے جائیں گے۔ (۲)

## گوشت

- (۱) او دخل حلقه غبار او ذباب او دخان ولو ذاکرا استحسانا لعدم امکان التحرز عنه ..... لم یفطر. (شامی ج: ۲، ۳۹۵: ط: ایچ ایم سعید)
- (۲) عن ابی ہریرۃ قال قال رسول اللہ ﷺ من صام رمضان ایمانا واحتسابا غفر له ماتقدم من ذنبه ومن قام رمضان ایمانا واحتسابا غفر له ماتقدم من ذنبه ومن قام لیلة القدر ایمانا واحتسابا غفر له ماتقدم من ذنبه. متفق علیہ. (مشکوٰۃ شریف ص: ۱۷۳، کتاب الصوم الفصل الاول)
- (۳) فالصائم اذا اکل الخبز ..... علیہ القضاء والکفارة عندنا هکذا فی فتاویٰ قاضی خان ..... وکذا اذا اکل لحما غیر مطبوخ او شحما غیر مطبوخ علی المختار کذا فی خزائنہ =

اگر ماہ رمضان میں کسی نے روزے کی حالت میں جان بوجھ کر کچا گوشت کھالیا تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے۔ (۳)

## گوند چاٹ کر تھوک نگل جانا

اگر روزے کی حالت میں زبان سے لفافہ کا گوند چاٹ کر تھوک نگل گیا تو روزہ ٹوٹ جائے گا۔ قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ اور اگر لفافہ چاٹنے کے بعد تھوک دیا تو اس سے روزہ فاسد نہیں ہوگا، مگر ایسا کرنا مکروہ تنزیہی ہے۔ (۱)



## لواطت

(۱) لواطت کو اغلام بازی، غیر فطری فعل اور ہم جنس پرستی بھی کہا جاتا ہے۔ (۲)  
 (۲) اگر کسی نے روزے کی حالت میں اغلام بازی یا لواطت کی اور عضو مخصوص کی سپاری اندر چلی گئی تو روزہ فاسد ہو گیا، خواہ منی نکلے یا نہ نکلے، دونوں صورتوں میں قضا اور کفارہ دونوں لازم ہیں۔

= المفتین. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۵، رشیدیہ کوئٹہ)

ولكن يشكل على ذلك وجوب الكفارة بأكل اللحم التي الخ فتاوى شامی ج: ۲ ص: ۴۱۰  
 (۱) اوبتلع حصاة ونحوها مما لا يأكله الانسان اوبعافه اوبسقطه قضی فقط. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۳، ایچ ایم سعید)  
 ایضا: وكره له ذوق شیء وكذا مضغه بلا عذر قيد فيهما. (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۶، سعید)  
 (۲)

(۳) وان جامع المكلف آدميا مشتهی فی رمضان اداء اوجومع او توارت الحشفة فی احد السبیلین انزل اولاً..... قضی فی الصور کلها وكفر..... ككفارة المظاهر. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۶. ط: ایچ ایم سعید)

واضح رہے کہ لواطت کبیرہ گناہ ہے۔ شرعاً ناجائز اور حرام ہے۔ اس سے توبہ استغفار کرنا ضروری ہے، ورنہ آخرت میں سخت عذاب ہوگا۔ (۳)

## لُؤ کی وجہ سے روزہ توڑ دینا

اگر کسی شخص کو ماہ رمضان میں لُؤ کی وجہ سے روزہ رکھنا برداشت سے باہر ہو گیا ہے اور اس وجہ سے روزہ توڑ دیا ہے تو قضا لازم ہوگی کفارہ نہیں۔ (۱)

## لیٹنا

روزے میں میاں اور بیوی کا ساتھ لیٹنا، ہاتھ لگانا، پیار کرنا، سب درست ہے۔ لیکن جوانی اور شہوت کا اتنا جوش ہو کہ ان باتوں سے صحبت کرنے کا ڈر ہو تو ایسا کرنا مکروہ ہے، پرہیز ضروری ہے۔ (۲)

= أيضا: وعنه ان رسول الله ﷺ قال لا ينظر الله عز وجل الى رجل اتى رجلا او امرأة في دبرها. (مشکوٰۃ شریف ص: ۳۱۳، کتاب الحدود الفصل الثالث، قدیمی کتب خانہ)  
(۱) قوله فان اجهد الحر الخ قال في الوهبانية فان اجهد الانسان بالشغل نفسه " فافطرفي التكفير قولين سطرها. قال الشرنبلالي صورته صائم اتعب نفسه في عمل حتى اجهده العطش فافطر لزمته الكفارة وقيل لاوبه الفتى البقالی. (شامی ج: ۲ ص: ۴۲۰ ط: سعید).  
ايضا: ومنها العطش والجوع كذلك اذ اخيف منها الهلاك او نقصان العقل. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷، ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(قوله خاف الزيادة) ..... ومثله ما اذا كان يمرض اي بأن يعولهم ويلزم من صومه ضياعهم وهلاكهم لضعفه عن القيام بهم اذا صام شامی ج: ۲ ص: ۴۲۲، ط: سعید)  
(۲) وكره قبله ومس ومعاينة ومباشرة فاحشة ان لم يامن المفسد، وان امن لابس به . (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۷، البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۷۲، ایچ ایم سعید)

## (م)

## مباشرت فاحشہ

- (۱) مباشرت فاحشہ یعنی ”خاص بدن شرمگاہ کا آپس میں دخول کے بغیر ملانا“ مکروہ ہے، منی نکلنے یا صحبت کرنے کا خوف ہو یا نہ ہو۔ (۱)
- (۲) اگر روزے کی حالت میں مباشرت فاحشہ کی وجہ سے انزال ہو جائے تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا واجب ہوگی، کفارہ واجب نہیں ہوگا۔ (۲)

## مٹی کھانا

- (۱) اگر کسی روزہ دار نے ایسی مٹی کھائی جس سے سر دھوتے ہیں تو روزہ

(۱) وكره قبله ومس ومعانقة ومباشرة فاحشة ان لم يامن المفسد وان امن لابس تحتہ فی رد - قوله وكره قبله الخ..... وكذا المباشرة الفاحشة في ظاهر الرواية وعن محمد كراهتها مطلقا وهوراية الحسن قيل وهو الصحيح - واختار الكراهة في الفتح وجزم بها في اللو اجية بلا ذكر خلاف وهي ان يعانقها وهما متجردان ويمس فرجه فرجها - بل قال في الذخيرة ان هذا مكروه بلا خلاف لانه يفضي الى الجماع غالبا. وبه علم ان رواية محمد بيان لكون مافي ظاهر الرواية من كراهية المباشرة ليس على اطلاقه بل هو محمول على غير الفاحشة ولذا قال في الهداية والمباشرة مثل التقبيل في ظاهر الرواية وعن محمد انه كره المباشرة الفاحشة الخ. (شامی ج: ۲ ص: ۱۷۴ ط: ایچ ایم سعید)

(۲) اولمس ولوبحائل لا يمنع الحرارة او استمنى بكفه او بمباشرة فاحشة ولوبين المراتين فانزل ، قيد للكل ..... قضی فی الصور كلها فقط. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۴ ط: سعید)

(۳، ۴) ولواكل الطين الذي يغسل به الرأس فسد صوما وان كان يعتاد اكل هذا الطين فعليه القضاء والكفارة. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۲)

فالصائم اذا اكل الخبز..... عليه القضاء والكفارة عندنا..... وكذا اذا اكل طينا =

فاسد ہو جائے گا، صرف قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۳)

(۲) اگر کسی آدمی کو مذکورہ قسم کی مٹی کھانے کی عادت ہے اور اس نے روزے کے دوران وہ مٹی کھائی تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا اور کفارہ دونوں واجب ہوں گے۔ (۴)

## مذاق کرنا

روزے کی نسبت مذاق اور تسخر کے کلمات کہنا مثلاً یہ کہ روزہ وہ رکھے جس کے گھر کھانا پینا نہ ہو یا یہ کہ ہم سے بھوکا نہیں مرا جاتا، کفر ہے۔ (۱)

## مذی

روزے میں بیوی کے ساتھ پیار وغیرہ کرنے کی وجہ سے صرف مذی آجائے تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، البتہ ایسی حالت میں منی نکلنے سے روزہ فاسد ہو جائے گا۔ (۲)

## مریض

(۱) اگر مریض اور بیمار آدمی کے لئے حالت مرض میں روزہ رکھنا مشکل ہے تو روزہ نہ رکھے، جب تندرست ہو جائے اور روزہ رکھنے کے قابل ہو جائے تو قضا روزہ

= یوکل للدواء كالطين الارمنى او الطين الذى يقلى فيوكل . (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۵)  
(۱) وفى الفتح من هزل بلفظ كفر ارتد وان لم يعتقه للاستخفاف . (شامی ج: ۴ ص: ۲۲۲)  
(۲) والمذى رقيق يضرب الى البياض يلدو خروجه عند الملاعبة مع اهله بالشهوة . (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۰، الفصل الخامس فى نواقض الوضوء ط: رشیدیہ، احسن الفتاوی ج: ۴ ص: ۴۵۱ ایچ ایم سعید)

المفسدون ان لا بأس . (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۷ ط: ایچ ایم سعید)  
(۳) المریض اذا خاف على نفسه التلف او ذهاب عضو يقطر بالاجماع وان خاف زيادة العلة و امتداده فكذلك عندنا وعليه القضاء اذا افطر كذا فى المحيط . (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷)  
قوله تعالى : ومن كان منكم مریضا او على سفر فعدة من ايام اخر : سورة البقرة آیت (۸۴)  
(۴) اما وجوب الفداء فشرطه العجز عن القضاء عجزا لا ترجی معه القدرة فى جمیع عمره .  
(بدائع الصنائع ج: ۲ ص: ۱۰۵ ط: ایچ ایم سعید)

قضا کی نیت سے ادا کرے۔ (۳)

(۲) جب تک مریض کو صحت کی امید ہے، روزے کے بدلے میں فدیہ ادا کرنا صحیح نہیں ہے۔ (۴)

(۳) اگر کوئی شخص رمضان شریف میں بیمار تھا، بیماری کی وجہ سے کسی دن روزہ رکھتا تھا اور کسی دن افطار کرتا تھا، اتفاقاً ایک دن روزے کی نیت کی، بیماری کی وجہ سے صبح کی نماز کے بعد افطار کر لیا تو اس صورت میں قضا واجب ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۱)

(۴) اگر کوئی شخص روزہ رکھنے کے بعد بیمار ہو گیا اور حالت نازک ہو گئی، روزہ رکھنے کی صورت میں مرض میں اضافہ یا موت کا ظن غالب ہو تو افطار کرنا جائز ہوگا، صرف قضا لازم ہوگی کفارہ نہیں۔ (۲)

(نوٹ) اگر ایسی صورت میں صرف انجکشن سے علاج ہو سکے تو روزہ توڑنا جائز نہیں ہوگا۔

## مریض کا قضا کرنا یا فدیہ دینا

اگر مریض کو مرض سے اچھا ہونے کے بعد اتنی مدت ملے کہ اس میں قضا کر سکتا ہے تو روزے کی قضا اس کے ذمہ واجب ہے۔ ورنہ قضا لازم نہیں ہوگی اور فدیہ بھی لازم نہیں ہوگا۔

اور اگر مرض سے اچھا ہونے کے بعد اتنی مدت ملی ہے کہ ان روزوں کی قضا کر سکتا ہے تو قضا لازم ہوگی اور اگر قضا نہیں کی انتقال ہو گیا تو اس صورت میں فدیہ

(۲۰۱) ثم انما يكفران نوى ليلا، ولم يكن مكروها ولم يطرأ مسقط كمرض الخ (قوله كمرض) اى مبيح للافطار. شامى ج: ۲ ص: ۱۳۴ ايج ايم سعيد)

(۳) فان برئ المريض او قدم المسافر وادرك من الوقت بقدر ما فاتته فيلزمه قضاء جميع ما درك. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷، ط: رشیدیہ، فتاوی شامی ج: ۲ ص: ۴۲۴ ط: سعید)

ایضا: ولو فات صوم رمضان بعذر المرض او السفر واستدام المرض والسفر حتى مات لا قضاء عليه، لكنه ان اوصى بان يطعم عنه صحت وصيته وان لم تجب عليه ويعم عنه من ثلث ماله =

دینے کی وصیت کرنا لازم ہوگا اور وصیت کے مطابق فدیہ دینا لازم ہوگا اور اگر وصیت نہیں کی تو اس صورت میں میت کو آخرت کی گرفت سے بچانے کے لئے وارثوں کو فدیہ دیدینا چاہیے۔ (۳)

## مسافر

مسافر پر حالت سفر میں روزہ رکھنا ضروری نہیں، البتہ مسافر کے لئے بہتر یہ ہے کہ اگر مشقت اور تکلیف نہ ہو تو روزے رکھ لے، تاکہ بعد میں قضا روزے ادا کرنے میں مشقت نہ ہو۔ مزید تفصیل سفر کے عنوان کے تحت ملاحظہ کریں۔ (۱)

## مسافر سفر کے دوران انتقال کر گیا

اگر مسافر حالت سفر میں انتقال کر گیا تو اس پر فدیہ دینے کی وصیت کرنا لازم نہیں ہے، کیونکہ اس کو روزہ رکھنے کا موقعہ ہی نہیں ملا اور قضا لازم نہیں ہوئی۔ (۲)

= فان برئ المريض او قدم المسافر وادرك من الوقت بقدر ما فاته فيلزمه قضاء جميع ما ادرك فان لم يصم حتى ادركه الموت فعليه ان يوصى بالفدية كذا في الهداية ..... فان صح المريض او اقام المسافر ثم ماتا لزمهما القضاء بقدر الصحة والاقامة وهذا قولهم جميعا من غير خلاف هذا هو الصحيح (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷، ۲۰۸ ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۱) ويندب لمسافر الصوم لآية - وان تصوموا ..... ان لم يضروه فان شق عليه او على رفيقه فالفطر افضل لموافقة الجماعة (شامی ج: ۲ ص: ۴۲۳ ط: ایچ ایم سعید)

وفى الشامية: فصل فى العوارض المبيحة لعدم الصوم ..... لمسافر، قوله لمسافر ..... ولكن الصوم افضل ان لم يضره ج: ۲ ص: ۴۲۱ ط: ایچ ایم سعید)

(۲) ولوفات صوم رمضان لعذر المرض او السفر واستدام المرض او السفر حتى مات لا قضاء عليه لكنه ان اوصى بان يطعم عنه صحت وصيته وان لم تجب عليه. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷)

(۳) وكذا لو نوى المسافر الصوم ليلا ، واصبح من غير ان ينقض عزمته قبل الفجر، ثم اصبح صائما لا يحل فطره فى ذلك اليوم ، ولو افطر لا كفارة عليه ، قلت : وكذا لا كفارة عليه بالأولى لو نوى نهارا فقله ليلا غير قيد. (شامی ج: ۲ ص: ۴۳۱، قبيل مطلب يقدم هنا القياس على الاستحسان ط: ایچ ایم سعید)

## مسافر کا روزہ رکھ کر توڑ دینا

اگر مسافر آدمی نے حالت سفر میں روزہ رکھنے کی نیت کی اور بعد میں روزہ توڑ دیا تو کفارہ لازم نہیں ہوگا، البتہ قضا لازم ہوگی۔ (۳)

## مسافر کا فدیہ دینا

اگر مسافر مقیم ہونے کے بعد روزہ رکھنے کے قابل ہے تو سفر کے روزوں کا فدیہ دینا کافی نہیں ہوگا بلکہ سفر کے دوران جتنے روزے رہ گئے سب رکھنا لازم ہوں گے۔ (۱)

## مستحبات روزہ

(۱) سورج ڈوبتے ہی نماز سے پہلے افطار کرنے میں جلدی کرنا۔ (۲)

(۲) بھجور یا چھوہارے سے افطار کرنا اس کے بعد پانی سے۔ (۳)

(۳) جس چیز سے افطار کیا جائے وہ طاق عدد ہو۔ مثلاً تین، پانچ، سات

وغیرہ۔ (۴)

(۱) فان برئ المريض او قديم المسافر وادرك من الوقت بقدر ما فاته فيلزمه قضاء جميع ما ادرك. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۷. ط: رشیدیہ)

(۲) وتعجيل الافطار افضل فيستحب ان يفطر قبل الصلوة. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۰)

(۳) عن انس قال كان رسول الله ﷺ يفطر قبل ان يصلي على رطبات فان لم تكن رطبات فتميرات فان لم تكن تميرات حسا حسوات من ماء رواه الترمذی. (مشکوٰۃ شریف ج: ۱ ص: ۱۷۵ کتاب الصوم. ط: قدیمی کتب خانہ)

(۴) كان رسول الله ﷺ يحب ان يفطر على ثلاث تمرات او شيئا لم تصبه النار. (مرواة المفاتيح ج: ۴ ص: ۲۵۷ مکتبہ امدادیہ ملتان)

(۵) عن معاذ بن زهرة قال ان النبي ﷺ كان اذا افطر قال اللهم لك صمت وعلى رزقك

افطرت رواه ابو داؤد مرسلًا. (مشکوٰۃ شریف ج: ۱ ص: ۱۷۵. ط: قدیمی کتب خانہ)

(۶) عن انس قال قال رسول الله ﷺ تسحروا فان في السحور ركة متفق عليه. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۰. ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۴) افطار کے بعد دعا پڑھنا۔ مثلاً اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَعَلَى رِزْقِكَ

اَفْطَرْتُ۔ (۵)

(۵) سحری میں کچھ نہ کچھ کھانا۔ (۶)

(۶) سحری کرنے میں وقت کے اندر اندر تاخیر کرنا۔ (۱)

(۷) زبان کو ناجائز باتوں سے اور اعضاء کو ناجائز کاموں سے باز رکھنا۔ (۲)

(۸) رشتہ داروں، محتاجوں اور مسکینوں کو صدقہ و خیرات سے نوازا اور حصول علم

میں مشغول رہنا، قرآن شریف کی تلاوت کرنا، درود شریف، استغفار اور ذکر و اذکار

میں لگے رہنا اور اعتکاف کرنا۔ (۳)

## مسجد میں افطار اور سحری کرنا

مسجد میں اعتکاف کی نیت کے بغیر روزہ افطار کرنا، ایسا ہی سحری کھانا مکروہ ہے۔

(۱) ثم تاخير السحور مستحب كذا في النهاية ويكره تاخير السحور الى وقت يقع فيه الشك. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۰ ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۲) عن ابی ہریرۃؓ قال قال رسول اللہ ﷺ من لم يدع قول الزور والعمل به فليس لله حاجة في ان يدع طعامه وشرابه رواه البخاری. (مشکوٰۃ شریف ج: ۱ ص: ۱۷۶، قدیمی)

ایضا: قول الزور ای الباطل وهو ما فيه اثم والاضافة بيانية وقال الطيبي الزور الكذب والبهتان اي من لم يترك القول الباطل من قول الكفر وشهادة الزور والافتراء والغيبة والبهتان و القذف والسب والشتم واللعن وامثالها مما يجب على الانسان اجتنابها ويحرم عليه ارتكابها الخ (مرقاة ج: ۴ ص: ۱۷۷ ط: امدادیہ ملتان)

(۳) عن سلمان الفارسی..... وهو شهر الصبر والصبر ثوابه الجنة وشهر المواساة و شهر يزاد فيه رزق المؤمن من فطر فيه صائما كان له مغفرة لذنوبه وعق رقبتة من النار وكان له مثل اجره من غير ان ينقص من اجره شيء الخ. (مشکوٰۃ شریف ص: ۱۷۳، كتاب الصوم)

(۴) ويكره النوم والأكل فيه لغير المعتكف ، وإذا اراد أن يفعل ذلك ينبغي أن ينوي الاعتكاف ، ويدخل فيه ، ويذكر الله بقدر ما نوى او يصلي ثم يفعل ماشاء كذا في السراجية .

(عالمگیری ج: ۵ ص: ۳۲۱ كتاب الكراهية ط: رشیدیہ کوئٹہ)

ہاں اگر مسجد میں افطار یا سحری کرنے کی ضرورت ہو تو کم سے کم نفلی اعتکاف کی نیت کر لے تو کراہت ختم ہو جائے گی، باقی جہاں تک ممکن ہو مسجد کو ملوث اور گندہ ہونے سے بچانا ضروری ہے۔ (۴)

## معمولات نبوی ﷺ

(۱) صحابہ کرامؓ فرماتے ہیں کہ جب بھی رمضان المبارک کا مہینہ آتا تو ہم رسول اللہ ﷺ کے اعمال میں تین باتوں کا اضافہ محسوس کرتے۔ (۱)

(۱) پہلی بات آپ ﷺ عبادت میں بہت زیادہ کوشش اور جستجو فرمایا کرتے تھے، حالانکہ آپ ﷺ کے عام دنوں کی عبادت بھی ایسی تھی کہ آپ کے قدم مبارک متورم ہو جایا کرتے تھے، تاہم رمضان المبارک میں آپ کی عبادت پہلے سے بھی زیادہ ہو جایا کرتی تھی۔ (۲)

(۲) دوسری بات آپ ﷺ اللہ رب العزت کے راستے میں خوب خرچ فرماتے تھے، اپنے ہاتھوں کو بہت کھول دیتے تھے، یعنی بہت کھلے دل کے ساتھ صدقہ و خیرات

(۱) عن عائشةؓ قالت کان رسول اللہ ﷺ اذا دخل العشر احبى الليل وايقظ اهله وجد وشد المنزر..... قالت عائشةؓ کان رسول اللہ ﷺ يجتهد فى العشر الاواخر ما لا يجتهد فى غيره (الصحيح لمسلم ج: ۱ ص: ۳۷۲، كتاب الاعتكاف باب الاجتهاد فى العشر الاواخر . ط: قديمى كتب خانہ)

ايضا: عن ابن عباسؓ قال كان رسول اللہ ﷺ اذا دخل شهر رمضان اطلق كل اسير واعطى كل سائل. (مشکوٰۃ ج: ۱ ص: ۱۷۴، كتاب الصوم . ط: قديمى كتب خانہ)

فرماتے تھے۔ (۳)

(۳) تیسری بات آپ ﷺ مناجات میں بہت ہی زیادہ گریہ و زاری فرمایا کرتے

تھے۔ (۴)

## مسواک

(۱) مسواک کرنا سنت ہے اور اس کے بہت زیادہ فوائد ہیں، ان میں سے چند

یہ ہیں۔ (۱)

(۱) منہ کی صفائی۔

(۲) رب کی رضامندی۔

(۳) فرشتوں کی خوشی۔

(۴) نظر کی تیزی۔

(۵) دانت کی خوبصورتی۔

(۶) داڑھ کی مضبوطی۔

(۷) بڑھاپا دیر سے آتا ہے۔

(۸) کھانا جلدی ہضم ہوتا ہے۔

(۱) والسواک سنة مؤكدة ..... قوله ومن منافع الخ في الشربلالية عن حاشية صحيح البخاری للفارسی ان منها انه يبطى بالشيب ويحد البصر واحسنها انه شفاء لمادون الموت وانه يسرع في الشى على الصراط ، ومنها ما في شرح المنية وغيره انه مطهرة للقم ، ومرضات لرب ، ومفرحة للملائكة ومجلاة للبصر ويذهب البحر والحفرو يبيض الانسان ويشد اللثة وهضم الطعام ويقطع البلغم ويضعف الصلوة ويظهر طريق القرآن ويزيد في الفصاحة يقوى المعدة ويسخط الشيطان ويزيد في الحسنات ويقطع المرة ويسكن عروق الرأس ووجع الاسنان ويطب النكهة ويسهل خروج الروح قال في النهرو منافع وصلت الى نيف و ثلاثين منفعة ادناها امامة الاذى واعلاها تذكير الشهادة عند الموت . (شامی ج: ۱ ص: ۱۱۵ ، کتاب الطهارة مطلب في منافع السواک ط: ایچ ایم سعید)

(۹) بلغم ختم ہوتا ہے۔

(۱۰) معدہ قوی ہوتا ہے۔

(۱۱) شیطان ناراض ہوتا ہے۔

(۱۲) نیکی میں اضافہ ہوتا ہے۔

(۱۳) پل صراط سے گزرنا آسان ہوتا ہے۔

(۱۴) کڑوے پن کو دور کرتا ہے۔

(۱۵) سر اور دانت کے درد کو سکون پہنچاتا ہے۔

(۱۶) بدبودور ہو جاتی ہے۔

(۱۷) موت کے وقت روح آسانی سے نکلتی ہے۔

(۱۸) سب سے بڑا فائدہ یہ ہے کہ موت کے وقت کلمہ شہادت زبان سے

جاری ہوتا ہے۔

(۲) روزہ دار کے لئے روزے کے دوران مسواک کرنا جائز ہے، خواہ سوکھی

مسواک ہو یا تازہ اسی وقت کی توڑی ہوئی ہو، اگر مسواک کا کڑوا پن منہ میں معلوم ہوتا

ہے یا اس کا تیز ذائقہ محسوس ہوتا ہے تو اس سے بھی روزہ پر کوئی اثر نہیں پڑے گا اور

روزہ مکروہ بھی نہیں ہوگا۔ (۱)

(۳) اگر مسواک کرتے وقت اس کا ریشہ پیٹ میں چلا گیا اور اس کی مقدار چنے

کے دانے سے کم ہے تو روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۲)

(۱) ولا یأس بالسواک الرطب والیابس فی الغداة والعشی عندنا. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۹)

(۲) وان اکل ما بین اسنانه لم یفسد ان کان قلیلا وان کان کثیرا یفسد والحمصة وما فوقها

کنثیر وما دونها قلیل. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۲ ط: رشیدیہ کوئٹہ)

## مسوڑھوں سے خون نکلنا

(۱) اگر روزہ دار کے مسوڑھوں سے خون نکلتا ہے تو جاگنے کی صورت میں اس کو تھوک ذرے اندر نہ نکلے۔ (۱)

(۲) اگر روزہ دار کے مسوڑھوں سے خون نکل کر سونے کی حالت میں خود بخود بلا اختیار تھوک حلق سے نیچے اتر جاتا ہے تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، البتہ صحت کے بعد احتیاطاً روزے کی قضا کر لینا بہتر ہے۔ (۲)

(۳) البتہ اگر خون تھوک سے غالب ہے اور تھوک کا رنگ سرخ ہو گیا ہے اور اپنے اختیار سے اندر نکل لے تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۳)

## معاشی محنت کی وجہ سے روزہ نہ رکھنا۔

معاشی محنت کی وجہ سے رمضان شریف کے روزے نہ رکھنا جائز نہیں بلکہ مناسب یہ ہے کہ رمضان المبارک میں ایسے سخت محنت کے کام نہ کئے جائیں جن کی وجہ سے روزے قضا کرنے کی نوبت آئے۔ (۴)

- 
- (۲۰۱) اوخرج الدم من بين اسنانه ودخل حلقه..... لم يفطر. (درمختار ج: ۲، ص: ۳۹۶) قلت : و من هذا يعلم حكم من قلع ضرسه في رمضان ، ودخل الدم الى جوفه في النهار ولو نائما فيجب عليه القضاء الا ان يفرق بعدم امكان التحرز عنه فيكون كالقلى الذى عاد بنفسه. (شامى ج: ۲، ص: ۳۹۶)
- (۳) وفي اللواجية الدم اذا خرج من الاسنان ودخل الحلق ان كانت الغلبة للبزاق لا يفسد صومه وان كانت للدم فسد وكذا اذا استويا احتياطا. (البحر الرائق ج: ۲، ص: ۲۷۳، شامى ج: ۲، ص: ۳۹۶، مطلب يكره السهر اذا خاف فوت الصبح ط: ايج ايم سعيد)
- (۴) وفي القنية لا يجوز للخباز ان يخبز خبزا يوصله الى ضعف مبيع للفطر بل يخبز نصف النهار ويستريح في النصف. (البحر الرائق ج: ۲، ص: ۲۸۲، ط: ايج ايم سعيد)
- لا يجوز ان يعمل عملا يصل به الى الضعف فيخبز نصف النهار ويستريح الباقي. شامى ج: ۲، ص: ۴۲۰، ط: ايج ايم سعيد
-

## مشت زنی

- (۱) مشت زنی کو استمنا بالید، ہینڈ پریکٹس اور حلق بھی کہا جاتا ہے۔
- (۲) روزے کے دوران مشت زنی کرنے سے اگر انزال ہو گیا تو روزہ فاسد ہو گیا، قضا ضروری ہے، کفارہ نہیں۔ (۱)
- (۳) اگر مشت زنی سے انزال نہیں ہوا تو روزہ فاسد نہیں ہوا۔ (۲)
- (۴) مشت زنی کرنا ناجائز اور حرام ہے، اس پر لعنت بھیجی گئی ہے، قیامت کے دن ایسے لوگوں کے ہاتھ حاملہ ہوں گے۔ (۳)

## مقصد روزہ

- (۱) روزے کا اصل مقصد یہ ہے کہ پیٹ خالی رہے اور نفس کی خواہشات ختم ہو جائیں اور روزہ دار کے نفس میں تقویٰ پیدا ہو، زیادہ کھانے کی صورت میں یہ مقصد ختم ہو جاتا ہے۔ لہذا افطار میں اتنا کھایا جائے کہ جتنا عام راتوں میں کھایا جاتا ہے۔ یہ نہیں کہ صبح سے شام تک کے اوقات کا مکمل کوٹہ پورا کر لیا جائے۔ اگر ایسا کیا جائے گا تو روزے کا اصل مقصد حاصل نہیں ہوگا۔ (۴)
- (۲) روزے کا مقصد قوت شہوانیہ اور قوت بہیمیہ کا کم کرنا ہے اور قوت نورانیہ اور ملکیہ کا بڑھانا ہے۔ لہذا سحری اور افطار میں باقی گیارہ مہینوں سے کچھ کم کھائے تاکہ مقصد حاصل ہو۔ (۵)

(۱، ۲) وكذا استمنا بالكف ای فی كونه لا یفسد لكن هذا اذا لم ينزل اما اذا انزل فعليه القضاء. (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۹، البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۷۲ ط: ایچ ایم سعید)

(۳) وان كره تحريما لحديث ناكح اليد ملعون. (شامی ج: ۲ ص: ۳۹۹ ط: ایچ ایم سعید)

(۴، ۵) وحكمة مشروعية الصوم منها ان به سكون النفس الامارة باعراضها عن الفضول لانها اذا جاعت شبت جميع الاعضاء فتقبض اليد والرجل والعين وباقي الجوارح عن حركاتها و اذا شبت النفس جاعت الجوارح بمعنى قويت على البطش والنظر وفعل ما لا ينبغي فانقباضها يصفو القلب وتحصل المراقبة - ومنها العطف على المساكين بالاحساس بالم الجوع لمن هو و صفه ابدا فيحسن اليه ولذا لا ينبغي الافراط في السجور لمنع الحكمة المقصودة والاتصاف =

## مقعد

”اجابت“ الخ کو دیکھیں۔

## مقیم روزے کی نیت کرنے کے بعد سفر کرے

اگر کوئی مقیم رمضان میں روزے کی نیت کے بعد سفر کرے تو اس پر اس دن کا روزہ رکھنا لازم ہے، اگر کسی وجہ سے اس روزے کو فاسد کر دیا تو قضا لازم ہوگی کفارہ نہیں۔ (۱)

## مکھی

اگر روزے کی حالت میں خود بخود حلق کے اندر مکھی چلی گئی تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، البتہ اگر کوئی شخص قصداً ایسا کرے گا تو روزہ فاسد ہو جائے گا۔ قضا لازم ہوگی کفارہ نہیں۔ (۲)

چمھر اور دیگر حشرات کا بھی یہی حکم ہے۔

## منجن

روزہ دار کے لئے صبح صادق سے غروب آفتاب تک منجن سے دانت صاف کرنا مکروہ ہے، اور اگر اس میں سے کچھ حلق میں اتر جائے گا تو روزہ فاسد ہو جائے گا۔ (۳)

= بصفة الملائكة. (حاشية الطحطاوى على مراقى الفلاح. ج: ۲ ص: ۲۹۴، مكتبة غوثية)

(۱) منها السفر الذي يبيح الفطر وهو ليس بعذر في اليوم الذي انشا السفر فيه كذا في الغائية، فلو سافر نهارا لا يباح له الفطر في ذلك اليوم وان افطر لا كفارة عليه. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۶)

(۲) وماليس بمقصود بالاكل ولا يمكن الاحتراز عنه كالذباب اذا وصل الى جوف الصائم لم يفطره كذا في ايضاح الكرماني، ولو اخذ الذباب واكله يجب عليه القضاء دون الكفارة. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۳ ط: رشیدیہ کویتہ)

(۳) وكره ذوق شيء ومضغه بالعذر. (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۶، عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۹)

## مؤذن پہلے افطار کرے یا اذان دے؟

رمضان المبارک میں مؤذن سورج غروب ہونے کے بعد پہلے ہلکا افطار کرے پھر اس کے بعد اذان دے، افطار کی وجہ سے مغرب کی جماعت میں پانچ سات منٹ تاخیر کی گنجائش ہے۔ (۱)

### مونچھ تراشنا

- (۱) روزے کے دوران مونچھ تراشنا جائز ہے۔ (۲)
- (۲) مونچھوں کو کتر وانا سنت ہے، منڈ وانا سنت نہیں لیکن بدعت بھی نہیں۔ (۳)
- (۳) احناف کے نزدیک کتر وانا کی تین صورتیں ہیں: (۴)
- (الف) مونچھیں اتنی کاٹ لی جائیں کہ اوپر کے ہونٹ کا کنارہ ظاہر ہو جائے۔
- (ب) بھنووؤں کے مانند بنالے۔
- (ج) پوری مونچھ کتر کر بالکل پست کر دی جائے۔ یعنی کترنے میں ایسا مبالغہ کیا جائے کہ مونڈنے کے قریب ہو جائے، یہ صورت سب سے بہتر ہے۔

- (۱) فکان تاخیرہامکروہا لافی یوم غیم والامن عذرسفراومرض وحضورماندة والتاخير قليلا لا يكره (مراقی الفلاح ص: ۷۳، قدیمی کتب خانہ، کتاب الصلوة ایضا فتاویٰ رحیمیہ ج: ۷ ص: ۲۴۱ مکتبہ دارالاشاعت کراچی)
- (۲) کیونکہ یہ روزے کے کسی رکن کے منافی نہیں ہے الصوم فی الشرع الامساك عن المفطرات الثلاث حقيقة أوحكما فی وقت مخصوص من شخص مخصوص مع النية (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۵۹)
- (۳) والقص منه حتى یوازی الحرف الاعلی من الشفة العلیا سنة بالاجماع. (شامی ج: ۶ ص: ۴۰۷، کتاب الحظروالاباحة فصل فی البیع ط: سعید)
- (۴) ویاخذ من شاربه حتى یصیر مثل الحاجب کذا فی الغیائیة. (عالمگیری ج: ۵ ص: ۳۵۸، کتاب الحظروالاباحة الباب التاسع عشر) ”وفی الدر“ وفیه حلق الشارب بدعة وقیل سنة (قوله وقیل سنة) مشی علیہ فی الملتقی وعبارة المجتبی بعد رمز للطحای حلقه سنة ونسبه الی ابی حنیفة وصاحبه، والقص منه حتى یوازی الحرف الاعلی من الشفة العلیا سنة بالاجماع، شامی ج: ۶ ص: ۴۰۷ ایچ ایم سعید کمپنی)

(۴) مونچھ خود بھی کتر سکتا ہے اور دوسرے سے بھی کتر واسکتا ہے۔ (۱)

(ن)

ناپا لُغ

”بچہ“ کے لفظ کو دیکھیں۔

## ناپا کی کی حالت میں روزہ رکھنا

(۱) اگر کسی آدمی پر ہمبستری یا احتلام وغیرہ کی وجہ سے غسل واجب ہوا اور صبح صادق سے پہلے غسل نہ کر سکا اور سحری کر کے روزہ رکھ لیا تو روزہ درست ہے، ناپاک ہونے کی وجہ سے روزہ فاسد نہیں ہوگا، البتہ جلد از جلد غسل کر لینا چاہیے اور طلوع آفتاب سے پہلے غسل کر کے فجر کی نماز ادا کر لینی چاہیے ورنہ طلوع آفتاب تک تاخیر کرنے کی صورت میں فجر کی نماز قضا ہو جائے گی اور روزہ مکروہ ہوگا اگرچہ فاسد نہ ہوگا۔ (۲)

(۲) غسل جنابت میں اتنی دیر کرنا کہ سورج نکل آئے یا پورے دن ناپا کی کی حالت میں رہنے سے روزہ فاسد نہیں ہوگا، البتہ اتنی تاخیر کی وجہ سے روزہ مکروہ ہوگا، قضا اور کفارہ لازم نہیں ہوں گے۔ (۳)

(۴) وفي جامع الجوامع حلق عانته بیده وحلق الحجام جائز ان غرض بصره كذا في التارخانية. (عالمگیری ج: ۵ ص: ۳۵۸ ط: رشیدیہ)

(۲) عنها قالت كان رسول الله ﷺ يدرکه الفجر فی رمضان وهو جنب من غیر حلم فیغتسل ویصوم متفق علیه. تحته فی مرقاة ظاهر الحديث قول عامة العلماء من أصبح جنباً اغتسل وأتم صومه. (مرقاة المفاتیح ج: ۴ ص: ۲۶۱ ط: امدادیہ ملتان)

(۳) او أصبح جنباً وان بقى كل اليوم ..... لم يفطر. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۰) (الجنب اذا اخر الاغتسال الى وقت الصلوة لا يائثم. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۶ ط: رشیدیہ)

## ناخن

- (۱) روزے کے دوران ناخن کاٹنا جائز ہے، اس سے روزے پر کوئی اثر نہیں پڑتا۔ (۱)
- (۲) ناخن تراشنے کے لئے کوئی خاص طریقہ مروی نہیں ہے۔ جس طرح چاہے جس انگلی سے چاہے شروع کر سکتا ہے اور جس پر چاہے ختم کر سکتا ہے۔ البتہ دائیں ہاتھ سے شروع کرنا مستحب ہے۔ (۲)
- (۳) تراشیدہ ناخن دفن کرنا بہتر ہے، اگر دفن نہیں کر سکتا تو کسی علیحدہ جگہ میں ڈال دے، استعمال کی جگہ پر ڈالنا صحت کے لئے نقصان دہ ہے۔ (۳)
- (۴) کٹے ہوئے ناخن کو پھینکنا بھی جائز ہے۔ (۴)
- (۵) مستحب یہ ہے کہ ہفتہ میں ایک بار کاٹے، افضل جمعہ کا دن ہے، اگر ہفتہ وار نہیں کاٹ سکتا تو پندرہ بیس دن میں کاٹے، چالیس دن تک نہ کاٹنا مکروہ تحریمی ہے، وہ آدمی گنہگار ہوگا اور نماز بھی مکروہ ہوگی۔ (۵)

(۱) کیونکہ یہ منافی صوم نہیں۔ الصوم فی الشرع الامساك عن المفطرات الثلاث حقيقة او حکما فی وقت مخصوص من شخص مخصوص مع النية. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۵۹ ط: سعید)

(۲) قلت وفي المواهب اللدنية قال الحافظ ابن حجر: انه يستحب كيفما احتاج اليه ولم يثبت في كفيته شيء ولا في تعيين يوم له عن النبي ﷺ وما يعزمن النظم في ذلك للامام على ثم لابن حجر قال شيخنا انه باطل. (شامی ج: ۶ ص: ۴۰۶، کتاب الحظر والاباحہ فصل فی البیع)

(۳) فاذا قلم اظفاره اوجز شعره ينبغي ان يدفنه فان رمى به فلا بأس وان القاه في الكيف او في المغتسل كره لانه يوث داء خائيه. (شامی ج: ۶ ص: ۴۰۵، کتاب الحظر والاباحہ فصل فی البیع)

(۵) ويستحب حلق عاتنه وتنظيف بدنه بالاغتسال في كل اسبوع مرة والافضل يوم الجمعة وجاز في كل خمسة عشر وكره تركه وراء الاربعين - قوله وكره تركه اى تحريرا لقول المجتبی ولا عذر فيما وراء الاربعين ويستحق الوعيد - وفي ابی السعود عن شرح المشارق لابن ملك روى مسلم عن انس بن مالك وقت لنا في تقليم الاظفار وقص الشارب وتنف الابط ان لا نترك اكثر من اربعين ليلة وهومن المقدرات التي ليس للرأى فيها مدخل فيكون كالمرفوع. (شامی ج: ۶ ص: ۴۰۷، کتاب الحظر والاباحہ فصل فی البیع ط: سعید)

## ناک

(۱) ناک کی راہ سے پانی پہنچانے سے روزہ فاسد نہیں ہوتا، ہاں اگر ناک سے پانی پہنچانے کی صورت میں پانی حلق میں چلا گیا اور روزہ یاد بھی ہے تو روزہ فاسد ہو جائے گا۔ قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں اور اگر روزہ یاد نہیں تھا تو روزہ فاسد نہیں ہوگا اور اگر پانی ناک کی راہ سے دماغ تک پہنچ گیا ہے تو اس صورت میں ایک روزہ قضا کر لینا چاہیے۔ (۱)

(۲) روزے کی حالت میں ناک کو اتنی زور سے سنک لیا کہ حلق میں چلی گئی تو اس سے روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۲)

(۳) ناک میں تر دو اڈا لے کر روزہ فاسد ہو جاتا ہے، اگر خشک چیز ڈالی گئی اور یقینی طور پر اندر تک پہنچ گئی تو روزہ فاسد ہو جائے گا ورنہ نہیں۔ (۳)

## ناک کی رطوبت حلق کی جانب چڑھانا

ناک کی رطوبت روزے کی حالت میں اتنی زور سے کھینچ لی کہ حلق میں چلی گئی تو اس سے روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۴)

- 
- (۱) وفي عمدة الفتاوى للصدر الشهيد فلودخل الماء في الغسل انفه وواذنه ووصل الى الدماغ لاشئ عليه. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۷۹ ط: ايچ ايم سعيد)
- أيضا: واذا تمضمض او استنشق فدخل الماء جوفه ان كان ذاakra للصومه فسد صومه وعليه القضاء وان لم يكن ذاakra لا يفسد. (خلاصة الفتاوى ج: ۱ ص: ۲۵۳)، مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ
- (۲) او دخل انفه مخاط فاستشمه فدخل حلقه ولو عمدا..... لم يفطر. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۰)
- (۳) واحقن او استعط في انفه شينا..... قضی فقط تحته في "رد" قلت ولم يقيدوا الاحتقان والاستعاط والاقطار بالوصول الى الجوف لظهوره فيها والا فلا بد منه حتى لو بقي السعوط في الانف ولم يصل الى الرأس لا يفطر. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۲ ط: ايچ ايم سعيد)
- (۴) او دخل حلقه مخاط فاستشمه فدخل حلقه..... لم يفطر. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۰)
-

## نابالغ کو فطرہ دینا

- (۱) اگر نابالغ بچے غریب اور سمجھدار ہوں تو ان کو صدقہ فطر دینا جائز ہے۔ (۱)
- (۲) اگر بچے مالدار ہیں تو ان کو صدقہ فطر دینا جائز نہیں ہے۔ (۲)
- (۳) اگر غریب نابالغ بچے سمجھدار نہیں تو ان کو فطرہ دینا جائز نہیں، البتہ ان کے سرپرستوں کو دینا جائز ہے۔ (۳)

## نذر

نذر کی دو قسمیں ہیں۔ نذر معلق اور نذر غیر معلق۔

(۱) نذر معلق :- وہ نذر ہے جس میں شرط کا اعتبار کیا گیا ہے، خواہ وہ شرط مقصود ہو جیسے کوئی مریض یہ کہے کہ اگر مجھ کو اس بیماری سے شفا ہو جائے تو اتنے روزے رکھوں گا، یا وہ شرط مقصود نہ ہو جیسے کوئی شخص یہ کہے کہ اگر میں نماز نہ پڑھوں تو اتنے روزے رکھوں گا۔

(۲) نذر غیر معلق :- وہ نذر ہے جس میں کسی شرط کا اعتبار نہ کیا گیا ہو۔ نذر غیر معلق کسی زمانے یا کسی جگہ کے ساتھ خاص نہیں ہوتی، اگرچہ نذر کرنے والا کسی زمانے یا کسی جگہ کے ساتھ خاص کرے، شریعت میں اس کا اعتبار نہیں ہے، مثلاً کوئی شخص یہ نذر کرے کہ میں جمعہ کے دن روزہ رکھوں گا تو جمعہ کے دن روزہ رکھنا

(۱، ۳) ولودفع الى مجنون او صغير لا يعقل فدفعت الصغير الى ابويه او وصيه لايحوز۔ ولوقبض الصبي وهو مراهق جاز: وكذا لو كان يعقل القبض بان كان لايرمى بها ولا يخذع عنه. (خلاصة الفتاوى ج: ۱ ص: ۲۴۲، كتاب الزكاة ط: رشيدية كوئٹہ)

أيضا: دفع الزكاة الى صبيان اقاربه..... جاز تحته في "رد" اى العقلاء والا فلا يصح. (شامی ج: ۲ ص: ۳۵۶)

(۲) ولا يحوز الدفع الى الغنى. (خلاصة الفتاوى ج: ۱ ص: ۲۴۲، كتاب الزكاة ط: رشيدية)

ضروری نہیں ہوگا اگر اتوار کو بھی رکھ لے گا تو نذر پوری ہو جائے گی۔

اسی طرح اگر کوئی شخص نذر کرے کہ وہ مکہ معظمہ میں روزہ رکھے گا، تو مکہ معظمہ میں جا کر روزہ رکھنا لازم نہیں ہوگا، بلکہ گھر میں رہ کر روزہ رکھنے سے نذر پوری ہو جائے گی۔ (۱)

## نذر پوری کرنا لازم ہے

اگر کسی نے جائز کام کی نذر کی تو اس کو پورا کرنا لازم ہے، اگر پورا نہیں کرے گا تو گناہگار ہوگا۔ (۲)

## نذر کا روزہ فاسد ہو جائے

اگر کسی نے نذر کا روزہ رکھ کر فاسد کر دیا تو اس کی قضا لازم ہے، کفارہ نہیں۔ (۳)

## نذر کی شرطیں

(۱) نذر صحیح ہونے کے لئے پہلی شرط یہ ہے کہ جس چیز کی نذر کرے اس کی جنس سے کوئی واجب ہو، مثلاً نماز، روزہ، حج اور غریب کو کھانا کھلانے کی نذر کی تو نذر صحیح

(۱) والنذر..... غیر المعلق ولو معينا لا يختص بزمان ومكان ودرهم وفقير فلو نذر التصديق يوم الجمعة بمكة بهذا الدرهم على فلان فخالف جازو كذا لوعجل قبله فلو عين شهرا للاعتكاف اوللصوم فمعجل قبله عنه صح وكذا لو نذر ان يحج سنة كذا فحج سنة قبلها صح او صلاة يوم كذا فصلاها قبله لانه تعجيل بعد وجوب السبب وهو النذر فيلغو التعيين شرنا لاية فليحفظ بخلاف النذر المعلق فانه لا يجوز تعجيله قبل وجود الشرط (تحتہ فی رد) قوله بخلاف النذر المعلق اى سواء علقه على شرط يريده مثل ان قدم غائبى اوشفى مريضى - ولا يريده مثل ان زينت فلله على كذا . (شامى ج: ۲ ص: ۴۳۶ - ۴۳۷ . ط: ايچ ايم سعيد)

(۲) وليوفوا نذورهم . (سورة الحج آيت: ۲۹)

وحاصله انما ذكر صريح فى ان المنذور واجب لا فرض . (شامى ج: ۲ ص: ۳۷۴ . ط: سعيد)

(۳) ولا كفارة بافساد صوم غير رمضان . (هندية ج: ۱ ص: ۲۱۵ . ط: رشيدية)

ہوگی، اور اگر مریض کی عیادت کی نذر کی تو نذر صحیح نہیں ہوگی، کیونکہ مریض کی عیادت کرنا کسی صورت میں بھی واجب نہیں ہے۔ (۱)

(۲) جس چیز کی نذر کرے وہ مقصود بالذات ہو کسی اور عبادت کا وسیلہ یا شرط نہ ہو۔ مثلاً کسی نے وضو کرنے کی نذر کی تو وہ صحیح نہیں ہوگی، کیونکہ وضو عبادت میں اصل مقصود نہیں بلکہ اصل مقصود نماز ہے اور وضو نماز کے لئے وسیلہ اور شرط ہے۔ لہذا وضو کی نذر درست نہیں البتہ نماز کی نذر درست ہے۔ (۲)

(۳) جس چیز کی نذر کرے وہ فی الحال یا کسی اور وقت میں واجب نہ ہو۔ مثلاً کسی نے ظہر کی فرض نماز یا کسی وقت کی فرض نماز کی نذر کی تو نذر صحیح نہیں ہوگی۔ (۳)

(۴) جس چیز کی نذر کی جائے وہ اپنی ذات میں گناہ کا کام نہ ہو۔

اگر کوئی کام ایسا ہے کہ اصل ذات کے اعتبار سے جائز ہے، لیکن کسی اور وجہ سے منع کیا گیا ہے تو اس کی نذر صحیح ہوگی۔

مثلاً کسی نے عید کے دن روزہ رکھنے کی نذر کی تو نذر صحیح ہو جائے گی، لیکن عید کے دن روزہ رکھنا جائز نہیں ہوگا، بلکہ بعد میں روزہ رکھنا لازم ہوگا۔ کیونکہ روزہ رکھنا ذات کے اعتبار سے جائز ہے البتہ خرابی اور ممانعت عید کی وجہ سے آئی، جس کا تعلق باہر سے ہے۔ (۴)

(۵) جس کام کے لئے نذر کی جائے وہ کام ناممکن اور محال نہ ہو۔

مثلاً گزشتہ روز روزہ رکھنے کی نذر کی تو نذر صحیح نہیں ہوگی۔ (۵)

(۱) الاصل ان النذر لا يصح الا بشروط احدها: ان يكون الواجب من جنسه شرعا فلذلك لم يصح النذر بعبادة المريض. والثاني ان يكون مقصودا لا وسيلة فلم يصح النذر بالوضوء وسجدة التلاوة. والثالث: ان لا يكون واجبا في الحال وفي ثانی الحال فلم يصح بصلاة الظهر وغيرها من المفروضات هكذا في النهاية. والرابع: ان لا يكون المنذور معصية باعتبار نفسه هكذا في البحر الرائق فاذا قال لله على صوم يوم النحر افطر وقضى وهذا النذر صحيح؛ لانه مشروع بنفسه =

## نذر کے روزے رکھنے کا طریقہ

(۱) اگر کسی نے متعدد روزوں کی منت مانی، لیکن نذر کرتے وقت یہ نہیں کہا کہ لگاتار مسلسل روزے رکھے گا یا دل میں مسلسل روزے رکھنے کی نیت نہیں تھی، تو اس میں اختیار ہوگا کہ متعدد روزوں کو ایک ساتھ لگاتار رکھے، یا ایک ایک دو دو کر کے تمام روزے رکھ لے، دونوں صورتیں درست ہیں۔ (۱)

(۲) اور اگر نذر کرتے وقت یہ کہہ دیا کہ متعدد روزے لگاتار رکھے گا، یا دل میں نیت تھی تو اس صورت میں تمام روزوں کو ایک ساتھ رکھنا لازم ہوگا، وقفہ وقفہ سے رکھنا درست نہیں ہوگا۔

ایک روزہ رکھ کر درمیان میں وقفہ دے دیا تو دوبارہ شروع سے مسلسل روزے رکھنا لازم ہوگا۔ (۲)

## نذر کے روزے کی نیت

(۱) دن اور تاریخ مقرر کر کے روزے کی نذر ماننا مثلاً یہ نذر مانی کہ ”یا اللہ آج اگر فلاں کام ہو جائے تو کل ہی روزہ رکھوں گا۔“ یا اس طرح کہ ”یا اللہ میری فلاں مراد پوری ہو جائے تو پرسوں جمعہ کے دن روزہ رکھوں گا۔“

ایسی نذر کے روزے میں اگر رات سے روزے کی نیت نہیں کی تو زوال سے

= منہی لغیرہ وهو ترك اجابة دعوة الله تعالى وان صام فيه يخرج عن العهدة هكذا في الهداية. و الخامس: ولا بد من شرط آخر وهو ان لا يكون مستحيل الكون فلو نذر صوم امس لم يصح نذره كذا في البحار الرائق. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۸، کتاب الصوم. الباب السادس فی النذر. ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۲، ۱) ولوقال لله على ان اصوم يومين او ثلاثة او عشرة لزمه ذلك ويعين وقتا يؤدي فيه فان شاء فرق وان شاء تابع الان بنوى التابع عند النذر فحينئذ يلزمه متابعا فان نوى فيه التابع و افطروما فيه او حاضت المرأة في مدة الصوم استأنف واستأنفت. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۹)

ایک گھنٹہ پہلے بھی نیت کر لے، درست ہو جائے گا اور نذر پوری ہو جائے گی۔ (۱)

(۲) دن تاریخ مقرر کر کے نذر نہیں مانی، بس اتنا ہی کہا ”یا اللہ اگر میرا فلاں کام

ہو جائے تو ایک روزہ رکھوں گا۔“ یا کسی کام کا نام نہیں لیا ویسے ہی کہہ دیا کہ دس روزے رکھوں گا۔“

ایسی نذر کے روزے میں رات سے نیت کرنا شرط ہے۔ اگر صبح صادق ہو جانے کے بعد روزے کی نیت کی تو نذر کا روزہ نہیں ہوگا، بلکہ نفل روزہ ہو جائے گا اور بعد میں رکھنا لازم ہوگا۔ (۲)

(۳) مثلاً کسی نے جمعہ کے دن روزہ رکھنے کی نذر کی، جب جمعہ آیا تو صرف اتنی نیت کی کہ آج میرا روزہ ہے، یہ نہیں کہا کہ نذر کا روزہ ہے یا نفل روزہ کی نیت کر لی تب بھی نذر کا روزہ ادا ہو جائے گا۔

اور اگر اسی جمعہ کے دن قضا روزہ رکھنے کی نیت کی، نذر کا روزہ رکھنا یا نہیں رہا، یا یاد تھا مگر قصد قضا کا روزہ رکھا تو نذر کا روزہ ادا نہیں ہوگا بلکہ قضا کا روزہ ہو جائے گا، نذر کا روزہ بعد میں رکھنا لازم ہوگا۔ (۳)

(۱) أما القسم الذي لا يشترط فيه تعيين النية ولا تبينها فهو أداء رمضان والنذر المعين زمانه و النفل فيصح بنية من الليل الى ما قبل نصف النهار على الاصح ونصف النهار من طلوع الفجر الى وقت الضحوة الكبرى. (النذر المعين زمانه) كقوله لله على صوم يوم الخميس من هذه الجمعة (مراقى الفلاح ص: ۲۳۲، كتاب الصوم فصل فيما لا يشترط تبين النية الخ قديمي كتب خانہ و كذا في الدر المختار ج: ۲ ص: ۳۷۷ ط: ايچ ايم سعيد)

(۲) و شرط القضاء والكفارات ان يبت ويعلن كذا في النقاية وكذا النذر المطلق. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۶ ط: رشیدیہ) أيضا وغير المعين كنذر صوم يوم مثلا. (شامی ج: ۲ ص: ۳۷۳ سعيد)

(۳) جاز صوم رمضان والنذر المعين والنفل بنية ذلك اليوم او بنية مطلق الصوم او بنية النفل من الليل الى ما قبل نصف النهار..... والنذر المعين اذا صامه بنية واجب آخر كقضاء رمضان والكفارة كان عن الواجب وعليه قضاء مانذر كذا في السراج الوهاج وهو الاصح: (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۵ ط: رشیدیہ)

## نذر مان کر بیمار ہو گیا

جو شخص روزے کی نذر کرنے کے بعد بیمار ہو گیا اور روزے رکھنے کے قابل نہیں رہا تو صحت کا انتظار کرے، اگر شفایاب ہو کر تندرست ہو جاتا ہے اور روزہ رکھنے کے قابل ہو جاتا ہے تو نذر کا روزہ رکھے اور اگر تندرست نہیں ہوتا تو فدیہ دینے کی وصیت کرے۔ اور ایک روزے کا فدیہ ایک صدقہ فطر کے برابر ہے۔

زندگی میں صحت کی حالت میں فدیہ دینا جائز نہیں ہوگا بلکہ حسب نذر روزہ ہی رکھنا پڑے گا۔ (۱)

## نذر میں خاص دن کی قید لگانا

(۱) نذر میں کسی خاص دن یا خاص مہینے کی تخصیص کرنے سے نذر تو لازم ہو جاتی ہے البتہ اس خاص دن اور خاص مہینے میں روزہ رکھنا لازم نہیں ہوتا، بلکہ جب بھی چاہے، جس دن بھی چاہے روزہ رکھ لے، نذر پوری ہو جائے گی۔ (۲)

(۲) اور اگر ایک سے زائد ایام کے روزے کی نذر کی ہے، مثلاً یہ کہا کہ محرم کی پہلی تاریخ سے دسویں تاریخ تک روزے رکھے گا، تو محرم کی خاص انہی تاریخوں میں روزہ رکھنا لازم نہیں ہوگا بلکہ کسی اور مہینے میں یا کسی اور تاریخ میں بھی روزہ رکھے گا تو

(۱) ولوقال مريض: لله على أن أصوم شهراً، فمات قبل أن يصح لاشئ عليه، وإن صح ولو يوماً ولم يصمه لزمه الوصية بجميعه على الصحيح كالصحيح إذا نذر ذلك ومات قبل تمام الشهر لزمه الوصية بالجميع بالاجماع درمختار. (شامی ج: ۲ ص: ۴۳۷، ۴۳۸ ط: ایچ ایم سعید)

(۲) (والنذر) من اعتكاف أو حج أو صلاة أو صيام أو غيرها (غير المعلق) ولو معيناً (لا يختص بزمان ومكان ودرهم وفقير) فلو نذر التصديق يوم الجمعة بمكة بهذا الدرهم على فلان فخالف جاز، وكذا لو عجل قبله، فلو عين شهر للاعتكاف أو صوم ففعل قبله عنه صح درمختار. (شامی ج: ۲ ص: ۴۳۶ ط: ایچ ایم سعید)

نذر پوری ہو جائے گی، البتہ ان دس روزوں کو مسلسل رکھنا لازم ہوگا۔ (۱)  
 (۳) اگر کسی نے یہ کہا کہ اگر آج میرا یہ کام ہو جائے تو کل ہی روزہ رکھوں گا اور وہ کام ہو گیا تو کل ہی روزہ رکھنا لازم نہیں ہوگا بلکہ کسی بھی دن روزہ رکھ لے، نذر پوری ہو جائے گی۔ (۲)

(۴) اگر کسی نے یہ نذر کی کہ محرم کے مہینے کے روزے رکھے گا تو پورے ایک مہینے کے لگا تار روزے رکھنا لازم ہوگا۔ چاہے محرم میں رکھے یا کسی اور مہینے میں، دونوں کا حکم ایک ہے۔ اگر محرم میں روزے رکھنا شروع کئے، درمیان میں کچھ دن کے روزے رہ گئے تو شروع سے دوبارہ رکھنے کی ضرورت نہیں ہوگی بلکہ جتنے دن کے روزے رہ گئے وہ رکھ لے، کافی ہے، باقی محرم کے علاوہ کسی اور مہینے میں رکھے تو لگا تار رکھے۔ (۳)

## نزلے میں دوا سونگھنا

اگر نزلے کی دوا میں سفوف پاؤڈر یا لیکویڈ دوائی ہے تو اس کے استعمال سے روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی۔

اور اگر دوا میں سفوف اور لیکویڈ دوائی نہیں ہے تو اس صورت میں روزہ فاسد نہیں ہوگا، جیسے خوشبو، عطر وغیرہ سے روزہ فاسد نہیں ہوتا، البتہ روزے کے دوران اس قسم کی

(۲، ۱) والنذر الغیر المعلق ولومعینا لایختص بزمان ومکان ودرہم وفقیر۔ (درمختار، شامی ج: ۲ ص: ۴۳۶ ط: ایچ ایم سعید)

(۳) بہشتی زیور ج: ۳ ص: ۲۶۳، دارالاشاعت، والنذر..... غیر المعلق ولومعینا لایختص بزمان ومکان ودرہم وفقیر، فلونذر التصدق یوم الجمعة، بمکة بهذا الدرہم علی فلان ومخالف جاز شامی ج: ۲ ص: ۴۳۶ ط: ایچ ایم سعید)

دوائی استعمال کرنا احتیاط کے خلاف ہے۔ (۱)

## نسوار

روزے کے دوران نسوار کے استعمال سے روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۲)

## نشے میں ڈوبا ہوا آدمی

نشے میں ڈوبے ہوئے آدمی پر بھی روزوں کی قضا واجب ہے۔ (۳)

## نصف النہار

صبح صادق سے غروب آفتاب تک کل وقت کے نصف کو نصف النہار شرعی کہا جاتا ہے، صبح صادق اور طلوع آفتاب کے درمیان جتنا وقت ہوتا ہے، نصف النہار شرعی اور نصف النہار عرفی کے درمیان فرق اس کا نصف ہوتا ہے۔

- (۱) ومفاده انه لو ادخل حلقه الدخان اى دخان كان ولو عودا او عنبرا لو ذاکر الامکان التحرز عنه (تحته فى رد) ولا يتوهم انه كشم الورد ومائه والمسك لوضوح الفرق بين هواء تطيب بريح المسك وشبهه وبين جوهر دخان وصل الى جوفه بفعله (شامى ج: ۲ ص: ۳۹۵ سعيد)
- (۲) ولومص الهليلج فدخل البزاق حلقه لم يفسد مالم يدخل عينه. (عالمگري ج: ۱ ص: ۲۰۳).
- الجواب: امسك النتن فى الفم لايجوز فى الصوم لانه لا يخلو عن وصوله الى الحلق و الجوف عادة والعادة محكمة فالحد من ان يأكل التباك بهذه الوسوسة فى نهار رمضان كيف وقد قالوا فى مضغ العلك كما فى الشامى وانما قيده بذلك اى بابيض لان الاسود وغير الممضوع وغير الملتئم يصل منه شئ الى الجوف ولهذا يمنع عن شرب دخان و يحكم انه مفطور فى التباك خاصية فى الانجذاب الى الجوف الا ترى ان امساكه فى الفم لغير المعتادين يؤثر تأثيرا عظيما من دوران الرأس وانكسار الاعضاء فما هو الا وصول اثره الى الدماغ والجوف. (فتاوى دارالعلوم ديوبند ج: ۲ ص: ۴۲۸، مكتبه دارالاشاعت)
- (۳) وان اغمى اياما قضاها لان الاغماء مرض فيكون عذرا فى التأخير لافى الاسقاط. (شرح النقايه ج: ۱ ص: ۴۳۰ ط: ايچ ايم سعيد)

مثلاً صبح صادق سے طلوع آفتاب تک ایک گھنٹہ کا وقت ہے تو نصف النہار شرعی نصف النہار عرفی سے آدھا گھنٹہ پہلے شروع ہوگا۔ (۱)

## نصف النہار کی تعیین کا طریقہ

نصف النہار کی تعیین کا طریقہ یہ ہے کہ پہلے یہ دیکھ لیا جائے کہ صبح صادق کتنے بجے ہوتی ہے اور سورج کتنے بجے غروب ہوتا ہے۔ اس کے درمیان کے گھنٹوں کا حساب کر کے ان کا آدھا لیا جائے، اس آدھے حصے کے اندر اندر نیت کر لی جائے تو نیت صحیح ہو جائے گی اور روزہ ہو جائے گا اور اگر شروع کا نصف حصہ گزر گیا، اس کے بعد نیت کی گئی تو نیت معتبر نہیں ہوگی اور روزہ صحیح نہیں ہوگا۔ (۲)

## نفاس

(۱) بچے کی ولادت کے بعد عورت کے رحم سے جو خون نکلتا ہے اس کو نفاس کہا جاتا ہے اور اس کی مدت زیادہ سے زیادہ چالیس دن ہے اور کم سے کم مدت کی کوئی حد نہیں۔ (۳)

(۲) نفاس کے دوران نماز پڑھنا، روزہ رکھنا، قرآن مجید کی تلاوت کرنا، قرآن مجید کو ہاتھ لگانا، بیت اللہ کا طواف کرنا، ہمبستری کرنا ناجائز اور حرام ہے۔ (۴)

(۱) النہار الشرعی: وهو من اول طلوع الصبح الى غروب الشمس، وعلى هذا يكون نصف النہار قبل الزوال بزمان يعتد به. (شامی ج: ۱ ص: ۳۷۱، ونصفه من وقت طلوع الفجر الى وقت الضحوة الكبرى ج: ۲ ص: ۳۷۷. ط: ایچ ایم سعید)

واعلم ان كل قطر نصف نهاره قبل زواله بنصف حصه فجره، فمتى كان الباقي للزوال اكثر من هذا النصف صح. (شامی ج: ۲ ص: ۳۷۷، احسن الفتاوی ج: ۴ ص: ۴۳۷، ایچ ایم سعید)

(۲) حاشیہ بہشتی زیورج: ۳ ص: ۳ حاشیہ نمبر: ۷ مطبوعہ دارالاشاعت، کراچی

(۳) وهو دم يعقب الولادة كذا في المتن..... اقل النفاس ما يوجد ولو ساعة وعليه الفتوى واكثره اربعون كذا في السراجیه. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۳۷، كتاب الطهارة الفصل الثاني في النفاس)

(۴) الاحكام التي يشترك فيها الحيض والنفاس ثمانية ومنها ان يسقط عن الحائض و النفساء الصلوة فلا تقضى..... ومنها ان يحرم عليهما الصوم فتقضيانه..... ومنها حرمة الطواف لهما بالبيت وان طافتا خارج المسجد..... ومنها حرمة قراءة القرآن ومنها حرمة =

- (۳) نفاس کے ایام کی نماز کی قضا نہیں، البتہ روزے کی قضا ہے۔ لہذا اس حالت میں جتنے روزے نہ رکھ سکی پاک ہونے کے بعد ان تمام روزوں کو رکھنا فرض ہے۔ (۱)
- (۴) اگر بچے کی ولادت کے بعد چالیس دن سے پہلے خون بند ہو جائے تو غسل کر کے نماز پڑھنا فرض ہوگا اور اگر رمضان ہے تو روزہ رکھنا لازم ہوگا۔ (۲)
- (۵) اگر بچے کی ولادت کے بعد چالیس دن سے پہلے خون بند ہو گیا تھا اور اس نے چالیس دن تک نماز ادا نہیں کی تو ان دنوں کا حساب کر کے فوت شدہ نمازوں کو ادا کرنا لازم ہوگا۔ (۳)

## نفل روزہ

نفل روزہ قصد شروع کرنے کے بعد اس کو پورا کرنا ضروری ہے، فاسد ہونے کی صورت میں اس کی قضا ضروری ہے، قصداً فاسد کرے یا بلا قصد دونوں کا حکم ایک ہے۔ (۴)

## نفل روزہ توڑنا

(۱) نفل روزہ شروع کرنے کے بعد واجب ہو جاتا ہے، لہذا شدید عذر کے بغیر توڑنا صحیح نہیں۔ ہاں اگر کوئی شدید ضرورت پیش آجائے تو اس وقت توڑنے کی

= مس المصحف لایجوز لهما..... ومنہا حرمة الجماع. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۳۸، ۳۹ کتاب الطہارۃ الفصل الرابع فی احکام الحيض والنفاس والاستحاضۃ، رشیدیہ کوئٹہ)

(۱) ومنہا ان یحرم علیہما الصوم فتقضیانہ. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۳۸ ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۲، ۳) وذكر شیخ الاسلام فی مبسوطہ اتفاق اصحابنا علی ان اقل النفاس ما یوجد فانہا کما ولدت اذا رأت الدم ساعة ثم انقطع الدم عنها فانہا تصوم وتصلی. (البحر الرائق ج: ۱ ص: ۲۱۹، باب الحيض ط: ایچ ایم سعید)

(۴) من دخل فی صوم التطوع ثم افسده قضاءه کذا فی الہدایۃ سواء حصل الفساد بصنعه او بغیر صنعه. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۱۵) ویلزم النفل بالشروع، فیجب قضاءہ ان افسده. شرح النقایۃ ج: ۱ ص: ۴۲۷. ط: ایچ ایم سعید

اجازت ہوگی، لیکن توڑنے کے بعد اس کی قضا رکھنا واجب ہوگا۔ (۱)

(۲) شدید عذر یہ ہے مثلاً ایسا مہمان آجائے کہ اگر اس کے ساتھ کھانا نہیں کھائے گا تو وہ افسوس کرے گا یا کسی نے دعوت دی، اگر اس میں شرکت نہ کی تو میزبان کی دل شکنی ہوگی تو نفل روزہ توڑ دینا جائز ہوگا، اور بعد میں قضا رکھنا واجب ہوگا۔ (۲)

## نفل روزے کی نیت

(۱) الف: میں نفل کا روزہ رکھتا ہوں۔ (ب) میں روزہ رکھتا ہوں۔

دونوں صورتوں میں نفل روزہ کی نیت درست ہے۔ (۳)

(۲) نفل روزے میں دوپہر سے ایک گھنٹہ قبل تک نفل کی نیت کرنا درست ہے۔ مثلاً کسی کا دن کے دس بجے تک روزہ رکھنے کا ارادہ نہیں تھا اور صبح صادق سے اب تک کچھ کھایا یا بھی نہیں، اب روزہ رکھنے کا ارادہ کیا تو نیت کرنے سے روزہ صحیح ہو جائے گا۔ (۴)

(۳) اگر کسی نے رات کو نفل روزہ رکھنے کا ارادہ کیا کہ میں کل روزہ رکھوں گا، لیکن صبح صادق ہونے سے پہلے ارادہ بدل گیا اور روزہ نہیں رکھا تو قضا واجب نہیں ہوگی۔ (۵)

(۱) ذکر الرازی عن اصحابنا ان الافطار بغير عذر في صوم التطوع لا يحل ..... والضیافہ ..... عذر۔ (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۸ ط: رشیدیہ)

(۲) قالوا والصحيح من المذهب انه ان كان صاحب الدعوة ممن يرضى بمجرد حضوره ولا يتأذى بترك الافطار لا يفطرون ان كان يعلم انه يتأذى بترك الافطار يفطر ويقضى ..... وتكون عذرا في حق المضيف والمضيف۔ (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۸ ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۳، ۴) جاز صوم رمضان اوبنية مطلق الصوم اوبنية النفل من الليل الى ما قبل نصف النهار ..... وانما تجوز النية قبل الزوال اذا لم يوجد قبل ذلك بعد طلوع الفجر ما ينافي الصوم۔ (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۶ ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۵) ولونوى من الليل ثم رجع عن نيته قبل طلوع الفجر صرح رجوعه في الصيامات كلها كذا في السراج الوهاج۔ (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۵ ط: رشیدیہ)

## نفل روزے کے معمول

(۱) مسلسل نفل روزہ نہ رکھے، جتنے روزے ہمیشہ ہمیشہ کے لئے رکھنا آسان ہو

اتنے ہی رکھے، اس سے زیادہ نہیں، اپنی جان پر حد سے زیادہ بوجھ نہ ڈالے۔ (۱)

(۲) زیادہ سے زیادہ روزہ رکھنے کا ارادہ ہو تو ایک دن رکھے، ایک دن نہ رکھے،

اس کو صوم داؤدی کہتے ہیں۔ اس طرح روزہ رکھنے سے روزانہ روزہ رکھنے کا ثواب ملتا

ہے۔ (۲)

= أيضا: حتى لونی لیلان یصوم غذا ثم عزم فی اللیل علی الفطر لم یصبح صائما

فلوافطر لاشی علیہ ان لم یکن رمضان. (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۶۲ ط: ایچ ایم سعید)

(۲۰۱) عن عبد الله بن عمرو بن العاص قال قال رسول الله ﷺ يا عبد الله الم اخبر انك

تصوم النهار وتقوم الليل فقلت بلى يا رسول الله قال فلا تفعل صم والفطر قم ونم فان لجسدك

عليك حقا وان لعينك عليك حقا وان لزوجتك عليك حقا وان لزورك عليك حقا

لاصام من صام الدهر - صوم ثلثة ايام من كل شهر - صوم الدهر كله - صم كل شهر ثلثة ايام

واقرا القرآن فی كل شهر - قلت : اطیق اکثر من ذلك قال : صم الفضل الصوم صوم داؤد

صیام یوم وافطار یوم واقرا فی کل سبع لیل مرة ولاتزد علی ذلك ، متفق علیہ . (مشکوۃ

شریف ج: ۱ ص: ۱۷۹ ، باب صیام التطوع ط: قدیمی کتب خانہ)

أيضا: ويكره صوم الصمت ..... وكذا يكره صوم الوصال ..... وصوم الدهر لانه

يضعفه او يصير طبعاً له ومبنى العبادة على خلاف العادة ..... والفضل الصيام صيام داؤد

عليه السلام لقوله ﷺ احب الصيام الى الله صيام داؤد واحب الصلوة الى الله صلوة داؤد

كان ينام نصفه ويقوم ثلثه وينام سدسه وكان يفطروما ويصوم يوما . رواه ابو داؤد وغيره .

(شره النقاہ ج: ۱ ص: ۴۲۳ ط: ایچ ایم سعید)

أيضا: عن عائشة قالت قال رسول الله ﷺ احب الاعمال الى الله ادومها وان قل متفق علیہ

. (مشکوۃ شریف ج: ۱ ص: ۱۱۰ باب القصد فی العمل)

أيضا: عن عائشة قالت لم یکن رسول الله ﷺ فی الشهر من السنة اکثر صیاماً منه فی شعبان

وكان یقول خذوا من الاعمال ما تطیقون فان الله لن یمل حتی تملوا وکان یقول احب الاعمال

الی الله ما داوم علیہ صاحبه وان قل . (الصحيح لمسلم ج: ۱ ص: ۳۶۵ ، کتاب الصوم باب

صیام النبی ﷺ ط: قدیمی کتب خانہ)

## نقصان

بلا عذر رمضان المبارک کا ایک روزہ نہ رکھنے کا اتنا بڑا نقصان ہے کہ اگر زندگی بھر بھی روزہ رکھے گا تو اس کی تلافی نہیں کر سکے گا۔ (الکبائر، صفحہ ۶۲ دار الخیر دمشق) (۱)

## نکسیر پھوٹ جانا

- (۱) روزے کی حالت میں نکسیر پھوٹ گئی، یہاں تک کہ اس کا اثر تھوک میں بھی ظاہر ہوا تو روزہ فاسد نہیں ہوگا، بشرطیکہ نکسیر کا خون پیٹ میں نہ گیا ہو، اگر خون پیٹ میں جائے گا تو روزہ فاسد ہو جائے گا، قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔ (۲)
- (۲) نکسیر کا خون حلق میں پہنچ کر پیٹ میں چلا گیا تو روزہ فاسد ہو گیا، قضا واجب ہے، کفارہ واجب نہیں۔ (۳)

## نمک

- (۱) خلاف عادت قصداً نمک کھا لیا تو قضا ضروری ہے، کفارہ نہیں۔ (۴)
- (۲) اگر عادت کی بناء پر نمک کھا لیا تو قضا اور کفارہ دونوں لازم ہیں۔ (۵)

(۱) عن ابی ہریرۃؓ قال قال رسول اللہ ﷺ من افطروا من رمضان من غیر رخصة ولا مرض لم یقض عنه صوم الدهر کلہ وان صام رواہ احمد۔ (مشکوۃ شریف ج: ۱ ص: ۱۷۷ باب تنزیہ الصوم ط: قدیمی کتب خانہ)

(۳، ۲) ولودخل دمعہ او عرق جہتہ اودم رعا فہ حلقہ فسد صومہ۔ خانیہ ج: ۱ ص: ۲۱۱  
ایضا: لانه لو وصل لحلقہ دموعہ او عرقہ اودم رعا فہ او مطر او تلج فسد صومہ۔ ..... واعتبار الوصول الی حلق فی الدمع ونحوہ مذکور فی فتاویٰ قاضیخان۔ (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۷۳)  
(۵، ۴) وفي الملح لانتجب الکفارة الا اذا اعتاد کلہ وحده کذا فی التبيين۔ (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۵ ط: رشیدیہ)

ایضا: ولواکل الملح تجب الکفارة هو المختار کذا فی الخلاصة قال الصدر الشہید وهو الصحيح کذا فی شرح النقایۃ للشیخ ابی المکارم۔ (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۶ ط: رشیدیہ)

## نیت

(۱) رمضان کا روزہ صحیح ہونے کے لئے نیت کرنا ضروری ہے اور نیت دل کے ارادے کا نام ہے اور اتنی نیت کر لینا کافی ہے کہ ”آج میرا روزہ ہے“ یا رات کو یہ ارادہ کر لے کہ کل میرا روزہ ہے۔ نیت کے الفاظ زبان سے ادا کرنا ضروری نہیں، البتہ زبان سے نیت کا اظہار کرنا بہتر ہے اور سحری کے لئے اٹھنا اور سحری کھانا نیت کے قائم مقام ہے۔ اگر چہ زبان سے کچھ نہ کہا ہو۔ (۱)

(۲) رمضان المبارک کے ہر روزے کی نیت الگ الگ کرنا ضروری ہے، پورے رمضان کے روزوں کے لئے صرف ایک دن نیت کر لینا کافی نہیں ہوگا۔ (۲)

(۳) نیت کرنے کا وقت غروب آفتاب کے بعد سے اگلے دن کی دوپہر سے ایک گھنٹہ پہلے تک ہے، لہذا دوپہر سے ایک گھنٹہ پہلے پہلے تک نیت کر لے، روزہ درست ہو جائے گا، البتہ رات میں روزے کی نیت کر لینا زیادہ بہتر ہے۔ (۳)

(۴) رات کو روزے کی نیت کرنے کے بعد صبح صادق ہونے سے پہلے پہلے کھانا پینا اور قربت کرنا جائز ہے۔ صبح صادق ہونے سے پہلے پہلے کھانے پینے اور صحبت کرنے سے روزے کی نیت میں کوئی فرق نہیں آئے گا اور ثواب میں بھی کمی نہیں

(۲۰۱) و شرط صحة الاداء النية ..... والنية معرفته بقلبه ان يصوم كذا في الخلاصة ومحيط السرخسي ..... والسنة ان يتلفظ بها كذا في النهار الفائق ..... ثم عندنا لا بد من النية لكل يوم في رمضان كذا في فتاوى قاضيان والتسحرفي رمضان نية (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۵، شامی ج: ۲ ص: ۳۸۰ ط: ایچ ایم سعید).

ایضا: والتسحرفي رمضان نية عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۵ ط: ایچ ایم سعید

(۳) ووقت النية كل يوم بعد غروب الشمس ولا يجوز قبله ..... جاز صوم رمضان ..... اوبنية النفل من الليل الى ما قبل نصف النهار (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۵) والافضل ان يبيت النية في موضع تجوز نية من النهار. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۶. رشیدیہ)

ہوگی۔ (۱)

(۵) رمضان کے مہینے میں چاہے نفل روزے کی نیت کرے یا قضا روزے کی بہر صورت رمضان کا روزہ ادا ہو جائے گا۔ نفل اور قضا کا روزہ نہیں ہوگا۔ (۲)

(۶) نفلی روزے، نذر معین اور رمضان شریف کے روزوں کی نیت رات سے کرے یا صبح کو نصف النہار شرعی تک کر لے، درست ہے، باقی روزوں کی نیت صبح صادق سے پہلے کرنا ضروری ہے۔ (۳)

(۷) نیت کے بغیر بھوکا رہنے سے روزہ صحیح نہیں ہوگا۔

اگر کسی نے پورے دن کھایا یا نہیں، بھوکا یا سارا ہا تو روزہ نہیں ہوگا، کیونکہ اس نے روزے کی نیت نہیں کی۔ (۴)

(۸) رمضان کے مہینے میں روزے کی نیت کرنے کے بعد اگر بلا عذر روزہ توڑ دیا تو قضا اور کفارہ دونوں لازم آئیں گے اور اگر نیت نہیں کی اور دن میں کھاپی لیا تو کفارہ لازم نہیں ہوگا، لیکن قضا لازم ہوگی۔ (۵)

(۱) احل لكم ليلة الصيام الرفث الى نسائكم ..... وكلوا واشربوا حتى يتبين لكم الخيط الابيض من الخيط الاسود من الفجر. (سورة البقرة آیت: ۱۸۷)

(۲) ويصح اداء رمضان بنية نفل وبنية مطلق ..... وبنية واجب آخر الا في سفر او مرض. (شرح النقاہ ج: ۱ ص: ۴۰۷، ط: ایچ ایم سعید)

(۳) فيصح اداء صوم رمضان والنذر المعين والنفل بنية من الليل فلا تصح قبل الغروب ولا عنده الى الضحوة الكبرى لابعدها ولا عندنا اعتبارا لاكثر اليوم ..... والشرط للباقي من الصيام قران النية للفجر ولو لحكما وهو تبييت النية وللضرورة وتعينها لعدم تعين الوقت. شامی ج: ۲ ص: ۳۷۷-۳۸۰ (۴) ثم عندنا لا بد من النية لكل يوم في رمضان. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۵، ط: رشیدیہ)

(۵) وان جامع ..... قضی فی الصور کلهما کفر ..... ککفارة المظاهر (تحتہ فی رد) شروع فی قسم الثالث وهو ما يوجب القضاء والكفارة وجوبها مقيد بما يأتي من كونه عمدا لا مكرها ولم يطرأ مبيح للفطر كحيض ومرض بغير صنعه وبما اذا نوى ليلا. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۹) ایضا: او اصبح غيرنا وللصوم فاكل عمدا ..... قضی فقط. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۳، ط: سعید)

- (۹) اگر رمضان کے مہینے میں روزہ رکھنے کی نیت نہیں کی تو روزہ نہیں ہوگا، لیکن ماہ رمضان کے احرام کی وجہ سے کھانے پینے کی اجازت نہیں ہوگی۔ (۱)
- (۱۰) نیت کرتے وقت برکت کے لئے ”انشاء اللہ“ کہنا جائز ہے۔ (۲)
- (۱۱) تندرست، مریض، مقیم اور مسافر کی نیت ایک جیسی ہے۔ (۳)
- (۱۲) سحری کھانا نیت کے قائم مقام ہے۔ (۴)
- (۱۳) اگر رمضان میں روزے کی نیت نہیں کی اور دن میں کھاتا پیتا رہا تو سخت گناہگار ہے۔ قضا لازم ہوگی، کفارہ نہیں۔
- اور اگر روزے کی نیت کر کے دن میں کھایا پیا تو قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے۔ (۵)

## نیت توڑنے کا طریقہ

روزے کی نیت کرنے کے بعد دن میں روزے کی نیت توڑنے کی کوئی صورت نہیں، البتہ رات کو نیت کرنے کے بعد صبح صادق سے قبل رات کو نیت توڑنا ممکن ہے اور اس کا طریقہ یہ ہے کہ اگلے دن کھانے پینے کا ارادہ کرے۔

- (۱) واما عندنا فلا بد من النية لان الواجب الامساك بجهة العبادة ولا عبادة بدون نية فلو امسك بدونها لا يكون صائما ويلزمه القضاء دون الكفارة (شامی ج: ۱ ص: ۴۰۳ ط: سعید)
- أيضا: وكذا كل من وجب عليه الصوم لوجود سبب الوجوب والاهلية ثم تعذر عليه المضى بان افطر متعمدا او أصبح يوم الشك مفطرا ثم تبين انه من رمضان او تسحر على ظن ان الفجر لم يطلع ثم تبين طلوعه، فانه يجب عليه الامساك تشبهاً. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۸)
- (۲) ولوقال: نويت ان اصوم غدا ان شاء الله تعالى صحت نيته هو الصحيح. (هنديہ ج: ۱ ص: ۱۹۵ ط: ایچ ایم سعید)
- (۳) ولا فرق بين المسافرين والمقيمين والصحيح والسقيم. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۶. رشیدیہ)
- (۴) والتسحر في رمضان نية. (عالمگیری ج: ۱ ص: ۱۹۵، رشیدیہ کوئٹہ)
- (۵) فانه يجب عليه الامساك تشبهاً. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۸، ایچ ایم سعید)

واضح رہے کہ مسافر، بیمار اور حیض و نفاس والی عورت کے علاوہ دوسرے لوگوں کے لئے روزہ نہ رکھنے کی صورت میں بھی رمضان میں کھانے پینے کی اجازت نہیں۔ رمضان کا احترام کرنا ضروری ہے، روزہ نہ رکھنے کی صورت میں بھی کھانا پینا جائز نہیں ہے اور قضا لازم ہے۔ (۱)

## نیت کر کے روزہ توڑنا

(۱) اگر رمضان کے مہینے میں رات کو روزہ رکھنے کی نیت کی، پھر روزے کو توڑ دیا تو قضا اور کفارہ دونوں لازم آئیں گے۔ اور اگر رمضان کے مہینے میں رات کو روزہ رکھنے کی نیت نہیں کی، اور دن کو نصف النہار سے پہلے روزے رکھنے کی نیت کی، پھر روزے کو توڑ دیا تو قضا لازم ہوگی کفارہ نہیں۔ (۲)

(۲) اگر غیر رمضان میں رات کو یا دن کو نفل روزے یا قضا روزے کی نیت کی، اور صبح صادق کے بعد غروب آفتاب سے پہلے روزہ توڑ دیا تو قضا لازم ہوگی، کفارہ واجب نہیں ہوگا۔ (۳)

(۱) ولا تبطل بالمشيئة بل بالرجوع عنها بان يعزم ليلا على الفطرونية الصائم الفطر لغو. (شامی ج: ۲: ۳۸۰. ط: ایچ ایم سعید)

أيضا: والاخير ان يمسكان بقية يومهما وجوبا على الاصح لان الفطر قبيح وترك القبيح شرعا واجب (تحتہ فی رد) واجمعوا على انه لا يجب على الحائض والنفساء والمريض و المسافر وعلى لزومه لمن افطر خطأ او عمدا او يوم الشك ثم تبين انه رمضان ذكره قاضیخان شرنبلالیة. (شامی ج: ۲: ص: ۴۰۷. ط: ایچ ایم سعید)

(۲) حتی لو صام يوما من رمضان ونوى قبل الزوال ثم افطر لایلزمه الكفارة عند ابی حنیفة خلافا لهما. (البحر الرائق ج: ۲: ص: ۲۷۶ عالمگیری ج: ۱: ص: ۲۰۶. جط: رشیدیہ کوئٹہ)

أيضا: او اصبح غيرناو للصوم فاكل عمدا ولو بعد النية قبل الزوال لشبهة خلاف الشافعي ..... قضی ..... فقط. (شامی ج: ۲: ص: ۴۰۳)

(۳) ولا كفارة بالفساد صوم غير رمضان. (عالمگیری ج: ۱: ص: ۲۱۵، البحر الرائق ج: ۱: ص: ۲۷۶)

## نیکیوں کا سیزن

(۱) جس طرح لوگ سیزن میں محنت زیادہ کرتے ہیں، اپنی دیگر مصروفیات ترک کر دیتے ہیں، دوسروں سے معذرت کر لیتے ہیں، اپنے کھانے پینے کی پرواہ نہیں کرتے، رات کو سونے کی فکر نہیں ہوتی، ہر وقت یہ غم سوار رہتا ہے کہ میں کس طرح اس سیزن کو کمالوں، کیونکہ اس کا یقین ہے کہ تھوڑے دن کی مشقت ہے، اس کے بعد پھر آرام کر لیں گے۔

اسی طرح رمضان المبارک نیکیاں کمانے کا سیزن ہے، جو لوگ اپنے گناہوں کو معاف کروانا چاہتے ہیں، اللہ رب العزت کا قرب حاصل کرنا چاہتے ہیں، اللہ جل شانہ کی معیت کے حصول کے لئے بے قرار رہنے والے ہیں، ان کے لئے یہ مہینہ ایک سیزن کی مانند ہے۔

ایمانداروں کو چاہیے کہ جب روزہ رکھیں تو ان کا روزہ محض کھانے پینے سے رکنے تک محدود نہ ہو بلکہ روزہ دار کی آنکھیں بھی روزہ دار ہوں، زبان بھی روزہ دار ہوں، کان بھی روزہ دار ہوں، شرمگاہ بھی روزہ دار ہو، دل و دماغ بھی روزہ دار ہوں۔ جب اس طرح سر کے بالوں سے لے کر پاؤں کے ناخنوں تک روزہ دار ہو جائیں گے تو رب العزت افطار کے وقت یقیناً دعا قبول فرمائیں گے۔ (۱)

(۱) عن سلمان الفارسی قال خطبنا رسول الله ﷺ في آخريوم من شعبان فقال يا ايها الناس قد اظلكم شهر عظيم شهر مبارك شهر فيه ليلة خير من الف شهر - جعل الله صيامه فريضة وقيام ليله تطوعا من تقرب فيه بخصلة من الخير كان كمن ادى فريضة فيما سواه ومن ادى فريضة فيه كان كمن ادى سبعين فريضة فيما سواه وهو شهر الصبر والصيام والنجاة والشهر المواساة وشهر يزداد فيه رزق المؤمن من فطر فيه صائما كان له مغفرة لذنوبه ورجوع رقبته من النار وكان له مثل اجره من غير ان ينقص من اجره شيء - قلنا يا رسول الله ليس كلنا نجد ما نفطر به الصائم فقال رسول الله ﷺ يعطى الله هذا الثواب من فطر صائما على مذقة لبن =

## نیکویں کی چیک بک

رمضان المبارک کی مثال بینک کے تیس چیک والی چیک بک کی مانند ہے۔ اس میں روزہ رکھ کر اور نیک عمل کر کے جتنی رقم چاہے لکھ لے، وہ آخرت کے اکاؤنٹ میں جمع ہوتی جائے گی۔

لہذا ہر آدمی کو چاہیے کہ اس پر غور کرے کہ اس نے آخرت کے اکاؤنٹ میں کتنی رقم جمع کرائی ہے۔ (۱)



## وی آئی پی گیٹ

نبی کریم ﷺ نے فرمایا: جنت کا ایک دروازہ ہے، اس کا نام ”ریان“ ہے۔ قیامت کے دن اس گیٹ سے صرف روزہ دار داخل ہوں گے، ان کے سوا کوئی بندہ اس گیٹ سے جنت میں داخل نہیں ہو سکتا۔ آواز دی جائے گی کہ روزہ رکھنے والے کہاں ہیں؟ روزہ دار کھڑے ہو جائیں گے، ان کے سوا کوئی اس گیٹ میں سے داخل نہیں ہو سکے گا، جب وہ داخل ہو جائیں گے تو وہ دروازہ بند کر دیا جائے گا۔ (۲)

= اوتمرة او شربة من ماء ومن اشبع صائما سقاء الله من حوضى شربة لا يظما حتى يدخل الجنة وهو شهر اوله رحمة واوسطه مغفرة وآخره عتق من النار ومن خفف عن مملوكه فيه غفر الله له واعتقه من النار. (مشکوٰۃ شریف ج: ۱ ص: ۱۷۳ کتاب الصوم الفصل الثالث) (۱) ایضا

(۲) عن سهل بن سعد قال قال رسول الله ﷺ في الجنة ثمانية ابواب منها باب يسمى الريان لا يدخله الا الصائمون متفق عليه. (مشکوٰۃ شریف ج: ۱ ص: ۱۷۳ کتاب الصوم الفصل الاول) عن سهل بن سعد قال قال رسول الله ﷺ: ان في الجنة بابا يقال له الريان، يدخل منه الصائمون يوم القيامة، لا يدخل معهم احد غيرهم، يقال: اين الصائمون، فيدخلون منه، فاذا دخل اخرهم اغلق فلم يدخل منه احد. شعب الايمان ج: ۳ ص: ۲۹۷، باب في الصيام فضائل الصوم)

## (وینٹولین)

”دمہ“ کے عنوان کے تحت دیکھیں

## (وکس)

روزہ کے دوران جسم کی بیرونی حصے میں ”وکس“ لگانے سے روزہ فاسد نہیں ہوگا، البتہ گرم پانی میں ”وکس“ ڈال کر بھانپ لینے سے روزہ فاسد ہو جائیگا قضا لازم ہوگی کفارہ نہیں۔ (۱)

(۵)

## ہونٹوں پر سرخی لگانا

عورت کو روزے کی حالت میں ہونٹوں پر سرخی لگانا جائز ہے، البتہ منہ کے اندر جانے کا احتمال ہو تو مکروہ ہے۔ (۲)

## ہمبستری

(۱) رمضان کے روزے کے دوران ہمبستری کرنے سے قضا اور کفارہ دونوں لازم ہیں۔ (۳)

(۱) لو ادخل حلقه الدخان افطر. (درمختار، شامی ج: ۲ ص: ۳۹۵ ط: ایچ ایم سعید)

(۲) احسن الفتاوی ج: ۴ ص: ۴۴ ایچ ایم سعید کمپنی

(۳) (۵، ۴، ۳) وان جامع المكلف آدمیا مشتهی فی رمضان اداء لما مراوجومع وتوارت الحشفة

فی احد السبیلین انزل اولاً..... قضی فی الصور کلھا وکفر. (شامی ج: ۲ ص: ۴۰۹ سعید)

ایضاً: ان رسول اللہ ﷺ قال لا ینظر اللہ عزوجل الی رجل اتی رجلاً او امرأة فی دبرھا .

(مشکوٰۃ شریف ص: ۳۱۳، کتاب الحدود الفصل الثالث ط: قدیمی کتب خانہ)

- (۲) جب مرد کے پیشاب کے مقام کی سپاری اندر چلی گئی تو روزہ فاسد ہو گیا۔  
 قضا اور کفارہ دونوں لازم ہوں گے، چاہے انزال ہو یا نہ ہو۔ (۴)  
 (۳) نیز اگر مرد نے پاخانہ کی جگہ اپنا عضو داخل کر دیا اور سپاری اندر چلی گئی تو  
 مرد اور عورت دونوں کا روزہ فاسد ہو گیا، دونوں پر قضا اور کفارہ لازم ہے۔  
 واضح رہے کہ پاخانہ کی جگہ استعمال کرنا کسی حال میں بھی جائز نہیں ہے اور  
 عورت کے لئے اس پر راضی ہونا بھی جائز نہیں ہے۔ (۵)

### ہوائی سفر میں روزے کا حکم

- (۱) اگر کوئی روزہ دار ہوائی جہاز کے ذریعہ مشرق کی طرف جاتا ہے تو اس کا دن  
 چھوٹا ہو جاتا ہے تو وہ سورج غروب ہونے کے بعد افطار کرے چاہے دن کتنا ہی چھوٹا  
 ہو، کیونکہ روزے کا معنی صبح صادق سے سورج غروب ہونے تک کھانے پینے اور میاں  
 بیوی کے خاص تعلقات سے باز رہنے کا نام ہے۔ (۱)  
 (۲) اگر روزہ دار ہوائی جہاز کے ذریعہ مغرب کی طرف جاتا ہے تو دن لمبا  
 ہو جاتا ہے تو اس صورت میں صبح صادق سے ۲۴ گھنٹے کے اندر جب بھی سورج غروب  
 ہو جائے تو غروب ہونے کے بعد افطار کرے۔  
 اور غروب کا اعتبار نیچے زمین کے اعتبار سے کیا جائے، فضا کے اعتبار سے  
 نہیں۔ (۲)

(۵، ۴) صفحہ گذشتہ میں دیکھیں۔

- (۱) قوله هو ترك الاكل والشرب والجماع من الصبح الى الغروب بنية من اهل اى الصوم  
 في الشرع الامساك عن المفطرات الثلاث حقيقة او حكما في وقت مخصوص من شخص  
 مخصوص مع النية (البحر الرائق ج: ۲ ص: ۲۵۹ ط: ايچ ايم سعيد)  
 (۲) وههنا ايضا مسئلة غريبة يتفرع على كروية الارض اراد ان يوردھا فقال ويتفرع على  
 كرويتها صحة كون يوم معين جمعة وخميسا وسبتا عند ثلاثة اى ثلاثة اشخاص كتب في

(۳) اگر سورج صبح صادق سے لے کر چوبیس گھنٹے کے اندر غروب نہ ہو تو اس صورت میں چوبیس گھنٹے پورے ہونے سے اتنا وقت پہلے افطار کر لے کہ اس میں ضرورت کے بقدر کھانی سکے۔ (۱)

(۴) اگر ابتدائے صبح صادق کے وقت سفر میں تھا تو روزہ فرض تو ہوگا لیکن سفر کی وجہ سے اس وقت روزہ رکھنا لازم نہیں ہوگا۔ لہذا اس سفر میں روزہ نہ رکھے بعد میں قضا رکھ لے۔ (۲)

(۵) اگر ابتدائے صبح صادق کے وقت مسافر نہ تھا تو اس صورت میں روزہ رکھنا فرض ہوگا۔ اگر اتنے طویل دن کا روزہ نہیں رکھ سکتا تو سفر کرنا جائز نہیں ہوگا۔ (۳)

## ہوٹل کھولنا

رمضان المبارک کے احترام کی خاطر دن کے وقت ہوٹل بند رکھنا ضروری ہے،

= الحاشیہ توضیحه انه اذا فرض تفرقهم والشمس على نصف نهارهم مثلا فاقام احدهم و شرق الثاني وغرب الثالث الى ان تلاقوا جميعا فبلوغ الشمس تلك الدائرة يتم الدورة للمقيم دون الغربي بل تمامه عنده ببلوغها نصف نهاره وذلك ازيد من الدوريسير فالיום بليته عنده اطول بما يقتضيه تلك الزيادة وهكذا يزداد كل يوم بليته عنده على ما قبله بما يوجبه سيره فقد توزعت عنده دورة كاملة بالنسبة الى المقيم على ما عداها من الادوار و اندرج عنده مقدار يوم بليته بالقياس الى المقيم في مقادير الايام فلامحالة نقض ايامه عن ايام المقيم بواحد الخ . شرح التشريح في التصريح ص: ۱۵، ۱۶، المطبع المجتبائي، دہلی )

(۱) اعلم ان الساعة المستوية جزء من اربعة وعشرين من يوم بليته فيزيد عدد النهارية والليلية منها بطولهما وينقص بقصرهما ولا يتغير اجزاء هال الخ . (الجفمینی ص: ۱۱ حاشیہ نمبر: ۲۲)

(۲) منها السفر الذي يبيح الفطر وهو ليس بعذر في اليوم الذي انشأ السفر فيه كذا في الغيائية فلو سار نهارا لا يباح له الفطر في ذلك اليوم . (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۶، الباب الخامس في الاعذار التي تبيح الافطار . ط: رشيديه كوئٹہ)

خواہ کھانے پینے والے کسی بھی مذہب کے ہوں۔ (۱)

## ہونٹ تھوک میں تر ہو جانا

اگر کسی کے ہونٹ باتیں کرتے وقت یا اور کسی وقت تھوک میں تر ہو جائیں پھر اس کو نکل جائے تو روزہ فاسد نہیں ہوگا۔ (۲)

## ہونٹ چوسنا

روزے کے دوران کسی عورت کا ہونٹ منہ میں لینا مکروہ ہے، لہذا اس سے پرہیز کیا جائے۔ (۳)

(۱) روزہ شعائر اللہ میں سے ہے اور شعائر اللہ کی تعظیم و احترام واجب ہے، قرآن پاک میں ہے:

ومن يعظم شعائر الله فانها من تقوى القلوب. (سورة الحج آیت: ۳۲)

وفی الشامیة: ولو اكل عمدا شهرة بلا عذر يقتل وتما منه فی شرح الوهبانية (تحتہ فی رد) قال الشرنبلالية صورتها تعمد من لا عذر له الاكل جهارا يقتل لانه مستهزی بالدين او منكر لما ثبت منه بالضرورة ولا خلاف فی حل قتله والامر به. (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۳ - ۴۱۴)

(۲) ترطبت شفتاه ببزاقه عند الكلام او غيره فابتلعه لا يفسد للضرورة كذا فی الزاھدی (عالمگیری ج: ۱ ص: ۲۰۳ ط: رشیدیہ کوئٹہ)

(۳) وكره قبله الخ جزم فی السراج بان القبلة الفاحشة بان يمضغ شفتها تكره علی الاطلاق ای سواء امن او لا. (شامی ج: ۲ ص: ۴۱۷ ط: ایچ ایم سعید کمپنی)

# قربانی کے مسائل کا انسائیکلو پیڈیا

حروف تہجی کی ترتیب کے مطابق

مؤلف

مفتی محمد انعام الحق صاحب قاسمی

دارالافتاح جامعۃ العلوم الاسلامیہ  
علامہ بنوری ٹاؤن کراچی

بیت العمارت کراچی

# زکوٰۃ کے مسائل کا انسائیکلو پیڈیا

حروف تہجی کی ترتیب کے مطابق

مؤلف

مفتی محمد انعام الحق صاحب قاسمی

دارالافتاح جامعۃ العلوم الاسلامیہ  
علامہ بنوری ٹاؤن کراچی

بیت العمار کراچی

# مِثْرُ الْكَافِي

فِي الْعَرُوضِ وَالْقَوَافِي

لِلأَحمَدِ بْنِ عَبادِ بْنِ نُعَيْبِ الْفَنَاءِ ٨٥٩ هـ

مَعَ حَاشِيَةِ الْكَامِلَةِ الشَّافِي لِلـ

مُفَضِّلِ مَجَلِّزِ نَعَامِ الْخَوَافِي

الْأَسْتَاذِ بِجَامِعَةِ الْعُلُومِ الْإِسْلَامِيَّةِ  
عَلَامَةِ بَنُورِي تَاوُنِ كِرَاتشي

بَيْتُ الْعِمَارِ كِرَاتشي

# الشفا

شرح اُردو

## مِيزَانُ الْكَافِي

احمد بن عباد بن نجيب القناء

مؤلف

مفتی محمد انعام الحق صاحب قاسمی

دار الافتاء جامعة العلوم الاسلامیة  
علامہ بنوری ٹاؤن کراچی

بیت العمارۃ کراچی